सिरि अन्तग दसाओ

[मूल, संस्कृत छाया, हिन्दी शब्दार्थ एवं भावार्थ सहित]

अनुवादक

जैनाचार्य श्री हस्तिमलजी महाराज

सम्पादक

गजसिंह राठौड़

चांदमल कर्णावट

प्रेमराज बोगावत

प्रकाशक

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर-३

प्रकाशक
सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
बापू , जयपुर 302003

●

द्वितीय परिवर्तित एव
परिवर्द्धित सस्करण
1100

●

आंशिक द्रव्य सहायतादाता
स्व० श्री भूरालालजी पाडलेचा
निवासी

●

मूल्य १०.०० रु० मात्र

वीर , २५03
विक्रम सम्वत् २035
ईस्वी सन् १९७८

●

मुद्रक
पॉपुलर प्रिन्टर्स
नवाब हवेली
त्रिपोलिया बाजार
जयपुर-२

काशकीय

श्री अन्तगडदशाग सूत्र का प्रथम सस्करण मण्डल के द्वारा कुछ वर्षो पूर्व प्रकाशित हुआ। थोडे समय में ही उसकी प्रतिया समाप्त हो गई ।

इसके बाद द्वितीय सस्करण शीघ्र ही प्रकाशित करने का निर्णय मडल ने लिया। उस मण्डल के समक्ष एक सुझाव आया कि प्रथम सस्करण में जहा मूल सूत्रपाठ एव उसका सरल हिन्दी अर्थ ही लिया गया, वहा इस सस्करण में सस्कृत छाया एव सरल हिन्दी भावार्थ भी और जोड दिया जाय तो स्वाध्याय सघ के भाइयों को एव अन्य स्वाध्याय रसिकों को इस आगम सूत्र के अर्थ बोध में और भी सुगमता होगी।

हमें ˌ पसद आया। इसके लिये आचार्य गुरुदेव से प्रार्थना की गई। गुरुदेव ने कृपा की। उनके मार्ग-दर्शन में यह परिवर्द्धित सस्करण तैयार हुआ। श्री गजसिहजी राठौड, श्री चादमल जी कर्णावट एव श्री प्रेमराज जी बोगावत जैसे जैनागम-ज्ञाता विद्वानों का सम्पादन सहयोग इसमें हमें मिला। इसकी हमें प्रसन्नता है। हम इन सम्पादक बन्धुओं के प्रति अपना हार्दिक आभार प्रकट करते हैं। पूज्य गुरुदेव के आशीर्वाद का तो यह सुफल है ही। उनका यह मण्डल चिरऋणी रहेगा।

इसका अग्रेजी अनुवाद भी इसके साथ देने की हमारी भावना थी, पर कई व्यावहारिक कठिनाइयों के कारण इसे फिलहाल हमें स्थगित रखना पडा। आशा और विश्वास है कि स्वाध्याय रसिक साधक वृन्द इस ग्रन्थ के इस परिवर्द्धित रूप को अधिक पसन्द करेंगे एव इससे अधिक से अधिक लाभ उठाकर अपनी स्वाध्याय प्रवृत्ति को बढाएगे, तो हम अपने श्रम को सार्थक समझेंगे।

सोहननाथ मोदी
अध्यक्ष

चन्द्रराज सिंघवी
मन्त्री

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल

उद्गार

(आचार्य श्री हस्तिमल जी महाराज सा)

धर्म शास्त्र की महिमा

शास्त्र किसे कहते है ? इसकी अगर शाब्दिक परिभाषा की जाय तो भाषा शास्त्र के अनुसार 'शासन करने वाले' या 'मानव मन को अनुशासित वनाने वाले' ग्रन्थ को 'शास्त्र' कहते है जो तद् तद् विषयानुकुल अनेक प्रकार के होते है—जैसे अर्थ शास्त्र, काम शास्त्र, भाषा शास्त्र, समाज शास्त्र, व्याकरण शास्त्र, वास्तु शास्त्र, रसायन शास्त्र, नीति शास्त्र, और धर्म शास्त्र आदि आदि । उपर्युक्त अन्य शास्त्र जहा मनुष्य की भौतिक इच्छा, शाब्दिक ऊहा पोह, रस परिविज्ञान एव कामादि लालसा को जागृत कर उसे स्वार्थ परायण और सघर्षशील वनाते हैं, वहाँ 'धर्म शास्त्र' मानव को भौतिक प्रपच से मोडकर कर्त्तव्य-परायण, आत्माभिमुखी और विश्व हितैषी वनाता है । वह मानव की पापानुवन्धी वहिर्मुखी कलुषित मनोवृत्ति को दवाकर उसे पुण्यानुवन्धी अन्तर्मुखी वनने की प्रेरणा देता है । जैसे पारस का सम्पर्क लौह को वहुमूल्य सुवर्ण वना देता है, वैसे ही धर्म शास्त्र भी आत्म परायण नर को नारायण वना देता है, इसलिए किसी विद्वान् ने ठीक ही कहा है कि—

श्लोको वर परम तत्व-पथ प्रकाशी,
न ग्रन्थ-कोटि-पठन जन-रजनाय ।
सजीवनीति वरमौषधमेकमेव,
व्यर्थ श्रमस्य जननी न तु मूल-भार ।

अर्थात् परम तत्व के मार्ग को वताने वाला एक श्लोक भी अच्छा किन्तु जन रजन के लिए करोडो ग्रन्थो का पढना भी श्रेष्ठ नही । सजीवनी जडी का एक टुकडा भी अच्छा किन्तु व्यर्थ मे भार वहन कराने वाला मूले का भार हितकर नही ।

धर्म शास्त्र की इस महिमा के कारण ही महर्षियो ने इसकी श्रुति तक को दुर्लभ वताया है । जैसा कि कहा है—

"सुई धम्मस्स दुल्लहा" धर्म का सुनना दुर्लभ है । वस्तुत तो ससार को सन्मार्ग पर ले चलने का सारा श्रेय धर्म शास्त्र को ही है ।

धर्मशास्त्र और द्वादशांगी

महिमाशाली होकर भी साधारण धर्म शास्त्र मानव जगत का उतना कल्याण नही कर पाते जितना कि उनसे अपेक्षित है। जिनके गायक या रचयिता स्वय ही सरागी, भोगी एव अज्ञान युक्त है, वे ग्रन्थ भला मानव का अभिलषित उपकार कहा तक कर सकते है? अत वीतराग, आप्त पुरुषो की वाणी या तदनुकुल सत्पुरुषो की वाणी ही मानव-कल्याण मे समर्थ मानी गई है।

अनादिकाल की नियत मर्यादा है कि तीर्थंकर भगवान को जब केवलज्ञान की प्राप्ति हो जाती है तब वे श्रुत धर्म और चारित्र धर्म की देशना देकर चतुर्विध सघ की स्थापना करते हैं। उस समय उनके परम प्रमुख शिष्य गणधर प्रत्यक्षदर्शी तीर्थंकरो की अर्थ रूपी वाणी को ग्रहण कर उसे सूत्र रूप मे गूथते हैं जैसे चतुर माली लता से गिरे हुए फूलो को एकत्र कर हार बनाता है और उससे मानव का मनोरजन करता है।

गणधरो द्वारा गूथे गये (रचे गये) वे प्रमुख सूत्र-शास्त्र ही द्वादशागी के नाम से कहे जाते है। जैसे कि कहा है—

> अत्थ भासइ अरहा, सुत्त गथति गणहरा निउण।
> सासणस्स हियट्ठाए तओ सुत्त पवत्तइ ॥

अर्थात् तीर्थंकर भगवान अर्थ रूप वाणी बोलते हैं और गणधर उसको ग्रहण कर शासन हित के लिए निपुणता पूर्वक सूत्र की रचना करते हैं तब सूत्र की प्रवृत्ति होती है। शब्दरूप से सादि सान्त होकर भी यह द्वादशागी श्रुत अर्थ रूप से नित्य एव अनादि अनन्त कहा गया है। जैसा कि नन्दी सूत्र मे उल्लेख है—

"से जहा नामए पच अत्थि काया न कयाइ नासी न कयाइ न भवइ, न कयाइ न भविस्सइ, भुविं य, भवइ य, भविस्सइ य, धुवे नियए सासए अक्खए अव्वए अवट्ठिए णिच्चे एवमेव दुवालसगे गणिपिडगे न कयाइनासी।"

अर्थात् पचास्तिकाय की तरह कोई भी ऐसा समय नही था, नही है, और नही होगा जबकि द्वादशांगी श्रुत नही था, नही है या नही रहेगा। अतः यह द्वादशागी नित्य है। जैसाकि पहले कह गए है कि शब्द रूप से द्वादशागी सादि सान्त है। प्रत्येक तीर्थंकर के समय गणधरो द्वारा इसकी रचना होती है। फिर भी अर्थरूप से यह नित्य है। इस प्रकार महर्षियो ने शास्त्र की अपौरुपेयता का भी समाधान कर दिया है। उन्होने अर्थरूप से शास्त्र ज्ञान को नित्य अपौरुपेय एव शब्द रूप से सादि पौरुषेय कहा है।

श्वेताम्बर परम्परा के अनुसार अब भी द्वादशागी के ग्यारह अग शास्त्र विद्यमान हैं और सुधर्मा स्वामी की वाचना प्रस्तुत होने से इनके रचनाकार भी सुधर्मा स्वामी माने

गए है। आचाराग १, सूत्रकृताग २, स्थानाग ३, समवायाग ४, विवाह प्रज्ञप्ति ५, ज्ञाता-धर्म कथा ६, उपासक दशा ७, अतकृत दशा ८, अनुत्तरौपपातिक दशा ९, प्रश्न व्याकरण १०, और विपाक सूत्र ११। इनमे अन्तकृत दशा का आठवा स्थान है। उपाग, मूल, छेद और प्रकीर्ण सूत्रो की अपेक्षा प्रधान होने से इनको अग शास्त्र माना गया है।

नाम और महत्व

प्रस्तुत शास्त्र "अतगडदसा" के नाम की सार्थकता स्वय इसके अध्ययन से विदित हो जाती है। यद्यपि मोक्षगामी पुरुषो की गौरव गाथा तो अन्य शास्त्रो मे भी प्राप्त होती है, पर इस शास्त्र मे केवल उन्ही सत सतियो के जीवन परिचय है, जिन्होने इसी भव से जन्म-जरा-मरण रूप भवचक्र का अ त कर दिया अथवा अष्ट विध कर्मो का अन्त कर जो सिद्ध-बुद्ध-मुक्त हो गए। सदा के लिए ससार लीला का अन्त करने वाले 'अ तगड' जीवो की साधना दशा का वर्णन करने से ही इसका 'अ तगडदसाओ' नाम रक्खा गया हैं।

इसके पठन पाठन और मनन से हर भव्य जीव को अन्त क्रिया की प्रेरणा मिलती है, अत यह परम कल्याणकारी ग्रन्थ है। उपासक दशा मे एक भव से मोक्ष जाने वाले श्रमणोपासको का वर्णन है, किन्तु इस आठवे अग 'अन्तकृत दशा' मे उसी जन्म मे सिद्ध गति प्राप्त करने वाले उत्तम श्रमणो का वर्णन है। अत परम-मगलमय है और इसी लिये लोक जीवन मे इसका महत्वपूर्ण स्थान है।

वर्णन शैली

ग्रन्थो की रोचकता को उनकी वर्णन शैली से भी आकने की प्रथा है। अच्छी से अच्छी बाते भी अरोचक ढग से कहने पर उतना असर नही डालती जितना कि एक साधारण बात भी सुन्दर व व्यवस्थित ढग से कहने पर श्रोतृ-चित्त को आकृष्ट कर लेती है। प्रस्तुत ग्रन्थ की वर्णन शैली भी व्यवस्थित है। इसमे प्रत्येक साधक के नगर, उद्यान, चैत्य-व्यतरायतन, राजा, माता-पिता, धर्माचार्य, धर्मकथा, इहलोक एव परलोक की ऋद्धि, पाणिग्रहण और दाति प्रीतिदान, भोगो का परित्याग, प्रव्रज्या, दीक्षाकाल, श्रुतग्रहण, तपोपधान, सलेखना और अन्त क्रिया स्थान का उल्लेख किया गया है।

'अन्तगडदशा' मे वर्णित साधक पात्रो के परिचय से प्रकट होता है कि श्रमण भगवान महावीर के शासन मे विभिन्न जाति एवं श्रेणी के व्यक्तियो को साधना मे समान अधिकार प्राप्त था। एक ओर जहा बीसियो राजपुत्र-राजरानी और गाथापति साधना-पथ मे चरण से चरण मिला कर चल रहे हैं, दूसरी ओर वही कतिपय उपेक्षित वर्ग वाले और मनुष्य घाती तक भी ससम्मान इस साधना क्षेत्र मे आकर समान रूप से आगे बढ रहे हैं। कर्मक्षय कर सिद्ध-बुद्ध एव मुक्त होने मे किसी को कोई रुकावट नही, बाधा नही। 'हरि को भजे सो हरि को होई' वाली लौकिक उक्ति अक्षरश चरितार्थ हुई है। कितनी

समानता-समता और आत्मीयता भरी थी उन सूत्रकारो के मन मे ? वय की दृष्टि से अतिमुक्त जैसे बाल मुनि और गज सुकुमार जैसे राजप्रासाद के दुलारे गिने जाने वाले भी इस क्षेत्र मे उतर कर सिद्धि प्राप्त कर गये। शास्त्रकार की वह रचना शैली विश्व के मानव मात्र को कल्याण साधना मे पूर्णरूप से प्रेरित एव उत्साहित करती है।

परिचय

समवायाग मे "अन्तगडदसा" का परिचय इस प्रकार मिलता है-अन्तगडदशा मे अन्तकृत आत्माओ के नगर, उद्यान, चैत्य–व्यतरालय, वनखड, राजा, माता पिता, समवसरण, धर्माचार्य, धर्मकथा, लौकिक और पारलौकिक ऋद्धि, भोग, परित्याग, प्रव्रज्या, श्रुतग्रहण, उपधान–तप, प्रतिमा, बहुत प्रकार की क्षमा, आर्जव, मार्दव, शौच और सत्य सहित १७ प्रकार का सयम, उत्तम ब्रह्मचर्य, अकिंचनता, तप क्रिया और समिति गुप्ति तथा अप्रमाद योग, उत्तम सयम आप्त पुरुषो के स्वाध्याय-ध्यान का लक्षण, चार प्रकार के कर्म क्षय करने पर केवल ज्ञान की प्राप्ति, जिन्होने सयम का पालन किया–पादोपगमन सथारा और जहा जितने भक्त का छेदन करना था वह करके अन्तकृत मुनिवर अज्ञान रूप अन्धकार से मुक्त हो सर्व श्रेष्ठ मुक्तिपद प्राप्त कर गये, ऐसे अन्यान्य वर्णन भी इसमे विस्तार के साथ कहे गए हैं।

अन्तकृतदशा सूत्र की परिमित वाचना एव सख्येय अनुयोग द्वार है, यावत् सख्येय सग्रहणी है। अ ग की अपेक्षा यह आठवा अ ग है इसके एक श्रु त स्कन्ध-दश अध्ययन और सात वर्ग है। दश उद्देशन काल और दश ही समुद्देशन काल बतलाए हैं। (सम०पृ० २५१ हैदराबाद वाला)

नन्दी सूत्र-गत परिचय से समवायाग के इस परिचय मे यह विशेषता है कि यहा क्षमा, आर्जव, मार्दव, शौच आदि यति धर्म का स्वरूप बताने के साथ स्वाध्याय और ध्यान का लक्षण भी बताया गया है। सम्भव है आज का 'अन्तगडदशा' कोई भिन्न वाचना का हो। इसमे स्त्री पुरुष, बालक और वृद्ध साधको की कठोर साधना गायी गई है। महामुनि गज सुकुमाल के आत्मध्यान का भी वर्णन है। पर उसमे ध्यान की विशेष परिपाटी या लक्षण का पृथक कोई उल्लेख नही मिलता। कदाचित् सक्षेपीकरण के समय देवर्द्धिगणी ने कम कर दिया हो, अथवा प्राप्त वाचना मे इसी प्रकार का पाठ हो।

अध्ययन और वर्ग का परिचय भी समवायाग सूत्र मे भिन्न प्रकार से है। नन्दीकार जहा "अन्तगडदसा" का एक श्रु त स्कन्ध, आठ वर्ग और आठ ही उद्देशन काल बताते हैं, वहा समवायाँग मे एक श्रु त स्कन्ध, दश अध्याय तथा ७ वर्ग बतलाए हैं। आचार्य श्री अमोलक ऋषिजी म०ने दश अध्याय का एक वर्ग और सात वर्ग यो आठ वर्ग लिखे हैं। पर उद्देशन काल दश कहे हैं, जबकि नन्दी सूत्र मे आठ उद्देशन काल बतलाए हैं।

इससे प्रमाणित होता है कि समवायाग सूत्र निर्दिष्ट 'अन्तगडदसा' वर्तमान 'अन्तगडदसा' से कोई भिन्न था। वर्तमान मे उपलब्ध सूत्र ही नन्दी सूत्र मे निर्दिष्ट अन्तगडदसा है।

अतगडदसा की तपः साधना

अन्तकृद्दशा सूत्र के वर्णनो पर गहराई से चिंतन किया जाय तो साधना क्षेत्र की विविध सामग्रिया उपलब्ध होती है।

सामान्य तौर से सयम और तप की विमल साधना से मुक्ति की प्राप्ति मानी गयी है। सयम का साधन ज्ञानपूर्वक ही होता है, अत उसके लिए जीवाजीवादि का तत्व ज्ञान आवश्यक माना गया है। विषय कषाय को जीतने के लिए ज्ञान या ध्यान का बल पुष्ट साधन है और तप, ज्ञान ध्यान का साधन है, अथवा ज्ञान ध्यान स्वय भी एक प्रकार का तप है। फिर भी व्यवहार दृष्टि से यह जिज्ञासा हो सकती है कि ज्ञान साधना से मुक्ति होती है ? या ध्यान से अथवा कठोर तप साधन से या उपशम से ?

अन्तगडदसा सूत्र के मनन से ज्ञात होता है कि गौतम आदि, १८ मुनियो के समान १२ भिक्षु प्रतिमा एव गुणरत्न-सवत्सर तप की साधना से भी साधक कर्म क्षय कर मुक्ति मिला लेता है। अनीक सेनादि मुनि १४ पूर्व के ज्ञान मे रमण करते हुए सामान्य बेले २ की तपस्या से कर्म क्षय कर मुक्ति के अधिकारी बन गए। अर्जुनमाली ने उपशमभाव-क्षमा की प्रधानता से केवल छह मास बेले २ की तपस्या कर सिद्धि मिलाली। दूसरी ओर अतिमुक्त कुमार ने ज्ञान-पूर्वक गुण-रत्न-तप की साधना से सिद्धि मिलाई और गज सुकुमाल ने बिना शास्त्र पढे और लम्बे समय तक साधना एव तपस्या किए बिना ही केवल एक शुद्ध ध्यान के बल से ही सिद्धि प्राप्त करली। इससे प्रकट होता है कि ध्यान भी एक बडा तप है। काली आदि रानियो ने सयम लेकर कठोर साधना की और लम्बे समय से सिद्धि मिलाई। इस प्रकार कोई सामान्य तप से, कोई कठोर तप से, कोई क्षमा की प्रधानता से तो कोई अन्य केवल आत्म ध्यान की अग्नि मे कर्मो को झोक कर सिद्धि के अधिकारी बन गए।

मथितार्थ यह है कि शास्त्रो का गम्भीर अभ्यास और लम्बे काल का कठोर तप चाहे हो या न हो, यदि कर्म हल्के हैं और आत्मध्यान मे मन अडोल है तो अल्प काल मे भी मुक्ति हो सकती है।

विविध प्रकार के तप

अन्तगडदसा सूत्र मे ध्यान की साधना का तो स्पष्ट रूप नही मिलता, पर तपस्या के अनेको प्रकार उपलब्ध होते है। सर्व प्रथम १२ भिक्षु प्रतिमाओ का वर्णन है, जिनका

विस्तृत उल्लेख दशाश्रु त स्कध मे मिलता है। दूसरा गुण रत्न सवत्सर तप है जो गौतमकुमार आदि मुनियो के द्वारा साधा गया है। इसके लिए सैलाना से प्रकाशित अन्तगडदसा के टिप्पण मे ऐसा लिखा है कि प्राचीन धारणा के अनुसार इसका आराधना काल ऋतुवद्ध याने ८ मास है, परन्तु **भगवती सूत्र शतक २ उद्देश १ में खदक मुनि के अधिकार मे** इसका रूप इस प्रकार उपलब्ध होता है। जैसे-पहले महीने एकातर उपवास का पारणा करना, दूसरे महीने मे दो दो उपवास का पारणा करना, तीसरे महीने तीन तीन उपवास का पारणा करना, चौथे महीने ४-४ उपवास का पारणा, पाचवे महीने मे ५-५ का-छठे महीने मे ६-६ का-इस प्रकार बढते हुए १६वे महीने मे १६।१६ उपवास का पारणा करना, दिन को उत्कट आसन से आतापना लेना और रात मे वीरासन से खुले वदन डास आदि के परिषह सहना। यह इस तप का स्वरूप वताया गया है।

तीसरा तप है रत्नावली—इसमे एक उपवास से लेकर ऊचे १६ तक की तपस्या चढाव उतार से की जाती है। मध्य मे बेले और आदि अन्त मे उपवास, बेला तेला की तपस्या की जाती है। चारो परिपाटियो मे चार वर्ष ३ मास और ६ दिन तप के और ३५२ पारणा के दिन होते है।

चौथा तप है कनकावली—रत्नावली के समान ही इसमे भी उपवास से १६ तक तप का चढाव उतार होता है। अन्तर केवल इतना है कि इसमे ३ स्थान पर रत्नावली के षष्ठ तप के वदले अष्टम तप किया जाता है। चारो परिपाटी मे ४ वर्ष ९ मास और २६ दिन का तप और ३५२ पारणे होते है। एक परिपाटी मे १ वर्ष दो मास और १४ दिन का तप तथा ८८ पारणे होते हैं।

पाचवा तप है लघुसिह निष्क्रीडित—इसमे जैसे शेर आगे पीछे कदम रखता है, वैसे ही उपवास से लेकर ५ तक की तपस्या मे आगे वढना और पीछे हटना। इस प्रकार ४ परिपाटियाँ की जाती है। एक मे ५ मास और ४ दिन के तप एव ३३ पारणे होते है। चार के १ वर्ष ८ मास १६ दिन के तप और १३२ पारणे होते है।

छठा तप महासिंह निष्क्रीडित—इसमे ऊचे से ऊचे १६ तक का तप होता है। साधना काल ६ वर्ष २ मास और १२ दिन मे ५ वर्ष ६ मास और ८ दिन तप के तथा २४४ पारणे होते है।

सातवा तप सप्त सप्तमिका भिक्षु प्रतिमा, आठवा अष्ट अष्टमिका भिक्षु प्रतिमा नवमा नव नवमिका भिक्षु प्रतिमा और दशवा दश दशमिका भिक्षु प्रतिमा है।

ये चारो तप साधुओ की अपेक्षा से कहे गए हैं। इन चारो प्रतिमाओ मे भोजन की दाती की अपेक्षा तप का आराधन किया जाता है। सप्त सप्तमिका मे प्रथम सप्ताह मे एक दत्ति भोजन की व एक दत्ति जल की, दूसरे सप्ताह मे दो दो, यावत् सातवें सप्ताह मे सात दत्ति भोजन की, और सात ही जल की ग्रहण की जाती है। इसके तप दिन ४९ होते

है। ऐसे अष्ट अष्टमिका के ६४ दिन, नव नवमिका के ८१ दिन और दश दशमिका के १०० दिन होते है। दिन के प्रमाण से प्रथम अष्टक मे १ दत्ति और आठवें मे आठ दत्ति इस प्रकार नव नवमिका मे नव दिन और दशमिका मे दश दिन से एक एक दत्ति बढानी चाहिए।

ग्यारहवा तप लघु सर्वतोभद्र प्रतिमा है इसमे अनानुपूर्वी क्रम से १ उपवास से ६ उपवास तक ५ लाइन की जाती है। एक परिपाटी मे ७५ दिन का तप और २५ पारणे होते है। इस प्रकार चार परिपाटी मे तप की पूर्ण आराधना की जाती है।

वारहवा महासर्वतोभद्र तप है, इसमे एक उपवास से ७ उपवास तक पूर्व कथित प्रकार से किये जाते हैं। एक परिपाटी मे १९६ दिन तप और ४९ पारणे होते है।

तेरहवी भद्रोत्तर प्रतिमा है इस तप मे ५।६।७।८।९ इस प्रकार अनानुपूर्वी से पाच पंक्ति मे तपस्या की एक परिपाटी पूर्ण होती है। जिसमे ६ मास २० दिन का समय लगता है। तप के दिन १७५ और २५ पारणे होते है।

चौदहवां आयविल वर्धमान तप है। इसमे १ से १०० तक आयविल वढाये जाते है। पारणा के दिन बीच में उपवास किया जाता है। आयविल के कुल दिन ५०५० और १०० दिन के उपवास होते हैं। साधारण सा दिखने पर भी यह तप वडा महत्वशाली और कठिन है।

पन्दरहवा मुक्तावली तप है। इसमे ऊचे से ऊचा १६ तक का तप होता है। एक परिपाटी मे २८५ दिन का तप और ६० पारणे होते हैं। चारो परिपाटिया ३ वर्ष और १० मास मे पूर्ण की जाती है।

पर्यूषण मे अन्तगड का वाचन

वहुत वार यह जिज्ञासा होती है कि पर्यूषण मे अन्तगड का वाचन आवश्यक क्यो माना जाता है? अन्य किसी सूत्र का वाचन क्यो नही किया जाता? वात ठीक है, शास्त्र सभी मागलिक है और उनका पर्व दिनो मे वाचन भी हो सकता है, कोई दोप की वात नही है। विचार केवल इतना ही है कि पर्वाधिराज के इन अल्प दिनो मे वैसे सूत्र का वाचन होना चाहिये जो आठ ही दिनो मे पूरा हो सके और आत्म साधना की प्रेरणा देने मे भी पर्याप्त हो, अग या उपाग शास्त्रो मे ऐसा कोई अग सूत्र नही जो इस मर्यादित काल मे पूरा हो सके। अनुत्तरौपपातिक दशा है तो वह अति लघु होने के साथ इतनी प्रेरक सामग्री प्रस्तुत नही करता। फिर उसमे वर्णित साधक अनुत्तर विमान के ही अधिकारी होते है, मोक्ष के नही। परन्तु अन्तकृतदशा मे ये दोनो वाते है, वह अति लघु या महत् आकार मे नही है, साथ ही उसमे ऐसे ही साधको की जीवन गाथा है जो तप संयम से कर्म क्षय कर पूर्णानद के भागी वन चुके है। अन्तकृतदशा के उद्देश समुद्देश का काल भी ८ दिन

का है और पर्यूषण का अष्टान्हिक पर्व भी अष्टगुणो की प्राप्ति एव अष्ट कर्मों की क्षीणता के लिये है। अतः पर्यूषण मे इसी का वाचन उपयुक्त है। प्रस्तुत सूत्र मे छोटे वडे ऐसे साधको की जीवन गाथा बताई है जिनसे आबाल वृद्ध सब नर नारी प्रेरणा ले सके और अपनी योग्यता के अनुसार साधना कर आत्मा का विकास कर सके। यही खास कारण हैं कि पूर्वाचार्यों ने पर्यूषण के अष्टान्हिक पर्व मे आठ वर्ग वाले इस मगलमय शास्त्र का बोधप्रद वाचन निश्चित किया।

जैसे मगल हेतु एव ऐतिहासिक परिचय प्रदान करने को कल्पसूत्र मे महावीरादि के पच कल्याण और पट्टावली का वाचन आवश्यक माना गया है, वैसे ही लगता है कि आत्म साधना मे प्रेरणा प्रदान करने के लिए अन्तकृतदशा का वाचन भी आरम्भ किया गया हो। वीर निर्वाण ९९३ के समय कल्प सूत्र का सामूहिक वाचन होने लगा था सभव है उस समय साधना प्रेमी सतो ने यह सोचकर कि कल्पसूत्र मे केवल तीर्थंकर भगवान् की गुण गाथा है। चतुर्विध सघ को साधना के लिये वैसी प्रेरणा दायक सामग्री नही है अत इसका वाचन आवश्यक माना हो, अथवा तो समाज मे आडम्बर और जन्म महोत्सव की भक्ति आदि की ओर वढते मोड को बदलने के लिये अन्तकृतदशा का वाचन चालू किया हो। इतना सुनिश्चित है कि पर्वाधिराज मे अन्तगडदशा का वाचन सहेतुक एव उपयोगी है।

प्राप्त टीका और प्रकाशन

अन्तगडदशा पर कुछ टीका ग्रथ है, जैसे–अभयदेवसूरि कृत सस्कृत टीका, प्राचीन टब्वा, पडित रत्न श्री घासीलालजी महाराज कृत सस्कृत टीका। हिन्दी, गुजराती, अनुवाद भी प्राप्त होते है। इस सूत्र के अनेक स्थानो से मूल टीका और अनुवाद के प्रकाशन हो चुके है। उनमे—

१–सर्वप्रथम राय धनपतसिंह वहादुर का टीका और गुजराती टब्वा सहित अतिशुद्ध नही होने पर भी इसका वडा उपयोग हुआ, कागज साधारण होने से वह अधिक स्थिर नही रह सका।

२–आगमोदय समिति सूरत से सशोधित, सयुक्त प्रकाशन–अन्तकृतदशा और अनुत्तरौपपातिक सटीक।

३–पूज्य अमोलखऋषि जी महाराज कृत हिन्दी अनुवाद, लाला ज्वाला प्रसाद जी की ओर से, हैदराबाद का प्रकाशन।

४–पडित रत्न श्री घासीलाल जी महाराज कृत सस्कृत टीका और हिन्दी गुजराती अनुवाद सहित, अहमदाबाद।

५–उपाध्याय श्री प्यारचन्द जी महाराज कृत हिन्दी भाषा अनुवाद सहित।

६ पण्डित घेवरचन्द जी बांठिया द्वारा अनूदित मूल अनुवाद, सैलाना। यह पुस्तकाकार एवं सरल है।

७—सुत्तागम समिति 'गुडगाव' और अमोल जैन ज्ञानालय धूलिया से प्रकाशित मूल। धूलिया की प्रति प्रायः शुद्ध एवं सुवाच्य होने के साथ विशिष्ट शब्द कोष सहित है। इसके अतिरिक्त एक दो गुजराती संस्करण भी होगे।

उपरोक्त प्रकाशनो से मूल और संस्कृत-भाषी विद्वानो की जिज्ञासा की तो पूर्ति हो जाती है, किन्तु शुद्ध मूल के साथ शब्दानुलक्षी अर्थ की जिज्ञासा रखने वाले पाठको की आवश्यकता पूर्ण नही होती। उधर पर्यूषण के दिनो मे प्राय सर्वत्र इसका वाचन होता है। इसी आवश्यकता को पूर्ण करने के लिये सूत्र का मूल संशोधन के साथ भाषानुवाद भी तैयार करना आवश्यक हुआ। अब तक के अनुवादो की अपेक्षा इसमे यह खास ध्यान रखा गया है कि अनुवादो मे कोई खास शब्द छूटने नही पाये, सरलता के लिए अर्थ भी सामने पेज पर इसीलिए दिया है कि पाठक मूल की ओर ध्यान रख कर पढे तो सहज मे बोध प्राप्त कर सके। इसके अतिरिक्त परिशिष्ट मे शब्द कोश देकर उसमे विशिष्ट पदो का सरल हिन्दी अर्थ करने का प्रयास किया गया है। समास युक्त और सम्बन्धित पदो को एक साथ देकर लिखा है। करीब २ सम्पूर्ण शब्दो को लेने का प्रयास किया गया है, फिर भी समय की अल्पता और कार्य की गुरुता से सम्भव है कोई पद छूट गया हो अथवा अर्थ मे कही स्खलना हो तो सुज्ञ पाठक ध्यान से पढकर उसे सुधार लें। अर्थ और पाठ-शुद्धि मे निम्न पुस्तको का उपयोग किया है—१ उपाध्याय श्री प्यारचन्द जी महाराज द्वारा अनूदित पत्राकार प्रति, २ सैलाना से प्रकाशित पुस्तक, ३ प्राचीन हस्तलिखित प्रति, ४ आगमोदय समिति से प्रकाशित सटीक अन्तकृतदशा और ५ भगवती सूत्र का खधक प्रकरण।

सूत्र की पाडुलिपि तैयार करने मे जैन रत्न विद्यालय के मास्टर जगदीशचन्द्र और विद्यालय के स्नातक श्री रतनलाल वाफणा ने पूरा सहयोग दिया, और शब्द कोष का चयन करने मे मास्टर चादमलजी कर्णावट और पारसमल जी 'प्रसून' का सहयोग भुलाने योग्य नही है। विद्यालय के स्नातक बादलचन्द जी ओस्तवाल तथा दो विद्यार्थियो का लेखन मे हार्दिक सहयोग भी अवश्य स्मरणीय है। विद्यालय के मास्टर और इन विद्यार्थियो ने श्रुत सेवा के इस पुनीत कार्य मे योगदान देकर अवश्य श्रुत सेवा के साथ अपने लिए पुण्य लाभ उपार्जन किया है। शब्द कोष मे कई पद पुनरावृत्त भी हो गये है।

उपयोग पूर्वक कार्य करने पर भी वीतराग-वाणी से कही विपरीत लिखा हो, तो हार्दिक पश्चात्ताप के साथ मैं अपने उद्गार समाप्त करता हू।

श्रावण पूर्णिमा

स २०२०

पीपाड शहर

उपाध्याय गजेन्द्र मुनि

(सन् १९६५ मे प्रकाशित प्रथम सस्करण से उद्धृत)

(इस द्वितीय सस्करण के सम्बन्ध मे)

यह सस्करण जैसा भी है पाठको के हाथो मे है। इसमे प्रयास किया गया है कि पाठको को और भी सरलता से मूल पाठ का अर्थ ज्ञात हो जाय। कालम प्रणाली को अपनाने के पीछे भी यही भावना निहित है यद्यपि इसमे सस्कृत छाया भी दे दी गई है। इन सब कारणो से प्रथम आवृत्ति की तरह इसमे शब्दकोष के लिये अतिरिक्त परिशिष्ट देने की आवश्यकता नही रही।

परिशिष्ट मे उन उन शब्दो का टिप्पण के तौर पर विस्तृत अर्थ भी दे दिया गया है जिन को मूल पुस्तक मे अकित किया गया है।

सामान्य जानकारी रखने वाले सस्कृतज्ञ को भी सरलता से शब्द का अर्थ ज्ञात हो सके इस दृष्टि से व्याकरण सम्बन्धी कुछ सामान्य नियमो जैसे विसर्ग सधियो आदि की छूट रखदी गई है। आशा है विद्वज्जन इसे इसी भावना से लेगे।

प्रस्तुत सस्करण मे कालम पद्धति अपनाने के कारण पुस्तक का कलेवर बढा है एव साथ ही कागज का खर्च भी। फिर भी अगर इस पद्धति से जिज्ञासुओ को सरलता अनुभव हुई तो हम अपने श्रम को सार्थक समझेगे।

आशा है जिज्ञासु विद्वज्जनो को यह परिवर्तित एव परिवर्द्धित सस्करण विशेष रुचिकर, सरल एव सुबोध लगेगा।

अनुक्रमणिका

सिरि अन्तग दसाओ

(श्री न्तकृद्दशांगसूत्रम्)

(श्री अन्तगडदशांग सूत्र)

उत्थानिका

सूत्र १

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
तेणं कालेणं तेणं समएणं	तस्मिन् काले तस्मिन् समये
चम्पा णामं णयरी होत्था,	चम्पा नाम नगरी अभवत्,[1]
वण्णओ।	वर्ण्यः ।[2]
तत्थ णं चम्पाए णयरीए	तत्र चम्पायां नगर्या
उत्तर-पुरत्थिमे दिसिभाए	उत्तरपौरस्त्ये दिग्भागे
एत्थ णं पुण्णभद्दे णामं चेइए होत्था।	अत्र पूर्णभद्रं नाम चैत्यमभवत् ।
वणखडे वण्णओ।	वनखण्डः वर्ण्यः ।
तीसे णं चम्पाए णयरीए	तस्या चम्पायां नगर्यां
कोणिए णाम राया होत्था।	कोणिको नाम राजा अभवत् ।
महया हिमवंत, वण्णओ।	महत्तया हिमवन्त., वर्णकः ।

श्री न्तग दशांग ूत्र

(आठवा अगशास्त्र)

उत्थानिका (पूर्व-पीठिका)

सूत्र १

[हिन्दी छाया]

उस काल उस समय[3]
चम्पा नामकी नगरी थी,
(जो) वर्णनीय[4] थी ।
वहा चम्पा नगरी मे
उत्तर पूर्व दिशा भाग मे[5]
यहां पूर्णभद्र नाम का चैत्य था ।
(यहां) वन खण्ड (भी) वर्णनीय था ।
उस चम्पा नगरी मे
कौणिक नाम का राजा था ।
(जो) महा हिमवान् पर्वत
के समान[6] वर्णनीय था ।

[हिन्दी अर्थ]

उस काल उस समय अर्थात् इसी अवसर्पिणी काल के चतुर्थ आरक के अन्तिम समय मे, जवकि भ० महावीर विचर रहे थे, वर्णन करने योग्य नगरियो[7] मे आदर्श एव प्रतीक स्वरूप चम्पा नाम की नगरी थी। उस चम्पानगरी के ईशान कोणमे पूर्णभद्र नामक चैत्य था। वहा का वनखण्ड वर्णनीय अर्थात् मन को प्रफुल्लित कर देने वाला, नयनाभिराम और वडा रम्य था । उस चम्पा नगरी मे कौणिक नामक राजा[8] था, जो क्षेत्रो की मर्यादाओ को वनाये रखने वाले महाहिमवान् पर्वत[9] के समान सुसभ्य, मानव समाज की मर्यादाओ का सरक्षक और वर्णन करने योग्य एक सुशासक के सभी गुणो मे सम्पन्न था ।

सूत्र २

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
तेणं कालेणं तेणं समएणं	तस्मिन् काले तस्मिन् समये
अज्ज सुहम्मे थेरे जाव	आर्यं सुधर्मा स्थविरः यावत्
पंचहिं अणगार-सएहिं सद्धि	पंचभिः अणगार-शतैः सार्द्धं
संपरिवुडे	संपरिवृत्तः
पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे	पूर्वानुपूर्व्याः चरन्
गामाणुगामं दूइज्जमाणे	ग्रामानुग्रामं द्रवन्
सुहंसुहेणं विहरमाणे	सुखं सुखेन विहरमाण·
जेणेव चम्पा णयरी	यत्रैव चम्पा नगरी
जेणेव पुण्णभद्दे चेइए	यत्रैव पूर्णभद्रः चैत्यः
तेणेव समोसरिए।	तत्रैव समवसृतः।
परिसा णिग्गया[10]	परिषद् निर्गता
जाव परिसा पडिगया।[11]	यावत् परिषद् प्रतिगता।
तेणं कालेणं तेण समएण	तस्मिन् काले तस्मिन् समये
अज्ज सुहम्मस्स अंतेवासी	आर्य-सुधर्मणः अन्तेवासी
अज्ज जंबू जाव	आर्य जम्बू यावत्
पज्जुवासमाणे	पर्युपासीनः
एव वयासी—	एव अवादीत्-
जइ ण भंते !	यदि खलु भदन्त !
समणेण भगवया महावीरेणं	श्रमणेन भगवता महावीरेण
आइगरेण जाव	आदिकरेण यावत्
सपत्तेण	(सिद्धगतिनामधेय स्थान) सप्राप्तेन
सत्तमस्स अगस्स उवासगदसाणं	सप्तमस्य अंगस्य उपासकदशाना
अयमट्ठे पण्णत्ते	अय अर्थ· प्रज्ञप्त·
अट्ठमस्स णं भंते ! अगस्स	अष्टमस्य खलु भदन्त ! अगस्य
अंतगडदसाण समणेण	अन्तकृद्दशानां श्रमणेन

[हिन्दी छाया]

उस काल उस समय
आर्य सुधर्मा स्थविर यावत्
पाच सौ साधुओ के साथ
घिरे हुए,
पूर्व परम्परानुसार विचरते हुए,
ग्रामानुग्राम चलते हुए,
सुखपूर्वक विहार करते हुए,
जहां चम्पा नगरी थी,
जहां पूर्णभद्र चैत्य था,
वही पधारे ।
परिषद् आई,
यावत् परिषद् लौट गई ।

उस काल उस समय
आर्य सुधर्मा स्वामी के अन्तेवासी शिष्य
आर्य जम्बू स्वामी यावत्
सेवा उपासना करते हुए
इस प्रकार बोले—
"हे पूज्य ! यदि
श्रमण भगवान् महावीर
(धर्म की) आदि करने वाले यावत्[१२]
(सिद्धगति नाम स्थान को) प्राप्त (प्रभु)
ने सातवें अंग शास्त्र उपासकदशा का
यह भाव प्रतिपादित किया है (तो)
हे भगवन् ! आठवें अग शास्त्र
अन्तगडदशा का (उन) श्रमण ने

[हिन्दी अर्थ]

उस काल उस समय मे अर्थात् इस अवसर्पिणी के चतुर्थ आरक के अन्तिम समय मे स्थविर आर्य सुधर्मा स्वामी पाच सौ साधुओ[१३] के परिवार सहित पूर्व परम्परा अर्थात् तीर्थकर परम्परा के अनुसार विचरते तथा एक ग्राम से दूसरे ग्राम मे सुखपूर्वक विहार करते हुए, उस चम्पानगरी के पूर्णभद्र नामक उद्यान मे पधारे । नागरिको के समूह आर्य सुधर्मा की सेवा मे उपस्थित हुए । दर्शन, वन्दन के पश्चात् वे सभा के रूप मे बैठे । परिषद् ने आर्य सुधर्मा का उपदेश सुना । उपदेश सुनकर जन-समूह अपने-अपने स्थान को लौट गया ।

उस काल उस समय मे आर्य सुधर्मा स्वामी के अन्तेवासी शिष्य आर्य जम्बू स्वामी ने अपने गुरु को सविधि सविनय वन्दन-नमन के पश्चात् उनकी पर्युपासना करते हुए इस प्रकार पूछा—"हे भवभयहारी भगवन् ! यदि धर्म की आदि करने वाले विशेषण से लेकर सिद्धगति नामक स्थान को प्राप्त विशेषण से अलकृत श्रमण, भगवान् महावीर ने सातवे अग शास्त्र उपासक-दशा का यह अर्थ निरूपित किया है, तो हे पूज्यवर ! अब आप मुझे यह बताने की कृपा कीजिये कि ससार से मुक्त हुए उन श्रमण भगवान् महावीर ने

[मूल सूत्र पाठ]

जाव संपत्तेणं
के अट्ठे पण्णत्ते ?

[सस्कृत छाया]

यावत् (सिद्धगति) संप्राप्तेन
कः अर्थः प्रज्ञप्तः ?

सूत्र ३

पढमो वग्गो

एवं खलु जम्बू ! समणेणं
जाव संपत्तेणं
अट्ठमस्स अंगस्स
अतगडदसाए
अट्ठ वग्गा पण्णत्ता ।
जइ ण भंते !
समणेण जाव सपत्तेणं
अट्ठमस्स अगस्स
अतगडदसाणं
अट्ठ वग्गा पण्णत्ता
पढमस्स णं भते !
वग्गस्स अतगडदसाणं
समणेण जाव सपत्तेण
कइ अज्झयणा पण्णत्ता ?

एव खलु जवू !
समणेणं जाव सपत्तेणं
अट्ठमस्स अगस्स
अतगडदसाणं
पढमस्स वग्गस्स
दस अज्झयणा पण्णत्ता ।
त जहा

प्रथम वर्गम्

एवं खलु जम्बू ! श्रमणेन
यावत् (सिद्धगति) सम्प्राप्तेन
अष्टमस्य अंगस्य
अन्तकृद्दशाना
अष्टौ वर्गाः प्रज्ञप्ताः ।
यदि खलु भदन्त !
श्रमणेन यावत् (सिद्धगति) संप्राप्तेन
अष्टमस्य अंगस्य
अन्तकृद्दशाना
अष्टौ वर्गाः प्रज्ञप्ताः,
प्रथमस्य खलु भदन्त !
वर्गस्य अन्तकृद्दशानां
श्रमणेन यावत् (सिद्धगति) संप्राप्तेन
कति अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि ?

एवं खलु जम्बू !
श्रमणेन यावत् (सिद्धगति) सप्राप्तेन
अष्टमस्य अंगस्य
अन्तकृद्दशानां
प्रथमस्य वर्गस्य
दश अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि ।
तद् यथा

[हिन्दी छाया]

यावत् सिद्धगति प्राप्त प्रभु ने
क्या भाव प्ररूपित किया है ?"

[हिन्दी अर्थ]

आठवे अग-शास्त्र अन्तगडदशा मे किस विषय का प्रतिपादन किया है ?"

सूत्र ३

प्रथम वर्ग

"एवं निश्चय ही हे जम्बू ! श्रमण
यावत् (सिद्धगति) प्राप्त वीर प्रभु ने
आठवें अंग-शास्त्र
अन्तगडदशा के
आठ वर्ग प्रतिपादित किये है।"
"हे पूज्य ! यदि निश्चय ही
श्रमण यावत् मुक्ति को प्राप्त प्रभु ने
आठवें अंग
अन्तगडदशा के
आठ वर्ग प्रतिपादित किये हैं (तो)
भदन्त ! निश्चय ही पहले
अन्तगड-दशांग सूत्र के वर्ग के
श्रमण यावत् मोक्ष प्राप्त प्रभु ने
कि ने अध्ययन कहे है ?"
"इस प्रकार हे जम्बू !
श्रमण यावत् मोक्ष प्राप्त प्रभु ने
आठवें अंग
अन्तगडदशा के
प्रथम वर्ग के
दस अध्ययन प्रतिपादित किये है।
वे इस प्रकार है :—

सुधर्मा स्वामी श्रीमुख से कहते है-"इस प्रकार निश्चित रूप से हे जम्बू ! श्रमण भगवान् महावीर, जो मोक्ष पधारे है, उन प्रभु ने अन्तगडदशा नामक आठवे अङ्ग शास्त्र के आठ वर्ग कहे है।"

जम्बू—"हे भगवन् ! यदि श्रमण यावत् मुक्ति-प्राप्त प्रभु ने आठवे अग अन्तगडदशा के आठ वर्ग फरमाये है, तो हे पूज्य ! अन्त-गडदशाग के प्रथम वर्ग मे श्रमण यावत् मोक्ष प्राप्त प्रभु ने कितने अध्ययन कहे है ?"

सुधर्मा स्वामी—"इस प्रकार निश्चित रूप से हे जम्बू ! श्रमण यावत् मुक्ति प्राप्त महावीर प्रभु ने आठवे अग अन्तगडदशा सूत्र के प्रथम वर्ग मे दस अध्ययन कहे हैं, जो इस प्रकार है —

[मूल सूत्र पाठ]	[सस्कृत छाया]
१. गोयम २ समुद्द ३. सागर	१ गौतम २. समुद्रः ३ सागरः
४ गभीरे चेव ५. होइ थिमिए य	४ गम्भीरश्चैव ५ भवति स्तिमि
६ अयले ७ कपिल्ले ८. खलु	६. अचलः ७ काम्पिल्यः ८ खलु
अक्खोभ ६ पसेरणई १० विण्हू	अक्षोभ. ६ प्रसेनजितः १० विष्णु·

सूत्र ४

जइरण भन्ते !	यदि खलु भदन्त !
समरणेरणं जाव सपत्तेरण	श्रमणेन यावत् सिद्धगतिं संप्राप्तेन
अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं	अष्टमस्य अगस्य अन्तकृद्दशानां
पढमस्स वग्गस्स	प्रथमस्य वर्गस्य
दस अज्झयरणा पण्णत्ता	दश अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि
त जहा—	तद्यथा—
गोयम जाव विण्हू	गौतमः यावत् विष्णुः
पढमस्स रण भते !	प्रथमस्य हे भदन्त !
अज्झयरणस्स अतगडदसारण	अध्ययनस्य अन्तकृद्दशानां
समरणेरण जाव सपत्तेरणं	श्रमणेन यावत् सिद्धगतिं संप्राप्तेन
के अट्ठे पण्णत्ते ?	कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ?
एव खलु जंवू !	एवं खलु जम्बू !
तेरण कालेरण तेरण समएरण	तस्मिन् काले तस्मिन् समये
वारवई णाम णयरी होत्था ।	द्वारवती नाम नगरी अभवत् ।
दुवालस जोयरणायामा	द्वादश योजन-आयामा
णव जोयरण वित्थिण्णा	नव योजन-विस्तीर्णा
धरणवइमइ-रिणम्मिया	धनपतिमति-निर्मिता
चामीगरपागारा णाणा मरिण	चामीकरप्राकारा नाना मणि
पञ्चवण्ण कवि-सीसग-परिमण्डिया	पञ्चवर्ण-कपिशीर्षकैः परिमण्डिता

[हिन्दी छाया]

१. गौतम, २ समुद्र, ३ सागर, ४ गम्भीर भी, ५ स्तिमित भी हुए, ६ अचल, ७ काम्पिल्य, ८. निश्चयही अक्षोभ ९. प्रसेनजित, १०. विष्णु ।

[हिन्दी अर्थ]

१ गौतम कुमार, २ समुद्र कुमार, ३ सागर कुमार, ४ गम्भीर कुमार और ५ स्तिमित कुमार, ६ अचल कुमार, ७ काम्पिल्य कुमार, ८ अक्षोभ कुमार, ९ प्रसेन जित और १० विष्णु कुमार ।

सूत्र ४

यदि निश्चय ही हे भदन्त !
श्रमण यावत् मोक्षप्राप्त (प्रभु) ने
आठवें अंग अन्तगडदसा के
प्रथम वर्ग के
दस अध्ययन कहे है,
जो इस प्रकार है—
"गौतम से लेकर विष्णुकुमार तक"
(तो) हे भदन्त ! प्रथम का
अन्तगडदशांग के अध्ययन का
श्रमण यावत् मोक्षप्राप्त (प्रभु) ने
क्या भाव प्रतिपादित किया है ?

आर्य जम्बू—"हे पूज्य ! यदि श्रमण भगवान् महावीर ने आठवे अग शास्त्र अन्तगडदशा के प्रथम वर्ग के दस अध्ययन कहे है, जैसे गौतम आदि, तो हे भगवन् अन्तगडदशाग सूत्र के प्रथम अध्ययन का श्रमण यावत् मुक्ति प्राप्त प्रभु ने क्या भाव कहा है ? कृपा करके बतलाए ।"

इस प्रकार निश्चय करके हे जम्बू !
उस काल उस समय
द्वारिका नाम की नगरी थी ।
(वह) १२ योजना लम्बी (और)
नौ योजन विस्तीर्ण (यानि चौड़ी)
(स्वय) धन कुबेर की बुद्धि से निर्मित
स्वर्ण-प्राकार से युक्त, अनेको मणियो
पाच वर्ण [१४] की से मंडित कंगूरोवाली

आर्य सुधर्मा—"इस प्रकार हे जम्बू ! उस काल उस समय मे द्वारिका नाम की एक नगरी थी । वह बारह योजन लम्बी, नौ योजन चौडी, स्वय कुवेर के कौशल से निर्मित, स्वर्ण के कोट से घिरी हुई और अनेक प्रकार के पाच वर्ण की (इन्द्र, नील, वैडूर्य, पद्म, रागादि) मणियो से जटित, कगूरो वाली शोभनीय एव अत्यन्त रमणीय थी । नगरियो मे वह वैश्रमण की नगरी के समान, प्रमुदित एव क्रीडायुक्त होने से प्रत्यक्ष देव-

[मूल सूत्र पाठ]	[सस्कृत छाया]
सुरम्मा ।	सुरम्याः ।
अलकापुरी–संकासा	अलकापुरी–संकाशा
पमुइय–पक्कीलिया	प्रमुदिता प्रक्रीड़िता
पच्चक्खं देवलोगभूया	प्रत्यक्ष देवलोकभूता
पासाइया दरिसणिज्जा	प्रासादीया दर्शनीया
अभिरूवा पडिरूवा ।	अभिरूपा प्रतिरूपा ।

सूत्र ५

तीसे णं बारवईए णयरीए	तस्या द्वारावत्याः नगर्याः
बहिया उत्तर–पुरत्थिमे दिसिभाए	बहिरुत्तरपौरस्त्ये दिग्भागे
एत्थ णं रेवयए णामं पव्वए होत्था	अत्र खलु रैवतको नाम पर्वतोऽभूत्
वण्णओ	वर्णकः
तत्थ णं रे ए पव्वए	तत्र खलु रैं के पर्वते
णदणवणे णामं उज्जाणे होत्था ।	नन्दनवनं नाम उद्यानमासीत् ।
वण्णओ, सुरप्पिएणामं	वर्णक, सुरप्रियनामं
जक्खाययणे होत्था	यक्षायतनमभवत् ।
पोराणे से णं एगेणं	पुरातने तत् खलु एकेन
वणखंडेण परिक्खित्ते	वनखडेन परिक्षिप्तः
असोभवर पायवे	अशोकवर पादपः
तत्थ ण बारवईए णयरीए	तत्र खलु द्वारावत्या नगर्या
कण्हे णाम वासुदेवे	कृष्णो नाम वासुदेवः
राया परिवसइ	राजा परिवसति
महया हिमवन्त–राय वण्णओ	महता हिमवन्तराजवर्णक ।
से ण तत्थ समुद्दविजय पामोक्खाणं	स खलु तत्र समुद्रविजय प्रमुखानां
दसण्हं दसाराण	दशानां दशार्हाणाम्
बलदेव पामोक्खाणं	बलदेव प्रमुखानाम्

[हिन्दी छाया]

सुरम्य
कुबेर की नगरी के सदृश
प्रमुदित और प्रक्रीड़ित
साक्षात् देवलोक तुल्य
प्रमोदजनक, दर्शनीय
नित नई सर्वोत्तम थी।

[हिन्दी अर्थ]

लोक के समान एव मन को प्रफुल्लित करने वाली थी। उसकी दीवारो पर राजहस, चक्रवाक, सारस, हाथी, घोडे, मयूर, मृग, मगर, आदि पशु-पक्षियो एव अन्य अनेक प्राणियो के चित्र वने हुए थे। विशिष्ट असाधारण सौन्दर्य से युक्त होने से वह अभिरूपा थी और जिसके स्फटिक निर्मित दीवारो पर प्रतिविम्व सर्वदा प्रतिफलित होते रहने से, जो प्रतिरूपा भी थी।

सूत्र ५

उस द्वारिका नगरी के
बाहर ईशान कोण मे
यहा रैवतक नाम का पर्वत था,
जो वर्णन करने योग्य था।
उस रैवतक पर्वत पर
नन्दनवन नामक उद्यान था।
जो वर्णनीय था, जिसमें सुरप्रिय नाम का
यक्षायतन था,
जो प्राचीन था, जो एक
वनखण्ड से घिरा हुआ था।
(उसमें एक) श्रेष्ठ अशोक वृक्ष था।
वहां निश्चय करके (उस) द्वारिका मे
कृष्ण नाम के वासुदेव
राजा रहते थे।
वे महान् हिमवन्त पर्वत की
तरह मर्यादापालक थे [१५]

"ऐसी उस द्वारिकानगरी के वाहिर ईशान कोण मे रैवतक नाम का एक पर्वत था, जो वर्णन करके योग्य था। उस रैवतक पर्वत पर नन्दनवन नामक एक उद्यान था, जो भी वर्णनीय था। उस उद्यान मे सुरप्रिय नाम का एक यक्षायतन था, जो प्राचीन था। वह उद्यान चारो ओर एक वन खण्ड से घिरा हुआ था और उसमे एक श्रेष्ठ जाति का अशोक का वृक्ष था। उस द्वारिका नगरी मे श्रीकृष्ण नाम के वासुदेव राज्य करते थे, जो हिमवान पर्वत की भाति मर्यादा पुरुषोत्तम थे। उनके राज्य का वर्णन कौणिक के राज्य के वर्णन की भाति समझना चाहिये।" (नगरियो एव राज्यो के वर्णन को विस्तार पूर्वक समझने की जिज्ञासा वालो को औपपातिक सूत्र का अवलोकन करना चाहिए।)

वहा द्वारिका मे समुद्र विजय प्रमुख
दस दशार्ह अर्थात् पूज्यनीय पुरुष,
बलदेव प्रमुख,

"ऐसी द्वारिका नगरी मे समुद्र विजयजी आदि दस दशार्ह अर्थात् पूज्य पुरुष निवास करते थे। महावीर कहे जाने वाले वलदेव

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
पंचण्हं महावीराणं	पंचानां महावीराणां
पज्जुण्ण पामोक्खाणं	प्रद्युम्न प्रमुखाना
अद्धुट्ठाणं कुमार कोडीणं	अर्द्धचतुष्काणां कुमार कोटीनां
सब पामोक्खाणं	शाम्ब प्रमुखानां
सट्ठीए दुद्दंत साहस्सीणं	षष्ट्या दुर्दान्त साहस्रीणाम्
महासेण पामोक्खाणं	महासेन प्रमुखानां
छप्पण्णाए बलवग्गसाहस्सीणं	षट्पञ्चाशत बलवर्गसाहस्रीणाम्
वीरसेण पामोक्खाण	वीरसेन प्रमुखानाम्
एगवीसाए वीरसाहस्सीण	एकविंशति वीरसाहस्रीणाम्
उग्गसेण पामोक्खाणं	उग्रसेन प्रमुखानां
सोलसण्हं रायसाहस्सीणं	षोडशानाम् राज साहस्रीणाम्
रूप्पिणी पामोक्खाणं	रुक्मिणी प्रमुखानाम्
सोलसण्हं देवीसाहस्सीण	षोडशानाम् देवीसाहस्रीणाम्
अणंगसेणा पामोक्खाणं	अनंगसेना प्रमुखानां
अणेगाणं गणियासाहस्सीणं	अनेकासाम् गणिकासाहस्रीणाम्
अण्णेसि च बहूणं	अन्येषां च बहूनाम्
ईसर जाव सत्थवाहाणं	ईश्वर यावत् सार्थवाहानाम्
बारवईए णयरीए	द्वारावत्याः नगर्याः
अद्धभरहस्स य सम्मत्तस्स य	अर्धभरतस्य च समस्तस्य च
आहेवच्चं जाव विहरई।	आधिपत्यं यावत् विहरति।

सूत्र ६

तत्थ ण बारवईए णयरीए	तत्र खलु द्वारावत्या नगर्याम्
अधगवण्ही णामं राया परिवसइ	अन्धकवृष्णि नाम राजा परिवसति
महया हिमवन्त वण्णओ।	महता हिमवान् वर्णक·
तस्स णं अधगवण्हिहस्स रण्णो	तस्य खलु अन्धकवृष्णे· राज्ञः
धारिणी णाम देवी होत्था, वण्णओ	धारिणीनामा देवी अभवत्, वर्णकः

[हिन्दी छाया]

पांच महावीर (और)
प्रद्युम्नकुमार आदि
साढे तीन करोड कुमार,
शाम्ब प्रमुख
साठ हजार दुर्दान्त वीर, तथा
महासेन प्रमुख
छप्पन हजार बलवर्ग सैनिक,
वीरसेन आदि
इक्कीस हजार वीर योद्धा
उग्रसेन प्रमुख
सोलह हजार राजा एव
रुक्मिणी प्रमुख
सोलह हजार रानियां
अनंगसेना आदि
अनेक हजार गणिकाएं
एवं अन्य बहुत से
ईश्वर पदधारी से लेकर
सार्थवाहो से[१६] सम्पन्न
द्वारिका नगरी के (तथा)
समस्त अर्द्ध भरत यानि ३ खण्ड के
अधिपतित्व को धारण करते हुए यावत्
(श्री कृष्ण) विचरते थे।

[हिन्दी अर्थ]

आदि पाच श्रेष्ठ नागरिक और प्रद्युम्न प्रमुख साढे तीन करोड कुमार भी वहा रहते थे। वही शाम्ब, जिनमे प्रमुख गिने जाते थे, ऐसे साठ हजार दुर्दान्त वीर, महासेन आदि छप्पन हजार बलवर्ग सैनिक भी थे। वीरसेन आदि इक्कीस हजार वीर योद्धा, उग्रसेन प्रमुख सोलह हजार राजा एव रुक्मिणी प्रमुख १६ हजार रानिया, अनगसेना आदि हजारो गणिकाए तथा अन्य बहुत से ईश्वर पदधारी नागरिको से लेकर अनेक सार्थवाह भी उस नगरी के निवासी थे।"

"इस प्रकार सब प्रकार के वैभव एव शक्तिशाली नागरिको से सम्पन्न उस द्वारिका नगरी के तथा समस्त अर्द्ध-भरत के अर्थात् इस जम्बू द्वीप के तीन खण्डो के अधिपतित्व को धारण करते हुए यावत् श्रीकृष्ण विचरण करते थे।"

सूत्र ६

उस द्वारिका नगरी मे
अन्धकवृष्णि नाम के राजा रहते थे।
जो महा हिमवान्[१७] की भांति वर्णनीय थे।
उस अंधकवृष्णि राजा के
धारिणी नामकी वर्णन योग्य रानी थी,

"उस द्वारिका नगरी मे अधकवृष्णि नाम के एक राजा भी रहते थे, जो महान् हिमालय पर्वत की भाति शक्तिशाली एव मर्यादापालक थे। उनकी धारिणी नाम की रानी थी, जो वर्णन करने योग्य थी। वह धारिणी रानी किसी दिन पुण्यशालिनी

[मूल सूत्र पाठ]

तए णं सा धारिणी देवी अण्णया इं
तंसि तारिसगंसि
सयाणिज्जंसि एवं जहा महाबले —

सुमिणदंसण-कहणा
जम्मं बालत्तणं कलाओ य
जोव्वण-पाणिग्गहणं
कंता पासाय भोगा य
णवरं गोयमो णामेणं
अट्ठण्हं रायवर कन्नाणं
एगदिवसेणं पाणिं
गिण्हावेंति, अट्ठट्ठओ दाओ ।

[सस्कृत छाया]

ततः सा धारिणी देवी अन्यदा कदाचिद्
तस्मिन् तादृशके (कृतपुण्योपसेव्ये)
शयनीये एवं यथा महाबलः—

स्वप्नदर्शनं कथनम्
जन्म बालत्वं कलाश्च
यौवनं पाणिग्रहणम्
कान्ता प्रासाद भोगाश्च
विशेषः गौतमो नाम्ना
अष्टानां राजवर कन्यानाम्
एकस्मिन् दिवसे पाणि
ग्राहयन्ति, अष्टौ अष्टौ दाय ।

सूत्र ७

तेणं कालेणं तेणं समयेणं
अरहा अरिट्ठणेमी आइगरे
जाव विहरइ
चउव्विहा देवा आगया,
कण्हे वि णिग्गए
तए ण से गोयमेकुमारे
जहा मेहे तहा णिग्गए,
धम्म सोच्चा णिसम्म
ज णवरं देवाणुप्पिया !
अम्मापियरौ आपुच्छामि
देवाणुप्पियाण अंतिए पव्वयामि ।

एवं जहा मेहे जाव अणगारे
जाए, इरियासमिए जाव इणमेव

तस्मिन् काले तस्मिन् समये
अर्हन् अरिष्टनेमी आदिकरो
यावत् विहरति
चतुर्विधा देवाः आगताः
कृष्णः अपि निर्गतः,
ततः खलु सः गौतम कुमारः
यथा मेघः तथा निर्गतः,
धर्म श्रुत्वा निशम्य
यद् नवरं देवानुप्रिया !
मातापितरौ अपृच्छामि
देवानुप्रियाणाम् अन्तिके प्रव्रजामि ।

एवम् यथा मेघ. यावत् अणगारो
जातः, ईर्यासमितः यावत् एतदेव

[हिन्दी छाया]

तदनन्तर वह धारिणी रानी किसी दिन कदाचित् पुण्यवान् के योग्य शय्या पर सोई हुई थी जैसे महाबल। स्वप्न दर्शन, उसका कथन, जन्म, बाल लीला, कला ज्ञान, यौवन, पाणिग्रहण रम्य प्रासाद एवं भोगादि विशेष गौतम नाम, आठ उत्तम राजकन्याएं एक ही दिन पाणि-ग्रहण, आठ २ का दहेज।

[हिन्दी अर्थ]

के योग्य शय्या पर सोई हुई थी, जिसका वर्णन महावल के प्रकरण मे वर्णित वर्णन के समान समझ लेना चाहिये। जैसे कि उस धारिणी राणी का स्वप्न देखना, पति को निवेदन करना, वालक का जन्म लेना, उसका बाल्यकाल वीतना और कलाचार्यो के पास शिक्षण लेना, युवावस्था को प्राप्त होना, योग्य कन्याओ से उसका पाणिग्रहण होना, रमणीय प्रासाद मे रहना एव सासारिक भोगो को भोगना आदि।"

"महावलकुमार के वर्णन से यहा इतना विशिष्ट है कि उस कुमार का नाम गौतम-कुमार रक्खा गया, आठ उत्तम कुलीन राज-कन्याओ के साथ एक ही दिन मे उसका पाणिग्रहण कराया गया एव उसे दहेज के रूप मे आठ-आठ हिरण्य कोटि प्रदान की गई।"

सूत्र ७

उस काल उससमय आदिकर अर्हन् अरिष्टनेमि यावत् विचरते हैं। चार प्रकार के देव आये। श्रीकृष्णजी भी निकले। इसके बाद वह गौतम कुमार भी मेघ कुमार की तरह निकले। धर्मोपदेश सुनकर व धारण करके (वे बोले) हे देवानुप्रिय! मै यथा र माता पिता को पूंछता हूँ (और) देवानुप्रिय के समीप प्रव्रज्या लेता हूँ। इस प्रकार मेघकुमार के समान यावत् (वे गौतमकुमार) अणगार हो गये (एव) ईर्या समिति आदि को एवं

उस काल उस समय मे अरिहन्त अरि-ष्टनेमि भगवान् धर्मतीर्थ की आदि करने वाले यावत् विचरते हुए उस द्वारिकानगरी मे पधारे। भगवान् के समवसरण मे चार प्रकार के देव आये। श्री कृष्ण भी उन्हे वन्दन करने को निकले। गौतमकुमार भी ज्ञातासूत्र मे वर्णित मेघकुमार की तरह प्रभु का धर्मोपदेश सुनने को निकले। धर्मोपदेश सुनकर एव उसे अपने हृदय पटल पर अकित करके गौतमकुमार प्रभु से वोले —'हे प्रभो! मैं अपने माता पिता को पूछकर आप देवानुप्रिय के पास श्रमण दीक्षा' अगीकार करु गा।"

इस प्रकार ज्ञातासूत्र मे वर्णित मेघ-कुमार के समान यावत् गौतममार भी श्रमणधर्म मे दीक्षित हो गये।

[मूल सूत्र पाठ]	[सस्कृत छाया]
णिग्गंठं पावयणं पुरओ	नैर्ग्रन्थ्यं प्रवचनं पुरतः
काउं विहरइ ।	कृत्वा विहरति ।
तए ण से गोयमे अणगारे	तत· खलु स गौतमः अनगारः
अण्णया कयाइ	अन्यदा कदाचित्
अरहओ अरिट्ठ-णेमिस्स	अर्हतः अरिष्टनेमेः
तहारूवाणं थेराणं	तथारूपाणाम् स्थविराणाम्
अंतिए समाइयमाइयाइं	अन्तिके सामयिकादीनि
एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ,	एकादश अंगानि अधीते,
अहिज्जित्ता बहूहिं चउत्थ	अधीत्य बहुभिः चतुर्थभक्तादिभिः
जाव अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।	यावत् आत्मानं भावमानः विहरति ।
तए णं अरहा अरिट्ठणेमी	ततः खलु अर्हन् अरिष्टनेमि
अण्णया कयाइं बारवइओ णयरीओ	अन्यदा कदाचित् द्वारावत्या नगर्याः
णंदणवणाओ उज्जाणाओ	नन्दनवनात् उद्यानात्
पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता	प्रतिनिष्क्रमति, प्रतिनिष्क्रम्य
वहिया जणवय विहारं विहरइ ।	बहिः जनपद विहार विहरति ।

सूत्र ८

तए णं से गोयमे अणगारे	ततः खलु सः गौतमः अनगारः
अण्णया कयाइ जेणेव	अन्यदा कदाचित् यत्रैव
अरहा अरिट्ठणेमी तेणेव उवागच्छइ	अर्हन् अरिष्टनेमि तत्रैव उपागच्छति
उवागच्छित्ता अरहं अरिट्ठनेमि	उपागत्य अर्हन्तम् अरिष्टनेमिम्
तिक्खुत्तो आयाहिण पयाहिणं करेइ,	त्रि·कृत्वा आदक्षिणप्रदक्षिणां करोति,
करित्ता, वंदइ, णमसइ,	कृत्वा वंदते, नमस्यति,
वंदित्ता णमंसित्ता एव वयासी -	वंदित्वा नमस्यित्वा एवमवादीत्
इच्छामि ण भन्ते !	इच्छामि खलु भदन्त !
तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे	युष्माभिः अभ्यनुज्ञात सन्
मासिय भिक्खुपडिमं	मासिकीम् भिक्षुप्रतिमाम्

[हिन्दी छाया]

निर्ग्रन्थ प्रवचन को अपने आगे रखकर विचरते है ।
इसके बाद निश्चय ही गौतम अरणगार ने अन्य किसी दिन
अर्हन्त अरिष्टनेमि भगवान् के तथा-रूप (गुरणसम्पन्न गीतार्थ) स्थविरो के पास सामायिक आदि ११ अंगो का अध्ययन किया ।
अध्ययन करके बहुत से उपवासादि द्वारा यावत् अपनी आत्मा को भावित करते हुए विहार करने लगे ।
तदनन्तर निश्चय से अर्हन्त अरिष्टनेमि ने अन्यदा किसी दिन द्वारिकानगरी के नन्दनवन उद्यान से प्रस्थान किया, प्रस्थान करके बाहर जनपद मे विचरने लगे ।

[हिन्दी अर्थ]

वे ईर्या समिति आदि गुरणो वाले यावत् इसी वीतराग निर्ग्रन्थ शासन को अपने आगे रखकर भगवान की आज्ञाओ का पालन करते हुए विचरने लगे ।

तदनन्तर उन गौतम अरणगार ने अन्य किसी दिन अरिहन्त अरिष्टनेमि भगवान् के गुण सम्पन्न गीतार्थ स्थविरो के पास, सामायिक आदि ग्यारह अगो का अध्ययन किया । अध्ययन करके वहुत से उपवास आदि तपश्चरण द्वारा अपनी आत्मा को भावित करते हुए एव उसकी शुद्धि करते हुए वे ग्रामानुग्राम विहार करने लगे ।

तत्पश्चात् अरिहन्त अरिष्टनेमि भगवान् ने अन्यदा किसी दिन उस द्वारिका नगरी के नन्दनवन नामक उद्यान से प्रस्थान किया । वहा से प्रस्थान करके वाहर जनपद मे विचरण करने लगे ।

सूत्र ८

इसके बाद वह गौतम अणगार अन्यदा किसी दिन जहां अरिहन्त अरिष्टनेमि थे वहीं आये ।
आकर (उन्होने) अरिहन्त अरिष्टनेमि को ३ बार दक्षिण–तरफ से प्रदक्षिणा की ।
प्रदक्षिणा करके वन्दन नमस्कार किया ।
वन्दन नमस्कार करके ऐसे बोले—
"हे भगवन् ! मै चाहता हूं आपकी आज्ञा प्राप्त होने पर मासिकी भिक्षु प्रतिमा

इसके वाद वह गौतम अणगार अन्यदा किसी दिन जहा अरिहन्त भगवान् अरिष्टनेमि थे वहा आये । वहा आकर उन्होने अरिहन्त अरिष्टनेमि (नेमिनाथ) को तीन वार दक्षिरण की तरफ से प्रदक्षिणा की। प्रदक्षिरणा करके वन्दन नमस्कार किया । वन्दन नमस्कार करके वे प्रभु से इस प्रकार

[मूल सूत्र पाठ]

उवसपज्जित्ताणं विहरित्तए ।
एवं जहा खदओ,
तहा बारस भिक्खुपडिमाओ फासेइ,
फासित्ता गुणरयणं वि
तवोकम्मं तहेव फासेइ,
णिरवसेस जहा खंदओ
तहा चितइ, तहा आपुच्छइ,
तहा थेरेहिं सद्धि
सेत्तुंज दुरूहइ,
मासियाए सलेहणाए बारस वरिसाइं
परियाए जाव सिद्धे ।

[सस्कृत छाया]

उपसंपद्य विहर्तुम् ।
एवं यथा स्कंदकः
तथा द्वादश भिक्षुप्रतिमाः स्पृशति
स्पृष्ट्वा गुणरत्नमपि
तपः कर्म तथैव स्पृशति,
निरवशेषं यथा स्कन्दकः
तथा चिन्तयति, तथा आपृच्छति,
तथा स्थविरैः सार्द्धम्
शत्रुञ्जयं दुरोहति
मासिक्या संलेखनया द्वादश वर्षाणि
पर्यायः (दीक्षाकालः) यावत् सिद्धः ।

सूत्र ६

एवं खलु जम्बू !
समणेणं जाव संपत्तेणं
अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं
पढमस्स वग्गस्स पढमस्स अज्झयणस्स
अयमट्ठे पण्णत्ते ।

एवं खलु जंबू !
श्रमणेन यावत् संप्राप्तेन
अष्टमस्य अंगस्य अन्तकृद्दशानाम्
प्रथमस्य वर्गस्य प्रथमस्य अध्ययनस्य
अयमर्थः प्रज्ञप्तः ।

प्रथमोऽध्यायः समाप्तः

[हिन्दी छाया]

अंगीकार करके विचरण करूं ।"
इस प्रकार जैसे स्कंधक ने साधन किया,
वैसे ही बारह भिक्षु प्रतिमाओ का
(गौतम ने भी) समाराधन किया ।
आराधन करके गुण रत्न नामक
तप का भी वैसे ही आराधन किया ।
पूर्ण रूपेण स्कन्धक की तरह ही
चितन किया, भगवान् से पूछा
तथा स्थविर मुनियो के साथ
वैसे ही शत्रुंजय पर्वत पर चढ़े ।
१ मास की संलेखणा से १२ वर्ष की
दीक्षा पर्याय पूर्ण करके यावत् सिद्ध हुए ।

[हिन्दी अर्थ]

बोले —"हे भगवन् ! मै चाहता हू कि आपकी आज्ञा प्राप्त करके मै मासिकी भिक्षु-पडिमा को अगीकार करके विचरण करू ।"

इस प्रकार जैसे स्कन्धक मुनि ने साधना की वैसे ही मुनि गौतमकुमार ने भी बारह भिक्षु पडिमाओ का आराधन करके गुणरत्न नामक तप का भी उसी प्रकार आराधन किया ।

सम्पूर्ण रूप से मुनि स्कन्धक की तरह ही मुनि गौतमकुमार ने भी वैसा ही चिन्तन किया और उसी प्रकार भगवान् से पूछा तथा स्थविर मुनियो के साथ वैसे ही जैसे मुनि स्कन्धक ने किया वे भी शत्रुजय पर्वत पर चढे । पर्वत पर चढकर उन्होने एक मास की सलेखणा की एव इस सलेखणापूर्वक १२ वर्ष की अपनी दीक्षा पर्याय पूर्ण करके यावत् सिद्ध हुए ।

सूत्र ६

"इस प्रकार निश्चय से हे जम्बू !
श्रमण यावत् मोक्ष को प्राप्त प्रभु ने
आठवें अंग अन्तगडदशा के
प्रथम वर्ग के प्रथम अध्ययन का
यह भाव फरमाया है ।

आर्यसुधर्मा -"इस प्रकार हे जम्बू! श्रमण भगवान् यावत् मोक्ष प्राप्त प्रभु ने आठवे अगशास्त्र अन्तगडदशा के प्रथम वर्ग के प्रथम अध्ययन का यह भाव कहा है ।"

प्रथम अध्ययन समाप्त

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
एव जहा गोयमो तहा सेसा	एवं यथा गौतमः तथा शेषाणि
वण्ही पिया, धारिणी माया	वृष्णिः पिता धारिणी माता
समुद्दे सागरे गंभीरे थिमिए	समुद्रः सागर गम्भीरः स्तिमितः
अयले कपिल्ले अक्खोभे	अचल काम्पिल्यः अक्षोभः
पसेणई विण्हु एए एगगमा	प्रसेनजित् विष्णुः एते एकगमाः
पढमो वग्गो, दस अज्झयणा पण्णत्ता ।	प्रथमः वर्गः दश अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि ।

दो से दस अध्ययन समाप्त
प्रथम वर्ग समाप्त

द्वितीय वर्ग–सूत्र १

जइ ण भंते !	यदि खलु भदन्त !
समणेण जाव संपत्तेण पढमस्स	श्रमणेन यावत् संप्राप्तेन प्रथमस्य
वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते,	वर्गस्य अयमर्थः प्रज्ञप्तः,
दोच्चस्स ण भन्ते !	द्वितीयस्य खलु भदन्त !
वग्गस्स अंतगडदसाणं	वर्गस्य अन्तकृद्दशानाम्
समणेण जाव संपत्तेणं	श्रमणेन यावत् सप्राप्तेन
कई अज्झयणा पण्णत्ता ?	कति अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि ?
एवं खलु जंबू !	एवं खलु जम्बू !
समणेण जाव संपत्तेणं	श्रमणेन यावत् (मुक्ति) संप्राप्तेन
अट्ठ अज्झयणा पण्णत्ता	अष्टौ अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि
तं जहा—गाहा–	तानि यथा—गाथा–
अक्खोभे सागरे खलु	अक्षोभ. सागरः खलु
समुद्द हिमवंत अयल णामे य !	समुद्रः हिमवन्तः अचल नामाश्च !
धरणे य पूरणे वि य	धरणश्च पूरणोऽपि च
अभिचंदे चेव अट्ठमए	अभिचन्द्रश्चैव अष्टमकः

[हिन्दी छाया]

इस प्रकार जैसे गौतम वैसे बाकी के
वृष्णि पिता, धारिणी माता
समुद्र, सागर, गम्भीर, स्तिमित,
अचल, काम्पिल्य, अक्षोभ,
प्रसेनजित, विष्णु ये सब एक समान है
(इस प्रकार) प्रथम वर्ग और उसके
दस अध्ययन कहे गये है।

[हिन्दी अर्थ]

इस प्रकार मुनि गौतम कुमार की तरह शेष ९ अध्ययन भी समझने चाहिये। सब के पिता वृष्णि एव माता धारिणी थी। उनके नाम इस प्रकार है —

"२. समुद्रकुमार, ३ सागरकुमार, ४ गम्भीर कुमार, ५ स्तिमित कुमार, ६ अचल कुमार, ७ काम्पिल्य कुमार, ८ अक्षोभ कुमार, ९ प्रसेनजित, १० विष्णु कुमार"।

ये सब अध्ययन एक समान है। आगे का सबका वर्णन गौतम कुमार मुनि की तरह है। इस तरह यह प्रथम वर्ग और उसके दस अध्ययन कहे गये है।

दो से दस अध्ययन समाप्त

प्रथम वर्ग समाप्त

द्वितीय वर्ग–सूत्र १

"यदि निश्चय करके हे पूज्य !
श्रमण यावत् मोक्ष प्राप्त प्रभु ने पहले
वर्ग का यह भाव कहा है
तो भदन्त ! दूसरे
अन्तगडदशांग के वर्ग के
श्रमण यावत् मोक्ष प्राप्त प्रभु ने
कितने अध्ययन प्रतिपादित किये है?
निश्चय करके हे जम्बू !
श्रमण यावत् मोक्ष प्राप्त प्रभु ने
आठ अध्ययन कहे हैं।
वे इस प्रकार हैः—गाथा–
१ अक्षोभ २ सागर
३. समुद्र ४. हिमवन्त ५ अचल
६ धरण ७ पूरण
८. अभिचन्द्र।"

जम्बू स्वामी बोले—"हे पूज्य ! श्रमण यावत् मुक्ति प्राप्त प्रभु ने प्रथम वर्ग का यह वर्णन किया है। अब हे भगवन् ! अतगडदशा के दूसरे वर्ग मे श्रमण भगवान् महावीर ने कितने अध्ययन फरमाये है ?"

आर्य सुधर्मा श्रीमुख से कहते हैं–"इस प्रकार हे जम्बू ! श्रमण यावत् मुक्ति प्राप्त प्रभु ने दूसरे वर्ग के आठ अध्ययन फरमाये है, जैसे कि – प्रथम अक्षोभ कुमार, दूसरे सागर, तीसरे समुद्र, चौथे हिमवान और पाचवे अचल कुमार, छठे धरण, सातवें पूरण और आठवे अभिचन्द्र होते है।"

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
तेणं कालेणं तेणं समयेणं	तस्मिन् काले तस्मिन् समये
बारवईए णयरीए वण्ही पिया	द्वारावत्यां नगर्यां वृष्णिः पिता
धारिणी माया ।	धारिणी माता ।
जहा पढमो वग्गो,	यथा प्रथमः वर्गः
तहा सव्वे अट्ठ अज्झयणा ।	तथा सर्वाणि अष्ट अध्ययनानि ।
गुणरयण तवोकम्म,	गुणरत्नं तपः कर्म
सोलस वासाइ परियाओ	षोडश वर्षाणि (दीक्षा) पर्याय :
सेत्तुंजे मासियाए सलेहणाए	शत्रुंजये (पर्वते) मासिक्या संलेखनया
जाव सिद्धा ।	यावत् सिद्धाः ।
एवं खलु जंबू !	एवं खलु जम्बू !
समणेणं जाव संपत्तेणं	श्रमणेन यावत् संप्राप्तेन
अट्ठमस्स अगस्स	अष्टमस्य अंगस्य
दोच्चस्स वग्गस्स	द्वितीयस्य वर्गस्य
अयमट्ठे पण्णत्ते ।	अयमर्थः प्रज्ञप्तः ।

इति द्वितीय वर्गः

अथ तृतीय वर्ग–सूत्र १

जइ णं भन्ते !	यदि खलु भदन्त !
समणेण जाव संपत्तेणं	श्रमणेन यावत् संप्राप्तेन
अट्ठमस्स अंगस्स दोच्चस्स वग्गस्स	अष्टमस्य अंगस्य द्वितीयस्य वर्गस्य
अयमट्ठे पण्णत्ते,	अयमर्थः प्रज्ञप्तः,
तच्चस्स ण भन्ते ! वग्गस्स	तृतीयस्य खलु भदन्त ! वर्गस्य
समणेण जाव सपत्तेणं	श्रमणेन यावत् संप्राप्तेन
के अट्ठे पण्णत्ते ?	कः अर्थः प्रज्ञप्तः ?

[हिन्दी छाया]

उस काल उस समय
द्वारिका नगरी मे वृष्णि (राजा) पिता थे
और धारिणी रानी माता थी।
जैसे प्रथम वर्ग
वैसे सभी आठ अध्ययन।
(सभी ने) गुणरत्न तप किया,
सोलह वर्ष की दीक्षा पर्याय पाली,
शत्रुंजय पर मासिकी संलेखना की,
और यावत् सिद्ध हुए।
इस प्रकार निश्चय करके हे जम्बू !
श्रमण यावत् मोक्ष-प्राप्त प्रभु ने
(इस) आठवें अंग शास्त्र के
दूसरे वर्ग का
यह भाव कथन किया है।

[हिन्दी अर्थ]

उस काल उस समय मे द्वारिका नगरी मे इन आठो कुमारो के वृष्णि राजा पिता और धारिणी माता थी। जिस प्रकार प्रथम वर्ग कहा, उसी प्रकार ये सभी आठो अध्ययन समझने चाहिये।

इन सभी ने गुणरत्न सवत्सर तप किया। सोलह वर्ष का चारित्र पालन कर, शत्रुजय पर्वत पर एक मास की सलेखणा से यावत् सिद्ध हुए।

इस प्रकार हे जम्बू ! श्रमण यावत् मुक्ति प्राप्त प्रभु ने आठवे अग शास्त्र अतगडदशा के दूसरे वर्ग का यह भाव श्रीमुख से कहा है।

आठ अध्ययन समाप्त

द्वितीय वर्ग समाप्त

तृतीय वर्ग—सूत्र १

(आर्य जम्बू) "यदि निश्चय करके
हे पूज्य !
श्रमण यावत् मोक्ष प्राप्त प्रभु ने
आठवें अंग शास्त्र के दूसरे वर्ग का
यह भाव कथित किया है (तो)
हे पूज्य (अब) तीसरे वर्ग का
श्रमण यावत् मोक्ष प्राप्त प्रभु ने
क्या भाव कहा है ?"

आर्य जम्बू – "हे पूज्य ! श्रमण यावत् मुक्ति प्राप्त प्रभु ने आठवे अग अतकृद्दशा के दूसरे वर्ग का यह भाव कहा है। अब हे पूज्य ! तीसरे वर्ग का श्रमण भगवान् महावीर यावत् मुक्ति-प्राप्त प्रभु ने क्या भाव कहा है ?

[मूल सूत्र पाठ]

एव खलु जंबू !
समणेणं जाव संपत्तेणं
अट्ठमस्स अंगस्स तच्चस्स वग्गस्स
अंतगडदसाणं
तेरस अज्झयणा पण्णत्ता,
तंजहा—
अणीयसेणे, अणतसेणे,
अजियसेणे, अणिहयरिऊ,
देवसेणे, सत्तुसेणे, सारणे,
गए, सुमुहे, दुम्मुहे,
कूवए, दारुए, अणादिट्ठी ।

जइ ण भन्ते !
समणेण जाव संपत्तेणं अट्ठमस्स
अगस्स अतगडदसाण
तच्चस्स वग्गस्स तेरस
अज्झयणा पण्णत्ता,
त जहा—
अणीयसेणे जाव अणादिट्ठी,
पढमस्स ण भन्ते !
अज्झयणस्स अतगडदसाणं
समणेण जाव सपत्तेण
के अट्ठे पण्णत्ते ?

[सस्कृत छाया]

एवं खलु जम्बू !
श्रमणेन यावत् संप्राप्तेन
अष्टमस्य अंगस्य तृतीयस्य वर्गस्य
अन्तकृद्दशानाम्
त्रयोदश अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि,
तानि यथा—
अनीकसेन , अनन्तसेनः,
अजितसेनः, अनिहतरिपुः,
देवसेनः, शत्रुसेनः, सारणः,
गजः, सुमुखः, दुर्मुखः,
कूपक , दारुक , अनादृष्टिः ।

यदि खलु भदन्त !
श्रमणेन यावत् संप्राप्तेन अष्टमस्य
अंगस्य अन्तकृद्दशानाम्
तृतीयस्य वर्गस्य त्रयोदशानि
अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि,
तानि यथा—
अनीकसेनः यावत् अनादृष्टिः,
प्रथमस्य खलु भदन्त !
अध्ययनस्य अन्तकृद्दशानाम्
श्रमणेन यावत् सप्राप्तेन
कः अर्थः प्रज्ञप्त ?

[हिन्दी शब्दार्थ]

इस प्रकार निश्चय करके हे जम्बू !
श्रमण यावत् मोक्ष प्राप्त (प्रभु) ने
आठवें अंग के तृतीय वर्ग के
अन्तगडदशा के
तेरह अध्ययन कहे है।

जो इस प्रकार है—
१ अनीक सेन २ अनन्त सेन
३ अजितसेन ४ अनिहत रिपु
५. देवसेन ६ शत्रुसेन ७ सारण
८. गज सुकुमाल ९. सुमुख १० दुर्मुख
११. कूपक १२. दारुक १३. ादृष्टि

यदि निश्चय ही हे भदन्त !
श्रमण यावत् मुक्त (प्रभु) ने आठवें
अंग अन्तगडदशा के
तृतीय वर्ग के तेरह
अध्ययन कहे है,

जो इस प्रकार हैं—
अनीक सेन से लेकर अनादृष्टि तक
(तो) हे भदन्त! प्रथम का
अन्तगडदशांग के अध्ययन का
श्रमण यावत् मोक्ष प्राप्त (प्रभु) ने
क्या भाव प्रतिपादित किया है ?

[हिन्दी अर्थ]

श्री सुधर्मा स्वामी–"हे जम्बू ! श्रमण भगवान् महावीर स्वामी ने आठवे अग शास्त्र अन्तगडदशा के तीसरे वर्ग मे तेरह अध्ययनो का वर्णन किया है। वे इस प्रकार है—

१ अनीक सेन २ अनन्त सेन ३ अजित सेन ४ अनिहत रिपु ५. देव सेन ३ शत्रु सेन ७ सारण ८ गज सुकुमाल ९ सुमुख १० दुर्मुख ११ कूपक १२ दारुक और १३ अनादृष्टि।"

श्री जम्बू स्वामी–"यदि निश्चय ही हे भगवन् ! श्रमण यावत् मोक्ष प्राप्त प्रभु महावीर ने आठवे अग शास्त्र अन्तगडदशा के तीसरे वर्ग मे "अनिकसेन से अनादृष्टि तक" तेरह अध्ययन कहे है तो हे भगवन् ! इस तीसरे वर्ग मे श्रमण भगवान् महावीर स्वामी ने प्रथम अध्ययन का क्या भाव प्रतिपादित किया है ?"

[मूल सूत्र पाठ]	[सस्कृत छाया]
सूत्र २	
एवं खलु जंबू !	एवं खलु जंबू !
तेण कालेण तेणं समएणं	तस्मिन् काले तस्मिन् समये
भद्दिलपुरे णामं णयरे होत्था,	भद्दिलपुरं नाम नगरं अभवत् ।
रिद्धत्थिमिय समिद्धे, वण्णओ ।	ऋद्धस्तिमितसमृद्धं, वर्णकः ।
तस्सणं भद्दिलपुरस्स णयरस्स बहिया	तस्य खलु भद्दिलपुरस्य नगरस्य बहिः
उत्तर पुरत्थिमे दिसिभाए	उत्तर पौरस्त्ये दिग्भागे
सिरोवणे णामं उज्जाणे होत्था,	श्रीवन नाम उद्यानं अभवत्,
वण्णओ । जियसत्तू राया ।	वर्णकः । जितशत्रु नाम राजा
तत्थणं भद्दिलपुरे णयरे णागे	तत्र खलु भद्दिलपुरे नगरे नाग
णामं गाहावई होत्था,	नाम गाथापतिः अभवत् ।
अड्ढे जाव अपरिभूए ।	आढ्यो यावत् अपरिभूतः
तस्सण णागस्स गाहावइस्स सुलसा	तस्य खलु नागस्य गाथापतेः सुलसा
णामं भारिया होत्था,	नाम भार्या अभवत्,
सुकुमाला जाव सुरूवा ।	सुकुमारा यावत् सुरूपा ।
तस्स णं णागस्स गाहावइस्स	तस्य खलु नागस्य गाथापतेः
पुत्ते सुलसाए भारियाए अत्तए	पुत्र सुलसाया भार्यायाः आत्मजः
अणीयसेणे णामं कुमारे होत्था,	अनीकसेन नाम कुमारः आसीत्,
सुकुमाले जाव सुरूवे ।	सुकुमारः यावत् सुरूपः ।
पंचधाई–परिक्खित्ते । तंजहा	पञ्चधात्री परिक्षिप्त । तद् यथा
खीरधाई, मज्जण धाई, मडण धाई,	क्षीरधात्री, मज्जन धात्री, मण्डन धात्री,
कीलावण धाई, अंक धाई ।	क्रीडनधात्री, अङ्कधात्री ।
जहा दढपइण्णे जाव	यथा दृढप्रि : यावत्
गिरिकन्दर–मल्लीणेव चंपकवर–पायवे	गिरिकन्दरासीन चंपक वर पादप इव
सुहंसुहेणं परिवड्ढइ ।	सुखंसुखेन परिवर्द्धते ।
सूत्र ३	
तएणं तं अणीयसेणं कुमारं	ततः खलु तं अनीकसेनं नाम कुमारं
साइरेगं अट्ठवास–जायं	सातिरेकं अष्टवर्ष जातम्

[हिन्दी शब्दार्थ]

इस प्रकार निश्चय से हे जम्बू !
उस काल मे और उस समय मे
'भद्दिलपुर' नाम का नगर था, (जो)
ऋद्ध, स्तिमित, समृद्ध व वर्णनीय था।
उस भद्दिलपुर नगर के बाहर
उत्तरपूर्व दिशा (ईशानकोण) मे
श्रीवन नाम का उद्यान था,
वर्णनीय, (वहाका) जितशत्रु राजा था।
उस भद्दिलपुर नगर मे नाग
नाम का गाथापति था, (जो)
आढ्य यावत् अपरिभूत था।
उस नाग गाथापति की सुलसा
नाम की स्त्री थी,
(जो) सुकुमार यावत् सुरूपवती थी।
उस नाग गाथापति के
पुत्र सुलसा पत्नी की कुक्षी से
अनिकसेन नाम का कुमार था,
(जो) सुकोमल यावत् रूपवान था।
पांच धायमाताओ से घिरा
हुआ प्रतिपालित था। वे ये हैं:—
क्षीरधात्री, मज्जनधात्री, मंडनधात्री,
क्रीड़नधात्री, अंकधात्री।
जैसे दृढप्रतिज्ञ उसी प्रकार यावत्
गिरिकन्दरा मे लीन चम्पक वृक्ष के समान
सुखपूर्वक बढने लगा

[हिन्दी अर्थ]

श्री सुधर्मा—"हे जम्बू ! उस काल उस समय मे 'भद्दिलपुर' नाम का नगर था। वह नगर उत्तम नगरो के सभी गुणो से युक्त धन-धान्यादि से परिपूर्ण, भय रहित एव भवनादि से समृद्ध वर्णन करने योग्य था।

उस भद्दिलपुर नगर के बाहर ईशान कोण मे श्रीवन नाम का उद्यान था। वह फलदार व फूलो से वेष्ठित वृक्षो से युक्त था। वहा 'जितशत्रु' राजा राज करता था। उस नगर मे 'नाग' नाम का गाथापति रहता था। वह अत्यन्त समृद्धिशाली और अपरिभूत यानि जिसका कोई अपमान नही कर सके, ऐसा था।

उस नाग गाथापति के सुलसा नाम की भार्या थी। जो सुकुमाल यावन् अत्यन्त रूपवती थी।

उस नाग गाथापति का पुत्र और सुलसा भार्या का अगज अनीकसेन नाम का कुमार था। वह सुकोमल यावत् शरीर से रूपवान् था। पाच धाय-माताओ से घिरा रहता था, जो उसका लालन पालन करती थी।

जैसे—१ क्षीर धात्री यानि दूध पिलाने वाली धाय, २ मज्जनधात्री-स्नान कराने वाली धाय, ३ मडनधात्री-अलकार कराने वाली धाय, ४ क्रीडा धात्री-क्रीडा यानि खेल खिलाने वाली धाय, और ५ अक धात्री-गोद मे खिलाने वाली धाय। दृढ प्रतिज्ञ कुमार के समान यावत् पहाडी गुफा मे लीन-सुरक्षित चपक वृक्ष के समान वह सुखपूर्वक बढने लगा।

सूत्र ३

तदनन्तर उस अनिकसेन कुमार को
साधिक आठ वर्ष का हुआ जानकर

[मूल सूत्र पाठ]	[सस्कृत छाया]
अम्मापियरो कलायरिय जाव	अम्बापितरौ कलाचार्यः यावत्
भोगसमत्थे जाए यावि होत्था ।	भोग समर्थो जातश्चापि आसीत् ।
तएणं तं अणीयसेणं कुमार	ततः खलु तं अनीकसेनं कुमारं
उम्मुक्क–बालभावं जाणित्ता	उन्मुक्तबालभावं
अम्मापियरो सरिसयाणं	अम्बापितरौ सदृशीनां
सरिसवयाण, सरिसत्तयाणं,	सदृशवयस्कानां, सदृशत्वचाम्
सरिसलावण्ण रूवजोवण्ण गुणोव	सदृशलावण्यरूपयौवनगुणोप–
–वेयाणं, सरिसेहिंतो कुलेहिंतो	पेताना, सदृशेभ्यः कुलेभ्यः
आणिल्लियाणं बत्तीसाए	आनीताना द्वात्रिंशत्
इब्भवरकण्णगाणं	इभ्यवरकन्यकानां
एग दिवसेणं पाणिं गिण्हावेंति ।	एकदिवसे खलु पाणिं ग्रहणं कुर्वावन्ति ।

सूत्र ४

तएणं से णागे गाहावई	ततः खलु स नागः गाथापति
अणीयसेणस्स कुमारस्स इमं	अनीकसेनाय कुमाराय इदं
एयारूवं पीइदाण दलयइ, तं जहा—	एतद् रूपं प्रीतिदानं ददाति, तद्यथा—
बत्तीसं हिरण्ण कोडीओ जहा	द्वात्रिंशत् हिरण्य कोटिक यथा
महब्बलस्स जाव उप्पिपासायवरगए	महाबलस्य यावत् उपरिप्रासादवरगते
फुट्टमाणेहिं मुइंगमत्थएहिं	स्फुटद्भिः मृदंगमस्तकैः (ताड्यमानै)
भोगभोगाइं, भुंजमाणे विहरइ ।	भोगभोगान् भुँजानः विहरति ।
तेणं कालेणं तेणं समएणं	तस्मिन् काले तस्मिन् समये
अरहा अरिट्ठणेमी जाव समोसढे,	अर्हन् अरिष्टनेमी यावत् समवसृतः,
सिरिवणे उज्जाणे अहापडिरूवं	श्रीवने उद्याने यथाप्रतिरूपम्
उग्गह जाव विहरइ ।	अवग्रहम् यावत् विहरति ।
परिसा णिग्गया ।	परिषद् निर्गता ।
तते णं तस्स अणीयसेणस्स कुमारस्स	ततः खलु तस्य अनीकसेनस्य कुमारस्य

[हिन्दी शब्दार्थ]

मातापितानेकलाचार्यके पास भेजा यावत् भोग समर्थ युवावस्था सम्पन्न हुआ। तब उस अनिकसेन कुमार को बालभाव से मुक्त जानकर (उसके) माता पिता (उस) सरीखी समान वयवाली, समान त्वचावाली, समान लावण्य-रूप-यौवन-गुण सम्पन्न, समान कुलवाली आनीत (लाई गई), बत्तीस श्रेष्ठ इभ्य सेठो की कन्याओ के साथ एक ही दिन मे पाणिग्रहण करवाते है।

[हिन्दी अर्थ]

इस तरह अनीकसेन कुमार को आठ वर्ष से अधिक वय का होने पर माता पिता ने कलाचार्य के पास भेजा, यावत् वह भोग समर्थ युवावस्था को प्राप्त हुआ।

तब उस अनीकसेन कुमार को माता-पिता ने उन्मुक्त बालभाव-अर्थात् युवावस्था मे प्रविष्ट हुआ जानकर, उसके अनुरूप समान वय वाली, समान त्वचा और समान रूप लावण्य तथा तारुण्य गुण वाली, अपने समान कुलो से लाई गई बत्तीस इभ्य श्रेष्ठियो की कन्याओ के साथ उसका एक ही दिन मे पाणिग्रहण सस्कार करवाया।

सूत्र ४

[हिन्दी शब्दार्थ]

तब वह नाग गाथापति अनिकसेन कुमार के लिए एक इस प्रकार का प्रीतिदान देता है। जैसे बत्तीस करोड़ चांदी सोना आदि जैसा महाबल के प्रकरण में उल्लेख है।

यावत् श्रेष्ठ भवन मे ऊपर बजते हुए मृदंग यन्त्रो के साथ भोग भोगताहुआ (वह) विचरने लगा। उस काल उस समय मे अरिहन्त अरिष्टनेमि यावत् पधारे, (और) श्रीवन उद्यान मे यथा विधि अवग्रह आदि की आज्ञा लेकर यावत् विचरने लगे।

परिषद् आई।

तब उस अनिकसेन कुमार ने

[हिन्दी अर्थ]

पाणिग्रहण कराने के पश्चात् उस नाग गाथापति ने अनीकसेन कुमार को इस प्रकार का प्रीति-दान दिया, जैसे कि बत्तीस करोड चादी, सोना आदि।

इसका विवरण महाबल के समान समझना।

यावत् अनिक सेन ऊपर प्रासाद मे बजती हुई मृदङ्गो की तालो केसाथ उत्तम भोगो को भोगते हुए रहने लगा।

उस काल उस समय मे अरिहत अरिष्ट-नेमि यावत् भद्दिलपुर पधारे।

श्रीवन नाम के उद्यान मे यथाविधि अवग्रह-तृणादि की आज्ञा लेकर यावत् विचरने लगे।

धर्म श्रवण करने परिषद् आई।

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
तं महया जणसद्दं जहा गोयमे तहा,	तं महज्जनशब्दं यथा गौतमस्तथा,
णवर सामाइयमाइयाइं	विशेषेण सामायिकादीनि
चोद्दस पुव्वाइं अहिज्जइ।	चतुर्दश पूर्वाणि अधीते।
वीसं वासाइ परियाओ,	विंशति वर्षाणि दीक्षापर्यायः,
सेसं तहेव जाव सेत्तुंजे पव्वए	शेषं तथैव यावत् शत्रुञ्जये पर्वते
मासियाए संलेहणाए जाव सिद्धे।	मासिक्या संलेखनया यावत् सिद्ध।
एवं खलु जम्बू!	एवं खलु जम्बू!
समणेणं जाव सपत्तेणं अट्ठमस्स	श्रमणेन यावत् संप्राप्तेन अष्टमस्यांगस्य
अंगस्स गडदसाणं तच्चस्स वग्गस्स	अंतकृद्दशानां तृतीयस्य वर्गस्य
पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते।	प्रथमस्य अध्ययनस्य र्थः प्रज्ञप्तः।

इति प्रथमं अध्ययनम्

सूत्र ५

जहा अणीयसेणे, एवं सेसावि—	यथा अनीकसेनः, एवं शेषान्यपि—
[अणतसेणे अजयसेणे अणिहयरिऊ देवसेणे सत्तुसेणे]	२ अनंतसेनः, ३. अजितसेन, ४. अनिहतरिपुः, ५.देवसेनः, ६ शत्रुसेनः।
छ अज्झयणा एगगमा—वत्तीसओ दाओ,	षडध्ययनानि एकगमानि, द्वात्रिंशत् दायः
वीसं वासाइ परियाओ,	विंशति वर्षाणि दीक्षापर्याय
चोद्दस पुव्वाइं अहिज्जंति,	चतुर्दशपूर्वाणि अधीयते,
सेत्तुंजे जाव सिद्धा।	शत्रुञ्जये यावत् सिद्धाः।
छट्ठमज्झयणं समत्तं।	षष्ठमाध्ययनं समाप्तम्।

इति दो से छ अध्ययन

[हिन्दी शब्दार्थ]	[हिन्दी अर्थ]
जन समुदाय का कोलाहल सुनकर 'गौतम' की तरह दीक्षादि ली । विशेष रूप से सामायिक आदि चौदह पूर्व का ज्ञान सीखा । बीस वर्ष की दीक्षा पर्याय पाली । शेष उसी प्रकार यावत् शत्रुंजय पर्वत पर १मासकीसंलेखणाकरके यावत् सिद्धहुए ।	तदनन्तर उस अनीकसेन कुमार के कर्ण रन्ध्रो मे प्रभु दर्शनार्थ जाते हुए जन समूह का विपुल जनरव पडा । गौतम के समान कुमार अनीकसेन ने भी समवसरण मे जा, प्रभु का उपदेश सुन, माता पिता की आज्ञा ले प्रभु चरणो मे दीक्षा ग्रहण की । विशेष यह कि सामायिक आदि १४ पूर्वो का ज्ञान सीखा । २० वर्ष की श्रमण पर्याय का पालन किया । शेष उसी प्रकार यावत् शत्रु जय पर्वत पर जाकर एक मास की सलेखणा करके यावत् सिद्ध हुए ।
इस प्रकार हे जम्बू ! श्रमण यावत् मुक्ति प्राप्त प्रभु ने आठवें अंग अन्तकृद्दशा के तीसरे वर्ग के प्रथम अध्ययन का यह भाव दर्शाया है ।	उपसहार—इस प्रकार हे जम्बू ! श्रमण यावत् मुक्ति प्राप्त प्रभु ने आठवे अतगडदशा नामक अ ग शास्त्र के तीसरे वर्ग मे प्रथम अध्ययन का इस भाति वर्णन किया है ।"

तीसरे वर्ग का प्रथम अध्ययन समाप्त

सूत्र ५

जैसे अनिकसेन वैसे शेष दूसरे भी । जैसे (अनन्तसेन, अजितसेन, अनिहतरिपु, देवसेन शत्रुसेन) ये छ अध्ययन एक समान है । (सबने) बत्तीस करोड़ का दहेज (लेकर), बीस वर्ष की दीक्षा पर्याय पालनकर चौदह पूर्वों का अध्ययन किया एवं शत्रुंजय पर्वत पर यावत् सिद्ध हुए ।	जिस प्रकार अनीकसेन कुमार का वर्णन किया गया, उसी प्रकार शेष अध्ययन भी—२ अनतसेन, ३ अजितसेन, ४ अनिहतऋप ५ देवसेन और ६ शत्रुसेन— समझना । ये छ ही अध्ययन एक समान है । इन सबको भी बत्तीस २ चादी सोने का दहेज मिला । सबका २०/२० वर्ष का दीक्षा काल रहा । सबने चौदह पूर्व का अध्ययन किया एव सभी शत्रु जय पर्वत पर यावत् सिद्ध हुए ।

तीसरे वर्ग के २ से ६ अध्ययन ाप्त

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]

सातवां अध्ययन

जइणं भन्ते ! उक्खेवो सत्तमस्स ।	यदि खलु भदन्त! उत्क्षेपकः सप्तमस्य।
तेणं कालेणं तेणं समएणं	तस्मिन् काले तस्मिन् समये
वारवईए णयरीए जहा पढमे,	द्वारावत्यां नगर्यां यथा प्रथमे,
णवरं–वसुदेवे राया, धारिणी देवी,	विशेषेण वसुदेवो राजा, धारिणी देवी,
सीहो सुमिणे, सारणे कुमारे,	सिंहः स्वप्ने, सारणः कुमारः,
पण्णासओ दाओ, चोद्दस पुव्वाइं,	पंचाशत् दायः, चतुर्दश पूर्वाणि,
वीसवासाइं परियाओ,	विंशति वर्षाणि दीक्षापर्यायः,
सेसं जहा गोयमस्स जाव	शेषः यथा गौ　स्य यावत्
सेत्तु जे सिद्धे ।	शत्रुञ्जये सिद्धः ।

इति सप्तममध्ययनम्

अष्टममध्ययनम्

जइण भन्ते ! उक्खेवो अट्ठमस्स !	यदि खलु भदन्त! उत्क्षेपकः अष्टमस्य ।
एव खलु जबू! तेणं कालेणं तेणं समएण	एवं खलु जम्बू! तस्मिन्काले तस्मिन्समये
वारवईए णयरीए जहा पढमे,	द्वारावत्या नगर्या यथा प्रथमे,
जाव अरहा अरिट्ठणेमी सामी समोसढे।	यावन्नर्हन्नरिष्टनेमिः स्वामीसमवसृतः ।
तेण कालेण तेण समएणं	तस्मिन् काले तस्मिन् समये
अरहओ अरिट्ठणेमिस्स छ अंतेवासी,	अर्हतः अरिष्टनेमेः षट् अन्तेवासिनः,
छ अणगारा भायरो सहोयरा होत्था ।	षट् अनगाराः भ्रातरः सहोदराः अभवन्।
सरिसया, सरिसत्तया, सरिसव्वया,	सदृशकाः, सदृक्त्वचाः, सदृशवयस्काः,
णीलुप्पल-गवल-गुलिय	नीलोत्पल-गवलगुलिका
अयसिकुसुमप्पगासा,	अलसीकुसुमप्रकाशाः

[हिन्दी शब्दार्थ] [हिन्दी अर्थ]

सातवां अध्ययन

हे पूज्य ! सातवें का यह उत्क्षेपक है। उस काल उस समय मे द्वारिका नगरी थी। जैसे प्रथम मे। विशेष-वसुदेव राजा धारिणी रानी थी। स्वप्न मे रानी ने सिंह देखा। उनके सारण नाम का कुमार था। पचास-पचास स्वर्ण रजत कोटि का दहेज मिला। १४ पूर्व सीखे। बीस वर्ष दीक्षा पर्याय पाली। शेष गौतम की तरह यावत् शत्रुंजय पर सिद्ध हुए।

उत्क्षेपक शब्द सातवे अध्ययन का प्रारभिक वाक्य है। अर्थात् आर्य जम्बू—"हे पूज्य! श्रमणभगवान् महावीर ने छठे अध्ययन का जो भाव कहा वह सुना, अब सातवे अध्ययन का क्या अधिकार है ? कृपा कर कहिये।"

आर्य सुधर्मा—"उस काल उस समय मे द्वारिका नगरी थी। वहा का वर्णन प्रथम अध्ययन के समान समझा जाय। विशेष वहा वसुदेव राजा थे और धारिणी देवी उनकी रानी थी। देवी ने सिंह का स्वप्न देखा। उनके कु वर का नाम सारण कुमार था। उसे विवाह मे पचास पचास स्वर्ण रजत कोटि का दहेज मिला। सारण कुमार ने सामायिक आदि १४ पूर्वो का अध्ययन किया। वीस वर्ष तक दीक्षा पर्याय का पालन किया। शेष गौतम कुमार की तरह शत्रु जय पर्वत पर एक मास की सलेखना सहित यावत् सिद्ध हुए।"

सातवां अध्ययन समाप्त

आठवां अध्ययन

हे पूज्य ! यह आ ँ का उत्क्षेपक है। इस प्रकार हे जम्बू! उस काल उस समय पूर्वोक्त वर्णनवाली द्वारिका नगरी में यावत् अर्हन् अरिष्टनेमि स्वामी पधारे। उस काल उस समय मे अर्हन्त अरिष्टनेमि के छ अन्तेवासी शिष्य छ अणगार सहोदर भाई थे। वे समान आकार त्वचा रूपवय वाले थे। नील कमल, सींग की गुली, अलसी के फूल के तुल्य

आर्य जम्बू—"हे पूज्य! सातवे अध्ययन का भाव सुना, अब आठवे का क्या अधिकार है ?"

आर्य सुधर्मा—"इस प्रकार हे जम्बू! उस काल, उस समय मे द्वारिका नगरी मे प्रथम अध्ययन मे किये गये वर्णन के अनुसार यावत् अरिहत अरिष्टनेमि भगवान् पधारे।"

"उस काल और उस समय मे भगवान् नेमिनाथ के अतेवासी-शिष्य छ मुनि सहोदर भाई थे। वे समान आकार वाले, समान

[मूल सूत्र पाठ]	[सस्कृत छाया]
सिरिवच्छं-कियवच्छा	श्रीवत्साकित व :,
कुसुमकुंडल-भद्दलया, णलकुव्वरसमाणा।	कुसुमकुंडलभद्र काः नलकूवर
तएणं ते छ अणगारा जं चेव दिवसं	समानाः। ततःखलु ते षडनगाराःयस्मिन्नेव
मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारिय	दिवसे मुंडाः भूत्वा अगारात् अनगारितां
पव्वइया, तं चेव दि	जिताः, तस्मिन्नेव दिवसे
अरहं अरिट्ठणेमिं वंदति, णमंसंति,	अर्हन्तं अरिष्टनेमिं वंदन्ति नमस्यन्ति,
वदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी—	वन्दित्वा नमस्यित्वा एव अवदन्—
इच्छामो णं भन्ते ! तुब्भेहिं	इच्छामः खलु भदन्त! युष्माभिः
अब्भणुण्णाया समाणा जावज्जीवाए	अभ्यनुज्ञाताः सन्तः यावज्जीवम्
छट्ठं छट्ठेणं अणि त्तेणं तवोकम्मेणं	षष्ठ षष्ठेन अनिक्षिप्तेन तप कर्मणा
अप्पाणं भावेमाणा विहरित्तए।	आत्मानं भावयन्तः विहर्तुम्।
अहासुह देवाणुप्पिया! मा पडिबन्ध करेह	यथासुखं देवानुप्रिय! मा प्रतिबन्धं कुरुत
तएणतेछअणगारा अरहया अरिट्ठणेमिणा	:खलुतेषडनगाराः अर्हताअरिष्टनेमिना
अब्भणुण्णाया समाणा जावज्जीवाए	अभ्यनुज्ञाताः सन्तः यावज्जीवम्
छट्ठं छट्ठेणं जाव विहरंति।	षष्ठं षष्ठेन यावत् विहरन्ति।
तएण ते छ अणगारा अण्णया कयाइं	ततः खलु ते षट् अनगाराः
छट्ठक्खमणपारणगंसि पढमाए	अन्यदा कदाचित् षष्ठक्षमणपारणायाम्
पोरिसीए सज्झायं करेंति,	प्रथमाया पौरुष्या स्वाध्याय कुर्वन्ति,
जहा गोयमसामी,	यथा गौतमस्वामी,
जाव इच्छामो ण भते !	यावत् इच्छामः खलु भदन्त।
छट्ठक्खमणस्स पारणए तुब्भेहिं	षष्ठक्षपणस्य पारणाया युष्माभिः
अब्भणुण्णाया समाणा तिहिं	अभ्यनुज्ञाताः सन्तः त्रिभिः
संघाडएहिं वारवईए णयरीए	संघाटकैः द्वारावत्या नगर्याम्
जाव अडित्तए।	यावत् अटितुम्।
अहा सुहं देवाणुप्पिया !	यथा सुखं देवानुप्रिया!
तएण ते छ अणगारा	तत. खलु ते षडनगाराः

[हिन्दी शब्दार्थ]

श्रीवत्स से अंकित वक्ष वाले थे।
कुसुम तुल्य कोमल,कुंडल सम घुंघराले
बाल वाले नलकूवर के समान थे।
इसके बाद वे छ अणगार जिस दिन
आगार से अणगार धर्म मे दीक्षित
होकर प्रव्रजित हुए उसी दिन
अ० अरिष्ट० को वन्दन नमन करते है।
वन्दन नमस्कार कर वे इस प्रकार बोले-
"हे भदन्त ! हम चाहते है आपकी
आज्ञा पाकर जीवन भर के लिए
बेले-बेले का तप करते हुए एवं उससे
अपनीआतमाकोभावितकरतेहुएविहरना।"-
'हे देवानुप्रिय! तथास्तु। प्रमाद न करो।'
तब वे छ ही मुनि अर्हन्त अरिष्टनेमि की
आज्ञा पाकर जीवन पर्यन्त
बेले-बेले का तपकरते हुए विचरने लगे
तब उन छ अणगारो नेअन्यदाकिसी दिन
बेले के तप के पारणो मे प्रथम
प्रहर मे स्वाध्याय की।
गौतम कुमार की तरह
यावत् बोले "हे भगवन् ! हम चाहते हैं
बेले के तप के पारणो मे आपकी
आज्ञा पाकर तीन (दो-दो के तीन)
संघाड़ो ले द्वारिका नगरी में
यावत् भ्रमण करना।"
'तथास्तु देवानुप्रियो !'
इसके बाद वे ६ अणगार

[हिन्दी अर्थ]

त्वचा और अवस्था मे समान दिखने वाले थे, शरीर का रग नीलकमल, सीग की गुली और अलसी के फूल जैसा था। श्रीवत्स से अकित वक्ष और कुसुम के समान कोमल एव कु डल के समान घु घराले वालो वाले वे सभी मुनि नल-कूवर के समान थे।

तव (दीक्षित होने के पश्चात्) वे छहो मुनि जिस दिन मु डित होकर आगार से अणगार धर्म मे प्रव्रजित हुए, उसी दिन अरिहत अरिष्टनेमि को वदना नमस्कार कर इस प्रकार बोले —

"हे भगवन्! हम चाहते हैं कि आपकी आज्ञा पाकर जीवन पर्यन्त निरन्तर बेले२ की तपस्या द्वारा अपनी अपनी आत्मा को भावित (शुद्ध) करते हुए विचरण करे।"

प्रभु ने कहा—"हे देवानुप्रियो! जिससे तुम्हे सुख प्राप्त हो वही कार्य करो, प्रमाद मत करो।"

तब भगवान् के ऐसा कहने पर वे छहो मुनि भगवान् अरिष्टनेमि की आज्ञा पाकर जीवन भर के लिये बेले-बेले की तपस्या करते हुए यावत् विचरण करने लगे।

तदनन्तर उन छहो मुनियो ने अन्यदा किसी समय, वेले की तपस्या के पारणे के दिन प्रथम प्रहर मे स्वाध्याय की और गौतम स्वामी के समान यावत् वोले–"हे भगवन्! हम बेले की तपस्या के पारणे मे आपकी आज्ञा पाकर दो-दो के तीन सघाडो सेद्वारिका नगरी मे यावत् भिक्षा हेतु भ्रमण करना चाहते हैं।"

[मूल सूत्र पाठ]

अरहया अरिट्ठणेमिणा अब्भणुण्णाया
समाणा अरहं अरिट्ठणेमिं
वंदंति, णमंसंति, वंदित्ता,
णमंसित्ता अरहओ अरिट्ठणेमिस्स
अंतियाओ सहस्संब- वणाओ,
उज्जाणाओ पडिणि मंति
पडिणि मित्ता तिहिं संघाडएहिं
अतुरियं जाव अडन्ति ।
तत्थणं एगे संघाडए वारवईए
णयरीए उच्च-णीय मज्झि-माइं
कुलाइं घरसमुदाणस्स
भिक्खायरियाए अडमाणे
वसुदेवस्स रण्णोदेवईए देवीए
गिहं अणुप्पविट्ठे ।
तएणं सा देवई देवी
ते अणगारे एज्जमाणे
पासित्ता हट्ठ तुट्ठ चित्तमाणंदिया
पीईमाणा परमसोमणस्सिया

हरिसवसविसप्पमाणहियया
आसणाओ अब्भुट्ठेइ,
अब्भुट्ठित्ता सत्तट्ठपयाइ
अणुगच्छइ
अणुगच्छित्ता तिक्खुत्तो
आयाहिण पयाहिणं करेइ,
करित्ता वंदइ णमसइ,

[संस्कृत छाया]

अर्हता अरिष्टनेमिना अभ्यनुज्ञाताः
सन्तः अर्हन्तं अरिष्टनेमिम्
वंदन्ति, नमस्यन्ति, वन्दित्वा,
नमस्यित्वा, अर्हतः अरिष्टनेमेः
अन्तिकात् सहस्राम्रवनात्
उद्यानात् प्रतिनिष्क्रामन्ति,
प्रतिनिष्क्रम्य त्रिभिः संघाटकैः
अत्वरितं यावत् अटन्ति
खलु एकः संघाटकः द्वारावत्याम्
नगर्याम् उच्च नीच मध्यमानि
कुलानि गृहसमुदानस्य
भिक्षाचर्यायै अटन्
वसुदेवस्य राज्ञो देवक्याः देव्याः
गृहे अनुप्रविष्टः ।
ततः खलु सा देवकी देवी
तौ अणगारौ आगच्छन्तौ
दृष्ट्वा हृष्टतुष्टचित्तानन्दिता
प्रीतिमना परमसौमनस्यिता

हर्षवशविसर्पणहृदया
आसनात् अभ्युत्तिष्ठति,
अभ्युत्थाय सप्ताष्ट पदानि
अनुगच्छति ।
अनुगम्य त्रिः कृत्वा
आदक्षिणप्रदक्षिणां करोति ।
कृत्वा, वन्दति नमस्यति

[हिन्दी शब्दार्थ]

अर्हन्त अरिष्टनेमि से आज्ञा प्राप्त कर उन अर्हन्त अरिष्टनेमि भगवान को वन्दन करते है नमस्कार करते है। वन्दन नमस्कार करके अर्हन्त अरिष्टनेमि के पास से सहस्राम्र वन नामक (उस) उद्यान से वे प्रस्थान करते है।

प्रस्थान करके दो-दो मुनि तीन संघाड़ो मे त्वरा रहित यावत् भ्रमण करने लगे।

इसके बाद एक संघाड़ा द्वारिका नगरी मे ऊंच नीच मध्यम कुलों के घरो मे सामूहिक भिक्षाचरी हेतु भ्रमण करते-करते वसुदेव जी की राणी देवकी देवी के प्रासाद में प्रविष्ट हुआ।

इसके बाद उस देवकी देवी ने उन दोनो मुनियो को आते हुए देख हृष्टतुष्टचित्त व आनन्दित हुई, (उसके) मन में प्रीति हुई (तथा वह) परम सौमनस्यवती हुई।

हर्ष के कारण उसका हृदय नाचने लगा।

आसन से उठती है,

उ र, सात आठ कदम सामने जाती है

सामने जाकर तीन बार दक्षिण की तरफ से प्रदक्षिणा करती है

प्रदक्षिणा करके वन्दना नमस्कार करतीहै

[हिन्दी अर्थ]

तब उन छहो मुनियो ने अरिहत अरिष्ट-नेमि की आज्ञा पाकर प्रभु को वदन नमस्कार किया। वदन नमस्कार कर वे भगवान् अरिष्टनेमि के पास से सहस्राम्रवन उद्यान से प्रस्थान करते है। उद्यान से निकल कर वे दो दो के तीन सघाटको मे सहज गति से यावत् भ्रमण करने लगे।

उन तीन सघाटको (सघाडो) मे से एक सघाड़ा द्वारिका नगरी के ऊच-नीच-मध्यम कुलो मे, एक घर से दूसरे घर, भिक्षाचर्या के हेतु भ्रमण करता हुआ राजा वसुदेव की महारानी देवकी के प्रासाद मे प्रविष्ट हुआ।

उस समय वह देवकी रानी उन दो मुनियो के एक सघाडे को अपने यहा आते देखकर हृष्ट-तुष्ट चित्त के साथ आनन्दित हुई। प्रीतिवश उसका मन परमाह्लाद को प्राप्त हुआ, हर्षातिरेक से उसका हृदय कमल प्रफुल्लित हो उठा।

आसन से उठकर वह सात आठ पग (कदम) मुनियुगल के सम्मुख गई। सामने जाकर उसने तीन बार दक्षिण की ओर से

[मूल सूत्र पाठ]

वन्दित्ता, णमंसित्ता
जेणेव भत्तघरे तेणेव
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता
सीहकेसराणं मोयगाणं थालं
भरेइ, भरित्ता
ते अणगारे पडिलाभेइ
पडिलाभित्ता वंदइ, णमंसइ,
वन्दित्ता णमंसित्ता पडिविसज्जेइ।

[संस्कृत छाया]

वन्दित्वा नमस्यित्वा
यत्र भक्तगृहं तत्रैव
उपागच्छति, उपागत्य
सिंहकेसराणां मोदकानां स्थालं
भरति, भृत्वा
तौ   गारौ प्रतिलाभयति
प्रतिलाभ्य, वंदति, नमस्यति,
वन्दित्वा नमस्यित्वा प्रतिविसर्जयति।

सूत्र ४

तयाणंतरं च णं दोच्चे संघाडए
वारवईए णयरीए उच्च जाव
पडिविसज्जेइ।
तयाणतरं च णं तच्चे संघाडए
उच्चणीय जाव पडिलाभेइ,
पडिलाभित्ता एवं वयासी—
किण्ण देवाणुप्पिया!
कण्हस्स वासुदेवस्स इमीसे
वारवईए णयरीए
दुवालस जोयण आयामाए
णवजोयण वित्थिण्णाए
पच्चक्ख देवलोग-भूयाए
समणा णिग्गथा उच्चणीयमज्झिमाइ
कुलाइ घरसमुदाणस्स
भिक्खायरियाए अडमाणा

तदनन्तर च खलु द्वितीयः सघाटकः
द्वारावत्यां नगर्यां उच्च यावत्
प्रतिविसर्जयति।
तदनन्तरं च खलु तृतीयः संघाटकः
उच्चनीच यावत् प्रतिलाभयति,
प्रतिलाभ्य ए   अवदत्—
किं खलु देवानुप्रिया!
कृष्णस्य वासुदेवस्य अस्यां
द्वारावत्या नगर्याम्
द्वादशयोजनायामायाम्
नव योजनविस्तीर्णायाम्
प्रत्यक्षं देवलोकभूतायाम्
श्रमणाः निर्ग्रन्थाः उच्चनीचमध्यमानि
कुलानि गृहसमुदायस्य
भिक्षाचर्यायै अटन्तः

[हिन्दी शब्दार्थ]

वन्दना नमस्कार करके
जहां भोजनशाला थी वही
आती है। वहां आकर
सिंह केसर वाले लड्डुओ के थाल को
भरती है, भरकर
उन दोनो मुनियो को प्रतिलाभ देती है।
प्रतिलाभ देकर वंदना नमस्कार करती है।
वंदना नमस्कार करकेविसर्जित करती है।

[हिन्दी अर्थ]

उनकी प्रदक्षिणा की। प्रदक्षिणा कर उन्हे वन्दन-नमस्कार किया। वन्दन नमस्कार के पश्चात् जहा भोजनशाला है, वहा आई। भोजनशाला मे आकर कृष्ण के प्रसाद योग्य सिहकेसर मोदको से एक थाल भरा और थाल भर कर उन मुनियो को प्रतिलाभ दिया, प्रतिलाभ देने के पश्चात् देवकी ने उन्हे पुन वन्दन-नमन किया एव वन्दन नमन कर उन्हे प्रतिविसर्जित किया अर्थात् लौटने दिया।

सूत्र ४

इसके बाद मुनियो का दूसरा संघाडा
द्वारिका नगरी मे उच्च यावत् नीचआदि
कुलों में भ्रमण करता हुआ आया
पूर्ववत् उसको भी विसर्जित किया।
इसके बाद मुनियो का तीसरा संघाडा
आया यावत् उसे भी प्रतिलाभ देती है।
उसको प्रतिलाभ देकर इस प्रकार बोली
हे देवानुप्रिय ! क्या
कृष्ण वासुदेव की इस
द्वारा ी नगरी में
बारह योजन लम्बाई वाली
नौ योजन विस्तार वाली
प्रत्यक्ष देवलोक रूपिणी मे
श्रमण निर्ग्रन्थ ऊंचे नीचे व मध्यम
कुलो मे गृह समुदाय की
भिक्षाचर्या के लिए भ्रमण करते हुए

प्रथम सघाटक के लौट जाने के पश्चात् उन छ सहोदर साधुओ के तीन सघाटको मे से दूसरा सघाटक भी द्वारिका के उच्च-नीच-मध्यम आदि कुलो मे भिक्षार्थ भ्रमण करता हुआ महारानी देवकी के प्रासाद मे आया। देवकी ने प्रथम सघाटक की भाति दूसरे मुनि सघाटक को भी हृष्टतुष्ट हो सिंह केसर मोदको का प्रतिलाभ देकर यावत् विसर्जित किया।

द्वितीय सघाटक के लौट जाने के अनन्तर उन मुनियो का तीसरा सघाडा भी द्वारिका नगरी मे ऊच-नीच-मध्यम कुलो मे भिक्षार्थ भ्रमण करता हुआ महारानी देवकी के प्रासाद मे प्रविष्ट हुआ। देवकी ने पहले आये दो सघाटको के समान उस तीसरे सघाटक को भी हृष्ट-तुष्ट हो यावत् सिंह केसर मोदको का प्रतिलाभ दिया। प्रतिलाभ देकर महारानी देवकी इस प्रकार बोली—

"हे देवानुप्रियो ! क्या कृष्ण-वासुदेव की इस बारह योजन लम्बी, नव योजन चौडी प्रत्यक्ष स्वर्गपुरी के समान द्वारिका नगरीमे श्रमण-निर्ग्रन्थ उच्च-नीच एव मध्यम

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
भत्तपाणं णो लभंति ?	भक्तपानं न लभन्ते ?
जण्णं ताइं चेव कुलाइं	येन खलु तानि चैव कुलानि
भत्तपाणाए भुज्जो भुज्जो	भक्तपानाय भूयोभूयः
अणुप्पविसंति ।	अनुप्रविशन्ति ।

सूत्र ५

तएणं ते अणगारा	ततः खलु तौ अनगारौ
देवइं देवी एवं वयासी—	देवकी देवीं एवम् अवदताम्
णो खलु देवाणुप्पिये !	न खलु देवानुप्रिये !
कण्हस्स वासुदेवस्स इमीसे	कृष्णस्य वासुदेवस्य अस्याम्
वारवईए णयरीए जाव	द्वारावत्यां नगर्या यावत्
देवलोगभूयाए	देवलोकभूतायाम्
समणा णिग्गंथा उच्चणीय–	श्रमणाः निर्ग्रन्थाः उच्चनीच
जाव अडमाणा	यावत् अटन्तः
भत्तपाणं णो लभंति	भक्तपानं न लभन्ते ।
णो चेव णं ताइं ताइं कुलाइं	नो चैव खलु तानि तानि कुलानि
दोच्चंपि तच्चंपि भत्तपाणाए	द्वितीयमपि तृतीयमपि भक्त-पानाय
अणुप्पविसंति ।	अनुप्रविशन्ति ।
एवं खलु देवाणुप्पिए !	एवं खलु देवानुप्रिये !
अम्हे भद्दिलपुरे णयरे णागस्स	वयं भद्दिलपुरे नगरे नागस्य
गाहावइस्स पुत्ता सुलसाए भारियाए	गाथापतेः पुत्राः सुल ाः भार्यायाः
अत्तया छ भायरो	आत्मजाः षट् भ्रातरः
सहोयरा सरिसया जाव	सहोदराः सदृशकाः यावत्
णलकुब्वरसमाणाः	नल-कूवरसमाना
अरहओ अरिट्ठणेमिस्स	अर्हत अरिष्टनेमेः
अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म	अन्तिके धर्मं श्रुत्वा, निशम्य
ससार भउ–व्विग्गा	संसार भयोद्विग्नाः
भीया जम्ममरणाओ,	भीताः जन्म-मरणाभ्याम्,

[हिन्दी शब्दार्थ]

आहार पानी नहीं प्राप्त करते है ? जिससे कि उन्ही कुलो मे आहार पानी के लिए बार बार प्रवेश करते है।

[हिन्दी अर्थ]

कुलो के गृह-समुदायो से, भिक्षार्थ भ्रमण करते हुए आहार पानी नही प्राप्त करते, जिससे कि उन्हे (श्रमण निर्ग्रन्थो को) आहार-पानी के लिये जिन कुलो मे पहले आ चुके है, उन्ही कुलो मे पुन पुन आना पडता है?"

सूत्र ५

इसके बाद उन दोनो मुनियो ने देवकी देवी को इस प्रकार कहा— हे देवानुप्रिये ! ऐसा नही है कि कृष्ण वासुदेव की इस द्वारिका नगरी मे जो यावत् देवलोक के समान है श्रमण निर्ग्रन्थ उच्च नीच आदि कुलो मे यावत् भ्रमण करते हुए आहार पानी नहीं प्राप्त करते हैं और न ही उन-उन कुलो मे दूसरी बार तीसरी बार आहार पानी के लिए मुनि लोग प्रवेश करते हैं। हे देवानुप्रिये! बात इस प्रकार है कि— हम भद्दिलपुर नगर में नाग गाथापति के पुत्र उनकी भार्या सुलसाके अंगजात छः भाई एक ही उदर से उत्पन्न हुए समान आकृति वाले यावत् नलकूबर के समान है। (हमने) अर्हंत अरिष्टनेमि भगवान से धर्म सुनकर मन मे धारण करके संसार के भय से उद्विग्न जन्म व मरण के भय से भीत

देवकी देवी द्वारा इस प्रकार का प्रश्न पूछे जाने पर वे मुनि देवकी देवी से इस प्रकार बोले–"हे देवानुप्रिये ! ऐसी बात तो नही है कि कृष्ण-वासुदेव की यावत् प्रत्यक्ष स्वर्ग के समान, इस द्वारिका नगरी मे श्रमण निर्ग्रन्थ उच्च-नीच-मध्यम कुलो मे यावत् भ्रमण करते हुए आहार-पानी प्राप्त नही करते। और न मुनि लोग भी आहार-पानी के लिये उन एक बार स्पृष्ट कुलो मे दूसरी-तीसरी बार जाते है।

वास्तव मे बात इस प्रकार हे –"हे देवानुप्रिये ! भद्दिलपुर नगर मे हम नाग गाथापति के पुत्र और नाग की सुलसा भार्या के आत्मज छ सहोदर भाई है, पूर्णत समान आकृति वाले यावत् नल कुवेर के समान। हम छहो भाइयो ने अरिहत अरिष्ट-नेमि के पास धर्म उपदेश सुनकर और उसे धारण करके ससार के भय से उद्विग्न एव जन्ममरण से भयभीत हो मुडित होकर यावत् श्रमण धर्म की दीक्षा ग्रहण की।

[मूल सूत्र पाठ]

मुंडा जाव पव्वइया ।

तए णं अम्हे जं चेव दिवसं
पव्वइया त चेव दिवस
अरहं अरिट्ठणेमिं वंदामो णमंसामो
वदित्ता, णमंसित्ता
इमं एयारूवं अभिग्गहं
अभिगिण्हामो
इच्छामो णं भन्ते !
तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया समाणा

जाव अहासुहं ।

देवाणुप्पिया ! तए णं
अम्हे अरहया अरिट्ठणेमिणा
अब्भणुण्णाया समाणा
जावज्जीवाए छट्ठं छट्ठेणं

जाव विहरामो
तं अम्हे अज्ज छट्ठक्खमणपारणगंसि–

पढमाए पोरिसीए जाव
अडमाणा
तव गेहं अणुप्पविट्ठा ।
तं णो खलु देवाणुप्पिए !
ते चेव णं अम्हे ।

[संस्कृत छाया]

मुंडाः यावत् जिताः ।

ततः खलु वयं यस्मिन् एव दिवसे
प्रव्रजिताः तस्मिन् एव दिवसे
अर्हन्तं अरिष्टनेमिं वन्दामः नमस्यामः
वन्दित्वा, नमस्यित्वा
इमम् एतद् रूपम् अभिग्रहम्
अभिगृह्णीमः
इच्छाम खलु भदन्त !
युष्माभिः अभ्यनुज्ञाताः सन्तः

यावत् यथासुखम् ।

हे देवानुप्रिये! ततः खलु
वयम् अर्हता अरिष्टनेमिना
अभ्यनुज्ञाता सन्तः
यावज्जीवम् षष्ठषष्ठेण

यावत् विहरामः ।
तद् वयम् षष्ठक्षमणपारणके

प्रथमायां पौरुष्यां यावत्
अटन्त
तव गृहं (गेहं) प्रविष्टा ।
तत् न खलु देवानुप्रिये !
ते चैव खलु वयम् ।

[हिन्दी शब्दार्थ]

मुण्डित होकर आखिर प्रव्रज्या
(दीक्षा), ग्रहण कर ली।
तदनन्तर हमने जिस दिन
दीक्षा ग्रहण की उसी दिन
अरिहन्त अरिष्टनेमि की
वन्दना की उन्हें नमस्कार किया।
वन्दना नमस्कार करके
एक इस प्रकार के अभिग्रह को
धारण किया है।
हे भगवन् ! निश्चय से हम चाहते है
आपसे आज्ञा दिये गये होते हुए
(बेले-बेले की तपस्या करना)
(प्रभु ने कहा) तथास्तु–जैसा सुख हो।
हे देवानुप्रिये ! तदनन्तर
हम भगवान् अरिष्टनेमि से
आज्ञा दिये गये होकर
जीवनभर के लिए निरन्तर
बेले-बेले की तपस्या करते हुए
विचरण कर रहे हैं।
अतः हम आज बेले के तप के पारणे मे
प्रथम प्रहर मे (स्वाध्याय करके) यावत्
विचरण करते हुए
आपके घर मे प्रविष्ट हुए है।
इस कारण नहीं है हे देवानुप्रिये !
हम वे ही (पहले आये हुए)।

[हिन्दी अर्थ]

तदनन्तर हमने जिस दिन दीक्षा ग्रहण की थी, उसी दिन अरिहत अरिष्टनेमि को वदन-नमन किया और वन्दन नमस्कार कर इस प्रकार का यह अभिग्रह धारण करने की आज्ञा चाही "हे भगवन् ! आपकी अनुज्ञा पाकर हम जीवन पर्यन्त बेले-बेले की तपस्या पूर्वक अपनी आत्मा को भावित करते हुए विचरना चाहते है।"

यावत् प्रभु ने कहा—"देवानुप्रियो ! जिससे तुम्हे सुख हो वैसा ही करो, प्रमाद न करो।"

उसके वाद अरिहत अरिष्टनेमि की अनुज्ञा प्राप्त होने पर हम जीवन भर के लिये निरतर बेले बेले की तपस्या करते हुए विचरण करने लगे।

तो इस प्रकार आज हम छहो भाई-बेले की तपस्या के पारण के दिन प्रथम प्रहर मे स्वाध्याय करने के पश्चात्—प्रभु अरिष्ट-नेमि की आज्ञा प्राप्त कर यावत् तीन सघाटको मे भिक्षार्थ उच्च-मध्यम एव निम्न कुलो मे भ्रमण करते हुए तुम्हारे घर आ पहुचे है। तो देवानुप्रिये ! ऐसी बात नही है कि जो पहले दो सघाटको मे जो मुनि तुम्हारे यहा आये थे वे हम ही है। वस्तुत. हम दूसरे है।"

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
अम्हे णं अण्णे ।	वयं खलु अन्ये ।
देवई देवीं एवं वयइ,	देवकीं देवीं एवं वदति,
वइत्ता	वदित्वा
जामेव दिसं पाउब्भूए	यस्याः दिशः प्रादुर्भूता
तामेव दिसं पडिगए ।	तस्यामेव दिशायाम् प्रतिगताः ।

सूत्र ६

तएणं तीसे देवईए देवीए	ततः खलुः तस्या देवक्याः देव्याः
अयमेयारूवे अज्झत्थिए	अयमेतद्रूप अध्यवसाय
जाव समुप्पण्णे ।	यावत् समुत्पन्नः ।
एवं खलु अहं पोलासपुरे णयरे	एवं खलु अहं पोलासपुरे नगरे
अइमुत्तेणं कुमार समणेणं–	अतिमुक्त कुमार श्रमणेन
बालत्तणे वागरिया–	बालत्वे व्याकृता—
तुमं ण देवाणुप्पिए ! अट्ठपुत्ते	त्वं खलु देवानुप्रिये ! अष्ट पुत्रान्
पयाइस्ससि, सरिसए जाव	प्रजनिष्यसे, सदृशकान् यावत्
णलकुब्बरसमाणे,	नलकूवरसमानान्,
णो चेव णं भारहेवासे अण्णाओ	न चैव खलु भारते वर्षे अन्याः
अम्मयाओ तारिसए पुत्ते	अम्बाः तादृशकान् पुत्रान्
पयाइस्सति ।	प्रजनिष्यन्ते ।
त ण मिच्छा इम ण	तत् खलु मिथ्या इदम् खलु
पच्चक्खमेव दिस्सइ	प्रत्यक्षमेव दृश्यते
भारहे वासे अण्णाओ वि अम्मयाओ	भारते वर्षे अन्या अपि अम्बा
एसिसए जाव पुत्ते पयायाओ ।	ईदृशान् यावत् पुत्रान् प्राजनिषत ।
त गच्छामि ण अरहं अरिट्ठणेमिं	तद् गच्छामि खलु अर्हन्तं अरिष्टनेमिं
वदामि णमसामि	वन्दामि, नमस्यामि,
वदित्ता, णमसित्ता इमं	वन्दित्वा, नमस्यित्वा इदं

[हिन्दी शब्दार्थ]

हम निश्चय ही दूसरे है।
देवकी देवी को इस प्रकार मुनि कहते है।
कहकर
जिस दिशा से प्रगट हुए थे
उसी दिशा मे चले गये।

[हिन्दी अर्थ]

उन मुनियो ने देवकी देवी को इस प्रकार कहा और यह कहकर वे जिस दिशा से आये थे उसी दिशा की ओर चले गये।

सूत्र ६

तदनन्तर उस देवकी देवी के मन में
इस प्रकार का विचार
यावत् उत्पन्न हुआ।
पोलासपुर नगर में मुझे इस प्रकार
अतिमुक्त कुमार श्रमण ने
बचपन मे कहा था–
हे देवानुप्रिये ! तू आठ पुत्रों को
जन्म देगी (जो) समान आकृतिवाले यावत्
नलकूवर के समान (होगे)
निश्चय ही भारत में नहीं अन्य कोई
। वैसे पुत्रो को
जन्म देगी।
वह (कथन) निश्चय ही मिथ्या है यह
प्रत्यक्ष ही दिख रहा है,
भारतवर्ष मे दूसरी भी माताओं ने
ऐसे यावत् पुत्रों को जन्म दिया है।
इसलिये मै अर्हन्त भगवान
अरिष्टनेमि के पास जाती हूँ।
वन्दना नमस्कार करती हूँ।
वन्दना, नमस्कार करके इस,

इस प्रकार की बात कह कर मुनियो के लौट जाने के पश्चात् उस देवकी देवी को इस प्रकार का विचार यावत् चिन्तापूर्ण अध्यवसाय उत्पन्न हुआ —

"पोलासपुर नगर मे अतिमुक्त कुमार नामक श्रमण ने मेरे समक्ष बचपन मे इस प्रकार भविष्यवाणी की थी कि हे देवानुप्रिये देवकी ! तुम परस्पर एक दूसरे से पूर्णत: समान आठ पुत्रो को जन्म दोगी, जो नलकूवर के समान होगे। भरतक्षेत्र मे दूसरी कोई माता वैसे पुत्रो को जन्म नही देगी।"

पर वह भविष्यवाणी मिथ्या सिद्ध हुई। क्योकि यह प्रत्यक्ष ही दिख रहा है कि भरतक्षेत्र मे अन्य माताओ ने भी सुनिश्चितरूपेण ऐसे पुत्रो को जन्म दिया है। मुनि की बात मिथ्या नही होनी चाहिये, फिर यह प्रत्यक्ष मे उससे विपरीत क्यो? तो ऐसी स्थिति मे मैं अरिहत अरिष्टनेमि भगवान की सेवामे जाऊ, उन्हे वदन-नमस्कार करू और वन्दन नमस्कार करके इस प्रकार के कथन के विषय मे प्रभु से पूछू गी।

[मूल सूत्र पाठ]	[सस्कृत छाया]
च णं एयारूवं वागरणं	च खलु एतद्रूपं व्याकृतं
पुच्छिस्सामि त्ति कट्टु एवं संपेहेई,	प्रक्ष्यामि इति कृत्वा एवं संप्रेक्षते ।
सपेहित्ता कोडुंबियपुरिसे	संप्रेक्ष्य कौटुम्बिकपुरुषान्
सद्दावेई सद्दावित्ता एवं वयासी	शब्दाययति, शब्दयित्वा एवमवादीत्–
लहुकरण जाणप्पवरं जाव	लघुकरणं यानप्रवरं यावत्
उवट्ठवेंति ।	उपस्थापयतु ।
जहा देवाणंदा जाव पज्जुवाइइ ।	यथा देवानन्दा यावत् पर्युपासते ।

सूत्र ७

तए ण अरहा अरिट्ठणेमी	ततः खलु अर्हन् अरिष्टनेमी
देवइँ देवीं एव वयासी–	देवकीं देवीम् एवम् अवदत्–
से णूण तव देवई ! इमे	तत् नूनं तव देवकि ! इमान्
छ अणगारे पासित्ता	षडनगारान् दृष्ट्वा
अयमेयारूवे अज्झत्थिए	एतद्रूपः अध्यवसायः
जाव समुप्पज्जित्था,	यावत् समुत्पन्नः
एव खलु पोलासपुरे	एवं खलु पोलासपुरे
णयरे अईमुत्तेण तं	नगरे अतिमुक्तेन तत्
चेव जाव णिग्गच्छसि,	चैव यावत् निर्गच्छसि,
णिगच्छित्ता जेणेव	निर्गत्य यथैव
मम अंतिय हव्वमागया	मम अन्तिके शीघ्रमागता,
से णूण देवई देवी	तत् नूनं देवकि देवि !
अयमट्ठे समट्ठे ?	अयम् अर्थः समर्थ ?
हता ! अत्थि ।	हन्त ! अस्ति ।
एव खलु देवाणुप्पिए !	एवं खलु देवानुप्रिये !
तेण कालेणं तेणं समयेणं	तस्मिन् काले तस्मिन् समये

[हिन्दी शब्दार्थ]

इस प्रकार के उक्ति वैपरीत्य को पूछूंगी ऐसा मन मे विचार करती है। विचार कर अमात्यादि पुरुषो को बुलवाती है, बुलाकर ऐसे कहा—शीघ्रगति वाले यानप्रवर को यावत् शीघ्र उपस्थित करो। (यान द्वारा वहाँ जाकर) देवानन्दा की तरह उपासना करती है।[१८]

[हिन्दी अर्थ]

इस प्रकार सोचा। ऐसा सोचकर देवकी देवी ने आज्ञाकारी पुरुषो को बुलाया और बुलाकर ऐसा बोली—"लघु कर्णवाले (शीघ्रगामी) श्रेष्ठ रथ को उपस्थित करो।" आज्ञाकारी पुरुषो ने रथ उपस्थित किया। देवकी महारानी उस रथ मे बैठ कर यावत् प्रभु के समवसरण मे उपस्थित हुई और देवानन्दा द्वारा जिस प्रकार भगवान् महावीर की पर्युपासना किये जाने का वर्णन है, उसी प्रकार महारानी देवकी भगवान् अरिष्ठनेमि की यावत् पर्युपासना करने लगी।

सूत्र ७

तदनन्तर अरिहन्त अरिष्टनेमी ने देवकी देवी को इस प्रकार कहा—तो निश्चय ही हे देवकि! तुझे इन छः अनगारोको देखकर इस प्रकार का मतिभ्रम यावत् उत्पन्न हो गया है। इस प्रकार पोलासपुर नगर मे अतिमुक्त कुमार ने मुझे ऐसा कहा था और उसी प्रकार यावत् वन्दन को निकली, निकलकर जैसे ही शीघ्रता से मेरे पास चली आई हो। तब क्या निश्चय ही देवकि देवि! यह अर्थ तुम्हारे द्वारा समर्थित है? हे भगवन्! ऐसा ही है। इस प्रकार हे देवानुप्रिये? उस काल उस समय मे

तदनन्तर अर्हत् अरिष्टनेमि देवकी को सम्बोधित कर इस प्रकार बोले–"हे देवकी! क्या इन छः साधुओ को देख कर वस्तुत तुम्हारे मन मे इस प्रकार का विचार उत्पन्न हुआ कि पोलासपुर नगर मे अतिमुक्त कुमार ने तुम्हे आठ अप्रतिम पुत्रो को जन्म देने का जो भविष्यकथन किया था, वह मिथ्या सिद्ध हुआ। उस विषय मे पृच्छा करने के लिये तुम यावत् वन्दन को निकली और निकलकर शीघ्रता से मेरे पास चली आई हो, हे देवकी! क्या यह बात ठीक है?" देवकी ने कहा—"हा भगवन्! ऐसा ही है।" प्रभु की दिव्य ध्वनि प्रस्फुटित हुई—"हे देवानुप्रिये! उस काल उस समय मे भद्दिलपुर नगर मे नाग नाम का गाथापति रहा करता था, जो आढ्य (महान् ऋद्धिशाली) था।

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
भद्दिलपुरे णयरे णागे णाम गाहावई परिवसइ, अड्ढे० ।	भद्रिलपुरे नगरे नागो नामकः गाथापतिः परिवसति, आढ्य. ।
तस्स ण णागस्स गाहावइस्स सुलसा णाम भारिया होत्था । सा सुलसा–गाहावइणी बालत्तणे चेव णिमित्तिएण वागरिया–	तस्य खलु नागस्य गाथापते· सुलसा नाम भार्या आसीत् । सा सुलसा गाथापत्नी बालत्वे चैव नैमित्तिकेन व्याकृता–
एसरण दारिया णिंदू भविस्सइ ।	एषा खलु दारिका निंदु भविष्यति ।
तए ण सा सुलसा बालप्पभिइ चेव हरिणेगमेसि देव भत्ता यावि होत्था ।	तत खलु सा सुलसा बालप्रभृति चैव हरिणैगमेषिणो देवस्य भक्ता अभवत् ।
हरिणेगमेसिस्स पडिम करेइ, करित्ता कल्लाकल्लि ण्हाया जाव पायच्छित्ता उल्लपडसाडिया महरिह पुप्फच्चरणं करेइ,	हरिणैगमेषिण. प्रतिमा करोति, कृत्वा कल्प कल्पं स्नाता यावत् प्रायश्चित्ता सार्द्रपटशाटिका महार्घ्य पुष्पार्चनं करोति,
करित्ता जाणुपायवडिया पणाम करेइ, तओ पच्छा आहारेइ वा णीहारेइ वा ।	कृत्वा जानुपादपतिता प्रणाम करोति, तत· पश्चात् आहारयति वा नीहारयति वा

सूत्र ८

तए णं तीसे सुलसाए गाहावइणीए भत्तिबहुमाण–	ततः खलु तस्या सुलसाया. गाथापत्न्याः भक्तिबहुमान

[हिन्दी शब्दार्थ]

भद्दिलपुर नगर मे नाग नामक गाथापति रहा करता था, जो कि धन सम्पन्न (आढ्य) था । उस नाग नामक गाथापति के सुलसा नाम की भार्या थी । उस सुलसा गाथापत्नी को बचपन मे ही किसी निमित्तज्ञ ने कहा— यह बालिका मृतवत्सा होगी । वह सुलसा बाल्यकाल से ही हरिणंगमेषी देव की भक्त बन गई । (उसने) हरिणंगमेषी की प्रतिमा ...ाई, बना कर शास्त्र विधि से स्नान कर यावत् दुःस्वप्न निवारण को प्रायश्चित्त कर गीली साड़ी पहने हुए उसकी महर्घ (उत्तमोत्तम) पुष्पो से अर्चना करती थी । अर्चना करके घुटने व पैर टेक कर (पंचांग) प्रणाम करती, इसके बाद आहार नीहारादि करती ।

[हिन्दी अर्थ]

उस नाग गाथापति की सुलसा नामा पत्नी थी । उस सुलसा गाथापत्नी को बाल्यावस्था मे ही किसी निमितज्ञ ने कहा—यह बालिका मृतवत्सा यानि मृत बालको को जन्म देने वाली होगी । तत्पश्चात् वह सुलसा बाल्यकाल से ही हरिणैगमेषी देव की भक्त बन गई ।

उसने हरिणैगमेषी देव की मूर्ति बनाई । मूर्ति बना कर प्रतिदिन प्रात काल स्नान करके यावत् दु स्वप्न निवारणार्थ प्रायश्चित कर गीली साडी पहने हुए उसकी बहुमूल्य पुष्पो से अर्चना करती । पुष्पो द्वारा पूजा के पश्चात् घुटने टिकाकर पाचो अग नमा कर प्रणाम करती, तदनन्तर आहार करती, निहार करती एव अपनी दैनन्दिनी के अन्य कार्य करती ।

सूत्र ८

तदनन्तर उस सुलसा गाथापत्नी की उस भक्ति व

तत्पश्चात् उस सुलसा गाथापत्नी की उस भक्ति-बहुमान पूर्वक की गई सुश्रुषा से

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
सुस्मूसाए हरिणेगमेसी देवे	शुश्रूषया हरिणैगमेषी देवः
आराहिए यावि होत्था ।	आराधितः यावत् अभवत् ।
तए णं से हरिणेगमेसी देवे	ततः खलु सः हरिणैगमेषी देवः
सुलसाए गाहावइणीए अणुकंपणट्ठाए	सुलसाया गाथापत्न्याः अनुकम्पनार्थम्
सुलसा गाहावइणीं तुमं च	सुलसां गाथापत्नीं त्वां च
णं दोण्णि वि समउउयाओ करेइ ।	खलु द्वेऽपि समऋतुके करोति ।
तए णं तुब्भे दो वि सममेव	ततः खलु युवां द्वेऽपि समकमेव काले
गब्भे गिण्हह, सममेव	गर्भौ गृह्णीथ, समकालमेव
गब्भे परिवहह,	गर्भौ परिवहथ,
सममेव दारए पयायह ।	सममेव च दारकौ प्रजनयथः
तए णं सा सुलसा गाहावइणी	ततः खलु सा सुलसा गाथापत्नी
विणिहायमावण्णे दारए पयाइइ ।	विनिघातमापन्नान् दारकान् प्रजनयति ।
तए णं से हरिणेगमेसी देवे	ततः खलु स हरिणैगमेषी देवः
सुलसाए अणुकंपणट्ठाए	सुलसायाः अनुकम्पनार्थम्
विणिहायमावण्णाए दारए	विनिघातमापन्नान् दारकान्
करयल संपुडेणं गिण्हइ,	करतल संपुटेन गृह्णाति,
गिण्हित्ता तव अंतियं साहरइ ।	गृहीत्वा तव अन्तिकं समाहरति ।
तं समयं च णं तुमं पि णवण्हं	तस्मिन् समये च खलु त्वमपि नवानां
मासाणं सुकुमाल दारए पसवसि ।	मासानां सुकुमारान् दारकान् प्रसवयसि ।
जे वि य णं देवाणुप्पिए !	येऽपि च खलु हे देवानुप्रिये !
तव पुत्ता ते वि य तव	तव पुत्राः तेऽपि च तव
अंतियाओ करयल-संपुडेणं गिण्हइ,	अन्तिकात् करतलसंपुटेन गृह्णाति,
गिण्हित्ता सुलसाए गाहावइणीए	गृहीत्वा सुलसायाः गाथापत्न्याः
अंतिए साहरइ ।	अंतिके समाहरति ।

[हिन्दी शब्दार्थ]

बहुमानपूर्वक शुश्रूषा (सेवा) से
हरिणैगमेषी देव प्रसन्न हो गया।
तब उस हरिणैगमेषी देव ने
सुलसा गाथापत्नी पर अनुकपा हेतु
सुलसा गाथापत्नी को और तुझको
दोनों को समकाल मे ऋतुयुक्त किया।
तदनन्तर तुम दोनो ने ही समान काल मे
गर्भ धारण किया,समान काल मे ही
गर्भ की पालना की व
समान काल मे ही
बालको को जन्म दिया था।
तब उस सुलसा गाथापत्नी ने
मरे हुए बालको को जन्म दिया।
तदनन्तर वह हरिणैगमेषी देव
सुलसा पर अनुकम्पा करने के लिये
उसके मृत बालको को
दोनो हाथो मे ले लेता है,
लेकर तेरे पास ले आता है।
उस समय तुम भी नव
मास का काल पूर्ण होने पर सुकुमार
बालको को जन्म देती,
और जो भी हे देवानुप्रिये !
तुम्हारे पुत्र होते उनको भी वह तुम्हारे
पास से दोनो हाथो से ग्रहण कर लेता
लेकर सुलसा गाथापत्नी के
पास ले जाता।

[हिन्दी अर्थ]

देव प्रसन्न हो गया। प्रसन्न होने के पश्चात् हरिणगमेषी देव सुलसा गाथापत्नी पर अनुकम्पा करने हेतु सुलसा गाथापत्नी को तथा तुम्हे—दोनो को समकाल मे ही ऋतुमति (रजस्वला) करता और तब तुम दोनो समकाल मे ही गर्भ धारण करती, समकाल मे ही गर्भ का वहन करती और समकाल मे ही वालक को जन्म देती।

प्रसवकाल मे वह सुलसा गाथापत्नी मरे हुए वालक को जन्म देती।

तब वह हरिणगमेषी देव सुलसा पर अनुकम्पा करने के लिये उसके मृत वालक को दोनो हाथो मे लेता और लेकर तुम्हारे पास लाता। इधर उस समय तुम भी नव मास का काल पूर्ण होने पर सुकुमार वालक को जन्म देती।

हे देवानुप्रिये! जो तुम्हारे पुत्र होते उनको भी हरिणैगमेषी देव तुम्हारे पास से अपने दोनो हाथो मे ग्रहण करता और उन्हे ग्रहण कर सुलसा गाथापत्नी के पास लाकर रख देता (पहुचा देता)।

अतः वास्तव मे हे देवकी! ये तुम्हारे ही पुत्र है, सुलसा गाथा पत्नी के नही है।

[मूल प्राकृत पाठ]	[संस्कृत छाया]
त तव चेव ण देवइ !	तत् तव चैव खलु देवकि !
एए पुत्ता, णो चेव ण	एते पुत्रा, न चैव खलु
सुलसाए गाहावइणीए ।	सुलसाया गाथापत्न्या ।

सूत्र ६

तए ण सा देवई देवी	ततः खलु सा देवकी देवी
अरहओ अरिट्ठणेमिस्स	अर्हत अरिष्टनेमिनः
अंतिए एयमट्ठ सोच्चा	अंतिके एतदर्थं श्रुत्वा
णिसम्म हट्ठतुट्ठा जाव	निशम्य हृष्टतुष्टा यावत्
हियया, अरह अरिट्ठणेमिं	हृदया, अर्हन्तम् अरिष्टनेमिम्
वदइ णमसइ । वदित्ता णमसित्ता	वन्दते, नमस्यति । वन्दित्वा नमस्यित्वा
जेणेव ते छ अणगारा तेणेव उवागच्छइ,	यत्रैव ते षडनगारा तत्रैव उपागच्छति,
उवागच्छित्ता ते छप्पि अणगारे	उपागत्य तान् षडपि अनगारान्
वदइ णमसइ वदित्ता णमंसित्ता ।	वन्दते नमस्यति । वन्दित्वा नमस्यित्वा
आगय-पण्हुया	आगत प्रस्नुता (स्तन्य प्रस्रवणा)
पप्फुयलोयणा कचुय पडिक्खित्तिया	प्रफुल्ल-लोचना परिक्षिप्तकंचुका
दरियवलयवाहा	दीर्णवलयभुजा (बाहू)
धाराहय कलव पुप्फग	धाराहतकदंबपुष्पक इव
विव समूससिय रोमकूवा	समुच्छ्वसित रोमकूपा
ते छप्पि अणगारे	तान् षडप्यनगारान्
अणिमिसाए दिट्ठीए	अनिमेषया दृष्ट्या
पेहमाणी, पेहमाणी सुचिरं	प्रेक्षमाणा प्रेक्षमाणा सुचिरं
णिरिक्खइ, णिरिक्खित्ता	निरीक्षते, निरीक्ष्य
वंदइ, णमंसइ । वदित्ता, णमंसित्ता	वन्दते नमस्यति वन्दित्वा, स्यित्वा
जेणेव अरहा अरिट्ठणेमि	यत्रैव अर्हन् अरिष्टनेमिः

[हिन्दी शब्दार्थ]

: तेरे ही है हे देवकि !
ये पुत्र। नही है उस
सुलसा गाथापत्नी के

[हिन्दी अर्थ]

इसके अनन्तर उस देवकी देवी ने अरिहत अरिष्टनेमि के मुखारविन्द से इस प्रकार की यह रहस्यपूर्ण बात सुनकर तथा हृदयगम

सूत्र ९

तब वह देवकी देवी
अरिहंत अरिष्टनेमिनाथ के
पास यह बात सुनकर
मनन कर यावत् हृष्टतुष्ट
हृदय वाली ने अरिहन्त अरिष्टनेमि
को वन्दना की, नमस्कार किया।
वन्दना नमस्कार करके
जहां वे छ अनगार थे वही आई,
आकर उन छ ही मुनिवरो को
वन्दन-नमस्कार किया। नमस्कार करके
स्तनों से दूध झराती हुई
प्रफुल्लित नयन वाली कंचुकी
के बन्धन जिसके टूट गये है,
हर्षातिरेक से जिसकी बाहुओं के कड़े
चटक गये है,
वर्षाकी धारासे सिक्त कदंबपुष्प की तरह
ि के रोमकूप उच्छ्वसि हो रहे है
ऐसी वह उन छहो अनगारो को
अपलक दृष्टि से देखती हुई—
देखती हुई बहुत समय तक
देखती रही, देखकर
वन्दना नमस्कार करती है।
वन्दना नमस्कार करके
जहां भगवान अरिष्टनेमि थे,

कर हृष्ट-तुष्ट यावत् प्रफुल्ल हृदया होकर अरिहत अरिष्टनेमि भगवान् को वदन-नमस्कार किया और वदन-नमस्कार करके वे छहो जहा मुनि विराजमान थे वहा आई। आकर वह उन छहो मुनियो को वदन नमस्कार करती है।

उन अनगारो को देखकर पुत्र-प्रेम के कारण उसके स्तनो से दूध झरने लगा। हर्ष के कारण उसकी आखो मे आसू भर आये एव अत्यन्त हर्ष के कारण शरीर फूलने से उसकी कचुकी की कसे टूट गई और भुजाओ के आभूषण तथा हाथ की चूडिया तग हो गई। जिस प्रकार वर्षा की धारा के पडने से कदम्ब पुष्प एक साथ विकसित हो जाते है उसी प्रकार उसके शरीर के सभी रोम पुलकित हो गये। वह उन छहो मुनियो को निर्निमेष दृष्टि से देखती हुई चिरकाल तक निरखती ही रही।

तत्पश्चात् उसने छहो मुनियो को वन्दन-नमस्कार किया। वन्दन नमस्कार करके वह जहा भगवान् अरिष्टनेमि विराजमान है, वहा आई और आकर अर्हत् अरिष्टनेमि को तीन वार दक्षिण तरफ से प्रदक्षिणा करके वन्दन नमस्कार करती है,

[हिन्दी शब्दार्थ]

वहीं पर आ जाती है,
आकर भगवान नेमिनाथ को
तीन बार दक्षिण की तरफ से
प्रदक्षिणा करती है, प्रदक्षिणा
करके वन्दना नमस्कार करती है ।
वन्दना नमस्कार करके
उसी धार्मिक श्रेष्ठ रथ पर
आरूढ होती है, आरूढ होकर
जहां पर द्वारावती नगरी है
वहां पर आती है,
वहां आकर द्वारावती
नगरी मे प्रवेश करती है ।
द्वारावती नगरी में प्रवेश करके जहाँ
पर अपना ाद और बाहरी
उपस्थान शाला (बैठक) है वहां
पर ाी है, आकर
धार्मिक श्रेष्ठ रथ पर से
उतरती है, उतरकर
जहां स्वयं का निवास गृह है,
जहां स्वयं का शयन स्थान है
वहां पर ही आती है,
वहां आकर अपनी
शय्या पर बैठती है ।

[हिन्दी अर्थ]

वदन-नमस्कार करके उसी धार्मिक श्रेष्ठ रथ पर आरूढ होती है। रथारूढ हो,जहा द्वारिका नगरी है, वहा आती है और वहा आकर द्वारिका नगरी मे प्रविष्ट होती है ।

देवकी द्वारिका नगरी मे प्रवेश कर जहा अपने प्रासाद के बाहर की उपस्थानशाला अर्थात् बैठक है वहा आती है । वहा आकर धार्मिक रथ से नीचे उतरती है । नीचे उतर कर जहा अपना वासगृह है, जहा अपनी शय्या है, वहा आती है । वहा आकर अपनी शय्या पर वैठ जाती है ।

उस समय उस देवकी देवी को इस प्रकार का विचार, चिन्तन और अभिलाषापूर्ण मानसिक सकल्प उत्पन्न हुआ कि अहो ! मैंने पूर्णत समान आकृति वाले यावत् नलकूबर के समान सात पुत्रो को जन्म दिया पर मैंने एक की भी बाल्यक्रीड़ा का आनन्दानुभव नही किया ।

[हिन्दी शब्दार्थ] [हिन्दी अर्थ]

सूत्र १०

तदनन्तर उस देवकी देवी को
इस प्रकार का अध्यवसाय, चिन्ता
और अभिलाषा युक्त मानसिक संकल्प
उत्पन्न हुआ कि अहो ! निश्चय ही
इस प्रकार मैने समान आकृति वाले नल
कूबर के समान सात पुत्रो को जन्म दिया
परन्तु मैने एक की भी
बालक्रीडा का अनुभव नही किया
और यह कृष्ण
वासुदेव भी छः छः महीनो के
बाद मेरे पास चरण वंदना
के लिए शीघ्रता से आता है ।
इसलिये वे माताएं धन्य है,
जिनकी अपनी कुक्षि से
उत्पन्न, स्तनपान के लोभी
बालक मधुर आलाप करने वाले मन्मन
बोलते हुए, स्तन मूल
कक्ष भाग मे अभिसरण करते है,
(ऐसे उन) मुग्ध (भोले)
बालको को फिर कोमल कमल के समान
हाथों से पकड़कर गोद मे बैठा लेती है,
और उन बालको के आलापको का
बार-बार सुमधुर
और मंजुल उत्तर देती है ।
मै निश्चय ही अधन्य हूँ, पुण्यहीन हूँ

फिर यह कृष्ण वासुदेव भी छ-छ महीनो के पश्चात् मेरे पास चरण वन्दन के लिये आता है और वह भी भागता-दौडता ।

तो ऐसी स्थिति मे वस्तुत वे माताएं धन्य है जिनकी अपनी कुक्षि से उत्पन्न हुए, स्तनपान के लोभी बालक, मधुर आलाप करते हुए, तुतलाती बोली से मन्मन बोलते हुए जिनके स्तनमूलकक्षा-भाग मे अभिसरण करते है, एव फिर उन मुग्ध बालको को जो माताए कमल के समान अपने कोमल हाथो द्वारा पकड कर गोद मे बिठाती है और अपने-अपने बालको से मजुल-मधुर-शब्दो मे बार-बार बाते करती है ।

मैं निश्चितरूपेण अधन्य और पुण्यहीन हू क्योकि मैने इनमे से किसी एक पुत्र की भी बाल क्रीडा नही देखी ।

इस प्रकार देवकी खिन्न मन से यावत् आर्त्तध्यान करने लगी ।

[हिन्दी शब्दार्थ]

इनमे से मैने एक भी प्राप्त नही किया (इस प्रकार) खिन्नमन (देवकी) यावत् आर्त्तध्यान करने लगी।

[हिन्दी अर्थ]

वह इस प्रकार का चिन्तन कर ही रही थी कि

सूत्र ११

तदनन्तर वह कृष्ण वासुदेव स्नान किये हुए यावत् विभूषित हुए महारानी देवकी देवी के चरण वन्दनार्थ शीघ्रता से आये तब उस कृष्ण वासुदेव ने देवकी देवी के दर्शन किये। दर्शन करके देवकी देवी की चरण वन्दना की। वन्दना करके देवकी देवी को ऐसे बोले—हे माताजी! पहले तो आप मुझको देखकर प्रसन्न होती थी परन्तु हे माता! आज आप विश्रान्त की तरह यावत् विचार मग्न दिखती हो। तदनन्तर वह देवकी देवी कृष्ण वासुदेव को इस प्रकार बोली—इस प्रकार हे पुत्र! मैंने एक सी (समान) आकृति वाले सात पुत्रो को जन्म दिया। परन्तु मैंने एक के भी बाल्यपन का अनुभव नहीं किया। हे पुत्र! तुम भी मेरे पास

उसी समय वहा श्री कृष्ण वासुदेव स्नान कर यावत् वस्त्रालकारो से विभूषित होकर देवकी माता के चरण वदन के लिये शीघ्रतापूर्वक आये। तब वह कृष्ण वासुदेव देवकी माता के दर्शन करते है, दर्शन कर देवकी के चरणो मे वन्दन करते है।

उन्होने अपनी माता को उदास और चिन्तित देखा। तो चरण वन्दन कर देवकी देवी को इस प्रकार पूछने लगे—"हे माता! पहले तो मै जव जव आपके चरण वन्दन के लिये आता था, तव-तव आप मुझे देखते ही हृष्ट तुष्ट यावत् आनदित हो जाती थी, पर मा! आज आप उदास, चिन्तित यावत् आर्त्त ध्यान मे निमग्न सी क्यो दिख रही हो? हे माता! इसका क्या कारण है? कृपा करके वतावे।"

कृष्ण द्वारा इस प्रकार का प्रश्न किये जाने पर वह देवकी देवी कृष्ण वासुदेव को इस प्रकार कहने लगी—"हे पुत्र! वस्तुत वात यह है कि मैंने समान आकार यावत् समान रूप वाले सात पुत्रो को जन्म दिया। पर मैंने उनमे से किसी एक के भी वाल्यकाल अथवा वाल-लीला का अनुभव नही किया। पुत्र! तुम भी छ छ महीनो के अन्तर मे

[मूल पाठ]	[संस्कृत छाया]
छण्ह-छण्हं मासाणं अंतियं	षण्णां षण्णां मासानां मम अन्तिके
पायवंदए हव्वमागच्छंति,	पादवन्दनाय शीघ्रमागच्छन्ति,
तं धण्णाओ णं ताओ	तत् धन्याः खलु ताः
अम्मयाओ जाव झियामि ।	अम्बाः यावत् ध्यायामि ।

सूत्र १२

मूल पाठ	संस्कृत छाया
तएणं से कण्हे वासुदेवे	ततः खलु सः कृष्णः वासुदेवः
देवईं देविं एवं वयासी—	देवकीं देवीम् एवम् अवदत्—
मा णं तुब्भे अम्मो !	मा खलु त्वमम्ब !
ओहय जाव झियायह ।	अवहता यावत् ध्याय ।
अहण्णं तहा वत्तिस्सामि	अहम् खलु तथा वर्तिष्ये
जहा णं मम सहोयरे	यथा खलु मम सहोदर
कणीयसे भाउए भविस्सइ	कनीयान् भ्राता भविष्यति,
त्ति कट्टु देवईं देविं ताहिं	इति कृत्वा देवकीं देवीं ताभि·
इट्ठाहिं कंताहिं जाव	इष्टाभि कान्ताभि यावत्
वग्गूहिं समासासेइ,	वाग्भि समाश्वासयति,
समासासित्ता तओ पडिणिक्खमइ	समाश्वास्य ततः प्रतिनिष्क्राम्यति
पडिणिक्खमित्ता जेणेव	प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव
पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ	पौषधशाला तत्रैव उपागच्छति
उवागच्छित्ता जहा अभओ,	उपागत्य यथा अभयः,[10]
णवरं हरिणेगमेसिस्स अट्ठम	विशेषतः हरिणैगमेषिणः अष्टम
भत्तं पगिण्हइ,	भक्तं प्रगृह्णाति
जाव अंजलिं कट्टु एवं वयासी—	यावत् अजलिं कृत्वा एवम् अवादीत्—
इच्छामि णं देवाणुप्पिया!	इच्छामि खलु देवानुप्रिय !
सहोयरं कणीयसं भाउयं विदिण्णं ।	सहोदरं कनीयांसं भ्रातरं वितीर्णम् ।

[हिन्दी शब्दार्थ]

छह-छह महीनो के बाद चरण
वन्दन के लिये शीघ्रता से आते हो,
इसलिये वे माताएं धन्य हैं
जिनका यावत् आर्त्तध्यान करती हूँ।

[हिन्दी अर्थ]

मेरे पास चरण वदन के लिये आते हो इसलिये मै ऐसा सोच रही हू कि वे माताए धन्य है, पुण्य शालिनी हे जो अपनी सन्तान को स्तनपान कराती है, यावत् उनके साथ मधुर आलाप सलाप करती है, और उनकी

सूत्र १२

तदनन्तर वह कृष्ण वासुदेव
देवकी देवी को इस प्रकार बोले—
हे माता ! तुम इस प्रकार
उदास और चिन्तित मत होवो।
मै ऐसा काम करुंगा
ि से मेरे सहोदर
छोटा भाई होगा,
ऐसा करके श्री कृष्ण ने देवकी
देवी को उन इष्ट व कान्त यावत्
वचनो से आश्वस्त किया,
आश्वासन देकर वहां से बाहर निकले,
वहाँ से निकलकर जहाँ पर
पौषधशाला थी वहाँ आये।
वहाँ आकर अभय कुमार की तरह
विशेष रूप से हरिणैगमेषी का अष्टम
भक्त व्रत (तीन उपवास) ग्रहण किया,
यावत्दोनो हाथजोड़कर इस प्रकार कहा
हे देवानुप्रिय ! मेरे छोटा
सहोदर भाई हो यह मै चाहता हूँ

बाल क्रीडा के आनन्द का अनुभव करती है। मै अधन्य हू अकृत–पुण्य हू। यही सब सोचती हुई मैं उदासीन होकर इस प्रकार का आर्त्त ध्यान कर रही हू।"

माता की यह बात सुनकर श्री कृष्ण वासुदेव देवकी महारानी से इस प्रकार बोले- "हे माताजी ! आप उदास अथवा चिन्तित हो कर अब आर्त्त ध्यान मत करो।

मैं ऐसा प्रयत्न करुगा कि जिससे मेरे एक सहोदर छोटा भाई उत्पन्न हो।"

इस प्रकार कह कर श्री कृष्ण ने देवकी माता को प्रिय, अभिलषित मधुर एव इष्ट यावत् कान्त वचनो से धैर्य वधाया, आश्वस्त किया।

इस प्रकार अपनी माता को आश्वस्त कर श्री कृष्ण अपनी माता के प्रासाद से निकले। निकलकर जहा पौषधशाला थी वहा आये।

पौषधशाला मे आकर जिस प्रकार अभयकुमार[१६] ने अष्टम भक्त तप (तेला) स्वीकार करके अपने मित्र-देवता की आराधना की थी, उसी प्रकार श्री कृष्ण वासुदेव भी अभय कुमार की तरह अष्टम भक्त तप यानि तेला करके हरिणगमेषी देवता की आराधना करने लगे।

आराधना से आकृष्ट होकर हरिणगमैषी देव श्री कृष्ण के सन्मुख उपस्थित हुआ

[मूल सूत्र पाठ]   [संस्कृत छाया]

सूत्र १३

तएणं से हरिणेगमेसी
देवे कण्हं वासुदेवं एवं वयासी—
होहिइ णं देवाणुप्पिया !
तव देवलोयचुए सहोयरे
कणीयसे भाउए से णं
उम्मुक्क बालभावे जाव
जोव्वणगमणुप्पत्ते अरहओ
अरिट्ठणेमिस्स अन्तियं
मुण्डे जाव पव्वइस्सइ।
कण्हं वासुदेवं दोच्चंपि
तच्चंपि एवं वयइ।
वइत्ता जामेव दिसं पाउब्भूए
तामेव दिसं पडिगए।

ततः खलु सः हरिणैगमेषी
देवः कृष्णं वासुदेवम् एवम् अवदत्
भविष्यति खलु देवानुप्रिय !
तव देवलोकच्युतः सहोदरः
कनीयान् भ्राता स खलु
उन्मुक्तबालभावः यावत्
यौवनमनुप्राप्तः अर्हतः
अरिष्टनेमिन अन्तिकम्
मुण्डो यावत् प्रव्रजिष्यति।
कृष्णं वासुदेवं द्विवारं
त्रिवारमपि एवं वदति।
वदित्वा यस्याः एव दिशः
प्रादुर्भूतस्तामेव दिशं प्रतिगतः।

सूत्र १४

तएणं से कण्हे वासुदेवे
पोसहसालाओ पडिणिक्खमइ
पडिणिक्खमित्ता जेणेव
देवई देवी तेणेव उवागच्छइ
उवागच्छित्ता देवईए देवीए
पायग्गहणं करेइ,
करित्ता एवं वयासी—
होहिइ ण अम्मो ! ममं
सहोयरे कणीयसे भाउत्ति
कट्टु देवई देविं इट्ठाहिं

ततः खलु स कृष्णः वासुदेवः
पौषधशालातः प्रतिनिष्क्राम्यति
प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव
देवकी देवी तत्रैव उपागच्छति
उपागत्य देवक्याः देव्या
पादग्रहणं करोति,
कृत्वा एवम् अवदत्—
भविष्यति खलु अम्ब ! मम
सहोदरः कनीयान् भ्राता,
इति कृत्वा देवकीं देवीं इष्टाभिः

[हिन्दी शब्दार्थ] [हिन्दी अर्थ]

सूत्र १३

तब वह हरिणैगमेषी
देव कृष्ण वासुदेव को इस प्रकार बोला
हे देवानुप्रिय ! होगा
देवलोक से च्युत हुआ तेरे
सहोदर छोटा भाई, वह
बाल्यकाल बीतने पर यावत्
युवावस्था प्राप्त करने पर
भगवान श्री नेमिनाथ के पास
मुंडित होकर दीक्षा ग्रहण करेगा।
कृष्ण वासुदेव को दुबारा
तिबारा भी इस प्रकार कहता है।
कहकर जिस दिशा से वह प्रकट
हुआ था उसी दिशा को चला गया।

सूत्र १४

इसके बाद श्री कृष्ण वासुदेव
पौषधशाला से निकले,
निकलकर जहाँ पर
देवकी देवी थी वहाँ आये,
आकर देवकी देवी की
चरण वन्दना की।
वन्दना करके इस प्रकार कहा—
हे माता ! मेरे सहोदर
छोटा भाई अवश्य होगा इस प्रकार
देवकी देवी को इष्ट वचनो से

और श्री कृष्ण वासुदेव से बोला—"हे देवानुप्रिय ! आपने मुझे क्यो याद किया है ? मै उपस्थित हूँ। कहिये आपका क्या मनोरथ है ? मै आपका क्या शुभ कर सकता हूँ ?"

तब श्री कृष्ण वासुदेव ने दोनो हाथ जोडकर उस देव से ऐसा कहा—"हे देवानुप्रिय ! मेरे एक सहोदर लघुभ्राता का जन्म हो, यह मेरी इच्छा है।"

तदनन्तर श्री कृष्ण वासुदेव द्वारा तेले की तपस्या द्वारा की गई अपनी आराधना से प्रसन्न होकर हरिणगमेपी देव श्री कृष्ण वासुदेव से इस प्रकार वोला—"हे देवानुप्रिय ! देवलोक का एक देव वहा की आयुष्य पूर्ण होने पर देवलोक से च्युत होकर आपके सहोदर छोटे भाई के रूप मे जन्म लेगा और इस तरह आपका मनोरथ अवश्य पूर्ण होगा। पर वह बाल्यकाल वीतने पर यावत् युवावस्था प्राप्त होने पर भगवान् श्री अरिप्टनेमि के पास मुण्डित होकर श्रमण दीक्षा ग्रहण करेगा।"

श्री कृष्ण वासुदेव को उस देव ने दूसरी बार, तीसरी बार भी यही कहा और यह कहने के पश्चात् जिस दिशा की ओर से आया था उसी दिशा की ओर लौट गया।

इसके पश्चात् श्री कृष्ण-वासुदेव पौपधशाला से निकले, वहा से निकलकर देवकी माता के पास आये और आकर अपनी माता का चरण वदन किया।

चरण वदन करके वे माता से इस प्रकार बोले—'माताजी ! मेरे एक सहोदर छोटा भाई होगा। अव आप चिन्ता न करे। आपकी इच्छा पूरी होगी।"

तएण सा देवई देवी
नवण्ह मासाण जासुमणा
रत्तबधु जीवय लक्खारस
सरसपारिजातकतरुणदिवायर
समप्पभ, सव्वनयणकत
सुकुमाल जाव सुरूव
गयतालुयसमाण दारय पयाया।

जम्मण जहा मेहकुमारे।[20]
जाव जम्हाण अम्ह
इमे दारए।
गयतालुसमाणे त होउण
अम्ह एयस्स दारयस्स
नामधेज्जे गय-सुकुमाले,
तएणं तस्स दारगस्स

ततः खलु सा देवकी देवी
नवाना मासाना जपाकुसुम
रक्तबन्धु जीव लाक्षारस
सरसपारिजातकतरुणदिवाकर
समप्रभम्, सर्वनयनकान्तम्
सुकुमार यावत् सुरूपम्
गजतालुसमान दारकम् प्रजाता।

जन्म यथा मेघकुमार.।[२०]
यावत् यस्मात् (कारणात् जात) अस्माकं
अयम् दारक।
गजतालुसमान. तद्भवतु
आवयो एतस्य दारकस्य
नामधेयम् गजसुकुमाल.
ततः खलु तस्य दारकस्य

[हिन्दी शब्दार्थ]

यावत् आश्वस्त करता है
आश्वस्त करके जिस दिशा से
प्रकट हुए थे उसी दिशा मे
वापस चले गये ।
तदनन्तर वह देवकी देवी
अन्यदा किसी दिन पुण्यवान के
योग्य सुख शैय्या मे सोते हुए
सिंह को स्वप्न मे देखकर जग गई,
यावत् हृष्टतुष्ट हृदय होकर
सुखपूर्वक उस गर्भ को वहन करने लगी।

[हिन्दी अर्थ]

ऐसा कह करके उन्होने देवकी माता को मधुर एव इष्ट वचनो से आश्वस्त किया और आश्वस्त करके जिधर से आये थे उधर ही लौट गये ।

कालान्तर मे उस देवकी माता ने, जब वह पुण्यशाली के योग्य सुख-सेज पर सोई हुई थी, तब एक दिन सिंह का स्वप्न देखा ।

स्वप्न देखकर वह जागृत हुई । पति से स्वप्न का वृत्तान्त कहा । अपने मनोरथ की पूर्णता को निश्चित समझकर यावत् हर्षित एव हृष्ट तुष्ट हृदय होती हुई वह सुखपूर्वक अपने उस गर्भ का पालन-पोषण करने लगी ।

सूत्र १५

तदनन्तर उस देवकी देवी ने
नवमास के बाद जपा कुसुम
रक्तबंधु जीवक लाक्षारस
सरसपारिजात तथा तरुण सूर्य
के समान कान्ति वाले, सभी के
नयनो को अच्छा लगने वाले,यावत् सुरूप
गजतालु के समान सुकोमल पुत्र
को जन्म दिया ।
उसका जन्म मेघकुमार की तरह समझें।
माता पिता ने सोचा कि यह हमारा
जन्मित बालक गजतालु के
समान सुकोमल है । इस कारण
हमारे इस पुत्र का नाम
गजसुकुमाल होवे ।
इसके बाद उस बालक के

तत्पश्चात् उस देवकी देवी ने नवमास का गर्भकाल पूर्ण होने पर जवा-कुसुम, बन्धुक-पुष्प, जीवक लाक्षारस, श्रेष्ठ पारिजात एव उदीयमान सूर्य के समान कान्ति वाले, सर्वजन-नयनाभिराम, सुकुमाल यावत् गज-तालु के समान रूपवान् पुत्र को जन्म दिया । जन्म का वर्णन मेघकुमार के समान समझे ।

यावत् नामकरण के समय माता-पिता ने सोचा—"क्योकि हमारा यह बालक गज-तालु के समान सुकोमल एव सुन्दर है, इसलिये हमारे इस बालक का नाम गज सुकुमाल हो ।" इस प्रकार विचार कर उस बालक के माता-पिता ने उसका 'गज-सुकुमाल'—यह नाम रखा ।

तस्स सोमिलस्स माहणस्स	तस्य सोमिलस्य ब्राह्मणस्य
सोमसिरी णाम माहणी	सोमश्रीनाम्नी ब्राह्मणी
होत्था । सुकुमाला ।	अभवत् । सुकोमला ।
तस्स णं सोमिलस्स	तस्य खलु सोमिलस्य
माहणस्स धूया सोमसिरीए	ब्राह्मणस्य दुहिता सोमश्रिय.
माहणीए अत्तया सोमा	ब्राह्मण्या· आत्मजा सोमा
णाम दारिया होत्था,	नाम्नी दारिका अभवत्,
सुकुमाला जाव सुरूवा ।	सुकुमारा यावत् सुरूपा ।
रूवेणं जाव लावण्णेणं	रूपेण यावत् लावण्येन
उक्किट्ठा, उक्किट्ठसरीरा यावि होत्था ।	उत्कृष्टा, उत्कृष्टशरीरा चापि अभवत् ।

सूत्र १६

तएणं सा सोमा दारिया	ततः खलु सा सोमा दारिका
अण्णया कयाइं ण्हाया	अन्यदा कदाचित् स्नाता
जाव विभूसिया बहूहिं	यावत् विभूषिता बहुभि.
खुज्जाहिं जाव परिक्खित्ता,	कुब्जाभिः यावत् परिक्षिप्ता,

[हिन्दी शब्दार्थ]

माता-पिता ने उसका नाम करण
गजसुकुमाल किया,
शेष मेघकुमार के समान
समझना तदनुसार गजसुकुमाल
भी भोग भोगने मे समर्थ हो गया।

उस द्वारावति नगरी मे
सोमिल नामक ब्राह्मण रहता था
जो कि धनाढ्य था तथा ऋग्वेद
आदि शास्त्रो मे पूर्ण
निष्णात था।
उस सोमिल ब्राह्मण के
सोमश्री नाम वाली ब्राह्मणी
थी। वह बहुत कोमलांगी थी।
उस सोमिल नामक
ब्राह्मण की पुत्री तथा सोमश्री
ब्राह्मणी की आत्मजा सोमा
नामकी लड़की (कन्या) थी,
वह सुकुमारी एवं सुरूपा थी।
रूप और लावण्य-कांति से
उत्कृष्ट थी और उत्कृष्ट शरीर वाली थी।

[हिन्दी अर्थ]

शेष वर्णन मेघकुमार के समान[20] समझना। क्रमश गजसुकुमाल भोग समर्थ हो गया।

उस द्वारिका नगरी मे सोमिल नामक एक ब्राह्मण रहता था, जो समृद्ध और ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद-इन चारो वेदो का सागोपाग पूर्ण ज्ञाता भी था। उस सोमिल ब्राह्मण के सोमश्री नाम की ब्राह्मणी (पत्नी) थी। सोमश्री सुकुमार एव रूपलावण्य सम्पन्न थी।

उस सोमिल ब्राह्मण की पुत्री और सोमश्री ब्राह्मणी की आत्मजा सोमा नाम की कन्या थी जो सुकुमाल यावत् बडी रूपवती थी। उसका रूप, लावण्य एव देहयष्टि का गठन भी उत्कृष्ट था।

सूत्र १६

तदनन्तर वह सोमा कन्या
किसी दिन स्नान की हुई
यावत् अलंकारादि से विभूषित
अनेक कुब्जादि दासियो से घिरी हुई

तब वह सोमा कन्या अन्यदा किसी दिन स्नान कर यावत् वस्त्रालकारो मे विभूषित हो, बहुत सी कुब्जा आदि दासियो के परिवार से घिरी हुई अपने घर मे बाहर आई। घर से बाहर निकल कर जहाँ

[हिन्दी शब्दार्थ]

अपने घर से बाहर निकली,
निकलकर
जहाँ पर राजमार्ग था वहाँ पर
आती है, वहा आकर
राजमार्ग मे सोने की गेद से
खेलती हुई, खेलती हुई ठहरी ।
(या खेलती रही)
उस काल उस समय मे
भ० अरिष्ट० द्वारिका मे पधारे ।
परिषद् धर्म सुनने के लिये
आई और चली गई ।
तब उस कृष्ण वासुदेव ने
भगवान के आने की यह
कथा वार्ता श्रवण की ।
स्नान कर वस्त्रालंकारादिक से
विभूषित होकर
गजसुकुमाल कुमार के
साथ हाथी के हौदे पर आरूढ़ होकर
कोरंट की मालायुक्त छत्र को
धारण किये श्वेतवर चामरों से बीजे
जाते हुए, बीजे जाते हुए द्वारावती
नगरी के मध्य-मध्य से होकर
भगवान श्री नेमिनाथ के
चरणवदन को जाते हुए
सोमा नामक कन्या को देखा,
देखकर सोमा लड़की के
रूप से और यौवन से
विस्मित हुए (प्रभावित हुए) ।

[हिन्दी अर्थ]

राजमार्ग है, वहा आई और राजमार्ग मे सुवर्ण की गेद से खेल खेलती-खेलती खेल मे निमग्न हो गई।

उस काल उस समय अरिहत अरिष्टनेमि द्वारिका नगरी पधारे । परिषद् धर्म-कथा सुनने को आई। उस समय वह कृष्ण वासुदेव भी भगवान् के शुभागमन के समाचार से अवगत हो, स्नान कर—

यावत् वस्त्रालकारो से विभूषित हो गज सुकुमाल कुमार के साथ हाथी के हौदे पर आरूढ होकर कोरट पुष्पो की माला और छत्र धारण किये हुए, श्वेत एव श्रेष्ठ चामरो से दोनो ओर से निरन्तर वीज्यमान जाते हुए, द्वारिका नगरी के मध्य भागो से होकर अर्हत् अरिष्टनेमि के चरण-वन्दन के लिये जाते हुए, राज-मार्ग मे खेलती हुई उस सोमा कन्या को देखते हैं। सोमा कन्या के रूप, लावण्य और कान्ति-युक्त यौवन को देखकर कृष्ण वासुदेव अत्यन्त आश्चर्यचकित हुए ।

सूत्र १७

[हिन्दी शब्दार्थ]

तदनन्तर वह कृष्ण वासुदेव राजसेवको को बुलाते है— बुलाकर इस प्रकार कहते है हे देवानुप्रिय ! तुम जाओ और सोमिल से सोमा कन्या की याचना कर उसे प्राप्त करो, प्राप्त कर उसे कन्याओ के अन्तःपुर मे पहुँचा दो।

इसके बाद यह सोमा गजसुकुमाल की भार्या बनेगी। तदनन्तर उन राजसेवको ने सोमा को अंतःपुर मे पहुँचा दिया।

तब उन कौटुम्बिक पुरुषो ने श्री कृष्ण को वापस सूचना दी। कृष्ण वासुदेव द्वारावती नगरी के मध्य-मध्य से निकलते है, निकलकर जहाँ पर सहस्राम्रवन बगीचा है वहाँ पर जाकर प्रभु की सेवा करने लगे।

तदनन्तर भगवान् अरिष्टनेमी ने कृष्ण वासुदेव को व गज सुकुमाल कुमार को तथा उस सभा को धर्म का उपदेश दिया। श्री कृष्ण वापस लौट गये।

[हिन्दी अर्थ]

तब वह कृष्ण-वासुदेव आज्ञाकारी पुरुषो को बुलाते है, बुलाकर इस प्रकार कहते है— "हे देवानुप्रियो ! तुम सोमिल ब्राह्मण के पास जाओ और उससे इस सोमा कन्या की याचना करो, उसे प्राप्त करो और फिर उसे लेकर कन्याओ के राजकीय अन्त पुर मे पहुँचा दो। समय पाकर यह सोमा कन्या, मेरे छोटे भाई गजसुकुमाल की भार्या होगी।"

तदनन्तर कृष्ण की आज्ञा को शिरोधार्य कर वे राजसेवक सोमिल ब्राह्मण के पास गये और उससे उसकी कन्या की याचना की। इससे सोमिल ब्राह्मण अत्यन्त प्रसन्न हुआ और अपनी कन्या को ले जाने की स्वीकृति दे दी। उन कौटुम्बिक पुरुषो ने सोमा को उसके पिता सोमिल से प्राप्त कर यावत् अन्त पुर मे पहुँचा दिया और उन्होने श्री कृष्ण को निवेदन किया कि उनकी आज्ञा का यावत् पूर्णत पालन हो गया है।

तत्पश्चात् कृष्ण वासुदेव द्वारिका नगरी के मध्य भाग से होते हुए निकले और निकलकर जहाँ सहस्राम्रवन उद्यान था, वहाँ पहुँच कर यावत् प्रभु को वन्दन नमस्कार करके उनकी सेवा करने लगे। उस समय भगवान् अरिष्टनेमि ने कृष्ण, वासुदेव और गजसुकुमाल कुमार प्रमुख उस सभा को धर्मोपदेश दिया। प्रभु की अमोघ वाणी सुनने के पश्चात् कृष्ण अपने आवास को लौट गये।

सूत्र १८

[हिन्दी शब्दार्थ]

तदनन्तर वह गजसुकुमाल
कुमार भगवान श्री अरिष्टनेमी
के पास धर्म कथा सुनकर
विरक्त होकर बोले
भगवन् ! माता-पिता को
पूछकर मै आपके पास व्रत ग्रहण करूंगा,
मेघकुमार की तरह,
विशेष रूप से महिलाओ को छोड़कर
माता-पिता ने उन्हे वंशवृद्धि के बाद
दीक्षा ग्रहण करने को कहा ।
श्री कृष्ण वासुदेव ने गजसुकुमाल
की वैराग्यरूप यह कथा
सुनी तो जहाँ गजसुकुमाल
कुमार था वहाँ आये,

पास आकर गजसुकुमाल
कुमार का स्नेह से आलिंगन
किया, आलिंगन कर उसे अपनी
गोदी मे बैठा लेते है,
गोदी मे बैठाकर इस प्रकार कहा—
"तूं मेरा सहोदर छोटा
भाई है, इस कारण हे देवानुप्रिय !
इस समय भगवान नेमिनाथ के
पास मुंडित होकर यावत् दीक्षा
ग्रहण मत कर ।

[हिन्दी अर्थ]

प्रभु का धर्मोपदेश सुनकर श्री कृष्ण तो लौट गये किन्तु वह गजसुकुमाल कुमार भगवान् नेमिनाथ के पास धर्म-कथा सुनकर ससार से विरक्त हो प्रभु नेमिनाथ से इस प्रकार बोले—"हे भगवन् ! माता पिता को पूछकर मै आपके पास श्रमणधर्म ग्रहण करुगा ।"

इस प्रकार मेघकुमार के समान भगवान् को निवेदन करके गजसुकमार अपने घर आये और माता-पिता के सामने अपने विचार प्रकट किये। माता-पिता ने दीक्षा लेने के उनके विचार सुनकर गजसुकमाल से कहा कि हे पुत्र ! तुम हमे बहुत प्रिय हो। हम तुम्हारा वियोग सहन नही कर सकेंगे। अभी तुम्हारा विवाह भी नही हुआ है इसलिए तुम पहले विवाह करो। विवाह करके कुल की वृद्धि करके सतान को अपना दायित्व सौप कर फिर दीक्षा ग्रहण करना।

तदनन्तर कृष्ण-वासुदेव गजसुकुमाल के विरक्त होने की बात सुनकर गजसुकमाल के पास आये और आकर उन्होने गजसुकुमाल कुमार का स्नेह से आलिंगन किया, आलिगन कर गोद मे बिठाया, गोद मे बिठाकर इस प्रकार बोले—

"हे देवानुप्रिय ! तुम मेरे सहोदर छोटे भाई हो, इसलिये मेरा तुमसे कहना है कि इस समय भगवान् अरिष्टनेमि के पास मुडित होकर यावत् दीक्षा ग्रहण मत करो।

सूत्र १६

तएण से गयसुकुमाले कुमारे
कण्हं वासुदेवं अम्मापियरो
य दोच्चपि तच्चं पि
एवं वयासी—

एवं खलु देवाणुप्पिया !
माणुस्सया कामा असुइ,
असासया, वंतासवा
जाव विप्पजहियव्वा भविस्सति ।

तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया !
तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे
अरहओ अरिट्ठणेमिस्स अंतिए
जाव पव्वइत्तए ।

तए णं तं गयसुकुमालं कुमारं
कण्हे वासुदेवे अम्मापियरो य
जाहेणो संचाएइ बहुयाहिं
अणुलोमाहिं जाव आघवित्तए ।

ततः खलु सः गजसुकुमालः कुमारः
कृष्णं वासुदेवं अम्बापितरौ
च द्वितीयमपि तृतीयमपि
एवमवादीत्—

एवं खलु देवानुप्रियाः !
मानुष्यकाः कामाः अशुचयः,
अशाश्वताः, वान्तास्रवाः यावत्
विप्रहातव्याः भविष्यन्ति ।

तत् इच्छामि खलु देवानुप्रियाः !
युष्माभिः अभ्यनुज्ञातः सन्
अर्हतः अरिष्टनेमिनः अन्तिके
यावत् प्रव्रजितुम् ।

ततः खलु तं गजसुकुमालं कुमारं
कृष्णः वासुदेवः अम्बापितरौ च
यदा न शक्नुवन्ति बहुकाभिः
अनुलोमाभिः यावत् आख्यापयितुम् ।

[हिन्दी शब्दार्थ]

मै तुमको द्वारावती नगरी मे बडे समारोह के साथ राज्याभिषेक से अभिषिक्त करूंगा।" तदनन्तर वह गजसुकुमाल कुमार कृष्ण वासुदेव से इस प्रकार कहा गया होकर मौन रहा।

[हिन्दी अर्थ]

मैं तुमको द्वारिका नगरी मे बहुत वडे समारोह के साथ राज्याभिषेक से अभिषिक्त करु गा।" तव गजसुकुमाल कुमार कृष्ण वासुदेव द्वारा ऐसा कहे जाने पर मौन रहे।

सूत्र १९

कुछ समय के बाद वह गजसुकुमाल कुमार कृष्ण वासुदेव और माता-पिता को दूसरी-तीसरी बार भी इस प्रकार बोले—

"इस प्रकार हे देवानुप्रिय ! मनुष्य के कामभोग अपवित्र है अस्थायी है, मलमूत्र वमन के स्रोत है ये एक दिन अवश्य छोड़ने होगे।"

इसलिए हे देवानुप्रिय ! मै चाहता हूँ कि आपकी आज्ञा पाकर भगवान् अरिष्टनेमी के पास प्रव्रज्या (दीक्षा) ग्रहण करलूँ। तब उस गजसुकुमाल कुमार को कृष्ण वासुदेव और माता-पिता जब बहुत सी अनुकूल एवं स्नेहभरी युक्तियों से समझाने मे समर्थ नही हुए।

कुछ समय मौन रहने के वाद गजसुकुमाल अपने वडे भाई कृष्ण वासुदेव एव माता-पिता को दूसरी वार और तीसरी वार भी इस प्रकार बोले—"हे देवानुप्रियो ! वस्तुत. मनुष्य के कामभोग एव देह अपवित्र, अशाश्वत क्षणविध्वसी और मल-मूत्र-कफ-वमन-पित्त-शुक्र एव शोणित के भडार है। यह मनुष्य शरीर और ये उसके कामभोग अस्थिर है, अनित्य है एव सडन-गलन एव विध्वसी होने के कारण आगे पीछे कभी न कभी अवश्य नष्ट होने वाले है। एक दिन देर अवेर ये छूटने वाले है।"

"इसलिए हे देवानुप्रियो ! मै चाहता हू कि आपकी आज्ञा मिलने पर भगवान् अरिष्टनेमि के पास प्रव्रज्या (श्रमण दीक्षा) ग्रहण कर लू।"

तदनन्तर उस गजसुकुमाल कुमार को कृष्ण-वासुदेव और माता-पिता जव वहुत-सी अनुकूल और स्नेह भरी युक्तियो से भी समझाने मे समर्थ नही हुए तव निराश होकर श्री कृष्ण एव माता-पिता इस प्रकार वोले—

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
ताहे अकामा चेव एवं वयासी—	तदा अकामा एव एवमवदन्
तं इच्छामो णं ते जाया !	तत् इच्छामः ते जात !
एगदिवसमवि रज्जसिरिं पासित्तए ।	एकदिवसमपि राज्यश्रियम् द्रष्टुम् ।
णिक्खमणं, जहा महब्बलस्स[22] जाव तमाणाए तहा जाव संजमित्तए ।	निष्क्रमणम्, यथा महाबलस्य[22] यावत् तदाज्ञाया यावत् संयतित्वः ।
तए णं से गयसुकुमाले अणगारे जाए इरियासमिए जाव गुत्तबंभयारी ।	ततः सः गजसुकुमालः अनगारः जातः ईर्यासमितः यावत् गुप्त ब्रह्मचारी ।

सूत्र २०

तए णं से गयसुकुमाले अणगारे जं चेव दिवसं पव्वइए तस्सेव दिवसस्स पुव्वावरण्हकालसमयंसि जेणेव अरहा अरिट्ठणेमी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, अरहं अरिट्ठणेमिं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ, करित्ता एवं वयासी—	ततः सः गजसुकुमालः अनगारः यस्मिन् एव दिवसे प्रव्रजितः तस्यैव दिवसस्य पूर्वापरान्हकालसमये यत्रैव अर्हन् अरिष्टनेमिः तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य, अर्हन्तमरिष्टनेमिनम् त्रिःकृत्य आदक्षिण-प्रदक्षिणां करोति, कृत्वा एवमवदत्-

[हिन्दी शब्दार्थ]

तब न चाहते हुए भी इस प्रकार बोले-

"यदि ऐसा ही है तो हे पुत्र !

हम चाहते है तुम्हारी

एक दिन की राज्य लक्ष्मी को देखना"

(गजसुकुमाल ने उनकी

आज्ञा स्वीकार कर दीक्षा ग्रहण की)

दीक्षा सम्बन्धी निष्क्रमण महाबल[२२]

समान यावत् आज्ञानुसार संयम पालन

मे उद्यत हुए ।

तब वह गजसुकुमाल कुमार

अनगार हो गये और ईर्यासमिति

वाले यावत् गुप्त ब्रह्मचारी बन गये।

[हिन्दी अर्थ]

"यदि ऐसा ही है तो हे पुत्र ! हम एक दिन की तुम्हारी राज्यश्री (राजवैभव की शोभा) देखना चाहते है। इसलिये तुम कम से कम एक दिन के लिये तो राजलक्ष्मी को स्वीकार करो ।"

माता-पिता एव बडे भाई के इस प्रकार अनुरोध करने पर गजसुकुमाल चुप रहे।

इसके बाद बडे समारोह के साथ उनका राज्याभिपेक किया गया ।

गजसुकुमाल के राजगद्दी पर बैठने पर माता-पिता ने उनसे पूछा—"हे पुत्र ! अब तुम क्या चाहते हो ? बोलो ।"

गज सुकुमाल ने तब उत्तर दिया—"मैं दीक्षित होना चाहता हूँ ।"

तब गजसुकुमाल की इच्छानुसार दीक्षा की सभी सामग्री मगाई गई ।

'दीक्षा सम्बन्धी निष्क्रमण' 'एव आज्ञानुसार सयम पालन मे उद्यत हुए ।' यहा तक का वर्णन महाबल के समान समझना ।[२२]

अब वह गजसुकुमाल अणगार हो गये । ईर्यासमिति वाले यावत् गुप्त ब्रह्मचारी बन गये ।

सूत्र २०

तदनन्तर वह गजसुकुमाल

मुनि जिस दिन दीक्षा ग्रहण की

उसी दिन

दिन के पिछले भाग मे

जहाँ अरिहंत अरिष्टनेमी थे

वहाँ आये,

वहाँ आकर भगवान् नेमिनाथ को

तीन बार दक्षिण तरफ से

प्रदक्षिणा करते है, तथा

प्रदक्षिणा करके इस प्रकार बोले—

श्रमण धर्म मे दीक्षित होने के पश्चात् वह गजसुकुमाल मुनि जिस दिन दीक्षित हुए, उसी दिन, दिन के पिछले भाग मे जहाँ अरिहत अरिष्टनेमि विराजमान थे, वहाँ आये। वहाँ आकर उन्होने भगवान् नेमिनाथ की दक्षिण की ओर से तीन वार प्रदक्षिणा की। प्रदक्षिणा करके वे इस प्रकार वोले—

'इच्छामि णं भन्ते !
तुब्भेहि अब्भणुण्णाए समाणे
महाकालम्मि सुसाणंमि
एगराइय महापडिम
उवसपज्जित्ता णं विहरित्तए ।'
'अहासुह देवाणुप्पिया !'

इच्छामि खलु भदन्त !
युष्माभिरभ्यनुज्ञातः सन्
महाकालनामके श्मशाने
एकरात्रिकीं महाप्रतिमाम्
उपसम्पद्य खलु विहर्तुम्
यथासुखं देवानुप्रिया !

तए णं से गयसुकुमाले
अणगारे अरहया अरिट्ठणेमिणा
अब्भणुण्णाए समाणे अरह
अरिट्ठणेमि वदइ णमसइ,
वदित्ता णमसित्ता
अरहओ अरिट्ठणेमिस्स
अतियाओ सहसववणाओ
उज्जाणाओ पडिणिक्खमइ,
पडिणिक्खमित्ता जेणेव
महाकाले सुसाणे
तेणेव उवागच्छइ,
उवागच्छित्ता थडिल
पडिलेहेइ,
पडिलेहित्ता उच्चारपासवण
भूमि पडिलेहेइ,
पडिलेहित्ता

ततः खलु स गजसुकुमालः
अनगारः अर्हता अरिष्टनेमिना
अभ्यनुज्ञातः सन् अर्हन्तम्
अरिष्टनेमिन वदति नमस्यति,
वन्दित्वा नमस्यित्वा
अर्हत अरिष्टनेमिन
अन्तिकात् सहस्राम्रवनात्
उद्यानात् प्रतिनिष्क्रामति,
प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव
महाकाल श्मशान
तत्रैव उपागच्छति,
उपागत्य स्थडिलम्
प्रतिलेखयति,
प्रतिलेख्य उच्चारप्रस्रवण
भूमि प्रतिलेखयति,
प्रतिलेख्य

ईसिं पब्भारगएणं काएणं
जाव दो वि पाए साहट्टु

ईषत्प्राग्भारगतेनकायेन
यावत् द्वौ अपि पादौ संहृत्य

[हिन्दी शब्दार्थ]

"हे भगवन् ! मैं चाहता हूँ
आपसे आज्ञा दिया हुआ
महाकाल नामक श्मशान में
एक रात्रि की महाप्रतिमा
धारणकर विचरण करूँ।"
प्रभु बोले—"हे देवानुप्रिय !
जैसे सुख हो वैसा करो।"
तब वह गजसुकुमाल
मुनि भगवान नेमिनाथ से
आज्ञा प्राप्त कर भगवान
नेमिनाथ को वन्दना नमस्कार करते है,
वन्दना नमस्कार करके
भगवान नेमिनाथ के
पाससे सहस्राम्रवन नामक
बगीचे से बाहर निकले।
उद्यान से निकलकर जहाँ
महाकाल श्मशान था
वहां पर आते है।
महाकाल श्मशान मे आकर
उन्होने भूमि की प्रतिलेखना की,
प्रतिलेखन करके उच्चार
पासवण भूमि (मलमूत्रत्यागस्थल)
का प्रतिलेखन करते है, प्रतिलेखन करके
थोडा देह को पूर्व की तरफ झुका
कर (एक पुद्गल पर दृष्टि जमाये)
दोनो पैरो को (चार अंगुल के अन्तर
मे) सिकोड

[हिन्दी अर्थ]

"हे भगवन् ! आपकी अनुज्ञा प्राप्त होने पर मैं महाकाल श्मशान मे एक रात्रि की महापडिमा (महाप्रतिमा) धारण कर विचरना चाहता हू।"

प्रभु ने कहा—"हे देवानुप्रिय ! जिससे तुम्हे सुख प्राप्त हो वही करो।"

तदनन्तर वह गजसुकुमाल मुनि अरिहत अरिष्टनेमि की आज्ञा मिलने पर, भगवान् नेमिनाथ को वदन नमस्कार करते है। वदन नमस्कार कर, अर्हत् अरिष्टनेमि के सान्निध्य से चलकर वे सहस्राम्र वन उद्यान से निकले वहा से निकलकर जहा महाकाल श्मशान था, वहा आते हैं।

महाकाल श्मशान मे आकर प्रासुक स्थडिल भूमि की प्रतिलेखना करते है। प्रतिलेखन करने के पश्चात् उच्चार-प्रस्रवण (मल-मूत्र त्याग) के योग्य भूमि का प्रतिलेखन करते हैं। प्रतिलेखन करने के पश्चात् एक स्थान पर खडे हो अपनी देह यष्टि को किंचित् झुकाये हुए (एक पुद्गल पर दृष्टि जमाकर) दोनो पैरो को (चार अगुल के अन्तर से) सिकोडकर

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
एगराइयं महापडिम	एकरात्रिकीं महाप्रतिमाम्
उवसंपज्जित्ताणं विहरइ ।	उपसंपद्य विहरति।

सूत्र २१

इमं च णं सोमिले माहणे	अयं च खलु सोमिलो ब्राह्मणः
सामिधेयस्स अट्ठाए वारवईओ	समिधायाः अर्थाय द्वारावत्याः
णयरीओ वहिया, पुव्वणिग्गए	नगर्या : वहि : पूर्वनिर्गतः
समिहाओ य	समिधः च
दब्भे य कुसे य पत्तामोडयं च	दर्भांश्च कुशांश्च पत्रामोटं च
गिण्हइ, गिण्हित्ता तओ	गृह्णाति, गृहीत्वा ततः
पडिणियत्तइ, पडिणियत्तित्ता	प्रतिनिवर्तते, प्रतिनिवृत्य
महाकालस्स सुसाणस्स	महाकालस्य श्मशानस्य
अदूरसामंतेणं वीइवयमाणे	अदूरसामंतेन व्यतिव्रजन्
संझाकालसमयंसि	संध्याकालसमये
पविरलमणुस्ससि	प्रविरलमानुषे
गयसुकुमालं अणगारं	गजसुकुमालम् अनगारम्
पासइ, पासित्ता तं वेरं	पश्यति, दृष्ट्वा तत् वैरं
सरइ	स्मरति,
सरित्ता आसुरुत्ते एवं वयासी-	स्मृत्वा आशुरक्तः एवम् अवदत्—
एस णं भो! से गयसुकुमाले	एष खलु भो ! स गजसुकुमालः
कुमारे अपत्थिय जाव	कुमारः अप्रार्थितः यावत्
परिवज्जिए,	परिवर्जितः,
जे णं मम धूयं, सोमसिरीए	यः खलु मम दुहितरं, सोमश्रियाः
भारियाए अत्तयं सोमंदारियं	भार्यायाः आत्मजां सोमां दारिकां
अदिट्ठदोसपइयं कालवत्तिणीं	अदृष्टदोषप्रकृतिम्, कालवर्तिनीम्
विप्पजहित्ता मुण्डे जाव पव्वइए ।	विप्रहाय मुण्डो यावत् प्रव्रजितः ।

[हिन्दी शब्दार्थ]

कर एक रात्रि की महाप्रतिमा अंगीकार करके ध्यान मे खडे रहे ।

[हिन्दी अर्थ]

एक रात्रि की महाप्रतिमा अगीकार कर ध्यान मे मग्न हो जाते है ।

सूत्र २१

यह सोमिल ब्राह्मण हवन की लकडी के लिए द्वारावती नगरी से बाहर, पहले से निकला हुआ हवनीय काष्ठ, दर्भा कुशा और अग्रभाग में मुडे हुए (सूखे) पत्तो को लेता है, लेकर वहाँ से वापस लौटता है, वापस लौटकर महाकाल श्मशान के निकट से जाते हुए संध्याकाल के समय मे जब कि मनुष्यों का आवागमन नही सा था गजसुकुमाल मुनि को देखता है, देखते ही सोमिल को पूर्व जन्म का वैर जागृत हो गया, वैर जागृत होते ही तत्काल क्रोधित होता हुआ इस प्रकार बोला- अरे ! यह वह गजसुकुमाल कुमार अप्रार्थनीय मृत्यु को चाहने वाला यावत् लज्जा-रहित है, जिसने मेरी पुत्री व सोमश्री ब्राह्मणी की आत्मजा सोमा कन्या को जो कि अवस्था प्राप्त और दोष रहित है छोड़कर मुंडित हो साधु बन गया है ।

इधर ऐसा हुआ कि सोमिल ब्राह्मण समिधा (यज्ञ की लकडी) के लिए द्वारिका नगरी के बाहर पूर्व की ओर गज सुकुमाल अणगार के श्मशान भूमि मे जाने से पूर्व ही निकला ।

वह समिधा, दर्भ, कुश डाभ एव अग्र भाग मे मुडे हुए पत्तो को लेता है, उन्हे लेकर वहा से अपने घर की तरफ लौटता है ।

लौटते समय महाकाल श्मशान के निकट (न अति दूर न अति सन्निकट) से जाते हुए सध्या काल की बेला मे, जबकि मनुष्यो का गमनागमन नही के समान हो गया था, उसने गजसुकुमाल मुनि को वहा ध्यानस्थ खडे देखा ।

उन्हे देखते ही सोमिल के हृदय मे पूर्व भव का वैर जागृत हुआ । पूर्व जन्म के वैर का स्मरण हुआ । पूर्व जन्म के वैर को स्मरण करके वह क्रोध से तमतमा उठता है और इस प्रकार बुदबुदाता है—

अरे ! यह तो वही अप्रार्थनीय का प्रार्थी (मृत्यु की इच्छा करने वाला) यावत् निर्लज्ज एव श्री कान्ति आदि से हीन गजसुकुमाल कुमार है, जो मेरी सोम श्री भार्या की कुक्षि से उत्पन्न यौवनावस्था को प्राप्त मेरी निर्दोष पुत्री सोमा कन्या को अकारण ही छोडकर मुडित हो यावत् श्रमण बन गया है ।

सूत्र २२

[मूल सूत्र पाठ]	[सस्कृत छाया]
तं सेय खलु मम गयसुकुमालस्स	तत् श्रेयः खलु मम गजसुकुमालस्य
वेरणिज्जायणं करित्तए,	वैर निर्यातनं कर्तुम्,
एवं सपेहेइ,	एव सप्रेक्षते,
सपेहित्ता दिसापडिलेहणं करेइ,	संप्रेक्ष्य दिशाप्रतिलेखनं करोति,
करित्ता	कृत्वा
सरसं मट्टियं गिण्हइ,	सरसा मृत्तिकां गृह्णाति,
गिण्हित्ता जेणेव गयसुकुमाले	गृहीत्वा यत्रैव गजसुकुमाल
अणगारे तेणेव उवागच्छइ,	अनगारः तत्रैव उपागच्छति,
उवागच्छित्ता गयसुकुमालस्स अणगारस्स	उपागत्य गजसुकुमालस्य अनगारस्य
मत्थए मट्टियाए पालि बंधइ,	मस्तके मृत्तिकायाः पालिं बध्नाति,
बधित्ता जलतीओ चिययाओ	बद्ध्वा ज्वलन्त्याश्चितिकायाः
फुल्लियकिसुय-समाणे	फुल्लितकिशुकसमानान्
खयरंगारे कहल्लेणं गिण्हइ,	खदिराङ्गारान् कर्परेण गृह्णाति,
गिण्हित्ता गयसुकुमालस्स	गृहीत्वा गजसुकुमालस्य
अणगारस्स मत्थए पक्खिवइ,	अनगारस्य मस्तके प्रक्षिपति,
पक्खिवित्ता भीए तओ खिप्पामेव	प्रक्षिप्य भीतः तत क्षिप्रमेव
अवक्कमइ,	अपक्रामति,
अवक्कमित्ता जामेव दिसं पाउब्भूए	अपक्रम्य यस्याः दिशः प्रादुर्भूतः
तामेव दिस पडिगए ।	तस्यामेव दिशि प्रतिगतः ।

सूत्र २३

तए णं तस्स गयसुकुमालस्स	ततः खलु तस्य गजसुकुमालस्य
अणगारस्स सरीरयसि वेयणा	अनगारस्य शरीरे वेदना
पाउब्भूया,	प्रादुर्भूता,
उज्जला जाव दुरहियासा	उज्वला यावत् दुरधिसहा,
तएण से	ततः खलु स

सूत्र २२

[हिन्दी शब्दार्थ]

इसलिये निश्चय ही मुझे गजसुकुमाल से
वैर का बदला लेना उचित है,
इस प्रकार (यह) विचार करता है,
विचार कर दिशाओ का निरीक्षण
करता है, चारो तरफ देखकर
गीली मिट्टी लेता है,
मिट्टी लेकर जहां गजसुकुमाल
मुनि थे, वहां आता है,
वहां आकर गजसुकुमाल मुनि के
मस्तक पर मिट्टी की पाल बॉधता है,
पाल बॉधकर जलती हुई चिता से
फूले हुए केसूड़ा के फूलों के समान
लालखेर के अंगारो को खप्पर मे लेता है,
लेकर गजसुकुमाल
मुनि केमस्तक पर रख देता है,
रखकर भयभीत हुआ, वहा से शीघ्र
ही हट जाता है,
हटकर ि दिशा से आया था,
उस ही दिशा मे चला गया ।

[हिन्दी अर्थ]

इसलिये मुझे निश्चय ही गजसुकुमाल से इस वैर का वदला लेना चाहिये । इस प्रकार वह सोमिल सोचता है और सोचकर सब दिशाओ की ओर देखता है कि कही कोई उसे देख तो नही रहा है । इस विचार से चारो ओर देखता हुआ पास के ही तालाब से वह थोडी गीली मिट्टी लेता है । गीली मिट्टी लेकर वहा आता है । वहा आकर गजसुकुमाल मुनि के सिर पर उस मिट्टी से चारो तरफ एक पाल बाधता है ।

पाल बाधकर पास मे ही कही जलती हुई चिता मे से फूले हुए केसू के फूल के समान लाल-लाल खेर के अगारो को किसी फूटे खप्पर मे या कि किसी फूटे हुए मिट्टी के बरतन के टुकडे (ठीकरे) मे लेकर वह उन दहकते हुए अगारो को उन गजसुकु-माल मुनि के सिर पर रखने के बाद इस भय से कि कही उसे कोई देख न ले, भय-भीत हो कर वह वहा से शीघ्रतापूर्वक पीछे की ओर हटता हुआ भागता है । वहा से भागता हुआ वह सोमिल जिस ओर से आया था उसी ओर चला गया ।

सूत्र २३

अंगार रखने के बाद उस गजसुकुमाल
मुनि के शरीर मे तीव्र वेदना
उत्पन्न हुई, जो
अत्यन्त दुःखरूप यावत् असह्य थी,
तब वह

सिर पर उन जाज्वल्यमान अगारो के रखे जाने से गजसुकुमाल मुनि के शरीर मे महा भयकर वेदना उत्पन्न हुई जो अत्यन्त दाहक दु खपूर्ण यावत् दुस्सह थी । इतना होने पर भी वे गजसुकुमाल मुनि सोमिल ब्राह्मण पर मन से भी लेश मात्र भी द्वेष नही करते

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
गयसुकुमाले अरणगारे	गजसुकुमालः अनगारः
सोमिलस्स माहरणस्स मरणसा	सोमिलस्य ब्राह्मरणस्य मनसा
वि अप्पदुस्समारणे तं उज्जलं	अपि अप्रदुष्यन् तां उज्वलां
जाव अहियासेई ।	यावत् (दुःसहां वेदनां) अधिसहते ।
तएरणं तस्स गयसुकुमालस्स	ततः खलु तस्य गजसुकुमालस्य
अरणगारस्स तं उज्जलं जाव	अनगारस्य तां उज्वलां यावत्
अहियासेमारणस्स सुभेरणं	अधिसहमानस्य शुभेन
परिरणामेरणं पसत्थज्झवसारणेरणं	परिरणामेन प्रशस्ताध्यवसायेन
तयावररिणज्जारण कम्मारणं	तदावररणीयानां कर्मरणां
खएरणं कम्मरयविकिररणकरं	क्षयेन कर्मरजविकिररणकरम्
अपुव्व-कररणं अरणुप्पविट्ठस्स	अपूर्वकररणमनुप्रविष्टस्य
अरणते, अरणुत्तरे जाव	अनन्तमनुत्तरं यावत्
केवलवररणारण-दंसरणे	केवलवरज्ञानदर्शनम्
समुप्पण्णे तओ पच्छा	समुत्पन्नम् ततः पश्चात्
सिद्धे जावप्पहीरणे ।	सिद्धः यावत् प्रहीरणः ।
तत्थरणं अहा सरिणहिएहिं	तत्र खलु यथा संनिहितैः
देवेहिं सम्मं आराहियंति	देवैः सम्यक् आराधितः इति
कट्टु दिव्वे सुरभिगंधोदए वुट्ठे,	कृत्वा दिव्यं सुरभिगन्धोदकं वृष्टम्
दसद्धवण्णे कुसुमे रिणवाइए	दशार्धवर्णानिकुसुमानि निपातितानि,
चेलुक्खेवे कए	चैलोत्क्षेपः कृतः
दिव्वे य गीय-गंधव्वरिणरणाए	दिव्यं च गीतं-गान्धर्वनिनादः
कए यावि होत्था ।	कृतः चापि अभूत् ।

सूत्र २४

तए रण से कण्हे वासुदेवे	ततः खलु सः कृष्ण वासुदेवः
कल्ल पाउप्पभायाए जाव-	कल्ये प्रादुर्भूतप्रभाते यावत्

[हिन्दी शब्दार्थ]	[हिन्दी अर्थ]
गजसुकुमाल मुनिवर सोमिल ब्राह्मण पर मनसे भी द्वेष न लाते हुए उस तीव्रतर दुःखरूपवेदना को सहन करने लगे ।	हुए उस एकान्त दु खरूप वेदना को यावत् समभावपूर्वक सहन करने लगे ।
उस समय उस गजसुकुमाल मुनि द्वारा उस तीव्र यावत् एकान्त वेदना को सहन करते हुए प्रशस्त शुभ परिणाम पूर्वक अध्यवसाय के कारण आवरणीय कर्म का क्षय होने से कर्मरज को बिखेरने वाले अपूर्व करण मे प्रविष्ट होने से अनन्त सर्वश्रेष्ठ पूर्ण केवल ज्ञान और केवल दर्शन उत्पन्न हुआ । इसके बाद वे सिद्ध बुद्ध यावत् सब दुःखो से मुक्त हो गये ।	उस समय उस एकान्त दु खपूर्ण दुस्सह दाहक वेदना को समभाव से सहन करते हुए शुभ परिणामो तथा प्रशस्त शुभ अध्यवसायो (भावनाओ) के फलस्वरूप आत्मगुणो पर भिन्न-भिन्न रूपो वाले तद् तदावरणीय कर्मों के क्षय से समस्त कर्म-रज को झाडकर साफ कर देने वाले कर्म विनाशक अपूर्व-करण मे वे प्रविष्ट हुए जिससे उन गजसुकुमाल अणगार को अनत-अन्तरहित, अनुत्तर यावत् सर्वश्रेष्ठ निर्व्याघात् निरावरण एव सपूर्ण केवल ज्ञान एव केवलदर्शन की उपलब्धि हुई और तत्पश्चात् आयुष्य पूर्ण हो जाने पर वे उसी समय सिद्ध बुद्ध यावत् सब दु खो से मुक्त हो गये । इस तरह सकल कर्मों के क्षय हो जाने से वे गजसुकुमाल अणगार कृतकृत्य बन कर 'सिद्ध' पद को प्राप्त हुए, लोकालोक के सभी पदार्थो के ज्ञान से 'बुद्ध' हुए, सभी कर्मों के छूट जाने से परिनिवृत्त यानि शीतली भूत हुए एव शारीरिक और मानसिक सभी दुखो से रहित होने से 'सर्व दुख प्रहीण' हुए अर्थात् वे गजसुकुमाल अणगार मोक्ष को प्राप्त हुए ।
तदनन्तर जो वहाँ समीप थे उनदेवों ने भलीप्रकार आराधना की तथा दिव्य सुगन्धित जल की वर्षा की पाँचवर्ण के पुष्प गिराये वस्त्रो की वर्षा की और दिव्य गीत और गन्धर्व-वाजित्र की ध्वनि भी हुई ।	उस समय वहा समीपवर्ती देवो ने-"अहो ! इन गजसुकुमाल मुनि ने श्रमण चारित्रधर्म की अत्यन्त उत्कृष्ट आराधना की है" यह जान कर अपनी वैक्रिय शक्ति के द्वारा दिव्य सुगन्धित अचित्त जल की तथा पाच वर्णो के दिव्य अचित्त फूलो एव वस्त्रो की वर्षा की और दिव्य मधुर गीतो तथा गन्धर्व वाद्ययन्त्रो की ध्वनि से आकाश को गु जा दिया

सूत्र २४

तदनन्तर वह कृष्ण वासुदेव दूसरे दिन प्रातःकाल सूर्योदय होने पर	उस रात्रि के व्यतीत होने के पश्चात् दूसरे दिन सूर्योदय की वेला मे कृष्ण वासुदेव

[मूल सूत्र पाठ]

जलते ण्हाए जाव विभूसिए,
हत्थिक्खंधवरगए,
सकोरंटमल्लदामेणं छत्तेणं
धरिज्जमाणेणं सेयवरचामराहि
उद्धुवमाणीहिं
महया भडचडगरपहकरवंद
परिक्खित्ते
वारवईं णयरी मज्झंमज्झेणं
जेणेव अरहा अरिट्ठणेमी
तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।

तएणं से कण्हे वासुदेवे
वारवईए णयरीए मज्झंमज्झेणं
णिग्गच्छमाणे एक्कं पुरिसं
पासइ, जुण्णं
जराजज्जरिय देहं जाव
किलतं महई महालयाओ
इट्टगरासीओ एगमेगं
इट्टग गहाय वहिया
रत्थापहाओ अतोगिह
अणुप्पविसमाणं पासइ ।

तएण मे कण्हे वासुदेवे
तस्स पुरिसस्स अणुकंपणट्ठाए,
हत्थिक्खधवरगए चेव
एग इट्टग गिण्हइ,
गिण्हित्ता वहिया रत्थापहाओ
अतोगिह अणुप्पवेसेइ ।

[संस्कृत छाया]

ज्वलति स्नातः यावत् विभूषितः
हस्तिस्कन्धवरगतः,
सकोरंटकमाल्यदाम्ना छत्रेण
ध्रियमाणेन श्वेतवरचामरैः
उद्धुवद्भिः (उद्धूयमानैः)
महाभटचाटुकारप्रकरवृन्द
परिक्षिप्तः
द्वारावत्याः नगर्याः मध्यमध्येन
यत्रैव अर्हन् अरिष्टनेमी
तत्रैव प्राधारयद् गमनाय ।

ततः खलु सः कृष्णः वासुदेवः
द्वारावत्याः नगर्याः मध्यमध्येन
निर्गच्छन् एकं पुरुषं
पश्यति, जीर्णम्
जराजर्जरितं देहं यावत्
क्लिन्नं (क्लान्तं) महातिमहालयात्
इष्टकाराशेः एकामेकाम्
इष्टका गृहीत्वा बहिः
रथ्यापथात् अन्तर्गृहम्
अनुप्रवेशयन्तम् पश्यति ।

ततः खलु सः कृष्णः वासुदेवः
तस्य पुरुषस्य अनुकंपनार्थं
हस्तिस्कन्धवरगतश्चैव
एकाम् इष्टका गृह्णाति,
गृहीत्वा वहिःरथ्यापथात्
अन्तर्गृहम् अनुप्रवेशयति ।

[हिन्दी शब्दार्थ]

स्नान से निवृत्त हो यावत् वस्त्राभूषणों
से भूषित हुआ
श्रेष्ठ हाथी पर सवार हुआ
कोरंट के फूलो की मालायुक्त
छत्र धारण किये हुए श्वेत चामरो से
बीजे जाते हुए तथा
बडे बडे योद्धाओ व सेवक
समूह से घिरे हुए
द्वारवती नगरी के बीचबीच से
जहाँ पर भगवान् अरिष्टनेमी थे
वहाँ ही जाने का निश्चय किया ।
तदनन्तर वह कृष्ण वासुदेव
द्वारावती नगरी के मध्यभाग
से निकलते हुए एक पुरुष
को देखते है, वह अतिवृद्ध
जरा से जर्जरित देहवाला यावत्
थका हुआ था और जो बहुत
बडे ईंटो के ढेर मे से एक एक
ईट को लेकर बाहर गली के
रास्ते से घर के भीतर ले जा
रहा था, ऐसे को देखा ।

तब उन कृष्ण वासुदेव ने
उस पुरुष की अनुकम्पा के लिये
हाथी पर बैठे हुए ही
एक ईंट को उठाली,
उठाकर बाहर गली के रास्ते से
घर के भीतर पहुंचा दी ।

[हिन्दी अर्थ]

स्नान कर वस्त्रालकारो से विभूषित हो हाथी पर आरूढ होकर, कोरट पुष्पो की माला एव छत्र धारण किये हुए श्वेत एव उज्वल चामर अपने दाये बाये डुलवाते हुए अनेक बडे-बडे योद्धाओ के समूह से घिरे हुए द्वारिका नगरी के राजमार्ग से होते हुए जहा भगवान् अरिष्ट-नेमि विराजमान थे, वहा के लिए रवाना हुए ।

तब उस कृष्ण वासुदेव ने द्वारिका नगरी के मध्य भाग से जाते समय एक पुरुष को देखा, जो अति वृद्ध, जरा से जर्जरित यावत् अति क्लान्त अर्थात् कुम्हलाया हुआ एव थका हुआ था। वह बहुत दुखी था। उसके घर के बाहर राजमार्ग पर ईटो का एक विशाल ढेर लाया हुआ पडा था जिसे वह वृद्ध एक-एक ईट करके अपने घर मे स्थानान्तरित कर रहा था ।

उस दुखी वृद्ध पुरुष को इस तरह एक दो ईट लाते देखकर कृष्ण वासुदेव ने उस पुरुष के प्रति करुणार्द्र होकर उस पर अनुकम्पा करते हुए हाथी पर बैठे-बैठे ही उस ढेर मे से एक ईट उठाई और उसे ले जा कर उसके घर के अन्दर रख दिया तब कृष्ण वासुदेव को इस तरह ईट उठाते देखकर उनके साथ के अनेक सौ पुरुषो ने भी एक एक करके ईटो के उस सम्पूर्ण ढेर को तुरन्त बाहर से उठाकर उसके घर मे पहुचा दिया ।

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
तएणं कण्हेण वासुदेवेणं	ततः खलु कृष्णेन वासुदेवेन
एगाए इट्टगाए गहियाए	एकस्याम् इष्टकायां गृहीतायां
समाणीए अणेगेहिपुरिससएहिं	सत्याम् अनेकैः पुरुषशतैः
से महालए इट्टगस्स	सा महती इष्टकायाः
रासी बहिया रत्थापहाओ	राशिः बहिः रथ्यापथात्
अंतोघरंसि अणुप्पवेसिए।	अन्तर्गृहे अनुप्रवेशितः।

सूत्र २५

तएणं से कण्हे वासुदेवे	ततः खलु सः कृष्णः वासुदेवः
बारवईए णयरीए मज्झंमज्झेणं	द्वारावत्याः नगर्याः मध्यमध्येन
णिग्गच्छइ, णिगच्छित्ता	निर्गच्छति, निर्गत्य
जेणेव अरहा अरिट्ठणेमी	यत्रैव अर्हन् अरिष्टनेमिः
तेणेव उवागए, उवागच्छित्ता	तत्रैव उपागतः, उपागत्य
जाव वंदित्ता णमंसित्ता	यावत् वंदित्वा नमस्यित्वा
गजसुकुमालं अणगारं	गजसुकुमालम् अनगारम्
अपासमाणे अरहं अरिट्ठणेमिं	अपश्यन् अर्हन्तम् अरिष्टनेमिनम्
वंदइ, णमंसइ,	वन्दते नमस्यति,
वंदित्ता, णमंसित्ता एवं वयासी	वन्दित्वा, नमस्यित्वा एवम् अवदत्
कहिणं भंते! से मम सहोयरे	क्व खलु भदन्त! सः मम सहोदरः
भाया गयसुकुमाले अणगारे?	भ्राता गजसुकुमालः अनगारः
जण्णं अहं वंदामि णमंसामि	यं खलु अहं वन्दे नमस्यामि
तएणं अरहा अरिट्ठणेमी	ततः खलु अर्हन् अरिष्टनेमिः
कण्हं वासुदेवं एवं वयासी–	कृष्णं वासुदेवम् एवं अवदत्
साहिएणं कण्हा! गयसुकुमालेणं	साधितः खलु कृष्ण! गजसुकुमालेन
अणगारेणं अप्पणो अट्ठे।	अनगारेन आत्मनः अर्थः।
तएणं से कण्हे वासुदेवे	ततः खलु सः कृष्णः वासुदेवः
अरहं अरिट्ठणेमिं एवं वयासी–	अर्हन्तम् अरिष्टनेमिनम् एवम् अवादीत्

[हिन्दी शब्दार्थ]

तब कृष्ण वासुदेव के द्वारा
एक ईंट उठालेने पर
अनेक सैंकडो पुरुषो द्वारा
वह बहुत बडा ईंटो का
ढेर बाहर गली मे से
घर के भीतर पहुँचा दिया गया।

[हिन्दी अर्थ]

इस प्रकार श्री कृष्ण के एक ईंट उठाने मात्र से उस वृद्ध जर्जर दुःखी पुरुष का बार-बार चक्कर काटने का कष्ट दूर हो गया।

सूत्र २५

तदनन्तर वह कृष्ण वासुदेव
द्वारिका नगरी के बीच में से
निकल गये, निकल कर
जहाँ भगवान् अरिष्टनेमी थे
वहाँ आये, वहाँ आकर
यावत् वंदना नमस्कार करके
गजसुकुमाल मुनि को नही
देखते हुए भगवान् अरिष्टनेमी को
वन्दना नमस्कार करते है
वन्दना नमस्कार करके इस प्रकार बोले
हे भगवन्! वह मेरा सहोदर
भाई गजसुकुमाल मुनि कहाँ है ?
जिसको मै वन्दना नमस्कार करूँ।
तब भगवान् अरिष्टनेमी ने
कृष्ण वासुदेव को इस प्रकार कहा-
हे कृष्ण! गजसुकुमाल मुनि
ने अपना कार्य सिद्ध कर लिया।
तब उस कृष्ण वासुदेव ने भगवान्
अरिष्टनेमी को इस प्रकार कहा-

तत्पश्चात् वह कृष्ण वासुदेव द्वारिका नगरी के मध्य भाग से निकलते हुए जहा भगवान् अरिष्टनेमि विराजते थे वहा आये। वहा आकर यावत् भगवान् को वन्दन नमस्कार किया तत्पश्चात् अपने सहोदर लघु-भ्राता नवदीक्षित गजसुकुमाल मुनि को वन्दन नमस्कार करने के लिये उनको इधर-उधर देखा। जब उन्होने मुनि को वहा नही देखा तो भगवान् अरिष्टनेमि को पुन वन्दन-नमस्कार किया और वन्दन-नमन कर के भगवान् से इस प्रकार पूछा "प्रभो! वे मेरे सहोदर लघुभ्राता नवदीक्षित गजसुकुमाल मुनि कहा है? मै उनको वन्दना नमस्कार करना चाहता हू।"

तब अर्हत् अरिष्टनेमि कृष्ण वासुदेव को इस प्रकार बोले—"हे कृष्ण! गजसुकुमाल मुनि ने जिस प्रयोजन के लिये सयम स्वीकार किया था, वह प्रयोजन, वह आत्मार्थ उन्होने सिद्ध कर लिया है।"

यह सुनकर चकित होते हुए कृष्ण वासुदेव ने अर्हन्त प्रभु से प्रश्न किया "भगवन्!

[मूल सूत्र पाठ]

कहण्ण भन्ते ! गयसुकुमालेणं
अणगारेणं साहिए अप्पणो अट्ठे ।

[संस्कृत छाया]

कथं खलु भदन्त! गजसुकुमालेन
अनगारेन साधितः आत्मनः अर्थः?

सूत्र २६

तएणं अरहा अरिट्ठणेमी
कण्ह वासुदेवं एवं वयासी–
एवं खलु कण्हा! गजसुकुमालेणं
अणगारेणं मम कल्लं
पुव्वावरण्ह काल समयसि
वदइ णमसइ,
वदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी–
'इच्छामि ण जाव उवसंपज्जित्ताणं
विहरइ ।'
तएणं त गयसुकुमाल अणगारं
एगे पुरिसे पासइ,
पासित्ता आसुरत्ते जाव सिद्धे ।
त एव खलु कण्हा! गयसुकुमालेणं
अणगारेणं साहिए
अप्पणो अट्ठे । तएण से कण्हे
वासुदेवे अरहं अरिट्ठणेमि एव वयासी-
के स ण भते ! से पुरिसे
अप्पत्थिय पत्थए जाव परिवज्जिए,
जे ण मम सहोदरं कणीयस
भायर गयसुकुमालं अणगार
अकाले चेव जीवियाओ ववरोविए ?

ततः खलु अर्हन् अरिष्टनेमी
कृष्णं वासुदेवम् एवम् अवादीत्-
एवं खलु कृष्ण! गजसुकुमालेन
अनगारेन माम् कल्यं
पूर्वापराह्णकाल ये
वंदते नमस्यति,
वन्दित्वा नमस्यित्वा एवम् अवादीत्
इच्छामि खलु यावत् उपसंपद्य-
विहरति ।
ततः खलु तं ! गजसुकुमालं अनगारं
एकः पुरुषः पश्यति,
दृष्ट्वा आशुरक्तः यावत् सिद्धः ।
तदेवं खलु कृष्ण ! गजसुकुमालेन
अनगारेण साधितः
आत्मनः अर्थः । ततः खलु सः कृष्णः
अर्हन्तमरिष्टनेमिनं एवम् अवदत्-
(कीदृशः)कः स नु भदन्त ! सः पुरुषः
अप्रार्थित प्रार्थकः यावत् परिवर्जितः,
य खलु मम सहोदरं कनीयांसं
भ्रातरं गजसुकुमालम् अनगारं
अकाले चैव जीवितात् व्यपरोपितः ?

[हिन्दी शब्दार्थ]

हे भगवन् ! गजसुकुमाल मुनि
ने अपना कार्य कैसे सिद्ध कर लिया है ?

[हिन्दी अर्थ]

गजसुकुमाल मुनि ने अपना प्रयोजन, अपना आत्म कार्य सिद्ध कर लिया, यह कैसे ?"

सूत्र २६

तब भगवान् नेमीनाथ
कृष्ण वासुदेव को इस प्रकार बोले-
ऐसा है कृष्ण ! गजसुकुमाल
मुनि ने कल दिन के
पिछले भाग मे मुझको
वंदन नमस्कार किया,
वन्दन नमस्कार करके इस प्रकार कहा
आपकी आज्ञा हो तो एक रात्रि की महा
प्रतिमा धारण करविचरना चाहता हूँ।
इसके बाद उस गजसुकुमाल मुनि को
एक पुरुष ने देखा, देख कर क्रुद्ध हुआ,
यावत् गजसुकुमाल मुनि
आयु पूर्ण कर सिद्ध हो गये ।
इस प्रकार हे कृष्ण ! गजसुकुमाल
मुनि ने अपना कार्य
सिद्ध कर लिया । तब कृष्ण ने
भगवान् अरिष्टनेमी को इस प्रकार कहा
हे पूज्य ! वह अप्रार्थनीय-मृत्यु
को चाहने वाला यावत् लज्जारहित
कौन पुरुष है ? जिसने मेरे सहोदर
छोटे भाई गजसुकुमाल मुनि को
असमय ही जीवनसे वियुक्त कर दिया ?

अर्हत् अरिष्टनेमि ने कृष्ण वासुदेव को उत्तर दिया "हे कृष्ण ! वस्तुत कल दिन के अपराह्न काल के पूर्व भाग मे गजसुकुमाल मुनि ने मुझे वन्दन-नमस्कार किया। वन्दन-नमस्कार करके इस प्रकार निवेदन किया-"हे प्रभो ! आपकी आज्ञा हो तो मै महाकाल श्मशान मे एक रात्रि की महा भिक्षु प्रतिमा धारण करके विचरना चाहता हू ।"

यावत् मेरी अनुज्ञा प्राप्त होने पर वह गजसुकुमाल मुनि महाकाल श्मशान मे जा कर भिक्षु की महाप्रतिमा धारण करके ध्यानस्थ खडे हो गये ।

"इसके बाद उन गजसुकुमाल मुनि को एक पुरुष ने देखा और देखकर उन पर बडा क्रुद्ध हुआ ।

पूर्व का वैर-भाव उसमे जागृत हुआ। वह क्रोध एव वैर से प्रेरित होकर पास के तालाव से गीली मिट्टी लाया और उन गज-सुकुमाल अणगार के सिर पर चारो ओर उस मिट्टी से पाल वाधी । फिर पास मे ही जलती हुई किसी की चिता से धधकते हुए लाल २ अगारो को किसी खप्पर मे या कि किसी फूटे हुए मिट्टी के वरतन के टुकडे मे भरकर उन अणगार के सिर पर वाधी गई उस मिट्टी की पाल मे डाल दिये ।

इससे मुनि को असह्य वेदना हुई। परन्तु फिर भी उनने मन से भी उस घातक पुरुष

[मूल सूत्र पाठ]

तएणं अरहा अरिट्ठणेमी
कण्हं वासुदेवं एव वयासी–
मा णं कण्हा ! तुमं तस्स
पुरिसस्स पओसमावज्जाहि,
एव खलु कण्हा ! तेणं पुरिसेणं
गयसुकुमालस्स अणगारस्स
साहिज्जे दिण्णे ।

[संस्कृत छाया]

ततः अर्हन् अरिष्टनेमिः
कृष्णं वासुदेवं एवमवादीत्
मा खलु कृष्ण ! त्वं तस्य
पुरुषस्य उपरि द्वेषं कुरु
एवं खलु कृष्ण ! तेन पुरुषेण
गजसुकुमालाय अनगाराय
साहाय्यं दत्तम् ।

सूत्र २७

कहण्णं भंते ! तेणं पुरिसेणं
गयसुकुमालस्स साहिज्जे
दिण्णे ? तए णं अरहा अरिट्ठणेमी
कण्हं वासुदेवं एवम् वयासी—
से णूणं कण्हा ! तुमं ममं
पायवंदए हव्वमागच्छमाणे
वारवईए णयरीए एग पुरिसं
पाससि जाव अणुप्पवेसिए ।

कथं भदन्त ! तेन पुरुषेण
गजसुकुमालस्य साहाय्यं
दत्तम् ? ततः खलु अर्हन् अरिष्ट
नेमिः कृष्णं वासुदेवम् एवम् अवदत्—
अथ नूनं कृष्ण ! त्वं मम
पादवंदनाय शीघ्रमागच्छन्
द्वारावत्या नगर्याम् एकं पुरुषं
पश्यसि, यावत् अनुप्रवेशितः ।

[हिन्दी शब्दार्थ]

तब अरिहंत अरिष्टनेमिनाथ

कृष्ण वासुदेव को इस प्रकार बोले-

हे कृष्ण ! तुम उस पुरुष के

ऊपर द्वेष मत करो,

हे कृष्ण ! इस प्रकार उस

पुरुष ने निश्चय ही गजसुकुमाल

मुनि को सहायता प्रदान की है।

[हिन्दी अर्थ]

के प्रति किंचित् मात्र भी द्वेष भाव नही किया। वे समभावपूर्वक उस भयकर वेदना को सहते रहे और इस तरह अत्यन्त शुभ परिणामो, शुभ भावो एव शुभ अध्यवसायो से सम्पूर्ण केवल ज्ञान और केवल दर्शन प्राप्त करके सिद्ध, बुद्ध और मुक्त हो गये। इस प्रकार हे कृष्ण! उन गजसुकुमाल मुनि ने अपना प्रयोजन सिद्ध कर लिया। अपना आत्म कार्य सिद्ध कर लिया।"

यह सुनकर वह कृष्ण वासुदेव भगवान् नेमिनाथ को इस प्रकार पूछने लगे—

"हे पूज्य! वह अप्रार्थनीय का प्रार्थी यानि मृत्यु को चाहने वाला यावत् निर्लज्ज पुरुष कौन है जिसने मेरे सहोदर लघु भ्राता गज-सुकुमाल मुनि का असमय मे ही प्राण-हरण कर लिया ?"

तब अर्हत् अरिष्टनेमि कृष्ण वासुदेव से इस प्रकार बोले—"हे कृष्ण! तुम उस पुरुष पर द्वेष-रोष मत करो, क्योकि इस प्रकार उस पुरुष ने सुनिश्चितरूपेण गजसुकुमाल मुनि को अपना आत्म कार्य, अपना प्रयोजन सिद्ध करने मे सहायता प्रदान की है।"

सूत्र २७

कैसे हे पूज्य ! उस पुरुष ने

गजसुकुमाल को सहायता

दी ? भगवान् अरिष्टनेमी

ने कृष्ण वासुदेव कोइस प्रकार कहा—

हे कृष्ण ! मेरे चरण वन्दन को

शीघ्र आते हुए तुमने द्वारिका

नगरी में एक वृद्ध पुरुष को देखा यावत्

ईंट की ढेरी उसके घर मे रख दी।

यह सुनकर कृष्ण वासुदेव ने पुन प्रश्न किया—"हे पूज्य! उस पुरुष ने गजसुकुमाल मुनि को सहायता दी यह कैसे ?"

इस पर अर्हत् अरिष्टनेमि ने कृष्ण वासुदेव को इस प्रकार स्पष्ट किया—

'हाँ कृष्ण! निश्चय ही उसने सहायता की। मेरे चरण वदन हेतु शीघ्रतापूर्वक आते समय तुमने द्वारिका नगरी मे एक वृद्ध पुरुष को देखा और उसके घर के बाहर राजमार्ग पर पडी हुई ईटो की विशाल राशि मे से तुमने एक ईट उस वृद्ध के घर मे ले जाकर

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
जहा णं कण्हा तुमं तस्स पुरिसस्स साहिज्जे दिण्णे। एवमेव कण्हा ! तेणं पुरिसेणं गयसुकुमालस्स अरणगारस्स अणेगभवसयसहस्स-सचिय कम्मं उदीरेमाणेण बहुकम्मणिज्जरट्ठं साहिज्जे दिण्णे ।	यथा खलु कृष्ण त्वं तस्मै पुरुषाय साहाय्यं दत्तम् । एवमेव कृष्ण ! तेन पुरुषेण गजसुकुमालस्य अनगारस्य अनेक भवशतसहस्रसंचित कर्म उदीरयता बहुकर्मनिर्जरार्थं साहाय्यं दत्तम् ।
तए ण से कण्हे वासुदेवे अरह अरिट्ठणेमि एव वयासी— से ण भते ! पुरिसे मए कह जाणियव्वे ? तए ण अरहा अरिट्ठणेमी कण्ह वासुदेवं एव वयासी— "जे ण कण्हा ! तुमं वारवईए णयरीए अणुप्पविसमाणं पासित्ता ठियए चेव ठिइभेएणं कालं करिस्सइ तएणं तुमं जाणिज्जासि एस णं से पुरिसे ।"	ततः स. कृष्णः वासुदेवः अर्हन्तम् अरिष्टनेमि एवम् अवदत् सः भदन्त ! पुरुष. मया कथं ज्ञातव्यः ? तत. अर्हन् अरिष्टनेमिः कृष्णं वासुदेवं एवमवदत्– "यः खलु कृष्ण ! त्वां द्वारावत्यां नगर्याम् अनुप्रविशन्तम् दृष्ट्वा स्थितः एव स्थितिभेदेन कालं करिष्यति ततो नु त्वं ज्ञास्यसि एष सः पुरुषः ।"

सूत्र २८

तए ण से कण्हे वासुदेवे अरहं अरिट्ठणेमिं वंदइ, णमसइ, वंदित्ता, णमंसित्ता, जेणेव	ततः कृष्णः वासुदेवः अर्हन्तम् अरिष्टनेमिं वन्दते, नमस्यति, वंदित्वा, नमस्यित्वा, यत्रैव

[हिन्दी शब्दार्थ]

हे कृष्ण ! जैसे तुमने उस पुरुष
के लिये सहायता दी,
इस ही प्रकार हे कृष्ण ! उस पुरुष ने
गजसुकुमाल मुनि को अनेक
सैंकड़ो-हजारो जन्मो के संचित
कर्मो की उदीरणा करते हुए
बहुत कर्म की निर्जरा के लिये
सहयोग प्रदान किया है ।
फिर कृष्ण वासुदेव ने भगवान्
अरिष्टनेमी को इस प्रकार कहा—
हे भगवन् ! मै उस पुरुष
को कैसे जान सकूँगा ?
तब भगवान् अरिष्टनेमी ने
कृष्ण वासुदेव को इस प्रकार कहा–
हे कृष्ण ! जो तुम को द्वारिका
नगरी में प्रवेश करते हुए
देखकर खड़ा- .। ही
स्थितिपूर्ण हो जाने से मृत्यु प्राप्त
करेगा तब तूं जानेगा कि
यह ही वह पुरुष है ।

[हिन्दी अर्थ]

रख दी। तुम्हे एक ईंट रखते देखकर तुम्हारे साथ के सब पुरुषो ने भी उन ईटो को उठा उठा कर उस वृद्ध के घर मे पहुँचा दिया और ईटो की वह विशाल राशि इस तरह तत्काल राज मार्ग से उठकर उस वृद्ध के घर मे चली गई। इस तरह तुम्हारे इस सत्कर्म से उस वृद्ध पुरुप का उस ढेर की एक २ ईट करके लाने का कष्ट दूर हो गया।"

"हे कृष्ण! वस्तुत जिस तरह तुमने उस पुरुषका दु ख दूर करने मे उसकी सहायता की उसी तरह हे कृष्ण! उस पुरुष ने भी अनेकानेक लाखो करोडो भवो के सचित कर्म की राशिकी उदीरणा करने मे सलग्न गजसुकुमाल मुनि को उन कर्मो की सम्पूर्ण निर्जरा करने मे सहायता प्रदान की है। तदनन्तर कृष्ण वासुदेव ने अर्हत् अरिष्टनेमि से इस प्रकार पूछा—

"हे भगवन्! मैं उस पुरुष को किस प्रकार जान अथवा पहिचान सकू गा?"

तव भगवान् अरिष्टनेमि कृष्ण वासुदेव से इस प्रकार वोले—"हे कृष्ण! जो पुरुष तुम्हे द्वारिका नगरी मे प्रवेश करते हुए को देखकर खडा खडा ही आयु स्थिति पूर्ण हो जाने से मृत्यु को प्राप्त हो जाय—उसी को तुम समझ लेना कि निश्चय रूपेण यही वह पुरुष है।"

सूत्र २८

तदनन्तर कृष्ण वासुदेव भगवान्
अरिष्टनेमिनाथ को वन्दना नम–
स्कार करता है, वन्दना नमस्कार
करके जहा पर (गजराज पद पर)

तदनन्तर कृष्ण वासुदेव अरिहत अरिष्टनेमि को वन्दना नमस्कार कर जहा अभिषेक-योग्य हस्तिरत्न था वहा पहुच कर उस हाथी पर आरूढ हुए और द्वारिका नगरी मे स्थित अपने राजप्रासाद की ओर चल पडे।

[मूल सूत्र पाठ]

आभिसेय हत्थिरयणं
तेणेव उवागच्छइ,
उवागच्छित्ता हत्थि दुरुहइ
दुरुहित्ता जेणेव वारवई णयरी, जेणेव
सए गिहे तेणेव
पहारेत्थ गमणाए ।

तए ण तस्स सोमिलस्स माहणस्स
कल्लं जाव जलते
अयमेयारूवे अज्झत्थिए
जाव समुप्पण्णे ।
एवं खलु कण्हे वासुदेवे
अरह अरिट्ठणेमिं,
पायवंदए णिग्गए
त णायमेयं अरहया,
विण्णायमेयं अरहया,
सुयमेयं अरहया

सिद्धमेयं अरहया भविस्सइ
कण्हस्स वासुदेवस्स ।

तं ण णज्जइ णं कण्हे वासुदेवे
ममं केण वि कुमारेणं मारिस्सइ
त्ति कट्टु भीए सयाओ गिहाओ
पडिणिक्खमइ,
पडिणिक्खमित्ता कण्हस्स
वासुदेवस्स वारवई णयरीं

[संस्कृत छाया]

आभिषेक्य हस्तिरत्न
तत्रैव उपागच्छति,
उपागत्य हस्तिनं दूरोहति
दुरुह्य यत्रैव द्वारावती नगरी
यत्रैव स्वक गृहम् तत्रैव
प्राधारयद् गमनाय ।

ततः तस्य सोमिलस्य ब्राह्मणस्य
कल्ये यावत् ज्वलति
अयमेतद्रूपः अध्याहारः
यावत् समुत्पन्नः ।
एवं खलु कृष्णो वासुदेवः
अर्हन्तम् अरिष्टनेमिं
पादवंदनाय निर्गतः
तत् ज्ञातमेतद् अर्हता,
विज्ञातमेतत् अर्हता,
श्रुतमेतद् अर्हता

शिष्टमेतद् अर्हता भविष्यति
कृष्णाय वासुदेवाय ।

तद् न ज्ञायते खलु कृष्णो वासुदेवः
मां केनापि कुमारेण मारयिष्यति
इति कृत्वा भीतः स्वकात् गृहात्
प्रतिनिष्क्रामति,
प्रतिनिष्क्रम्य कृष्णस्य
वासुदेवस्य द्वारावत्यां नगर्याम्

[हिन्दी शब्दार्थ]

अभिषेक योग्य हस्तिरत्न था
वहाँ पर ही आता है,
आकर हाथी पर आरूढ होता है
आरूढ होकर जहाँ द्वारिका नगरी है
तथा जहाँ खुद का घर है वहाँ
जाने का निश्चय किया अर्थात् चल दिये।

उधर उस सोमिल ब्राह्मण
को (दूसरे दिन) सुबह होते ही
इस प्रकार का मानसिक संकल्प
उत्पन्न हुआ ।
निश्चय ही कृष्ण वासुदेव
अर्हन्त अरिष्टनेमि की पादवन्दना
के लिये गये होंगे तब सर्वज्ञ होने
से यह सब भगवान् ने अवश्य
जान लिया होगा, विशेष रूप से
सब जान लिया होगा।
भगवान् ने यह सब सुन लिया है
और अवश्य ही कृष्णवासुदेव को
कह दिया होगा ।
तो न मालूम कृष्ण वासुदेव
मुझे किस कुमौत से मारेंगे !
इस विचार से डरा हुआ अपने
घर से निकलता है,
निकलकर कृष्ण वासुदेव
के द्वारिका नगरी मे

[हिन्दी अर्थ]

उधर उस सोमिल ब्राह्मण के मन मे दूसरे दिन सूर्योदय होते ही इस प्रकार विचार उत्पन्न हुआ—निश्चय ही कृष्ण वासुदेव अरिहत अरिष्टनेमि के चरणो मे वदन करने के लिये गये होगे। भगवान तो सर्वज्ञ है उनसे कोई बात छिपी नही है। उन प्रभु गजसुकुमाल की मृत्यु सम्बन्धी मेरे कुकृत्य का अरिष्टनेमि से उन्होने सब वृत्तान्त जान लिया होगा, (आद्योपान्त) पूर्णत विदित कर लिया होगा, यह सब भगवान से स्पष्ट समझ सुन लिया होगा। अर्हन्त अरिष्टनेमि ने अवश्यमेव कृष्ण वासुदेव को यह सब कुछ बता दिया होगा ।

"तो ऐसी स्थिति मे कृष्ण वासुदेव रुष्ट होकर मुझे न मालूम किस प्रकार की कुमौत से मारेगे।" ऐसा विचार कर वह डरा और नगर से कही दूर भागने का निश्चय किया। उसने सोचा कि श्री कृष्ण तो राजमार्ग से लौटेंगे। इसलिए मैं किसी गली के रास्ते से निकल भागूँ और उनके लौटने से पूर्व ही निकल जाऊ। ऐसा सोच कर वह अपने घर से निकला और गली के रास्ते से भागा।

इधर कृष्ण वासुदेव भी अपने लघु सहोदर भाई गजसुकुमाल मुनि की अकाल-मृत्यु के शोक से विह्वल होनेके कारण राजमार्ग छोड़कर उसी गली के रास्ते से लौट रहे थे।

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
अणुप्पविसमाणस्स पुरओ	अनुप्रविशन्तं पुरतः
सपक्खिं सपडिदिसं	सपक्षं सप्रतिदिशम्
हव्वमागए ।	शीघ्रमागतः ।

सूत्र २९

तए णं से सोमिले माहणे कण्हं	ततः सः सोमिलः ब्राह्मणः कृष्णं
वासुदेवं सहसा पासित्ता भीए,	वासुदेवं सहसा दृष्ट्वा भीतः,
ठियए चेव ठिइभेएणं कालं	स्थितः एव स्थितिभेदेन कालं
करेइ,	करोति,
करित्ता धरणितलंसि	कृत्वा धरणीतले
सव्वंगेहिं धसत्ति सण्णिवडिए ।	सर्वांगैः 'धस' इति संनिपतितः ।
तएणं से कण्हे वासुदेवे सोमिलं	ततः सः कृष्णः वासुदेवः सोमिलं
माहणं पासइ,	ब्राह्मणं पश्यति,
पासित्ता एवं वयासी—	दृष्ट्वा एवमवादीत्—
एस णं भो देवाणुप्पिया ! से सोमिले	एष भो देवानुप्रियाः ! सः सोमिलः
माहणे अपत्थिय पत्थए	ब्राह्मणः अप्रार्थित प्रार्थकः
जाव परिवज्जिए ।	यावत् परिवर्जितः ।
जेण मम सहोयरे कणीयसे भायरे	येन मम सहोदरः कनीयान् भ्राता
गयसुकुमाले अणगारे अकाले	गजसुकुमालः अनगार अकाले
चेव जीवियाओ ववरोविए,	चैव जीविताद् व्यपरोपितः,
त्ति कट्टु सोमिल माहणं	इति उक्त्वा सोमिलं ब्राह्मणं
पाणेहिं कड्ढावेइ,	पाणैः कर्षयति,
कड्ढावित्ता, तं भूमि पाणिएणं	कर्षयित्वा, तां भूमिं पानीयेन
अब्भुक्खावेइ,	अभ्युक्षयति,
अब्भुक्खावित्ता, जेणेव सए	अभ्युक्ष्य, यत्रैव स्वकं

[हिन्दी शब्दार्थ]

प्रवेश करते हुए के सामने
बराबर दिशा और पक्ष मे
शीघ्र आ गया ।

[हिन्दी अर्थ]

जिससे सयोगवश कृष्ण वासुदेव के द्वारिका नगरी मे प्रवेश करते समय उनके सामने ही वह आ निकला ।

सूत्र २९

तब वह सोमिल ब्राह्मण कृष्ण
वासुदेव को अचानक देखकर
भयभीत हुआ
खड़ा-खड़ा ही स्थितिभेद
से मृत्यु को प्राप्त हो गया
तथा मरकर पृथ्वीतल पर
अंगो से 'धम' से गिर गया ।
तब कृष्ण वासुदेव ने सोमिल
ब्राह्मण को देखा
देखकर इस प्रकार कहा—
हे देवानुप्रियो ! यह वह सोमिल
ब्राह्मण अप्रार्थनीय(मृत्यु) को चाहने
वाला (लज्जा व शोभा से रहित है।)
जिसने मेरे सहोदर छोटे भाई
गजसुकुमाल मुनि को असमय
मे ही जीवन से विमुक्त कर दिया ।
यह कह कर सोमिल ब्राह्मण को
चाडालो से घिसटवाकर हटवाया,
हटवाकर, उस भूमि को जल से
धुलवाते है
धुलवा कर जहाँ अपना

तब उस समय वह सोमिल ब्राह्मण कृष्ण वासुदेव को सहसा सम्मुख देखकर भयभीत हुआ और जहाँ-का-तहाँ स्तम्भित खडा रह गया और वही खडे-खडे ही स्थिति भेद से अपना आयुष्य पूर्ण हो जाने से सर्वाग शिथिल हो वह सोमिल 'धस' शब्द करते हुए मर कर वही भूमि-तल पर गिर पडा ।

उस समय कृष्ण वासुदेव सोमिल ब्राह्मण को मर कर गिरता हुआ देखते है और देख-कर इस प्रकार बोलते हैं—

"अरे ओ देवानुप्रियो ! यही वह अप्रार्थ-नीय को चाहने वाला मृत्यु की इच्छा करने वाला तथा लज्जा एव शोभा से रहित सोमिल ब्राह्मण है, जिसने मेरे सहोदर छोटे भाई गजसुकुमाल मुनि को असमय मे ही काल का ग्रास बना डाला ।" ऐसा कहकर कृष्ण वासु-देव ने सोमिल ब्राह्मण के उस शव को चाडालो के द्वारा घसीटवा कर नगर के बाहर फिंकवा दिया और उसके शव को फिंकवा कर उस शव से स्पर्श की गई सारी भूमि को पानी से धुलवाया । उस भूमि को पानी से धुलवाकर कृष्ण वासुदेव अपने राजप्रासाद मे पहुँचे और अपने आगार मे प्रवेश किया ।

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
गिहे तेणेव उवागए	गृहं तत्रैव उपागतः
सयं गिहं अणुप्पविट्ठे ।	स्वकं गृहं अनुप्रविष्टः ।
एवं खलु जम्बू ! समणेणं	एवं खलु जम्बू ! श्रमणेन
भगवया जाव संपत्तेणं	भगवता यावत् संप्राप्तेन
अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं	अष्टमस्य अंगस्य अन्तकृद्दशानाम्
तच्चस्स वग्गस्स अट्ठमस्स	तृतीयस्य वर्गस्य अष्टमस्य
अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।	अध्ययनस्य अयमर्थः प्रज्ञप्तः ।

इति अष्टमाध्ययनं समाप्तम्

अथ नवमाध्ययनम्

णवमस्स उक्खेवओ ।	नवमस्य उत्क्षेपकः ।
एवं खलु जम्बू ! तेणं कालेणं	एवं खलु जम्बू ! तस्मिन् काले
तेणं समएणं वारवईए णयरीए	तस्मिन् समये द्वारावत्यां नगर्यां
जहा पढमे जाव विहरइ ।	यथा प्रथमे यावत् विहरति ।
तत्थ णं वारवईए बलदेवे	तत्र द्वारावत्यां बलदेवो
णामं राया होत्था,	नाम राजा अभवत्,
वण्णओ ।	वर्ण्यः ।
तस्स णं बलदेवस्स रण्णो	तस्य बलदेवस्य राज्ञः
धारिणी णामं देवी होत्था,	धारिणी नामा देवी (राज्ञी)
वण्णओ ।	वर्ण्या ।
तए णं सा धारिणी सीहं	ततः सा धारिणी सिंहं

[हिन्दी शब्दार्थ]

घर है वहाँ आये, और
अपने घर मे (महल मे) चले गये।
इस प्रकार हे जम्बू ! श्रमण भगवान्
जो मोक्ष पधारे है, उन प्रभु ने
आठवें अंग अंतगडदशा सूत्र
के तीसरे वर्ग के आठवें अध्य-
यन का यह अर्थ कहा है।

[हिन्दी अर्थ]

इस प्रकार हे जम्बू ! श्रमण भगवान् महावीर ने, जो कि सिद्ध, बुद्ध मुक्त हुए, आठवे अङ्ग के तीसरे वर्ग के आठवे अध्याय का यह भाव श्रीमुख से कहा।

अष्टमाध्ययनम् समाप्तम्

नवमां अध्ययन

नवम अध्ययन का प्रारम्भ।
इस प्रकार हे जम्बू ! उस काल व
उस समय द्वारिका नगरी में
जैसा प्रथम अध्ययन में कहा गया है
उसी प्रकार भगवान् नेमिनाथ
विचरण करते हुए वहाँ पधारे।
वहाँ द्वारिका नगरी में बलदेव
नामक राजा था,
जो कि वर्णनीय था।
उस बलदेव राजा के
धारिणी नाम की रानी थी,
वह बहुत वर्णनीय थी,
फिर उस धारिणी रानी ने
सिह का स्वप्न देखा, तदनन्तर
पुत्र जन्म आदि का वर्णन

यहाँ उत्क्षेपक शब्द के प्रयोग से यह आशय समझना चाहिए कि श्री जम्बू स्वामी अपने स्वामी सुधर्मा से पूर्वानुसार फिर आगे पूछते हैं कि-"हे भगवन् ! श्रमण भगवान् महावीर स्वामी ने अन्तगडदशाँग सूत्र के तीसरे वर्ग के आठवे अध्ययन के जो भाव कहे वे मैंने आपसे सुने। हे भगवन् ! अब आगे नवमे अध्ययन के उन्होने क्या भाव कहे हैं ? यह भी मुझे बताने की कृपा करे।" श्री सुधर्मा स्वामी—हे जम्बू ! उस काल उस समय मे द्वारिका नामक एक नगरी थी जिसका वर्णन पूर्व मे किया जा चुका है। एक दिन भगवान् अरिष्टनेमि तीर्थंकर परम्परा से विचरते हुए उस नगरी मे पधारे।

द्वारिका नगरी मे बलदेव नाम के एक राजा थे। उनकी रानी का नाम 'धारिणी' था, वह अत्यन्त सुकोमल, सुन्दर एव गुण सम्पन्न थी। एक समय सुकोमल शय्या पर सोई हुई उस धारिणी ने रात को स्वप्न मे सिह देखा। स्वप्न देखकर वह जग गई। उसी समय अपने पति के पास जाकर स्वप्न का वृत्तान्त उन्हे सुनाया। गर्भ समय पूर्ण होने पर स्वप्न के

[मूल सूत्र पाठ]	[सस्कृत छाया]
सुमिणे, जहा गोयमे	स्वप्ने, यथा गौतमः
णवर सुमुहे णामं कुमारे,	(नवीनम्) विशेषस्तु सुमुखो नाम कुमारः
पण्णासं कण्णाओ,	पञ्चाशत् कन्यकाः (परिणीतवान्)
पण्णासं दाओ,	(परिणये) पञ्चाशत् दायः,
चोद्दस पुव्वाइं अहिज्जइ,	चतुर्दश पूर्वाणि अधीते,
वीसं वासाइं परियाओ,	विंशति वर्षाणि (दीक्षा) पर्यायः,
सेस तं चेव जाव सेत्तुंजे	शेषं तदेव यावत् शत्रुञ्जये
सिद्धे निक्खेवओ ।	सिद्धः निक्षेपकः ।

इति नवमाध्ययनम्

अथ अध्ययन १०, ११, १२, एवं १३

एवं दुम्मुहे वि, कूवदारए वि ।	एवं दुर्मुखोऽपि कूपदारकोऽपि ।
दोण्ह वि बलदेवे पिया,	द्वयोरपि बलदेवः पिता,
धारिणी माया । १०-११ ।	धारिणी माता । १०-११ ।
दारुए वि एवं चेव,	दारुकः अपि एवमेव
णवरं वसुदेवे पिया,	विशेषः वसुदेवः पिता,
धारिणी माया । १२ ।	धारिणी माता । १२ ।
एवं अणादिट्ठी वि,	एवं अनादृष्टिः अपि
वसुदेवे पिया धारिणी माया । १३ ।	वसुदेवः पिता धारिणी माता । १३ ।
एवं खलु जम्बू !	एवं खलु जम्बू !
समणेणं जाव सम्पत्तेणं	श्रमणेन यावत् (मुक्ति) सम्प्राप्तेन
अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं	मस्य अंगस्य अन्तकृद्दशानां

[हिन्दी शब्दार्थ]

गौतम कुमार की तरह जानना चाहिये। विशेष, कुमार का नाम सुमुख रखा गया पचास कन्याओ का पाणिग्रहण किया, पचास (करोड़) दहेज प्राप्त हुआ, चौदह पूर्व का अध्ययन किया बीस वर्ष दीक्षा पर्याय चला शेष उसी प्रकार यावत् शत्रुञ्जय पर्वत पर सिद्ध हुए। निक्षेपक।

[हिन्दी अर्थ]

अनुसार उनके यहाँ एक पुण्यशाली पुत्र उत्पन्न हुआ। इसके जन्म, वाल्यकाल आदि का वर्णन गौतम कुमार के समान समझना। विशेष मे उस बालक का नाम 'सुमुख' रक्खा गया। युवा होने पर पचास कन्याओ के साथ उसका पाणिग्रहण सस्कार हुआ। विवाह मे पचास-पचास करोड सोनैया आदि का दहेज उसे मिला। भ० अरिष्टनेमि के किसी समय वहाँ पधारने पर उनका धर्मोपदेश सुन-कर समुख कुमार उनके पास दीक्षित हो गया। दीक्षित होकर चौदह पूर्व का ज्ञान पढा। बीस वर्ष तक श्रमण दीक्षा पाली। अन्त मे गौतम कुमार की तरह सलेखणा

नवमाध्ययन समाप्त

अध्ययन १०, ११, १२, एवं १३

इसी प्रकार दुर्मुख और कूपदारक कुमार का वर्णन जानना चाहिये। दोनों के भी बलदेव पिता और धारिणी माता थी। १०-११।

दारुक भी इसी प्रकार है विशेष यह है कि वासुदेव पिता और धारिणी माता है। १२।

इसी प्रकार अनादृष्टि कुमार भी वासुदेव पिता धारिणी माता है। १३।

इस प्रकार हे जम्बू ! श्रमण यावत् मुक्ति प्राप्त प्रभु ने आठवें अंग अंतगडदशा

यावत् सथारा करके शत्रु जय पर्वत पर सिद्ध हुए। हे जम्बू ! श्रमण भगवान् महावीर ने अन्तगडदशा के तीसरे वर्ग के नव मे अध्ययन का उपरोक्त भाव का।"

जिस प्रकार प्रभु ने नवमे अध्ययन का भाव फरमाया है, उसी प्रकार दसवे 'दुर्मुख' और ग्यारहवे 'कूवदारक' का भी वर्णन समझना। फर्क इतना सा है कि दोनो के 'बलदेव' महाराज पिता और 'धारिणी' माता थी वाकी इनका सारा वर्णन 'सुमुख' के वर्णन के समान ही है।

इसी तरह बारहवे 'दारुक' और तेरहवें 'अनाहष्टि कुमार' का वर्णन भी समझना। इसमे अन्तर केवल इतना ही है कि इनके 'वसुदेव' पिता और 'धारिणी' माता थी।

श्री सुधर्मा-"इस तरह हे जम्बू ! श्रमण यावत् मुक्ति प्राप्त प्रभु ने आठवे अग अतगड-

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
तच्चस्स वग्गस्स तेरसमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।	तृतीयस्य वर्गस्य त्रयोदशस्य अध्ययनस्य अयमर्थः प्रज्ञप्तः ।

तृतीय वर्गः समाप्तः

अथ चतुर्थः वर्ग :

जइणं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेण अट्ठमस्स अगस्स अंतगडदसाण तच्चस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते । चउत्थस्स णं भंते! वग्गस्स अन्तगडदसाणं समणेण जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?	यदि खलु भदन्त ! श्रमणेन यावत् सम्प्राप्तेन अष्टमस्य अगस्य अंतकृद्दशानां तृतीयस्य वर्गस्य अयमर्थः प्रज्ञप्तः । चतुर्थस्य खलु भदन्त ! वर्गस्य अन्तकृद्दशानां श्रमणेन यावत् संप्राप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ?
एवं खलु जम्बू ! समणेणं जाव संपत्तेणं चउत्थस्स वग्गस्स अन्तगडदसाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता तं जहा—	एवं खलु जम्बू ! श्रमणेन यावत् संप्राप्तेन चतुर्थस्य वर्गस्य अंतकृद्दशानां दशानि अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि तानि यथा—
जालि मयालि उवयालि, पुरिससेणे य वारिसेणे य । पज्जुण्ण संब अणिरुद्धे, सच्चणेमी य दढणेमी ।१।	जालिर्मयालिरुवयालिः, पुरुषसेनश्च वारिसेनश्च । म्नः साम्बोऽनिरुद्धः सत्यनेमिश्च दृढनेमिः ।१।
जइणं भन्ते ! समणेणं जाव संपत्तेणं चउत्थस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पण्णत्ता ।	यदि भदन्त ! श्रमणेन या संप्राप्तेन चतुर्थस्य वर्गस्य दशानि अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि ।

[हिन्दी शब्दार्थ]

सूत्र के तीसरे वर्ग के तेरहवें अध्ययन का यह भाव कहा है।

[हिन्दी अर्थ]

दशा सूत्र के तीसरे वर्ग के एक से लेकर तेरह अध्ययनो कायह भाव फरमाया है।

तृतीय वर्गः समाप्तः

अथ चतुर्थः वर्गः

सूत्र १

यदि हे भगवन् !
श्रमण यावत् मुक्ति प्राप्त प्रभु ने
आठवें अंग अंतगडदशासूत्र
के तीसरे वर्ग का यह अर्थ फरमाया है।
हे पूज्य ! श्रमण भगवान यावत् मुक्ति
प्राप्त प्रभु ने अंतगडदशा सूत्र के
चतुर्थ वर्ग का क्या अर्थ (भाव) कहा है।

इस प्रकार हे जम्बू !
श्रमण यावत् मुक्ति प्राप्त प्रभु ने
अन्तगडदशासूत्र के चतुर्थ वर्ग के दस
अध्ययन कहे है। जो इस प्रकार है —

१. जालि, २. मयालि, ३. उपयालि,
४. पुरुषसेन और ५. वारिसेन।
६. ुम्न, ७. साम्ब, ८. अनिरुद्ध,
९. सत्यनेमि और १०. दृढनेमि।

श्री जम्बू स्वामी—"हे भगवन् ! श्रमण यावत् मुक्ति प्राप्त प्रभु ने आठवे अग अतकृतदशा के तीसरे वर्ग का जो वर्णन किया वह आपके श्रीमुख से सुना।

अब अतगडदशा के चौथे वर्ग के हे पूज्य ! श्रमण भगवान् ने क्या भाव दर्शाये है यह भी मुझे बताने की कृपा करे।"

श्री सुधर्मा—"हे जम्बू ! श्रमण यावत् मुक्ति प्राप्त प्रभु ने अतगडदशा के चौथे वर्ग मे दश अध्ययन कहे हैं जो इस प्रकार है—

१ जालि कुमार, २ मयालि कुमार, ३ उवयालि कुमार, ४ पुरुषसेन कुमार, ५ वारिसेन कुमार, ६ प्रद्युम्न कुमार, ७ शाम्ब कुमार, ८ अनिरुद्ध कुमार, ९. सत्यनेमि कुमार, १० दृढनेमि कुमार।

श्री जम्बू—"हे भगवन् ! श्रमण यावत् मुक्ति प्राप्त प्रभु ने चौथे वर्ग मे दश अध्ययन कहे है। तो उनमे से हे पूज्य ! प्रथम

सूत्र २

हे भगवन् ! यदि
श्रमण यावत् मुक्ति प्राप्त प्रभु ने
चतुर्थ वर्ग के दस अध्ययन कहे है।

अध्ययन का श्रमण यावत् मुक्ति प्राप्त प्रभु ने क्या अर्थ बताया है।"

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
पढमस्स णं भन्ते !	प्रथमस्य खलु भदन्त !
अज्झयणस्स समणेणं	अध्ययनस्य श्रमणेन यावत्
जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?	संप्राप्तेन कः अर्थः प्रज्ञप्तः ?
एवं खलु जम्बू !	एव खलु जम्बू !
तेणं कालेणं तेणं समएणं	तस्मिन् काले तस्मिन् समये
बारवई णाम णयरी होत्था,	द्वारावती नाम नगरी अभवत्,
जहा पढमे ।	यथा प्रथमे ।
कण्हे वासुदेवे आहेवच्चं जाव विहरइ ।	कृष्णःवासुदेवःआधिपत्यं यावत् विहर

सूत्र ३

तत्थ णं बारवईए णयरीए	तत्र खलु द्वारावत्यां नगर्यां
वसुदेवे राया, धारिणी देवी ।	वसुदेवः राजा धारिणी देवी ।
वण्णओ ।	वर्ण्य : ।
जहा गोयमो,	यथा गौतमः,
णवरं जालि कुमारे	विशेषस्तु जालिकुमार :
पण्णासओ दाओ ।	पंचा ॒ दायः
बारसंगी सोलस्स वासा	द्वादशांगी, षोडश र्णि
परियाओ सेसं जहा गोयमस्स	पर्यायः शेषं यथा गौतमस्य
जाव सेत्तुंजे सिद्धे ।	यावत् शत्रुंजये सिद्धः ।
एवं मयालि, उवयालि,	एवं मयालिः उववालिः
पुरिससेणे, वारिसेणे य ।	पुरुषसेनः वारिसेनश्च ।

[हिन्दी शब्दार्थ]

तो हे भगवन् ! प्रथम
अध्ययन का श्रमण यावत्
मुक्ति प्राप्त प्रभु ने क्या अर्थ कहा है?
इस प्रकार हे जम्बू !
उस काल उस समय मे
द्वारिका नाम की नगरी थी,
जैसे प्रथम अध्याय में वर्णन
किया गया है उसी प्रकार।
कृष्ण वासुदेव वहां राज्य करते थे।२।

[हिन्दी अर्थ]

श्री सुधर्मा स्वामी—"हे जम्बू ! उस काल व उस समय मे द्वारिका नाम की एक नगरी थी, जिसका वर्णन प्रथम वर्ग के प्रथम अध्ययन मे किया जा चुका है। श्री कृष्ण वासुदेव वहाँ राज्य कर रहे थे।"

"उस द्वारिका नगरी मे महाराज 'वसुदेव' और रानी 'धारिणी' निवास करते थे।

रानी धारिणी अत्यन्त सुकुमार, सुन्दर और सुशीला थी। एक समय कोमल सेज पर सोती हुई उस धारिणी रानी ने सिंह का स्वप्न देखा। उस स्वप्न का वृत्तान्त अपने पतिदेव को सुनाया।

सूत्र ३

वहां द्वारिका नगरी मे
ुदेव राजा धारिणी रानी,
जो कि वर्णन योग्य थे।
गौतम कुमार के समान
विशेष यह कि जालिकुमार ने
युवावस्था प्राप्तकर पचास कन्याओं
से विवाह किया तथा पचास
करोड़ का दहेज मिला।
जालि मुनि ने भी बारह अंगो का
ज्ञान सीखा, सोलह वर्ष की
दीक्षा पर्याय का पालन किया,
शेष सब जैसे गौतम कुमार की
तरह यावत् शत्रुंजय पर्वत
पर जाकर सिद्ध हुए।
इसी प्रकार मयालि कुमार
उवयालि कुमार, पुरुषसेन
और वारिसेन का वर्णन
जानना चाहिये।

इसके बाद पूर्व मे वर्णित गौतम कुमार की तरह उनके एक तेजस्वी पुत्र का जन्म हुआ, जिसका नाम 'जालि कुमार' रखा गया। जब वह युवावस्था को प्राप्त हुआ, तब उसका विवाह पचास कन्याओ के साथ किया गया और उन्हे पचास-पचास करोड सौनेया आदि का दहेज मिला।

एक समय भगवान् अरिष्टनेमि वहाँ पधारे। उनकी अमोघ वाणी द्वारा धर्मोपदेश सुनकर जालि कुमार को ससार से विरक्ति हो गई। माता-पिता की आज्ञा लेकर उन्होने अर्हन्त अरिष्टनेमि के पास अर्हत दीक्षा अगीकार की। उन्होने वारह अगो का अध्ययन किया और १६ वर्ष पर्यन्त श्रमण दीक्षा पर्याय पाली।

फिर गौतम कुमार की तरह इन्होने भी सलेखना आदि करके शत्रु जय पर्वत पर एक मास का सथारा किया और सब कर्मो से मुक्त होकर सिद्ध हुए।

इसी प्रकार मयालिकुमार २, उवयालि कुमार ३, पुरुष सेन कुमार ४, और वारिसेन कुमार ५, के जीवन वर्णन भी समझने

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
एवं पज्जुण्णे वि	एवं प्रद्युम्नोऽपि,
णवरं कण्हे पिया, रुप्पिणी माया।	विशेषः कृष्णः पिता रुक्मिणी माता।
एवं संबे वि णवरं जंबवई माया ।	एवं साम्बः अपि विशेषः जाम्बवती माता।
एवं अणिरुद्धे वि णवरं पज्जुण्णे पिया, वेदब्भी माया !	एवं अनिरुद्धोऽपि विशेषः प्रद्युम्नः पिता वैदर्भी माता।
एवं सच्चणेमी, णवरं समुद्दविजए पिया सिवा माया।	एवं सत्यनेमिः विशेषः समुद्रविजयः पिता शिवा माता
एवं दढ़णेमी वि।	एव दृढनेमिरपि।
सव्वे एगगमा चउत्थस्स वग्गस्स णिक्खे ो।	णि (अध्ययनानि) एकगमानि चतुर्थस्य वर्गस्य निक्षेपक ।[23]

इति चतुर्थ. वर्गः

पंचमः वर्गः

सूत्र १

जइ णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं चउत्थस्स वग्गस्स मट्ठे पण्णत्ते, पंचमस्स णं भंते ! वग्गस्स अन्तगडदसाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?	यदि खलु भदन्त ! श्रमणेन यावत् संप्राप्तेन चतुर्थस्य वर्गस्य अयमर्थः प्तः, पंचमस्य भदन्त ! वर्गस्य अन्तकृद्दशानां श्रमणेन यावत् संप्राप्तेन कोऽर्थः प्र : ?

[हिन्दी शब्दार्थ]

इसी प्रकार छठे प्रद्युम्न कुमार
का वर्णन भी जानना चाहिए।
विशेष—कृष्ण पिता और रुक्मिणी
देवी माता है।
इसी प्रकार साम्ब कुमार भी,
विशेष—जाम्बवती माता है।
ये दोनो श्री कृष्ण के पुत्र थे।
इसी प्रकार अनिरुद्धकुमार का भी
है विशेष यह है कि प्रद्युम्न पिता और
वैदर्भी उसकी माता है।
इसी प्रकार वर्णन सत्यनेमि कुमार का है
विशेष है—समुद्र विजय पिता और
शिवा देवी माता।
इसी प्रकार दृढनेमी का हाल भी
समझना। ये सभी अध्ययन एक सरीखे
है। इस प्रकार हे जम्बू ? चौथे
वर्ग का प्रभु ने यह भाव कहा है।

[हिन्दी अर्थ]

चाहिये। ये सभी 'वसुदेव' जी के पुत्र एव 'धारिणी' रानी के अगजात थे।

इसी तरह छठे प्रद्युम्न कुमार का जीवन चरित्र भी जानना चाहिये। केवल अन्तर इतना जानना कि इनके 'श्री कृष्ण' पिता और 'रुक्मिणी' माता थी।

ऐसे ही सातवे शाम्ब कुमार का जीवन वर्णन समझना। केवल अन्तर इतना कि इनके पिता 'श्री कृष्ण' एव माता 'जाम्बवती' थी।

इसी प्रकार आठवे अध्ययन मे 'अनिरुद्ध कुमार' का जीवन वर्णन समझना चाहिये इनके पिता 'प्रद्युम्न कुमार' और माता 'वैदर्भी' थी।

ऐसे ही नवमे अध्ययन मे 'सत्यनेमी कुमार' और दशवे अध्ययन मे 'दृढनेमी कुमार' का वर्णन समझना चाहिये। इनमे विशेष यह कि 'समुद्र विजय' जी इनके पिता थे और 'शिवा' इनकी माता थी।

ये सब अध्ययन समान वर्णन वाले है यह चौथे वर्ग का निक्षेपक है।[२३]

श्री सुधर्मा—"इस प्रकार हे जम्बू ! दस अध्ययनो वाले इस चौथे वर्ग का श्रवण यावत् मोक्ष प्राप्त प्रभु ने यह अर्थ कहा है।"

इति चतुर्थः वर्गः

पंचमः वर्गः

सूत्र १

यदि भगवन् ! श्रमण भगवान
यावत् मुक्ति प्राप्त प्रभु ने
चौथे वर्ग का यह भाव कहा है,तो
हे भगवन् ! अन्तकृतदशासूत्र
के पंचमवर्ग का श्रमण
यावत् मुक्ति प्राप्त प्रभु ने
क्या अर्थ कहा है ?

श्री जम्बू स्वामी—"हे भगवन् ! श्रमण यावत् मुक्ति प्राप्त प्रभु ने चौथे वर्ग का यह भाव फरमाया है तो अन्तगडदशा के पचम वर्ग का श्रमण यावत् मुक्ति प्राप्त प्रभु ने क्या अर्थ कहा है ?"

आर्य सुधर्मा—"हे जम्बू ! इस प्रकार निश्चय ही श्रवण यावत् मुक्ति प्राप्त प्रभु ने

[मूल सूत्र पाठ]

एव खलु जम्बू !
समणेणं जाव संपत्तेण
पचमस्स वग्गस्स दस
अज्झयणा पण्णत्ता । तं जहा—
पउमावई य गोरी,
गधारी लक्खणा सुसीमा य ।
जबवई सच्चभामा
रुप्पिणी मूलसिरी मूलदत्ता य।।
जइण भन्ते ! समणेणं
जाव संपत्तेणं
पंचमस्स वग्गस्स दस
अज्झयणा पण्णत्ता ।
पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स
समणेणं जाव संपत्तेणं
के अट्ठे पण्णत्ते ?

[संस्कृत छाया]

एवं खलु जम्बू !
श्रमणेन यावत् संप्राप्तेन
पंचमस्य वर्गस्य दशानि
अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि । तानि यथा—
पद्मावती च गौरी,
गाधारी लक्ष्मणा सुषीमा च ।
जाम्बवती सत्यभामा
रुक्मिणी मूलश्रीः मूलदत्ता च ।
यदि खलु भदन्त ? श्रमणेन
यावत् संप्राप्तेन
पंचमस्य वर्गस्य दशानि
अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि ।
प्रथमस्य खलु भदन्त ! अध्ययनस्य
श्रमणेन यावत् संप्राप्तेन
कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ?

सूत्र २

एवं खलु जबू !
तेणं कालेणं तेण समयेणं
वारवई णामं णयरी होत्था,
जहा पढमे,
जाव कण्हे वासुदेवे आहेवच्चं
जाव विहरइ ।
तस्स णं कण्हस्स वासुदेवस्स
पउमावई णामं देवी होत्था,
वण्णओ ।
तेणं कालेणं तेणं समएणं

एवं खलु जम्बू ?
तस्मिन् काले तस्मिन् समये
द्वारावति नामा नगरी   ीत्,
यथा प्रथमे,
यावत् कृष्णः वासुदेवः आधिपत्यं
त् विहरति ।
तस्य खलु कृष्णस्य वासुदेवस्य
पद्मावती नाम देवी आसीत् ,
वर्ण्या ।
तस्मिन् काले तस्मिन् समये

[हिन्दी शब्दार्थ]

इस प्रकार हे जम्बू ?
श्रमण यावत् मुक्ति प्राप्त प्रभु ने
पंचम वर्ग के दस अध्याय कहे है
वे इस प्रकार है—
पद्मावती और गौरी और
गांधारी लक्ष्मणा और सुसीमा
जाम्बवती सत्यभामा
रुक्मिणी मूलश्री और मूलदत्ता।
यदि हे भगवन्! श्रमण
यावत् मुक्ति को प्राप्त प्रभु ने
पंचम वर्ग के दस
अध्याय कहे है।
तो हे भगवन्! प्रथम अध्ययन का
श्रमण यावत् संप्राप्त प्रभु ने
क्या अर्थ कहा है ?

[हिन्दी अर्थ]

पचम वर्ग के दश अध्ययन कहे है, जो इस प्रकार है "१ पद्मावती, २. गौरी, ३ गाधारी, ४ लक्ष्मणा, ५ सुसीमा देवी, ६ जाम्बवती, ७ सत्यभामा, ८ रुक्मिणी, ९ मूलश्री, १० मूलदत्ता।"

श्री जम्बू स्वामी—"पूज्य! श्रमण यावत् मुक्ति प्राप्त प्रभु ने पचम वर्ग के दश अध्ययन कहे है, तो प्रथम अध्ययन का श्रमण यावत् मुक्ति प्राप्त प्रभु महावीर ने क्या अर्थ कहा है ?"

सूत्र २

इस प्रकार हे !
काल उस समय में
द्वारिका नाम की नगरी थी,
जैसे पहले अध्याय में कहा है,
यावत् वहाँ कृष्ण वासुदेव
राज्य कर रहे थे।
उस कृष्ण वासुदेव की
पद्मावती नाम की रानी थी,
जो वर्णन करने योग्य थी।
उस काल उस समय मे अर्हन्

श्री सुधर्मा स्वामी—"इस प्रकार हे जम्बू! उस काल उस समय मे द्वारिका नाम की एक नगरी थी, जिसका वर्णन प्रथम अध्ययन मे किया जा चुका है। यावत् श्री कृष्ण वासुदेव वहा राज्य कर रहे थे। श्री कृष्ण वासुदेव की पद्मावती नाम की महारानी थी, जो अत्यन्त सुकुमार सुरूपा, और वर्णन करने योग्य थी।

उस काल उस समय मे अरिहत अरिष्टनेमि यावत् तीर्थकर परम्परा से

[मूल सूत्र पाठ]

अरहा अरिट्ठणेमी समोसढे
जाव विहरइ ।

कण्हे णिग्गए जाव पज्जुवासइ ।

तएणं सा पउमावई देवी
इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणी
हट्ठतुट्ठहिअआ जहा देवई
जाव पज्जुवासइ ।

तएणं अरहा अरिट्ठणेमी
कण्हस्स वासुदेवस्स पउमावईए
देवीए जाव धम्मकहा,
परिसा पडिगया ।
तएणं कण्हे वासुदेवे अरहं
अरिट्ठणेमिं वंदइ णमंसइ,
वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी—

इमीसे णं भन्ते !
बारवईए णयरीए दुवालस—
जोयण आयामाए णवजोयण
वित्थिण्णाए जाव पच्चक्खं देवलोग
भूयाए किंमूलए विणासे भविस्सइ ?
कण्हाए ! अरहा अरिट्ठणेमी
कण्ह वासुदेवं एवं वयासी—

[संस्कृत छाया]

अर्हन् अरिष्टनेमिः समवसृत :
यावत् विहरति ।

कृष्णः निर्गतः यावत् पर्युपासते ।

ततः खलु सा पद्मावती देवी
अस्याः कथायाः लब्धार्था सती
हृष्टतुष्टहृदया यथा देवकी
यावत् पर्युपासते ।

: खलु अर्हन् अरिष्टनेमिः
कृष्णस्य वासुदेवस्य पद्मावत्याः
देव्याः यावत् धर्मकथा (कथिता)
परिषद् प्रतिगता ।
: खलु कृष्णः वासुदेवः अर्हन्तम्
अरिष्टनेमिनम् वंदते नमस्यति
वन्दित्वा नमस्यित्वा एवमवदत्—

अस्याः खलु भदन्त !
द्वारावत्याः नगर्याः द्वादश—
योजनायामायाः ोजन
विस्तीर्णायाः यावत् प्रत्यक्षं देवलोक
भूतायाः किंमूलो वि शो भविष्यति ?
हे कृष्ण ! अर्हन् अरिष्टनेमिः
कृष्णं वासुदेवमेवमवदत्—

[हिन्दी शब्दार्थ]

अरिष्टनेमी द्वारिका नगरी मे पधारे यावत् (संयम तप से आत्मा को भावित करते हुए) विचरने लगे ।

श्री कृष्ण वंदन को निकले यावत् वे श्री नेमनाथ भ० की सेवा करने लगे । उस समय पद्मावती देवी ने भगवान के पधारने की बात सुनी और मन में बहुत प्रसन्न हुई तथा जैसे देवकी महारानी वंदन करने गई वैसे ही पद्मावती भी यावत् श्री नेमनाथ भगवानकी सेवा करने लगी ।

अरिहंत अरिष्टनेमी ने कृष्ण वासुदेव और पद्मावती देवी आदि के सम्मुख धर्म कथा कही, सभासद् कथा सुनकर चले गये । तदनन्तर कृष्ण वासुदेव भ० श्रीनेमिनाथ को वन्दना नमस्कार करते है, वंदना नमस्कार करके इस प्रकार बोले- हे पूज्य ! इस बारह योजन लम्बी नौ योजन फैली हुई प्रत्यक्ष देवलोक के समान द्वारिका नगरी का किस कारण से विनाश होगा ? कृष्णादि को सम्बोधित कर भ० अरिष्टनेमी ने कृष्ण वासुदेव को इस प्रकार कहा—

[हिन्दी अर्थ]

विचरते हुए द्वारिका नगरी मे पधारे । श्री कृष्ण वदन नमस्कार करने हेतु अपने राज प्रासाद से निकल कर प्रभु के पास पहुचे यावत् प्रभु अरिष्टनेमि की पर्युपासना करने लगे ।

उस समय पद्मावती देवी ने भगवान् के आने की खबर सुनी तो वह अत्यन्त प्रसन्न हुई । वह भी देवकी महारानी के समान धर्मरथ पर आरूढ होकर भगवान् को वदन करने गई । यावत् नेमिनाथ की पर्युपासना करने लगी । अरिहत अरिष्टनेमि ने कृष्ण वासुदेव, पद्मावती देवी और जन-परिपद् को धर्मोपदेश दिया, धर्मकथा कही धर्मोपदेश एव धर्मकथा सुनकर जन-परिषद् अपने अपने घर लौट गई ।

तव कृष्ण वासुदेव ने भगवान् नेमिनाथ को वदन नमस्कार करके उनसे इस प्रकार पृच्छा की—"हे भगवन् बारह योजन लम्बी और नव योजन चौडी यावत् साक्षात् देवलोक के समान इस द्वारिका नगरी का विनाश किस कारण से होगा ?"

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
एवं खलु कण्हा ! इमीसे वारवईए णयरीए दुवालसजोयण आयामाए णवजोयण वित्थिण्णाए जाव पच्चक्खं देवलोगभूयाए सुरग्गिदीवायणमूलाए विणासे भविस्सइ।	एवं खलु कृष्ण ! अस्याः द्वारावत्याः नगर्याः द्वादशयोजनायामायाः नवयोजन विस्तृतायाः यावत् प्रत्यक्षं देवलोकभूतायाः सुराग्निद्वैपायनमूलकः विनाशः भविष्यति।

सूत्र ३

तए णं कण्हस्स वासुदेवस्स अरहओ अरिट्ठणेमिस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा अयमेयारूवे अज्झत्थिए समुप्पण्णे— धण्णा णं ते जालि-मयालि-उवयालि-पुरिससेण-वारिसेण पज्जुण्ण-संब-अणिरुद्ध-दढणेमि-सच्चणेमिप्पभियओ कुमारा जे णं चिच्चा हिरण्णं जाव परिभाइत्ता अरहओ अरिट्ठणेमिस्स अन्तिय मुंडा जाव पव्वइया। अहण्णं अधण्णे अकयपुण्णे रज्जे य जाव अन्तेउरे य माणुस्सएसु य कामभोगेसु मुच्छिए। णो संचाएमि अरहओ अरिट्ठणेमिस्स अन्तिए जाव पव्वइत्तए। कण्हाइ ! अरहा अरिट्ठणेमी	ततः खलु कृष्णस्य वासुदेवस्य अर्हतः अरिष्टनेमिनः अन्तिके एतदर्थं श्रुत्वा अयमेवरूपः अध्यवसायः समुत्पन्नः— धन्याः खलु ते जालिः, मयालिः उपयालिः, पुरुषसेनः, वारिसेनः प्रद्युम्नः, साम्बः, अनिरुद्धः दृढनेमिः सत्यनेमिः प्रभृतयः कुमाराः ये खलु त्यक्त्वा हिरण्यं यावत् परिभाज्य अर्हतः अरिष्टनेमिनः अन्तिके मुंडाः यावत् प्रव्रजिताः। अहं खलु अधन्यः अकृतपुण्यः राज्ये च यावत् अन्तःपुरे च मानुष्येषु च कामभोगेषु मूर्च्छितः (अस्मि) न संचरामि अर्हतः अरिष्टनेमेरन्तिके यावत् प्रव्रजितुम्। कृष्ण ! (इति संबोध्य) अर्हन् अरिष्टनेमि

[हिन्नी शब्दार्थ]

हे कृष्ण ! निश्चय ही इस बारह योजन लम्बी तथा नौ योजन फैली हुई प्रत्यक्ष देव लोक के समान द्वारिका नगरी का सुरा, अग्नि और द्वैपायन के कारण विनाश होगा ।

[हिन्दी अर्थ]

कृष्ण आदि को सबोधित करते हुए अरिहत अरिष्ट नेमि प्रभु ने इस प्रकार उत्तर दिया—"हे कृष्ण ! निश्चय ही बारह योजन लम्बी और नव योजन चौडी यावत् प्रत्यक्ष स्वर्गपुरी के समान इस द्वारिका नगरी का विनाश मदिरा (सुरा), अग्नि और द्वैपायन ऋषि के कोप के कारण से होगा ।"

सूत्र ३

तब कृष्ण वासुदेव को भ०अरिष्टनेमी के पास से (द्वारिका के नाशरूप) इस अर्थ को सुनकर इस प्रकार का मानसिक अध्यवसाय उत्पन्न हुआ-

धन्य है वे जालि, मयालि, उपयालि, पुरुषसेन, वारिसेन, ्रम्न, साम्ब, अनिरुद्ध, दृढनेमी सत्यनेमी आदि कुमार। जिन्होनें स्वर्णादि सम्पत्ति को त्यागकर यावत् देयभाग देकर भगवान अरिष्टनेमी के पास मुंडित हुए यावत् दीक्षा ग्रहण की । मै निश्चय ही अधन्य हूँ, अकृत-पुण्य हूँ इसलिए कि राज्य, अन्त.पुर और मनुष्य सम्बन्धी कामभोगो मे मै मूर्छित हूँ । पूज्य भगवान अरिष्टनेमी के पास प्रव्रज्या लेने के लिये नही आ रहा हूँ। हे कृष्ण ! (यह सम्बोधन कर) भगवान्

अर्हन्त अरिष्टनेमि के श्री मुख से द्वारिका नगरी के विनाश का कारण जानकर श्रीकृष्ण वासुदेव के मन मे ऐसा विचार उत्पन्न हुआ कि वे जालि, मयालि, उवयालि, पुरिससेन, वीरसेन, प्रद्युम्न, शाम्ब, अनिरुद्ध, दृढनेमि और सत्यनेमि प्रभृति कुमार धन्य है जिन्होने हिरण्यादि सपदा और परिजन छोडकर यावत् देयभाग देकर, नेमिनाथ प्रभु के पास मुडित हुए यावत् प्रव्रजित हो गये । मैं अधन्य हूं, अकृत-पुण्य हू इसलिये कि राज्य, अन्त पुर और मनुष्य सम्बन्धी काम भोगो मे मूर्च्छित हू, इन्हे त्यागकर भगवान् नेमिनाथ के पास प्रव्रज्या लेने मे समर्थ नही हू ।

भगवान् नेमिनाथ प्रभु ने अपने ज्ञान वल से कृष्ण वासुदेव के मन मे आये इन विचारो को जान कर आर्त्तध्यान मे डूबे हुए कृष्ण वासुदेव से इस प्रकार कहा—

[मूल सूत्र पाठ]

कण्हं वासुदेवं एवं वयासी—
से णूणं कण्हा ! तव अयम्
अज्झत्थिए समुप्पण्णे—
"धण्णा णं ते जालि जाव पव्वइत्तए!

से णूणं कण्हा ! अयमट्ठे समट्ठे ?"
'हंता अत्थि' ।३।

[संस्कृत छाया]

कृष्णं वासुदेवम् एवमवदत्
तत् नूनं कृष्ण ! तव अयम्
अध्यवसायः समुत्पन्नः—
धन्याः खलु ते जालि यावत् प्रव्रजितुम्

तत् नूनं कृष्ण ! अयमर्थः समर्थः?
हत अस्ति ।३।

सूत्र ४

"तं णो खलु कण्हा! एवं भूयं वा
भव्वं वा भविस्सइ वा जण्णं
वासुदेवा चइत्ता हिरण्णं जाव
पव्वइस्संति ।"
से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ
ण एवं भूयं वा जाव पव्वइस्संति ?

तत् न खलु कृष्ण ! एवं भूतं वा
भव्यं वा भविष्यति वा यत् न
वासुदेवाः त्यक्त्वा हिरण्यं यावत्
प्रव्रजिष्यन्ति ।
अथ केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते
न एवं भूतं वा यावत् प्रव्रजिष्यन्ति ?

कण्हाइ ! अरहा अरिट्ठणेमी
कण्हं वासुदेवं एवं वयासी—
एवं खलु कण्हा ! सव्वे वि य णं
वासुदेवा पुव्वभवे णियाणकडा,
से एएणट्ठेणं कण्हा एवं वुच्चइ-
ण एवं भूयं जाव पव्वइस्संति ।४।

कृष्ण ! अर्हन् अरिष्टनेमी
कृष्णं वासुदे एवमवदत्—
एवं खलु कृष्ण ! ऽपि च खलु
वासुदेवाः पूर्वभवे कृतनिदानाः,
अथ एतदर्थेन कृष्ण ! एवमुच्यते-
न एवं भूतं यावत् प्रव्रजिष्यन्ति ।४।

[हिन्दी शब्दार्थ]

अरिष्टनेमीने कृष्ण को इस प्रकार कहा
अवश्य ही हे कृष्ण ! तुझे
यह मानसिक विचार उत्पन्न हुआ है–
कि जालि आदि कुमार धन्य है जिन्होने
मुनिव्रत ग्रहण किया है। मै अधन्य हूँ
मुनिव्रत नही ले पा रहा हूं।
हे कृष्ण ! क्या यह बात सही है ?
श्री कृष्ण ने कहा–हाँ भगवन् ठीक है।

[हिन्दी अर्थ]

"निश्चय ही हे कृष्ण ! तुम्हारे मन मे ऐसा विचार उत्पन्न हुआ—"वे जालि मयालि आदि कुमार धन्य है जिन्होने धन वैभव एव स्वजनो को त्यागकर मुनिव्रत ग्रहण किया और मैं अधन्य हू अकृतपुण्य हू जो राज्य अन्त पुर और मनुष्य सम्बन्धी काम भोगो मे ही गृद्ध हू। मैं प्रभु के पास प्रव्रज्या नही ले सकता।

सूत्र ४

हे कृष्ण ! ऐसा न हुवा है, न
होता है और न होगा कि
वासुदेव हिरण्यादि छोड़कर
यावत् दीक्षा ग्रहण करें।
(श्री कृष्ण ने पूछा)–भगवन् !
ऐसा क्यो कहा जाता है कि
ऐसा कभी नही हुआ और कभी
होगा भी नही कि यावत् वासुदेव
प्रव्रज्या ग्रहण करेंगे ?
श्री कृष्ण को संबोधित कर भगवान
ने कृष्ण वासुदेव को इस प्रकार कहा—
हे कृष्ण ! निश्चय ही सब वासुदेव
पूर्व जन्म मे निदान किये हुए होते है
इसलिये कृष्ण ! ऐसा कहा जाता है–
कभी ऐसा हुआ नही कि यावत् वासुदेव
प्रव्रज्या दीक्षा ग्रहण करेंगे।

हे कृष्ण ! क्या यह बात सही है ?"
श्री कृष्ण—"हा भगवन् ! आपने जो कहा वह सभी यथार्थ है। आप सर्वज्ञ है। आप से कोई बात छिपी हुई नही है।"

प्रभु ने फिर कहा—"तो हे कृष्ण ! ऐसा कभी हुआ नही, होता नही और होगा भी नही कि वासुदेव अपने भव मे धन-धान्य-स्वर्ण आदि सम्पत्ति छोडकर मुनिव्रत ले ले वासुदेव दीक्षा लेते ही नही, ली नही एव भविष्य मे कभी लेंगे भी नही।"

श्री कृष्ण–"भगवन् ! ऐसा क्यो कहा जाता है कि ऐसा कभी हुआ नही, होता नही और होगा भी नही। इसका क्या कारण है ?"

अर्हन्त नेमिनाथ ने कृष्ण वासुदेव को इसप्रकार उत्तर दिया—"हे कृष्ण ! निश्चय ही सभी वासुदेव पूर्व भव मे निदान कृत (नियाणा करने वाले) होते है, इसलिए मै ऐसा कहता हू ! कि ऐसा कभी हुआ नही, होता नही और होगा भी नही कि वासुदेव कभी अपनी सम्पत्ति को छोडकर प्रव्रज्या अगीकार करे।"

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]

सूत्र ५

मूल सूत्र पाठ	संस्कृत छाया
तए णं से कण्हे वासुदेवे अरहं	ततः खलु सः कृष्णः वासुदेवः अर्हन्तम्
अरिट्ठणेमि एवं वयासी—	अरिष्टनेमिनम् एवमवादीत्—
अहं णं भन्ते! इओ कालमासे	अहं खलु भदन्त ! इतः कालमासे
कालं किच्चा कहिं गमिस्सामि ?	कालं कृत्वा कुत्र गमिष्यामि ?
कहिं उववज्जिस्सामि ?	कुत्र च उत्पत्स्ये ?
तए णं अरहा अरिट्ठणेमी कण्हं	ततः खलु अर्हन् अरिष्टनेमी कृष्णं
वासुदेवं एवं वयासी—	वासुदेवम् एवम् अवादीत्—
एवं खलु कण्हा ! तुमं बारवईए	एवं खलु कृष्ण ! त्वं द्वारावत्यां
णयरीए सुरग्गिदीवायण-कोव-	नगर्या सुराग्निद्वैपायन कोप—
णिद्दड्ढाए अम्मापिइणियगविप्पहूणे	निर्दग्धायाम् अम्बापितृकनिजकविप्रहीनः
रामेण बलदेवेण सद्धिं दाहिणवेयालि	रामेण बलदेवेन सार्द्धं दक्षिणवेलाया
अभिमुहे जोहिट्ठिल्लपामोक्खाणं	अभिमुखे युधिष्ठिर प्रमुखानाम्
पंचण्हं पंडवाणं पंडुरायपुत्ताणं	पंचानां पाण्डवानां पाण्डुराजपुत्राणां
पासं पंडुमहुरं संपत्थिए	पार्श्वं पाण्डुमथुरां संप्रस्थितः
कोसंबवणकाणणे णग्गोहवर-	कोशाम्बवन कानने न्यग्रोधवर
पायवस्स अहे पुढविसिलापट्टए	पादपस्य अधः पृथ्वी शिलापट्टके
पीयवत्थपच्छाइयसरीरे	पीतवस्त्रप्रच्छादितशरीरः
जरकुमारेणं त्तिक्खेणं	जरकुमारेण तीक्ष्णेन
कोदंड-विप्पमुक्केणं इसुणा	कोदंड वि[illegible]क्तेन इषुणा
वामे पाए विद्धे समाणे कालमासे	वामे पादे विद्धः सन् कालमासे
कालं किच्चा तच्चाए	कालं कृत्वा तृतीयस्यां
वालुयप्पभाए पुढवीए जाव उववज्जिहिसि	बालुकाप्रभायां पृथिव्यां यावत् उत्पत्स्यसे

[हिन्दी शब्दार्थ] [हिन्दी अर्थ]

सूत्र ५

तब कृष्ण वासुदेव ने भगवान् अरिष्टनेमी को इस प्रकार निवेदन किया—
हे भगवन् ! मै यहाँ से काल के समय काल करके कहाँ जाऊँगा ?
तथा कहा उत्पन्न होऊंगा ?
तदनन्तर भगवान् अरिष्टनेमी ने कृष्ण वासुदेव को इस प्रकार कहा—
इस प्रकार हे कृष्ण ! तुम सुरा, अग्नि और द्वैपायन के क्रोध से द्वारिका नगरी के जलने पर माता-पिता और स्वजनो से वियुक्त होकर राम बलदेव के साथ दक्षिण
समुद्र तट की ओर युधिष्ठिर आदि पांडुराज के पुत्र पांचो पाण्डवो के पास पांडुमथुरा को जाते हुए कोशांबवन-उद्यान में वटवृक्ष के नीचे पृथ्वी शिला के पट्ट पर पीताम्बर ओढे हुए (सोओगे) तब जराकुमार के द्वारा धनुष से छोडे हुए तीक्ष्ण बाण से बायें पैर मे बींधे हुए होकर काल के समय काल करके तीसरी बालुका प्रभा पृथ्वी मे उत्पन्न होवोगे ।

तब कृष्ण वासुदेव अर्हन्त अरिष्टनेमि को इस प्रकार बोले—"हे भगवन् ! यहाँ से काल के समय काल करके मैं कहा जाऊगा, कहा उत्पन्न होऊगा ?"

इस पर अर्हन्त नेमिनाथ ने कृष्ण वासुदेव को इस तरह कहा—" हे कृष्ण ! तुम सुरा, अग्नि और द्वैपायन के कोप के कारण इस द्वारिका नगरी के जल कर नष्ट हो जाने पर और अपने माता-पिता एव स्वजनो का वियोग हो जाने पर रामवलदेव के साथ दक्षिणी समुद्र के तट की ओर पाण्डुराजा के पुत्र युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव इन पाचो पाडवो के समीप पाण्डु मथुरा की ओर जाओगे । रास्ते मे विश्राम लेने के लिए कौशाम्ब वन-उद्यान मे अत्यन्त विशाल एक वटवृक्ष के नीचे, पृथ्वी शिलापट्ट पर पीताम्वर ओढकर तुम सो जाओगे । उस समय मृग के भ्रम मे जराकुमार द्वारा चलाया हुआ तीक्ष्ण तीर तुम्हारे वाए पैर मे लगेगा । इस तीक्ष्ण तीर से विद्ध होकर तुम काल के समय काल करके वालुकाप्रभा नामक तीसरी पृथ्वी मे जन्म लोगे । प्रभु के श्रीमुख से अपने आगामी भव की यह बात सुनकर कृष्ण वासुदेव खिन्न मन होकर आर्त्त ध्यान करने लगे ।

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
तएणं कण्हे वासुदेवे अरहओ	तत॰ कृष्णो वासुदेवः
अरिट्ठणेमिस्स अंतिए	अर्हतः अरिष्टनेमिनः अंतिके
एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म	एतमर्थं श्रुत्वा निशम्य
ओहय जाव झियाइ ।	अपहतो यावत् ध्यायति ।
"कण्हाइ !" अरहा अरिट्ठणेमी	कृष्ण ! अर्हन् अरिष्टनेमिः
कण्हं वासुदेवं एव वयासी—	कृष्णं वासुदेवं एवमवदत्—
"मा णं तुमं देवाणुप्पिया !	मा खलु त्वं देवानुप्रिय !
ओहय जाव झियाहि ।	अवहत यावत् ध्यायस्व ।
एवं खलु तुमं देवाणुप्पिया !	एवं खलु त्वं देवानुप्रिय !
तच्चाओ पुढवीओ उज्जलियाओ	तृतीयस्याः पृथिव्याः उज्ज्वलितायाः
अणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव	अनन्तर उद्वृत्य इहैव जम्बूद्वीपे भारते
जंबूद्दीवे भारहेवासे	वर्षे आगमिष्यन्त्याम् उत्सर्पिण्याम्
आगमिस्साए उस्सप्पिणीए	
पुंडेसु जणवएसु सयदुवारे	पुण्ड्रेषु जनपदेषु शतद्वारे (नगरे)
बारसमे अममे णामं अरहा	द्वादशमो अममो नाम अर्हन्
भविस्ससि । तत्थ तुमं बहूइं वासाइं	भविष्यसि । तत्र त्वं बहूनि वर्षाणि
केवलपरियायं पाउणित्ता सिज्झिहिसि"	केवलपर्यायं पालयित्वा सेत्स्यसि ।

सूत्र ७

मूल सूत्र पाठ	संस्कृत छाया
तएणं से कण्हे वासुदेवे अरहओ	ततः सः कृष्णः वासुदेवः
अरिट्ठणेमिस्स अन्तिए	अर्हतः अरिष्टनेमिनः अन्तिके
एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठ०	एतदर्थं श्रुत्वा निशम्य हृष्टतुष्ट०
अप्फोडइ, अप्फोडित्ता वग्गइ,	आस्फोटयति, आस्फोट्य वल्गति,
वग्गित्ता तिवइं छिंदइ,	वल्गित्वा त्रिपदीं छिनत्ति,
छिंदित्ता सीहणायं करेइ, करित्ता	छित्वा सिंहनादं करोति, कृत्वा
अरहं अरिट्ठणेमिं वंदइ णमंसइ,	अर्हन्तम् अरिष्टनेमिनम् वन्दते नमस्यति
वंदित्ता णमंसित्ता तमेव	वन्दित्वा नमस्यित्वा तदेव
अभिसेक्कं हत्थिरयणं दुरुहइ	आभिषेक्यं हस्तिरत्नं दूरोहति,

[हिन्दी शब्दार्थ]

सूत्र १०

तदनन्तर कृष्णवासुदेव ने पद्मावती देवी को पट्ट (पाटा) पर बैठाया बैठाकर एक सौ आठ सुवर्णकलशों से यावत् दीक्षा सम्बन्धी अभिषेक किया। अभिषेक करके सर्वविध (सब तरह के) अलंकारो से उन्हे विभूषित कराया इस प्रकार सजाकर हजार पुरुषो से उठाई जाने वाली पालकी पर चढ़ाते हैं, चढाकर द्वारावती नगरी के मध्य मध्य भाग से निकले, निकलकर जहाँ रैवतक पर्वत है तथा जहा सहस्राम्रवन नामक बगीचा है यहाँ पर आये। आकर शिविका को रख देते है रखने के बाद पद्मावती देवी उस शिविका से उतरती है। तदनन्तर कृष्ण वासुदेव पद्मावती देवी को आगे करके जहाँ भगवान् अरिष्ट नेमिनाथ थे वहां आये, आकर भगवान् नेमिनाथ को तीन बार दक्षिण तरफ से प्रदक्षिणा करके वन्दना नमस्कार करते हैं, वन्दना नमस्कार करके इस प्रकार बोले— हे पूज्य! यह मेरी प्रधान रानी पद्मावती नाम की देवी जो कि मुझे इष्ट

[हिन्दी अर्थ]

इसके बाद कृष्ण वासुदेव ने पद्मावती-देवी को पट्ट पर बिठाया और एक सौ आठ सुवर्ण-कलशो से उसे स्नान कराया यावत् दीक्षा सम्बन्धी अभिषेक किया।

फिर सभी प्रकार के अलकारो से उसे विभूषित करके हजार पुरुषो द्वारा उठायी जाने वाली शिविका- (पालखी) मे बिठाकर द्वारिका नगरी के मध्य से होते हुए निकले और जहा रैवतक पर्वत और सहस्राम्र उद्यान था वहा आकर पालखी नीचे रक्खी। तब पद्मावती देवी पालखी से नीचे उतरी।

फिर कृष्ण वासुदेव पद्मावती महारानी को आगे करके भगवान् नेमिनाथ के पास आये और भगवान् नेमिनाथ को तीन बार दक्षिण तरफ से प्रदक्षिणा करके वदन नमस्कार किया। वन्दन नमस्कार करके इस प्रकार बोले—

"हे भगवन् यह पद्मावती देवी मेरी पटरानी है। यह मेरे लिए इष्ट है, कान्त है, प्रिय है, मनोज्ञ है, और मन के अनुकूल चलने वाली है अभिराम (सुन्दर) है। हे भगवन्! यह मेरे जीवन मे श्वासोच्छ्वास के समान मुझे प्रिय है, मेरे हृदय को आनन्द देने वाली है।

इस प्रकार का स्त्री-रत्न उदुम्बर (गूलर) के पुष्प के समान सुनने के लिए भी दुर्लभ है, तब देखने की तो बात ही क्या है? हे देवानुप्रिय! मै ऐसी अपनी प्रिय पत्नी की भिक्षा शिष्यणी रूप मे आपको देता हूँ। आप उसे स्वीकार करें।"

[मूल सूत्र पाठ]

पिया, मणुण्णा, मणामा,
अभिरामा, जीवियऊसासा,
हिययाणंदजणिया, उंबरपुप्फंविव

दुल्लहा, सवणयाए किमंग !
पुण पासणयाए ।
तएण अहं देवाणुप्पिया !
सिस्सिणी भिक्खं दलयामि,
पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिया !
सिस्सिणीभिक्खं ।

अहासुहं !
तएणं सा पउमावई देवी
उत्तरपुरच्छिमं दिसिभागं अवक्कमइ
अवक्कमित्ता सयमेव आभरणालंकारं
ओमुयइ, ओमुइत्ता सयमेव
पंचमुट्ठियं लोयं करेइ,
करित्ता जेणेव अरहा अरिट्ठणेमी
तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता
अरहं अरिट्ठणेमिं वंदइ णमंसइ,
वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी—

आलित्ते णं भन्ते ! जाव धम्म-
माइक्खिउं ।

[संस्कृत छाया]

प्रिया, मनोज्ञा, मनोरमा,
अभिरामा, जीवितोच्छ्वासा,
हृदयानन्दजनिका, उदम्बरपुष्पमिव

दुर्लभा श्रवणतायै किमंग!
पुनर्दर्शनतायै
ततः खलु अहं देवानुप्रिय!
शिष्या-भिक्षाम् ददामि,
प्रतीच्छन्तु खलु देवानुि !
शिष्याभिक्षाम् ।

यथासुखम् !
ततः खलु सा पद्मावती देवी
उत्तरपौरस्त्यां दिग्भागम् अवक्राम्यति
अवक्रम्य स्वयमेव आभरणालंकारम्
अवमुंचति, मुच्य स्वयमेव
पंचमौष्टिकम् (लुञ्चनं) लोचं करोति
कृत्वा यत्रैव अर्हन् अरिष्टनेमी
तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य
अर्हन्तम् अरिष्टनेमिनम् वन्दते नमस्यति,
वन्दित्वा नमस्यित्वा एवमवदत्—

आलिप्तो भदन्त ! यावत् धर्मं
आख्यातुम् ।

[हिन्दी शब्दार्थ]

कान्त, प्रिय, मनोज्ञ, मन के अनुकूल चलने वाली होने से सुन्दर है। यह जीवन के लिए श्वासोच्छ्‌वास के समान है हृदय को आनन्द देने वाली है उदम्बर पुष्प के समान जिसका नाम सुनना भी दुर्लभ है तो देखने की तो बात ही क्या? हे देवानुप्रिय! मै उस प्रिय पत्नी की शिष्यिणी रूप भिक्षा (आपको) देता हूँ हे देवानुप्रिय! आप शिष्यिणी रूप भिक्षा को ग्रहण करें।

"जैसा सुख हो वैसा करो।" तदनन्तर वह पद्मावती देवी ईशान कोण मे जाती है तथा वहाँ जाकर खुद ही आभूषण एवं ˙कारों को उतारती है उतार कर खुद ही पाँच मुट्ठी का लोंच करती है करके जहाँ भगवान अरिष्ठनेमी थे वहाँ आई, आकर भगवान् नेमिनाथ को वंदना नमस्कार करती है, वन्दना नमस्कार करके बोली— हे भगवन्! यह लोक जन्म मरणादि दुःखो से आलिप्त है : यावत् संयम धर्म की दीक्षा दें।

[हिन्दी अर्थ]

कृष्ण वासुदेव की प्रार्थना सुनकर प्रभु बोले–हे देवानुप्रिय! तुम्हे जिस प्रकार सुख हो वैसा करो।

तब उस पद्मावती देवी ने ईशान-कोण मे जाकर स्वय अपने हाथो से अपने शरीर पर धारण किए हुए सभी आभूषण एव अलकार उतारे और स्वय ही अपने केशो का पचमौष्टिक लोच किया। फिर भगवान नेमनाथ के पास आकर वदना की। वदन नमस्कार करके इस प्रकार बोली- "हे भगवन्! यह ससार जन्म, जरा, मरण आदि दुख रूपी आग मे जल रहा है।

अतः इन दुखो से छुटकारा पाने और जलती हुई आग से बचने के लिए, मै आपसे सयम-धर्म की दीक्षा अगीकार करना चाहती हू। अत कृपा करके मुझे प्रव्रजित कीजिये यावत् चरित्र-धर्म सुनाइये।"

[मूल सूत्र पाठ] [संस्कृत छाया]

सूत्र ११

तएणं अरहा अरिट्ठणेमी पउमावइं
देविं सयमेव पव्वावेइ,
सयमेव जक्खिणीए अज्जाए
सिस्सिणी दलयइ।
तएणं सा जक्खिणी अज्जा पउमावइं
देविं सयं पव्वावेइ,
जाव संजमियव्वं,
तएणं सा पउमावई जाव सजमइ।
तए णं सा पउमावई अज्जा जाया,
ईरियासमिया जाव गुत्तबम्भयारिणी।१।

ततः अर्हन् अरिष्टनेमिः पद्मावतीं
देवीं स्वयमेव प्रव्राजयति,
स्वयमेव यक्षिण्यै: आर्यायै
शिष्यां ददाति।
ततः खलु सा यक्षिणी आर्या पद्मावतीं
देवीं स्वयं प्रव्राजयति,
यावत् संयन्तव्यम्
ततः सा पद्मावती यावत् संयच्छते।
ततः सा पद्मावती आर्या जाता,
ईर्यासमिता यावत् गुप्तब्रह्मचारिणी।१।

सूत्र १२

तए णं सा पउमावई अज्जा जक्खिणीए
अज्जाए अंतिए सामाइयमाइयाइं
एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ,
बहूहिं चउत्थछट्ठट्ठमदसमदुवालसेहिं
मासद्धमासखमणेहिं
विविहेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं
भावेमाणा विहरइ।
तएण सा पउमावई अज्जा
बहुपडिपुण्णाइं वीसं वासाइं
सामण्णपरियागं पाउणित्ता,

: सा पद्मावती आर्या यक्षिण्याः
आर्यायाः अंतिके सामायिकादीनि
एकादशागानि अधीते,
बहुभिः चतुर्थषष्ठाष्टमदशमद्वादशभिः
मासार्द्धमासक्षपणैः
विविधैः तपः ˊभिः आत्मानं
भावयन्ती विहरति।
ततः सा पद्मावती आर्या
बहुप्रतिपूर्णानि विंशति वर्षाणि
श्रामण्य-पर्यायं पालयित्वा

[हिन्दी शब्दार्थ] [हिन्दी अर्थ]

सूत्र ११

इसके बाद भगवान् नेमिनाथ ने पद्मावती देवी को स्वयमेव प्रव्रज्या दी। और स्वयमेव यक्षिणी आर्या को शिष्या रूप मे प्रदान की। तब उस यक्षिणी आर्या ने पद्मावती देवी को स्वयं दीक्षा दी और संयम मे यत्न करने की शिक्षा दी, वह पद्मावती सं में यत्न करने लगी। वह पद्मावती आर्या बन गई, और ईर्या समिति आदि पाँचो समितियो से युक्त हो यावत् ब्रह्मचारिणी हो गई।

पद्मावती के ऐसा कहने पर भगवान् नेमिनाथ ने स्वयमेव पद्मावती को प्रवृजित एव मु डित करके यक्षिणी आर्या को शिष्या रूप मे सौंप दिया।

तब यक्षिणी आर्या ने पद्मावती देवी को प्रवृजित किया श्रमणी-धर्म की दीक्षा दी और सयम क्रिया मे सावधानी पूर्वक यत्न करते रहने की हित शिक्षा देते हुए कहा- "हे पद्मावते! तुम सयम मे सदा सावधान रहना।" पद्मावती भी यक्षिणी गुरुणी की हित शिक्षा मानते हुए सावधानीपूर्वक सयम-पथ पर चलने का यत्न करने लगी। एव ईर्या समिति आदि पाचो समिति से युक्त होकर यावत् ब्रह्मचारिणी आर्या बन गई।

सूत्र १२

तदनन्तर उस पद्मावती आर्या ने यक्षिणी आर्या के पास सामायिक आदि ग्यारह ंों का अध्ययन किया बहुत से उपवास-बेले-तेले-चोले-पचोले-मास और अर्धमास आदि विविध तपस्या से आत्मा को भावि करती हुई विचरने लगी। इसके बाद वह पद्मावती आर्या पूरे बीस श्रमणी चारित्र धर्म का पालन कर;

तत् पश्चात् उस पद्मावती आर्या ने अपनी यक्षिणी गुरुणी के पास सामायिक आदि ग्यारह अगो का अध्ययन किया, साथ ही साथ उपवास-बेले-तेले-चौले-पचोले, पन्द्रह पन्द्रह दिन और महीने महीने तक की विविध प्रकार की तपस्या से अपनी आत्मा को भावित करती हुई विचरने लगी।

इस तरह पद्मावती आर्या ने पूरे बीस वर्ष तक चरित्र धर्म का पालन किया। अन्त मे एक मास की सलेखना की और साठ भक्त अनशन पूर्ण करके जिस कार्य (मोक्ष

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
मासियाए संलेहणाए अप्पाणं	मासिक्या संलेखनया आत्मानं
झोसेइ, झोसित्ता सट्ठिभत्ताइं	जोषयति जोषित्वा षष्ठिंभक्तानि-
अणसणाइ छेदेइ, छेदित्ता	अनशनानि छिनत्ति, छित्वा
जस्सट्ठाए कीरई णग्गभावे—	यस्यार्थाय क्रियते नग्नभावः
जाव तमट्ठं आराहेइ	यावत् तमर्थम् आराधयति
चरिमुस्सासेहि सिद्धा ।१२।	चरमोच्छ्वासैः सिद्धा ।१२।

इति प्रथमं अध्ययनम्

अध्ययन २—८

सूत्र १

उक्खेवओ य अज्झयणस्स ।	उत्क्षेपकः अध्ययनस्य ।
तेणं कालेणं तेणं समएणं	तस्मिन् काले तस्मिन् समये
बारवई णयरी, रेवयए पव्वए	द्वारावती नगरी, रैवतकः पर्वतः
उज्जाणे णंदणवणे ।	उद्यान नन्दनवनम् ।
तत्थणं बारवईए णयरीए	तत्र खलु द्वारावत्याः नगर्याः
कण्हे वासुदेवे राया होत्था	कृष्णः वासुदेवः राजा आसीत्
तस्स णं कण्हस्स वासुदेवस्स	तस्य खलु कृष्णस्य वासुदेवस्य
गोरी देवी, वण्णओ,	गौरी देवी, वर्ण्या,
अरहा अरिट्ठणेमी समोसढे ।	अर्हन् अरिष्टनेमी समवसृतः ।
कण्हे णिग्गए, गोरी जहा	कृष्णः निर्गतः, गौरी यथा
पउमावई तहा णिग्गया,	पद्मावती निर्गता,
धम्मकहा, परिसा पडिगया,	धर्मकथा, परिषद् प्रतिगता,
कण्हे वि पडिगए ।	कृष्णोऽपि प्रतिगतः ।

[हिन्दी शब्दार्थ]

एक मासकी संलेखणासे आत्मा को युक्त कर साठ भक्त अनशन पूर्ण कर जिस कार्य के लिये नग्नभाव अपरिग्रह रूप सयम स्वीकार किया, उसी अर्थ का आराधन कर अन्तिम श्वास से सिद्ध-बुद्ध-मुक्त हो गई ।

[हिन्दी अर्थ]

प्राप्ति के लिए सयम स्वीकार किया था, उसकी आराधना करके अन्तिम श्वास के बाद सिद्ध-बुद्ध और सब दुखो से मुक्त होकर सिद्ध पद को प्राप्त कर लिया ।

इति प्रथममध्ययनम्

अध्ययन २–८

सूत्र १

श्री जम्बू—हे भगवन् ! प्रथम अध्ययन के जो भाव कहे वे, मैने सुने । अब द्वितीय, तृतीय आदि अध्ययनों मे प्रभु ने क्या भाव कहे हैं सो कृपाकर फरमाइये ?

श्री सुधर्मा—उस काल उस य हे जम्बू! द्वारिकानगरी के पास रैवतक पर्वत और नन्दन वन नामक उद्यान था। वहां द्वारिका नगरी के कृष्ण वासुदेव राजा थे उस कृष्ण वासुदेव की गौरी नामकी महारानी थी, वर्णनीया थी, किसी समय भगवान् नेमिनाथ द्वारिका के नन्दन वन उद्यान मे पधारे। श्री कृष्ण वन्दन को गये, पद्मावती की तरह गौरी भी वन्दन करने गई। भगवान ने धर्म कथा फरमाई। सभाजन लौट गये, कृष्ण भी वापस आगये।

आर्य जम्बू- "हे भगवन् ! श्रमण भ० महावीर स्वामी ने प्रथम अध्ययन के जो भाव कहे वे आपके मुखारविन्द से मैने सुने। अब दूसरे एव उससे आगे के अध्ययनो मे क्या भाव कहे हैं? कृपा करके कहिये ।"

श्री सुधर्मा स्वामी- "हे जम्बू! उस काल उस समय मे द्वारिका नगरी थी। उसके समीप एक रैवतक नाम का पर्वत था। उस पर्वत पर नन्दन वन नामक एक मनोहारी एव विशाल उद्यान था। उस द्वारिका नगरी मे श्री कृष्ण वासुदेव राज्य करते थे। उन कृष्ण वासुदेव की 'गौरी' नाम की महारानी थी जो वर्णन करने योग्य थी।

एक समय उस नन्दन वन उद्यान मे भगवान् अरिष्टनेमि पधारे। कृष्ण वासुदेव भगवान् के दर्शन करने के लिए गये। जन-परिषद् भी गई। 'गौरी' रानी भी 'पद्मावती' रानी के समान प्रभु-दर्शन के लिए गई। भगवान् ने धर्म-कथा-धर्मोपदेश दिया। धर्मोपदेश सुनकर जन परिषद् अपने अपने घर गई। कृष्ण वासुदेव भी अपने राज भवन मे लौट गये।

[मूल सूत्र पाठ]	[सस्कृत छाया]
तए रणं सा गोरी जहा पउमावई तहा रिणक्खता जाव सिद्धा । एव गधारी, लक्खरणा, सुसीमा, जम्बवई, सच्चभामा, रुप्पिरणी, अट्ठवि पउमावई सरिसयाश्रो अट्ठ अज्झयरणा ।१।	ततः सा गौरी यथा पद्मावती तथा निष्क्रान्ता यावत् सिद्धा । एवं गाधारी, लक्ष्मरणा, सुसीमा, जाम्ववती, सत्यभामा, रुक्मिरणी, अष्टावपि पद्मावती सदृशानि अष्ट-अध्ययनानि (समाप्तानि) ।१।

२–८ अध्ययनानि समाप्तानि

अथ नवम अध्ययन

सूत्र २

उक्खेवश्रो य रणवमस्स ।	उत्क्षेपकश्च नवमस्य ।
तेरणं कालेरणं तेरणं समयेरणं वारवईए रणयरीए, रेवयए पव्वए, रणदरणवरणे उज्जारणे, कण्हे राया । तत्थ रण वारवईए रणयरीए कण्हस्स वासुदेवस्स पुत्ते जबवईए देवीए अत्तए सबे रणामं कुमारे होत्था । अहीरण० ।	तस्मिन् काले तस्मिन् समये द्वारावत्या नगर्या, रैवतकः पर्वतः, नन्दनवनमुद्यानं, कृष्णः राजा । तत्र खलु द्वारावत्यां नगर्यां कृष्णस्य वासुदेवस्य पुत्रः जाम्बवत्याः देव्याः आत्मजः शाम्बः नाम कुमारः आसीत् । अहीनः ।
तस्स रणं संबस्स कुमारस्स मूलसिरी रणामं भारिया होत्था वण्णश्रो, अरहा अरिट्ठरणेमी ॉसढे ।	तस्य खलु कुमारस्य मूलश्रीः नामा भार्या ीत्, वर्ण्या । अर्हन् अरिष्टनेमिः समवसृतः ।

[हिन्दी शब्दार्थ]

तब श्री कृष्ण वासुदेव
भगवान् अरिष्टनेमी के पास से
इस बात को सुनकर एवं धारण कर
उदास मन होकर आर्त्तध्यान करने लगे।
कृष्ण को सम्बोधित कर भगवान
अरिष्टनेमी ने कृष्ण वासुदेव को ऐसे कहा
हे देवानुप्रिय ! तुम उदास
होकर आर्त्तध्यान मत करो।
निश्चय ही हे देवानुप्रिय !
तीसरी पृथ्वी की उत्कट वेदना के अनन्तर
(वहां से) निकलकर यहाँ ही जम्बूद्वीप
मे भारतवर्ष मे आनेवाली उत्सर्पिणी
काल मे पौण्ड्र जनपद मे शतद्वार नगर
मे बारहवें अमम नामक अर्हन्त बनोगे।
वहाँ पर बहुत वर्षों तक केवलीपर्याय
का पालन कर सिद्ध बुद्ध मुक्त बनोगे।

[हिन्दी अर्थ]

तब अर्हन्त अरिष्टनेमि पुन इस प्रकार बोले—"हे देवानुप्रिय ! तुम खिन्नमन होकर आर्त्तध्यान मत करो। निश्चय से हे देवानुप्रिय ! कालान्तर मे तुम तीसरी पृथ्वी से निकल कर इसी जबू द्वीप के भरत क्षेत्र मे आने वाले उत्सर्पिणी काल मे पुड्र जनपद के शत द्वार नाम के नगर मे 'अमम' नाम के बारहवे तीर्थंकर बनोगे। वहा वहुत वर्षो तक केवली पर्याय का पालन कर तुम सिद्ध-बुद्ध-मुक्त होओगे।

सूत्र ७

तदनन्तर वह कृष्ण वासुदेव भगवान
अरिष्टनेमि के पास से यह बात सुनकर
समझकर प्रसन्न होते हुए भुजाओ पर
ताल ठोकने लगे, ताल ठोक कर जयनाद
करते हैं, जयनाद करके समवसरण
में त्रिपदी का छेदन करते हैं, पीछे
हटकर सिंहनाद करते हैं सिंहनाद करके
भगवान अरिष्टनेमि को वन्दना
नमस्कार करते है वन्दना नमस्कार
करके उसी अभिषेक योग्य हाथी पर चढ़े

अर्हन्त प्रभु के मुखारविन्द से अपने भविष्य का यह वृत्तान्त सुनकर कृष्ण वासुदेव बडे प्रसन्न हुए, और अपनी भुजा पर ताल ठोकने लगे। जयनाद करके त्रिपदी का छेदन किया। थोडा पीछे हटकर सिंहनाद किया और फिर भगवान् नेमिनाथ को वदन नमस्कार करके अपने अभिषेक-योग्य हस्ति रत्न पर आरूढ हुए और द्वारिका नगरी के मध्य से होते हुए अपने राजप्रासाद मे आये। अभिषेक योग्य हाथी से नीचे उतरे और फिर जहा वाहर की उपस्थान शाला थी और

[मूल सूत्र पाठ]

दुरुहित्ता जेरगेव वारवई रगयरी
जेरगेव सए गिहे तेरगेव उवागए,
अभिसेय हत्थिरयरगाओ पच्चोरुहइ,
पच्चोरूहित्ता जेरगेव वाहिरिया
उवट्ठारगसाला जेरगेव सए सीहासरगे
तेरगेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता
सीहासरगवरंसि पुरत्थाभिमुहे रिगसीयइ,
रिगसीइत्ता कोडुंबियपुरिसे
सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी—
"गच्छ रगं तुब्भे देवारगुप्पिया !
वारवईए रगयरीए सिंघाडग जाव
उग्घोसेमारगा एवं वयह—
"एवं खलु देवारगुप्पिया !
वारवईए रगयरीए दुवालस
जोयरगआयामाए जाव
पच्चक्खं देवलोग-भूयाए
सुरग्गिदीवायरगमूले विरगासे
भविस्सइ तं जो रगं देवारगुप्पिया
इच्छइ वारवईए, रगयरीए
राया वा, जुवराया वा
ईसरे, तलवरे,
माडंबिए, कोडुंबिए,
इब्भे, सेट्ठी वा, देवी वा
कुमारो वा, कुमारी वा, अरहओ
अरिट्ठरगेमिस्स अन्तिए मुंडे जाव
पव्वइत्तए, तं रगं
कण्हे वासुदेवे विसज्जइ,

[सस्कृत छाया]

दूरुह्य यत्रैव द्वारावती नगरी
यत्रैव स्वक गृहं तत्रैव उपागच्छितः
आभिषेक्यहस्तिरत्नात् प्रत्यवरोहति,
प्रत्यवरुह्य यत्रैव बाह्या
उपस्थानशाला यत्रैव स्वकं सिंहासनं
तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य
सिंहासनवरे पौरस्त्याभिमुखः निषीदति,
निषद्य कौटुम्बिकपुरुषान्
शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवदत्—
गच्छत खलु यूयं हे देवानुप्रियाः !
द्वारावत्या नगर्या शृंगाटक यावत्
महापथेषु उद्घोषयन्तः एवं वदत—
एवं खलु देवानुप्रियाः !
द्वारावत्याः नगर्याः द्वादश—
योजनायामायाः यावत्
प्रत्यक्षं देवलोकभूतायाः
सुराग्नि द्वैपायनमूलः विनाशः
भविष्यति तत् यः खलु देवानुप्रियाः
इच्छति द्वारावत्या नगर्याः
राजा वा युवराजो वा
ईश्वरः (अधिपतिः), तलवरः सैनिकः
माडंबिकः कौटुम्बिकः
इभ्यः (्यः) श्रेष्ठी वा देवी वा
कुमारः वा,कुमारी वा, अर्हतः
अरिष्टनेमिनः अन्तिके मुण्डा यावत्
प्रव्रजितुं तं खलु
कृष्णः वासुदेवः विसर्जयति,

[हिन्दी शब्दार्थ]

आरूढ होकर जहाँ द्वारिका नगरी है तथा जहाँ अपना प्रासाद है वहाँ आते है। आभिषेक्य हस्तिरत्न से उतरते है, उतरकर जहाँ बाहरी उपस्थान शाला तथा जहाँ स्वयं का सिहासन है वहाँ पर आते है, वहाँ आकर श्रेष्ठ सिंहासन पर पूर्व की तरफ मुख करके विराजमान होते है, बैठ कर आज्ञाकारी पुरुषो को बुलाते है, बुलाकर कहते है—
हे देवानुप्रियो! तुम लोग जाओ व द्वारिका मे शृंगाटक यावत् राजमार्ग पर घोषणा करते हुए इस प्रकार कहो—
हे द्वारिकावासी देवानुप्रियो ! बारह योजन मे फैली हुई प्रत्यक्ष देवलोक के सभान इस द्वारिका नगरी का सुरा अग्नि व द्वैपायन के कारण नाश होगा, इस कारण हे देवानुप्रियो ! जो भी कोई इस द्वारिका पुरी मे, नगरी का राजा हो या युवराज हो अधिपति हो, श्रेष्ठ तल वाला सैनिक हो, माडंबिक हो, कौटुम्बिक (घरेलू नौकर) हो, धनी हो, सेठ हो, रानी हो, कुमार हो, कुमारी हो, भगवान अरिष्ट नेमिनाथ के पास मुंडित यावत् दीक्षा लेना चाहता हो, उसको कृष्ण वासुदेव विदा करते हैं

[हिन्दी अर्थ]

जहा अपना सिंहासन था वहा आये। वे सिंहासन पर पूर्वाभिमुख विराजमान हुए फिर अपने आज्ञाकारी पुरुपो राज सेवको को बुलाकर इस प्रकार वोले–"हे देवानुप्रियो! तुम द्वारिका नगरी शृगाटक यावत् चतुष्पथ आदि सभी राजमार्गो पर जाकर मेरी इस आज्ञा को प्रचारित करो कि—

"हे द्वारिकावासी नगरजनो! इस वारह योजन लम्वी यावत् प्रत्यक्ष स्वर्गपुरी के समान द्वारिका नगरी का सुरा, अग्नि एव द्वैपायन के कोप के कारण नाश होगा, इसलिये हे देवानुप्रियो! द्वारिका नगरी मे जिसकी भी इच्छा हो, चाहे वह राजा हो, युवराज हो, ईश्वर (स्वामी या मन्त्री) हो, तलवर (राजा का प्रिय अथवा राजा के समान) हो, माडम्विक (छोटे गाव का स्वामी) हो, कौटुम्बिक (दो तीन कुटुम्वो का स्वामी) हो, इभ्य सेठ हो, रानी हो, कुमार हो, कुमारी हो, राजरानी हो, राजपुत्री हो, इन मे से जो भी प्रभु नेमिनाथ के पास मुडित होकर यावत् दीक्षा लेना चाहता हो, उसको कृष्ण वासुदेव ऐसा करने की सहर्ष आज्ञा देते हैं। दीक्षार्थी के पीछे उसके आश्रित सभी कुटुम्वीजनो की भी श्री कृष्ण यथा योग्य व्यवस्था करेगे और वडे ऋद्धि सत्कार के साथ उसका दीक्षा-महोत्सव भी वे ही सपन्न करेंगे।" "इस प्रकार दो तीन वार घोषणा को दोहरा कर पुन मुझे सूचित करो।"

[मूल सूत्र पाठ]

पच्छाउरस्स वि य से अहापवित्तं
वित्तिं अणुजाणइ,
महया इड्ढीसक्कारसमुदएण
य से णिक्खमणं करेइ,
दोच्चं पि तच्चं पि घोसणय
घोसेइ, घोसित्ता
मम एयं आणत्तियं पच्चप्पिणह ।
तए णं ते कोडुंबियपुरिसा
जाव पच्चप्पिणंति ।

[संस्कृत छाया]

पश्चादातुरस्यापि च सः यथा प्रवृत्तं
वृत्तिं अनुजानाति,
महता ऋद्धि सत्कार-समुदयेन च सः
(तस्य) निष्क्रमणं करोति (करिष्यति)
द्विवारमपि त्रिवारमपि घोषणकं
घोषयथ, घोषित्वा (उद्घोष्य)
मम एताम् आज्ञप्ति प्रत्यर्पयत ।
ततः खलु ते कौटुम्बिक पुरुषाः
यावत् प्रत्यर्पयन्ति ।

सूत्र ८

तए णं सा पउमावई देवी
अरहओ अरिट्ठणेमिस्स
अंतिए धम्मं सोच्चा, णिसम्म
हट्ठतुट्ठ जाव हियया
अरहं अरिट्ठणेमिं वंदइ णमंसइ,
वंदित्ता णमंसित्ता,
एवं वयासी—
सद्दहामि णं भंते !
णिग्गंथं पावयणं से जहेयं तुब्भे
वयह, जं णवरं
देवाणुप्पिया ! कण्हं वासुदेवं
आपुच्छामि, तएणं अहं
देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडा जाव
पव्वयामि ।
अहासुहं देवाणुप्पिया !
मा पडिबंधं करेह ।

ततः खलु सा पद्मावती देवी
अर्हतः अरिष्टनेमिन :
अन्तिके धर्मं श्रुत्वा, निशम्य
हृष्टतुष्ट यावत् हृदया
अर्हन्तम् अरिष्टनेमिनं वन्दते नमस्यति,
वन्दित्वा, नमस्यित्वा
एवमवदत्—
श्रद्दधे भदन्त!
निर्ग्रन्थ प्रवचनं तद् य [illegible] द् यूयं
वदथ, यो [illegible] : सो[illegible]
देवानुप्रिया ! कृष्णं वासुदेवं
आपृच्छामि, [illegible] : खलु अह
देवानुप्रियाणां अन्तिके मुंडा यावत्
प्रव्रजामि ।
यथा सुखं देवानु[illegible] !
मा प्रतिबंधं कुरु ।

[हिन्दी शब्दार्थ]

और दीक्षार्थी के पीछे कुटुम्बीजनो की भी कृष्ण यथा योग्य व्यवस्था वे पूर्ण ऋद्धिसत्कार के साथ उसका निष्क्रमण (दीक्षा संस्कार) करायेंगे दूसरी बार तीसरी बार भी ऐसी घोषणा करो, घोषणा करके मेरी को वापस अर्पण करो तब उन आज्ञाकारी पुरुषों ने घोषणा कर आज्ञा वापस लौटाई ।

[हिन्दी अर्थ]

कृष्ण का यह आदेश पाकर उन आज्ञाकारी राज पुरुषो ने वैसी ही घोषणा दो तीन बार करके लौट कर इसकी सूचना श्री कृष्ण को दी।

सूत्र ८

तदनन्तर वह पद्मावती महारानी भगवान् अरिष्टनेमि के पास धर्मकथा सुनकर, समझकर अत्यन्त हृदय होती हुई भगवान नेमिनाथ को वन्दना नमस्कार करती है, वन्दना नमस्कार करके इस प्रकार बोली–
हे भगवन्! निर्ग्रन्थ प्रवचन पर मैं श्रद्धा रखती हूं कहते है (वैसा ही है)। विशेष–
हे देवानुप्रिय! कृष्ण वासुदेव को पूछूंगी, तदनन्तर मैं देवानुप्रिय के पास मुंडित यावत् दीक्षा ग्रहण करूंगी। (प्रभु ने कहा-) देवानुप्रिय! जैसा सुख हो करो धर्म कार्य मे विलम्ब मत करो

इसके बाद वह पद्मावती महारानी भगवान् नेमिनाथ से धर्मोपदेश सुनकर एव उसे हृदय मे धारण करके बडी प्रसन्न हुई, हृदय उसका प्रफुल्लित हो उठा। यावत् वह अर्हन्त नेमिनाथ को भावपूर्ण हृदय से वदना नमस्कार कर इस प्रकार बोली—

"हे पूज्य! निर्ग्रन्थ प्रवचन पर मैं श्रद्धा करती हू जैसा आप कहते हैं वह तत्व वैसा ही है। आपका धर्मोपदेश यथार्थ है। हे भगवन्! मैं कृष्ण वासुदेव की आज्ञा लेकर फिर देवानुप्रिय के पास मुण्डित होकर दीक्षा ग्रहण करना चाहती हू।"

प्रभु ने कहा "जैसा तुम्हारी आत्मा को सुख हो वैसा करो। हे देवानुप्रिये! धर्म-कार्य मे विलम्ब मत करो।"

[हिन्दी शब्दार्थ] [हिन्दी अर्थ]

सूत्र ६

प्रभु के ऐसा कहने के बाद पद्मावतीदेवी धार्मिक यानप्रवर पर आरूढ होती है, आरूढ होकर जहाँ द्वारिका नगरी है जहाँ स्वयं का घर है वहाँ आती है, आकर धार्मिक श्रेष्ठ रथ से उतरती है, उतरकर जहाँ कृष्ण वासुदेव थे वहाँ आती है, वहां आकर दोनों हाथ जोडकर कृष्ण वासुदेव को इस प्रकार बोली- हे देवानुप्रिय! आपकी आज्ञा हो तो मै अर्हन्त नेमिनाथ के पास मुंडित होकर दीक्षा ग्रहण करना चाहती हूँ। (कृष्ण ने कहा-) हे देवानुप्रिय! जैसे सुख हो वैसा करो। तब कृष्ण वासदेव ने आज्ञाकारियों को बुलाया, बुलाकर इस प्रकार कहा— "हे देवानुप्रिय! शीघ्र ही पद्मावती महारानी के लिए बहुमूल्य दीक्षा महोत्सव की तैयारी करो, तैयारी कर, इस आज्ञापूर्ति की सूचना मुझे वापस करो।" तब आज्ञाकारियों ने वैसा ही किया।

नेमिनाथ प्रभु के ऐसा कहने के बाद पद्मावतीदेवी धार्मिक श्रेष्ठ रथ पर आरूढ होकर द्वारिका नगरी मे अपने घर आकर धार्मिक रथ से नीचे उतरी और जहा पर कृष्ण वासुदेव थे वहा आकर उनको दोनो हाथ जोडकर कृष्ण वासुदेव से इस प्रकार बोली—

"हे देवानुप्रिय! आपकी आज्ञा हो तो मै अर्हन्त नेमिनाथ के पास मुडित होकर दीक्षा ग्रहण करना चाहती हूँ।"

कृष्ण ने कहा– "हे देवानुप्रिये! जैसा तुम्हे सुख हो वैसा करो।"

तब कृष्ण वासुदेव ने अपने आज्ञाकारी पुरुषो को बुला कर इस प्रकार आदेश दिया –

"हे देवानुप्रियो! शीघ्र ही महारानी पद्मावती के लिए दीक्षा महोत्सव की विशाल तैयारी करो, और तैयारी हो जाने की मुझे वापस सूचना दो।"

तब आज्ञाकारी पुरुषो ने वैसा ही किया और दीक्षा महोत्सव की तैयारी की सूचना उनको दी।

[मूल सूत्र पाठ] [संस्कृत छाया]

सूत्र १०

तए णं से कण्हे वासुदेवे पउमावइं
देवीं पट्टय दुरूहई
दुरूहित्ता अट्ठसएणं सोवण्णकलसेणं
जाव णिक्खमणाभिसेएण अभिसिंचइ,
अभिसिंचित्ता, सव्वालंकार
विभूसिय करेइ
करित्ता, पुरिससहस्सवाहिणीं
सिविय दुरूहावेइ
दुरूहावित्ता वारवईए णयरीए
मज्झंमज्झेणं णिगच्छइ,
णिगच्छित्ता जेणेव रेवयए पव्वए
जेणेव सहस्सबवणे उज्जाणे
तेणेव उवागच्छइ,
उवागच्छित्ता सीय ठवेइ
ठवेत्ता, पउमावई देवी
सीयाओ पच्चोरुहइ ।
तए ण से कण्हे वासुदेवे
पउमावइ देविं पुरओ कट्टु
जेणेव अरहा अरिट्ठणेमी तेणेव
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता
अरहं अरिट्ठणेमिं आयाहिणं
पयाहिण करेइ, करित्ता
वदइ णमसइ, वदित्ता णमंसित्ता
एव वयासी—
एस णं भन्ते ! मम अग्गमहिसी
पउमावई नामं देवी इट्ठा, कंता

ततः खलु सः कृष्णः वासुदेवः पद्मावती
देवीं पट्टकं (फलकं) दूरोहति
दूरोह्य अष्टोत्तरशतसौवर्णकलशैः
यावत् निष्क्रमणाभिषेकं अभिषिंचति,
अभिषिच्य सर्वालंकार
विभूषिताम् कारयति,
कृत्वा पुरुष सहस्रवाहिनीं
शिविकाम् दूरोहयति,
दूरोह्य द्वारावत्याः नगर्याः
मध्यं मध्येन निर्गच्छति,
निर्गत्य यत्रैव रैवतकः पर्वतः
यत्रैव सहस्रा ॒ उद्यानम्
तत्रैव उपागच्छति,
उपागत्य शिविकां स्थापयति
स्थापयित्वा, ा देवी
शिविकायाः प्रत्यवरोहति ।
ततःखलु सः कृष्णः वासुदेवः
पद्मावतीं देवीं पुरतः कृत्वा
यत्रैव अर्हन् अरिष्टनेमिस्तत्रैव
उपागच्छति, उपागत्य
अर्हन्तम् अरिष्टनेमिनं आदक्षिणं
प्रदक्षिणं करोति, कृत्वा
वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा
एवमवदत्—
एषा खलु भदन्त ! ममाग्रमहिषी
पद्मावती नाम देवी इष्टा, कांता,

[हिन्दी शब्दार्थ]

तब गौरी पद्मावती की तरह
दीक्षित हुई यावत् सिद्ध हो गई ।
इसी तरह गांधारी, लक्ष्मणा, सुसीमा
जाम्बवती, सत्यभामा, रुक्मिणी,
(ये) आठो अध्ययन पद्मावती के समान
समझना ।

[हिन्दी अर्थ]

तत्पश्चात् 'गौरी' देवी पद्मावती रानी की तरह दीक्षित हुई यावत् सिद्ध हो गई ।

इसी तरह बाकी ३ गाधारी,४ लक्ष्मणा, ५ सुसीमा, ६ जाम्ववती, ७ सत्यभाभा, ८ रुक्मिणी के भी छ अध्ययन 'पद्मावती' के समान समझे ।

इन आठो महारानियो का वर्णन इनके अध्ययनो मे समान रूप से जानना चाहिये । ये सभी एक समान प्रव्रजित होकर सिद्ध बुद्ध और मुक्त हुई । ये सभी श्री कृष्ण वासुदेव की पटरानिया थी ।

अथ नवम अध्ययन

सूत्र २

नवम अध्ययन का उत्क्षेपक—
हे भगवन् ! श्रमण भगवान् महावीर
ने आठवें अध्ययन का भाव फरमाया
सो सुना अब नवम मे क्या अर्थ
कहा है ? कृपा कर बतलाइये ।
उस काल उस समय
द्वारिकानगरी, रैवतक पर्वत,
नन्दनवन नामक उद्यान, कृष्ण-
वासुदेव राजा (हुए)
वहां द्वारिका नगरी मे
कृष्ण वासुदेव का पुत्र तथा
जाम्बवती देवी का आत्मज
साम्ब नामक कुमार था ।
जो प्रतिपूर्ण इन्द्रियवाला एवं सुरूप था ।
उस साम्ब कुमार की मूलश्री
नामकी पत्नी थी,
जो कि वर्णन करने योग्य थी ।
एकदा भगवान अरिष्टनेमी वहां पधारे

श्री जम्बू- "हे भगवन् ! श्रमण भगवान महावीर ने आठवे अध्ययन के जो भाव कहे- वे मैने आपके मुखारविन्द से सुने । आगे श्रमण भगवान् महावीर ने नवमे अध्ययन का क्या अर्थ बताया है । यह कृपाकर बताइये ।"

श्री सुधर्मा स्वामी- "हे जम्बू ! उस काल उस समय मे द्वारिका नगरी के पास एक रैवतक नाम का पर्वत था जहा एक नन्दन-वन उद्यान था । वहा कृष्ण-वासुदेव राज्य करते थे । उन कृष्ण वासुदेव के पुत्र और रानी जाम्बवती देवी के आत्मज शाम्ब-नाम के कुमार थे जो सर्वाग सुन्दर थे ।

उन शाम्व कुमार के मूलश्री नाम की भार्या थी, जो वर्णन योग्य थी, अत्यन्त सुन्दर एव कोमलागी थी ।

एक समय अरिष्टनेमि वहा पधारे । कृष्ण वासुदेव उनके दर्शनार्थ गये । 'मूल श्री' देवी भी 'पद्मावती' के पूर्व वर्णन के समान प्रभु के दर्शनार्थ गई ।

भगवान् ने धर्मोपदेश दिया, धर्म कथा कही । जिसे सुनने को जन परिषद् भी आई । धर्म कथा सुनकर जन परिषद् एव श्री कृष्ण तो अपने अपने घर लौट गये । मूल श्री ने वही रुककर भगवान से प्रार्थना की कि "हे भगवन् ! मै कृष्ण वासुदेव की आज्ञा लेकर आपके पास श्रमण धर्म मे दीक्षित होना चाहती हू ।"

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
कण्हे णिग्गए । मूलसिरी वि णिग्गया ।	कृष्णः निर्गतः मूलश्रीरपि निर्गता ।
जहा पउमावई ।	यथा पद्मावती ।
णवरं देवाणुप्पिया !	विशेषः (नवीनम्) देवानुप्रिया !
कण्हं वासुदेवं आपुच्छामि	कृष्णं वासुदेवम् आपृच्छामि ।
जाव सिद्धा ।	यावत् सिद्धा ।
एव मूलदत्ता वि ।	एवं मूलदत्ता अपि ।

इति पंचमः वर्गः

षष्ठम वर्गः

सूत्र १

जइणं भंते ! छट्ठमस्स	यदि खलु हे भदन्त! षष्ठमस्य
उक्खेवओ ।	उत्क्षेपक : ।
णवरं	विशेषः (नवीनम्)
सोलस अज्झयणा	षोडशानि अध्ययनानि
पण्णत्ता, तंजहा–	प्रज्ञप्तानि, तानि यथा—
मंकाई किंकमे चेव,	मङ्काई (ति) किं श्चैव,
मोग्गरपाणी य कासवे ।	मुद्गरपाणिश्च काश्यपः ।
खेमए धितिधरे चेव,	क्षेमको धृतिधरश्चैव,
केलासे हरिचन्दणे ।१।	कैलाशो हरिचन्दनः ।१।

[हिन्दी शब्दार्थ]

कृष्ण वन्दन करने गये, मूलश्री भी गई पद्मावती की तरह ।
विशेष- बोली- "हे देवानुप्रिय !
कृष्ण वासुदेव को पूछती हूँ" (पूछकर) (दीक्षित हुई) यावत् सिद्ध हो गई ।
इसी प्रकार मूलदत्ता भी ।

[हिन्दी अर्थ]

भगवान् ने कहा- "हे देवानुप्रिय! जैसा तुम्हे सुख हो वैसा करो ।"

इसके बाद 'मूल श्री' अपने भवन को लौटी । 'मूल श्री' के पति श्री शाम्ब कुमार चू कि पहले ही प्रभु के चरणो मे दीक्षित हो गये थे अत 'मूल श्री' अपने श्वसुर श्रीकृष्ण वासुदेव की आज्ञा लेकर 'पद्मावती' के समान दीक्षित हुई । एव उन्ही के समान तप सयम की आराधना करके सिद्ध पद को प्राप्त किया ।

'मूल श्री' के ही समान "मूल दत्ता" का भी सारा वृत्तान्त जानना चाहिये । यह शाम्ब कुमार की दूसरी रानी थी ।

इति पंचम वर्गः

षष्ठम वर्गः

सूत्र १

"यदि खलु हे भदन्त!" छठे का प्रारम्भ है । हे भगवन्! पाँचवें वर्ग का भाव सुना अब छठे वर्ग मे श्रमण भगवान महावीर ने क्या भाव प्रकट किये हैं कृपाकर बतलाइये–
सुधर्मा स्वामी - हे जम्बू!
विशेष, इस वर्ग में भगवान ने सोलह अध्ययन कहे हैं वे इस प्रकार है—
१. मंकाई २. किंकम ३. मुद्गरपाणि ४. काश्यप । ५. क्षेमक ६. धृतिधर ७. कैलाश, तथा ८. हरिचन्दन ।

श्री जम्बू- "हे भगवन्! पाचवे वर्ग का भाव सुना, अब छठे वर्ग के श्रमण भगवान् महावीर ने क्या भाव कहे है सो कृपा कर कहिये ।"

श्री सुधर्मा स्वामी- "हे जम्बू! श्रमण भगवान् महावीर स्वामी ने छठे वर्ग के सोलह अध्ययन कहे है, जो इस प्रकार है–

१ मकाई, २ किंकम, ३ मुद्गरपाणि, ४ काश्यप, ५ क्षेमक, ६ धृतिधर ७ कैलाश, ८ हरिचन्दन, ९ वारत्त,

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
वारत्तसुदंसण-पुण्णभद्द,	वारत्तसुदर्शन-पुण्यभद्रः,
सुमणभद्द सुपइट्ठे मेहे ।	सुमनोभद्रः सुप्रतिष्ठः मेघः ।
अइमुत्ते य अलक्खे,	अतिमुक्तश्चालक्ष्यो,
अज्झयणाणं तु सोलसयं ।२।	अध्ययनानां तु षोडशकम् ।२।
जइणं भन्ते! सोलस अज्झयणा	यदि खलु भदन्त ! षोडश अध्ययनानि
पण्णत्ता, पढमस्स अज्झयणस्स	प्रज्ञप्तानि, प्रथमस्य अध्ययनस्य
के अट्ठे पण्णत्ते ?	कः अर्थः प्रज्ञप्तः ?
एवं खलु जम्बू ! तेणं कालेणं	एवं खलु जम्बू ! तस्मिन् काले
तेणं समएणं रायगिहे णयरे ।	तस्मिन् समये राजगृहं नगरम् ।
गुण-सिलए चेइए, सेणिए राया ।	गुणशिलकं चैत्यम्, श्रेणिकः राजा ।
तत्थ णं मंकाई णामं गाहावई	तत्र खलु मंकाई नाम गाथापतिः
परिवसइ, अड्ढे जाव	परिवसति, आढ्यः यावत्
अपरिभूए ।	अपरिभूतः ।
तेणं कालेणं तेणं समएणं	तस्मिन् काले तस्मिन् समये
समणे भगव महावीरे आइगरे	श्रमणः भगवान् महावीरः आदिकरः
गुणसिलए जाव विहरइ,	गुणशिलके यावत् विहरति,
परिसा णिग्गया ।	परिषद् निर्गता ।
तए णं से मंकाई गाहावई	: स मंकाई गाथापतिः
इमीसे कहाए लद्धट्ठे	अस्याः कथायाः लब्धार्थः
जहा पण्णत्तीए गगदत्ते[24] तहेव	यथा प्रज्ञप्त्यां गंगदत्तः तथैव

[हिन्दी शब्दार्थ]

९. वारत्त, १०. सुदर्शन, ११. पुण्यभद्र
१२. सुमनभद्र, १३. सुप्रतिष्ठ
१४. मेघ १५. अतिमुक्त तथा
१६. अलक्ष्य । ये सोलह अध्ययन है ।

यदि हे भगवन्! सोलह अध्ययन कहे
है तो पहले अध्ययन का क्या अर्थ
लाया है ? (श्री सुधर्मा)-

हे जम्बू ! उस काल
उस समय मे राजगृह नगर,
गुणशील चैत्य एवं श्रेणिक राजा थे ।
वहां पर मंकाई नामक गृहस्थ
रहता था जोकि ऋद्धि सम्पन्न तथा
किसी से तिरस्कार प्राप्त नहीं था ।

उस काल उस समय श्रमण भगवान्
महावीर धर्म की आदि करने वाले
गुणशील उद्यान में यावत् पधारे ।
धर्म कथा सुनकर परिषद् लौट गई ।
तब वह मंकई गाथापति
प्रभु के आने का वृत्तान्त सुनकर
जैसे भगवतो सूत्र में गंगदत्त, वैसे ही

[हिन्दी अर्थ]

१० सुदर्शन, ११ पुण्यभद्र, १२ सुमनभद्र, १३ सुप्रतिष्ठ, १४ मेघ कुमार, १५ अतिमुक्त-कुमार, १६ अलक्ष्य कुमार ।

श्री जम्बू—"हे भगवन् ! श्रमण भगवान् महावीर ने छट्ठे वर्ग के १६ अध्ययन कहे है तो प्रथम अध्ययन का क्या अर्थ बताया है । कृपा कर कहिये ।

आर्य श्री सुधर्मा स्वामी-"हे जवू ! उस काल उस समय मे राजगृह नामक नगर था । वहा गुणशीलक नाम का चैत्य–उद्यान था । उस नगर मे श्रेणिक राजा राज्य करते थे । वहा मकाई नाम का एक गाथापति रहता था, जो अत्यन्त समृद्ध यावत् अपरिभूत था यानि दूसरो से पराभूत होने वाला नही था ।

उस काल उस समय मे धर्म की आदि करने वाले श्रमण भ० महावीर गुणशीलक उद्यान मे यावत् पधारे ।

प्रभु महावीर का आगमन सुन कर जन परिषद् दर्शनार्थ एव धर्मोपदेश श्रवणार्थ प्रभु की सेवामे आई ।

मकाई गाथापति भी भगवती सूत्र मे वर्णित गगदत्त के वर्णन के समान भगवान् के दर्शनार्थ एव धर्मोपदेश श्रवणार्थ अपने घर से निकला । भगवान् ने धर्मोपदेश दिया, जिसे सुनकर मकाई गाथापति ससार से विरक्त हो गया । उसने घर आकर अपने

[मूल सूत्र पाठ]	[सस्कृत छाया]
इमो वि	अयमपि
जेट्ठपुत्तं कुडुंबे ठवित्ता	ज्येष्ठपुत्रं कुटुम्बे स्थापयित्वा
पुरिससहस्सवाहिणीए सीयाए	पुरुषसहस्रवाहिन्या शिविकया
णिक्खंते ।	निष्क्रान्तः ।
जाव अणगारे जाए	यावत् अनगारो जातः ।
ईरियासमिए जाव गुत्तबंभयारी	ईर्यासमितो यावत् गुप्तब्रह्मचारी ।
तए णं से मंकाई अणगारे	ततः सः मंकाई अनगारः
समणस्स भगवओ महावीरस्स	श्रमणस्य भगवतः महावीरस्य
तहारूवाणं थेराणं अंतिए	तथारूपाणा स्थविराणामन्तिके
सामाइय-माइयाइं एक्कारस	सामायिकादीनि एका
अंगाइं अहिज्जइ ।	दशाङ्गानि अधीते ।
सेसं जहा खंदयस्स ।	शेषं यथा स्कंदकस्य ।[25]
गुणरयणं तवोकम्मं	गुणरत्नं तपः कर्म
सोलस वासाइं परियाओ,	षोडश वर्षाणि पर्यायः,
तहेव विपुले सिद्धे ।	तथैव विपुले सिद्धः ।

प्रथम अध्ययन समाप्त

द्वितीय अध्ययन

सूत्र २

दोच्चस्स उक्खेवओ,	द्वितीयस्य उत्क्षेपकः ।
किक्कमे वि एवं चेव ।	किंकमः अपि एवम् चैव ।
जाव विपुले सिद्धे ।२।	यावत् विपुले सिद्धः ।२।

तृतीय अध्ययन

सूत्र १

तच्चस्स उक्खेवओ ।	तृतीयस्य उत्क्षेपकः ।

[हिन्दी शब्दार्थ]

यह भी ज्येष्ठ पुत्र को कुटुम्ब का कार्यभार सौंपकर हजारपुरुषो से उठाई जाने वाली पालकी मे बैठकर दीक्षार्थ निकल पड़े। यावत् अनगार हो गए। ईर्यासमिति युक्त यावत् गुप्त ब्रह्मचारी बन गये। तब वह मंकाई अनगार श्रमण महावीर के तथारूप स्थविरो के पास सामायिक आदि ग्यारह अंगो का अध्ययन करता है। शेष वर्णन स्कंदक[25] के समान जानना चाहिये। उन्होने स्कंदक के समान गुणरत्न तप का आराधन किया। सोलह वर्ष की दीक्षा पाली और उसी तरह विपुल पर्वत पर सिद्ध हो गये।

[हिन्दी अर्थ]

ज्येष्ठ पुत्र को घर का भार सौपा और स्वय हजार पुरुषो से उठाई जाने वाली शिविका (पालखी) मे बैठकर श्रवण दीक्षा अगीकार करने हेतु भगवान् की सेवा मे आये। यावत् वे अणगार हो गये। ईर्या आदि समितियो से युक्त एव गुप्तियो से गुप्त ब्रह्मचारी वन गये।

इसके वाद मकाई मुनि ने श्रमण भगवान् महावीर के गुण सपन्न तथा रूप स्थविरो के के पास सामायिक आदि ग्यारह अगो का अध्ययन किया और स्कदकजी के समान, गुण रत्न सवत्सर तप का आराधन किया। सोलह वर्ष की दीक्षा पर्याय पाली और अन्त मे विपुल गिरि पर स्कन्दकजी के समान ही सथारादि करके सिद्ध हो गये।

प्रथम अध्ययन समाप्त

द्वितीय अध्ययन

सूत्र २

दूसरे अध्ययन का प्रारम्भ—किंकम भी मंकाई के समान ही दीक्षा लेकर विपुलाचल पर सिद्ध बुद्ध मुक्त हो गये।

दूसरे अध्ययन मे 'किकम' गाथापति का वर्णन है। वे भी 'मकाई' गाथापति के समान ही प्रभु महावीर के पास प्रव्रजित होकर विपुल गिरि पर सिद्ध-बुद्ध और सर्वदुखो से मुक्त होकर सिद्ध शिला के वासी वन गये।

तृतीय अध्ययन

सूत्र ३

तीसरे अध्ययन का प्रारम्भ—

[मूल सूत्र पाठ]

एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं
समएणं रायगिहे णयरे गुण सिलए
चेइए, सेणिए राया । चेल्लणा देवी ।
तत्थणं रायगिहे णयरे अज्जुणए णामं
मालागारे
परिवसइ । अड्ढे जाव
अपरिभूए ।

तस्स णं अज्जुणयस्स बंधुमई
णामं भारिया होत्था सुकुमाल
पाणिपाया ।

तस्स णं अज्जुणयस्स मालागारस्स
रायगिहस्स णयरस्स बहिया
एत्थ णं मह एगे पुप्फारामे
होत्था । कण्हे जाव णिकुरंबभूए
दसद्धवण्ण कुसुम कुसुमिए,
पासाइए ।

तस्स णं पुप्फारामस्स अदूर सामंते
तत्थणं अज्जुणयस्स मालागारस्स
अज्जयपज्जयपिइपज्जयागए
अणेगकुलपुरिसपरंपरागए
मोग्गरपाणिस्स जक्खस्स
जक्खाययणे होत्था ।
पोराणे दिव्वे, सच्चे जहा पुण्णभद्दे ।

[संस्कृत छाया]

एवं खलु जम्बू ! तस्मिन् काले
तस्मिन् समये राजगृहं नगरम्
गुणशिलकंचैत्यम् श्रेणिको राजा,
चेल्लना देवी ।
तत्र खलु राजगृहे नगरे
अर्जुनो नाम मालाकरः
परिवसति (स्म) । आढ्यः यावत्
अपराभूतः ।

तस्य खलु अर्जुनस्य बंधुमती
नामा भार्या आसीत् सुकुमार
पाणिपादा ।

तस्य खलु अर्जुनस्य मालाकारस्य
राजगृहस्य नगराद् बहि
अत्र खलु महान् एकः पुष्पारामः
आसीत् । कृष्णः यावत् निकुरंबभूतः
दशार्द्ध वर्णकुसुमकुसुमितः
प्रासादीयः ।

तस्य खलु पुष्पारामस्य अदूरसामन्ते
तत्र खलु अर्जुनकस्य मालाकारस्य
आर्यक प्रार्यक पितृपर्यायागतम्
अनेक कुल पुरुषपरंपरागतम्
मुद्गरपाणेः यक्षस्य
यक्षायतनं आसीत् ।
पुराणं दिव्यं सत्यं यथा पूर्णभद्रम् ।

[हिन्दी शब्दार्थ]

हे भगवन् ! श्रमरण भगवान् महावीर ने छठे वर्ग के दूसरे अध्ययन का जो भाव फरमाया वह सुना,अब तीसरे अध्ययन का प्रभु ने क्या भाव प्रकट किया है ? इस प्रकार हे जम्बू ! उस काल उस समय मे राजगृह नगर मे गुणशील उद्यान था । श्रेणिक राजा था उसकी चेलना रानी थी । वहाँ राजगृह नगर मे अर्जुन नाम वाला मालाकार रहता था । वह धन-सम्पन्न तथा अपराजित था । उस अर्जुन मालाकार के बंधुमति नाम की भार्या थी, जो कोमल हाथ पैर (शरीर) वाली थी । उस अर्जुन मालाकार का राजगृह नगर के बाहर एक विशाल फूलों का बगीचा था । वह उद्यान काला यावत् हरा भरा था वहाँ पाँच वर्ण के फूल खिले हुए थे । वह उद्यान मन को करने वाला था । उस फूलों के बगीचे के पास ही वहाँ उस अर्जुन मालाकार के पिता पितामह प्रपितामह से चला आया अनेक, कुलपुरुषों की परंपरा से सेवित मुद्गरपाणियक्ष का यक्षायतन था । वह यक्षायतन प्राचीन दिव्य और सत्यप्रभाव वाला था जैसे पूर्णभद्र ।[२६]

[हिन्दी अर्थ]

श्री जम्बू स्वामी—"हे भगवन् ! श्रमण भगवान् महावीर ने छट्ठे वर्ग के दूसरे अध्ययन का भाव बताया सो सुना । अब तीसरे अध्ययन का प्रभु ने क्या अर्थ कहा है ? कृपा कर वह भी बताइये ।"

श्री सुधर्मा स्वामी—"हे जम्बू ! उस काल उस समय मे राजगृह नामका एक नगर था । वहा गुणशीलक नामक एक उद्यान था । उस नगर मे राजा श्रेणिक राज्य करते थे उनकी रानी का नाम 'चेलना' था ।

उस राजगृह नगर मे 'अर्जुन' नाम का एक माली रहता था । उसकी पत्नी का नाल 'बन्धुमती' था, जो अत्यन्त सुन्दर एव सुकुमार थी ।

उस अर्जुनमाली का राजगृह नगर के बाहर एक बडा पुष्पाराम (फूलो का बगीचा) था । वह बगीचा नीले एव सघन पत्तो से आच्छादित होने के कारण आकाश मे चढी घनघोर घटाओ के समान श्याम कान्ति से युक्त प्रतीत होता था । उसमे पाचो वर्णो के फूल खिले हुए थे । वह बगीचा इस भाति हृदय को प्रसन्न एव प्रफुल्लित करने वाला बडा दर्शनीय था ।

उस पुष्पाराम यानि फुलवाडी के समीप ही मुद्गरपाणि नामक एक यक्ष का यक्षायतन था, जो उस अर्जुन माली के पुरखाओ बाप–दादो से चली आई कुल परम्परा से सम्बन्धित था। वह 'पूर्णभद्र' चैत्य के समान पुराना, दिव्य एव सत्य प्रभाव वाला था। उसमे 'मुद्गर पाणि' नामक

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
तत्थ णं मोग्गरपाणिस्स पडिमा एगं महं पलसहस्सणिप्फण्णं अयोमय मोग्गरं गहाय चिट्ठइ ।	तत्र खलु मुद्गरपाणेः प्रतिमा एकं महान्तं पलसहस्रनिष्पन्नम् अयोमयं मुद्गरं गृहीत्वा तिष्ठति ।

सूत्र २

तए णं से अज्जुणए मालागारे बालप्पभिइं चेव मोग्गरपाणि जक्खस्स भत्ते यावि होत्था । कल्लाकल्लिं पच्छिपिडगाइं गिण्हइ, गिण्हित्ता रायगिहाओ णयराओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमइत्ता जेणेव पुप्फारामे तेणेव उवागच्छइ । उवागच्छित्ता पुप्फुच्चयं करेइ, करित्ता अग्गाइं वराइं पुप्फाइं गहाय जेणेव मोग्गरपाणिस्स जक्खाययणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मोग्गरपाणिस्स जक्खस्स महरिहं पुप्फच्चयणं करेइ करित्ता जाणुपायपडिए पणामं करेइ, करित्ता तओ पच्छा रायमग्गंसि वित्तिं कप्पेमाणे विहरइ ।	ततः खलु सः अर्जुनकः मालाकारः बालप्रभृत्येव मुद्गरपाणियक्षस्य भक्तश्चाप्यभवत् प्रतिदिनं पच्छिपिटकानि गृह्णाति, गृहीत्वा राजगृहाद् नगराद् प्रतिनिष्क्राम्यति, प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव पुष्पारामः तत्रैव उपागच्छति । उपागत्य पुष्पोच्चयं करोति, कृत्वा अग्राणि वराणि पुष्पाणि गृहीत्वा तत्रैव मुद्गरपाणेः यक्षायतनम् तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य मुद्गरपाणेः यक्षस्य महार्हम् पुष्पार्चनकम् करोति, कृत्वा जानुपादपति : प्रणामं करोति कृत्वा तत्पश्चात् राजमार्गे वृत्तिं कल्पमानः विहरति ।

सूत्र ३

तत्थ णं रायगिहे णयरे ललिया णामं गोट्ठी परिवसइ,	तत्र खलु राजगृहे नगरे ललिता-नाम गोष्ठी परि ति,

[हिन्दी शब्दार्थ]

वहाँ पर मुद्गरपाणि की प्रतिमा
एक हजार पल भार वाला
बड़ा लोहमय मुद्गर लिये हुए खड़ी थी।

[हिन्दी अर्थ]

यक्ष की एक प्रतिमा थी, जिसके हाथ मे एक हजार पल-परिमाण (वर्तमान तोल के अनुसार लगभग ६२।। सेर तदनुसार लगभग ५७किलो) भारवाला लोहे का एक मुद्गर था।

सूत्र २

वह अर्जुन मालाकार
बचपन से ही मुद्गरपाणि
यक्ष का भक्त हो गया था।
वह प्रतिदिन बाँस की छाबड़ी
उठाता तथा उठाकर राजगृह
नगर से बाहर निकलता
व निकलकर जहाँ फूलों का बगीचा है
वहाँ पर आता।
आकर पुष्पों का चयन करता,
करके अग्रणी श्रेष्ठ फूलों को लेकर
जहाँ पर मुद्गरपाणि का यक्षायतन था
वहाँ आता आकर
मुद्गरपाणि यक्ष का उत्तमोत्तम
फूलों से अर्चन करता, करके
पंचाङ्गप्रणाम करता,
इसके बाद राजमार्ग पर फूल बेचकर
अपनी आजीविका चलाया करता था।

वह अर्जुन माली बचपन से ही उस मुद्गर पाणि यक्ष का अनन्य उपासक था। प्रतिदिन बास की छवडी लेकर वह राजगृह नगर से बाहर स्थित अपनी उस फुलवाडी मे जाता था और फूलो को चुन-चुन कर एकत्रित करता था।

फिर उन फूलो मे से उत्तम २ फूलो को छाटकर उन्हे उस मुद्गर पाणि यक्ष के ऊपर चढाता था। इस प्रकार वह उत्तमोत्तम फूलो से उस यक्ष की पूजा अर्चना करता और भूमि पर दोनो घुटने टेककर उसे प्रणाम करता।

इसके वाद राजमार्ग के किनारे बाजार मे बैठकर उन फूलो को बेचकर अपनी आजीविका उपार्जन करता हुआ सुखपूर्वक वह अपना जीवन विता रहा था।

सूत्र ३

वहाँ राजगृह नगर में ललिता नाम की
गोष्ठी (मित्र मंडली) रहती थी, वह
ऋद्धि संपन्न यावत् किसी से पराभव
पाने वाली नहीं थी, जो राजा के

उस राजगृह नगर मे 'ललिता' नाम की एक गोष्ठी (मित्र मडली) थी। जिसके अत्यन्त समृद्ध और दूसरो से अपराभूत ऐसे कुछ व्यक्ति सदस्य थे। किसी समय नगर के राजा का कोई हित कार्य सम्पादन करने के

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
अड्ढा जाव अपरिभूया,	आढ्याः यावत् अपरिभूता,
ज कय सुकया यावि होत्था।	यत्कृतसुकृता चापि आसीत्।
तए ण रायगिहे णयरे अण्णया	ततः खलु राजगृहे नगरे अन्यदा
कयाइ पमोए घुट्ठे यावि होत्था।	कदाचित् प्रमोदोघुष्टः चापि अभवत्।
तए णं से अज्जुणए मालागारे	तत्र खलु सः अर्जुनः मालाकारः
'कल्ल पभूयतरएहिं पुप्फेहिं कज्ज'	'कल्ये प्रभूततरकैः पुष्पैः कार्यम्'
इति कट्टु पच्चूस काल समयसि	इति कृत्वा प्रत्यूष : काले
बंधुमईए भारियाए सद्धि	बन्धुमत्या भार्यया सार्द्धम्
पच्छिपिडगाइं गिण्हइ, गिण्हित्ता,	पच्छिपिटकानि गृह्णाति, गृहीत्वा
सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ,	स्वकात् गृहात् प्रतिनिष्क्राम्यति
पडिणिक्खमित्ता रायगिह	प्रतिनिष्क्रम्य राजगृहम्
णयरं मज्झं मज्झेणं णिग्गच्छइ,	नगरं मध्य मध्येन निर्गच्छति,
णिग्गच्छित्ता जेणेव पुप्फारामे	निर्गत्य यत्रैव पुष्पारामः
तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता	तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य,
बंधुमईए भारियाए सद्धि	बंधुमत्या भार्यया सार्द्धम्
पुप्फुच्चयं करेइ ।३।	पुष्पोच्चयम् करोति ।३।

सूत्र ४

तए णं तीसे ललियाए गोट्ठीए	ततः खलु ललितायाः गोष्ठ्याः
छ, गोट्ठिल्ला पुरिसा जेणेव	षड् गौष्ठिकाः पुरुषाः यत्रैव
मोग्गरपाणिस्स जक्खस्स	मुद्गरपाणेर्यक्षस्य
जक्खाययणे तेणेव उवागया	यक्षायतनं तत्रैव उपागताः,
अभिरममाणा चिट्ठंति ।	अभिरममाणाः तिष्ठन्ति ।
तए णं से ‌ ‌ णए मालागारे	ततः खलु सः अर्जुनः मालाकारः
बन्धुमईए भारियाए सद्धिं	बन्धुमत्या भार्यया सार्द्ध
पुप्फुच्चयं करेइ, करित्ता	पुष्पोच्चयं करोति, कृत्वा
अग्गाइं वराइं पुप्फाइं गहाय	अग्राणि वराणि पुष्पाणि गृहीत्वा

[हिन्दी शब्दार्थ]

अनुग्रह के कारण मनमाने काम करने में स्वच्छन्द थी। फिर राजगृह नगर मे बाद मे किसी दिन प्रमोदोत्सव की घोषणा हुई। तत्पश्चात् अर्जुन मालाकारने सोचा "कल बहुत फूलो की माग होगी" यह सोचकर उसने प्रातः काल जल्दी उठकर बन्धुमती भार्या को साथ लिया, बांस की छाब (टोकरी) ली लेकर अपने घर से निकला, निकलकर राजगृह नगर के मध्य-मध्य से चलता हुआ निकल जाता है तथा निकलकर जहाँ फूलो का बगीचा है वहाँ आता है, वहाँ आकर अपनी बन्धुमती पत्नी के साथ पुष्पों का चयन शुरु कर देता है।३।

[हिन्दी अर्थ]

कारण राजा ने उस मित्र मंडली पर प्रसन्न होकर अभयदान दे दिया कि वे अपनी इच्छानुसार कोई भी कार्य करने मे स्वतन्त्र है। राज्य की ओर से उन्हे पूरा सरक्षण था इस कारण यह गोष्ठी बहुत उच्छृखल और स्वच्छन्द वन गई।

एक दिन राजगृह नगर मे एक उत्सव मनाने की घोषणा हुई।

इस पर अर्जुनमाली ने अनुमान लगाया कि कल इस उत्सव के अवसर पर फूलो की भारी माग होगी। इसलिए उस दिन वह प्रात काल मे जल्दी ही उठा और बास की छबडी लेकर अपनी पत्नी बन्धुमती के साथ जल्दी घर से निकल कर नगर मे होता हुआ अपनी फुलवाडी मे पहुचा और अपनी पत्नी के साथ फूलो को चुन चुन कर एकत्रित करने लगा।

सूत्र ४

तब उसी समय 'ललिता' मंडली के छ गौष्ठिक पुरुष, जहाँ मुद्‌गरपाणि यक्ष का यक्षायतन था वहाँ आये और आपस में परिहास क्रीड़ादि करने लगे। उस समय अर्जुन माली ने बन्धुमती भार्या के साथ पुष्पो का चयन किया करके श्रेष्ठ फूलों को ग्रहण कर (लेकर)

उस समय पूर्वोक्त 'ललिता' गोष्ठी के छः गौष्ठिक पुरुष मुद्‌गरपाणि यक्ष के यक्षायतन मे आकर आमोद प्रमोद एव परस्पर खेलकूद करने लगे।

उधर अर्जुनमाली अपनी पत्नी वन्धुमती के साथ फूल-सग्रह करके उनमे से कुछ उत्तम फूल छाटकर उनसे नित्य नियम के अनुसार मुद्‌गरपाणि यक्ष की पूजा करने के लिये यक्षा यतन की ओर चला।

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
जेणेव मोग्गरपाणिस्स	यत्रैव मुद्गरपाणेर्यक्षस्य
जक्खस्स जक्खाययणे तेणेव उवागच्छइ।	यक्षायतन तत्रैव उपागच्छति।
तए णं ते छ गोट्ठिल्ला पुरिसा	ततः खलु ते षड् गौष्ठिकाः पुरुषाः
अज्जुणयं मालागार	अर्जुनम् मालाकारम्
बंधुमईए भारियाए सद्धि	बन्धुमत्या भार्यया सार्द्धम्
एज्जमाणं पासइ पासित्ता	एजमानम् (आगच्छतं) पश्यति, दृष्ट्वा
अण्णमण्णं एव वयासी	अन्योन्यम् एवम् अवदत्
एस खलु देवाणुप्पिया !	एष खलु देवानुप्रियाः !
अज्जुणए मालागारे बधुमईए	अर्जुनः मालाकारः बन्धुमत्या
भारियाए सद्धि इहं हव्व-	भार्यया सार्द्धम् इह हव्व
मागच्छइ, तं सेयं खलु	मागच्छति, तत् श्रेयः खलु
देवाणुप्पिया ! अज्जुणयं मालागारं	देवानुप्रियाः ! अर्जुनं मालाकारम्
अवओडयबंधणयं करित्ता	अवकोटकबंधनकं कृत्वा
बंधुमईए भारियाए सद्धि	बन्धुमत्या भार्यया सार्द्धम्
विउलाइं भोगभोगाइं	विपुलान् भोग भोगान्
भुंजमाणाणं विहरित्तए।	भुंजमानानां (मध्ये) विहर्तुम्।
त्तिकट्टु एयमट्ठं अण्णमण्णस्स	इति कृत्वा एनमर्थम् अन्योन्यस्य
पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता कवाडंतरेसु	प्रतिशृण्वन्ति, प्रतिश्रुत्य कपाटान्तरेषु
णिलुक्कंति, णिच्चला णिप्फंदा,	निलुक्कन्ति, निश्चलाः निस्पंदाः
तुसिणीया पच्छण्णा चिट्ठंति।४।	तूष्णीकाः प्रच्छन्नाः तिष्ठन्ति।४।

सूत्र ५

तए णं से अज्जुणए मालागारे	ततः खलु स अर्जुनः मालाकारः
बधुमईए भारियाए सद्धि	बंधुमत्या भार्यया सार्द्धम्
जेणेव मोग्गरपाणिस्स जक्खाययणे	यत्रैव मुद्गरपाणेर्यक्षायतनम्
तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता,	तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य
आलोए,पणामं करेइ, करित्ता	आलोकयत् प्रणामं करोति, कृत्वा

[हिन्दी शब्दार्थ]

जहाँ मुद्गरपाणि यक्ष का यक्षायतन
था वहाँ पर आया (आता है)।
तब उन छ ललित गौष्ठिक पुरुषों ने
अर्जुन मालाकार को
बन्धुमती भार्या के साथ
आते हुए देखा और देखकर
आपस मे यो बोले—
हे देवानुप्रियो !
यह अर्जुन मालाकार बन्धुमती
भार्या के साथ यहाँ शीघ्र
आ रहा है, इसलिये हे देवानुप्रियो !
आनंद इसी में है कि अर्जुन मालाकार
को उल्टी मुश्क से बाँधकर उसकी
बन्धुमती स्त्री के साथ अनेक भोगों को
भोगते हुए विचरण करें।
इस प्रकार विचार कर उन्होने परस्पर
एक दूसरे की बात सुनी व सुनकर
कपाट के पीछे छिप गये बिलकुल
चुपचाप अचल व स्पन्दन रहित होकर
छिपकर बैठ गये।

[हिन्दी अर्थ]

उन छ गौष्ठिक पुरुषो ने अर्जुनमाली को वधुमती भार्या के साथ यक्षायतन की ओर आते हुए देखा। देखकर परस्पर विचार करके निश्चय किया—"हे मित्रो ! यह अर्जुनमाली अपनी वधुमती भार्या के साथ इधर ही आ रहा है। हम लोगो के लिये यह उत्तम अवसर है कि ऐसे मौके पर इस अर्जुन माली को तो औंधी मुश्कियो (दोनो हाथो को पीठ पीछे) से बलपूर्वक बान्धकर एक ओर पटक दें और फिर इसकी इस सुन्दर स्त्री बन्धुमती के साथ खूब काम-क्रीडा करे।"

यह निश्चय करके वे छहो उस यक्षायतन के किवाडो के पीछे छिप कर निश्चल खडे हो गये और उन दोनो के यक्षायतन के भीतर प्रविष्ट होने की स्वास रोककर प्रतीक्षा करने लगे।

सूत्र ५

तदनन्तर वह अर्जुन मालाकार
वन्धुमती भार्या के साथ
जहाँ पर मुद्गरपाणियक्ष का यक्षायतन
था वहाँ आया और आकर
मुद्गरपाणी को देखता हुआ प्रणाम

इधर अर्जुनमाली अपनी वन्धुमती भार्या के साथ यक्षायतन मे प्रविष्ट हुआ और भक्तिपूर्वक प्रफुल्लित नेत्रो से मुद्गरपाणि यक्ष की ओर देखा। फिर चुने हुए उत्तमोत्तम फूल उस पर चढाकर दोनो घुटने भूमि पर टेककर साष्टाग प्रणाम करने लगा। उसी

[मूल सूत्र पाठ]

महरिहं पुप्फच्चयणं करेइ
करित्ता, जाणुपायपडिए
पणामं करेइ ।
तए णं ते छ गोट्ठिल्ला पुरिसा
दवदवस्स कवाडतरेहितो
णिग्गच्छति, णिग्गच्छित्ता,
अज्जुणय मालागार गिण्हित्ता
अवओडयबंधणं करेंति
करित्ता, बधुमईए मालागारीए
सद्धि विउलाइ भोगभोगाइं
भुंजमाणा विहरंति ।
तए ण तस्स अज्जुणयस्स
मालागारस्स अयमज्झत्थिए
समुप्पण्णे—
"एव खलु अहं बालप्पभिइं
चेव मोग्गरपाणिस्स भगवओ
कल्लाकल्लि जाव वित्तिं
कप्पेमाणे विहरामि ।
तं जई णं मोग्गरपाणिजक्खे
इह सण्णिहिए होते
सेणं किं ममं एयारूवं आवत्ति
पावेज्जमाणं पासंते,
तं णत्थि णं मोग्गरपाणिजक्खे
इह सण्णिहिए, सुव्वत्तं
तं एस कट्ठे ।"

[संस्कृत छाया]

महार्हं पुष्पोच्चयं करोति,
कृत्वा जानुपादपतितः
प्रणामम् करोति ।
ततः खलु ते षड् गौष्ठिकाः पुरुषाः
द्रुतद्रुतेन कपाटान्तरात्
निर्गच्छन्ति, निर्गत्य
अर्जुन मालाकार गृहीत्वा
अवकोटक बधनं कुर्वन्ति
कृत्वा बंधुमत्या मालाकारिण्या
सार्द्धम् विपुलान् भोगभोगान्
भुंजमानाः विहरन्ति ।
ततः खलु तस्य अर्जुनस्य माला-
कारस्य अयम् आध्यात्मिकः (विचारः)
समुत्पन्नः—
एवं खलु अहं बाल प्रभृत्यैव
मुद्गरपाणेः भग :
कल्याकल्यि यावत् वृत्ति
कल्पयन् विहरामि ।
तद् यदि खलु मुद्गरपाणियक्षः
इह सन्निहितः भवेत्
सः खलु किं माम् एतद्रूपाम् आपत्तिम्
प्राप्नुवन्तम् पश्येत्?
तत् नास्ति खलु मुद्गरपाणियक्षः
इह सन्निहितः सुव्यक्तं
तत् एतत् काष्ठमेव । (न तु यक्षः)

[हिन्दी शब्दार्थ]

करता है, करके बहुमूल्य पुष्प चढाये
चढाकर घुटनों के बल गिरकर
प्रणाम किया ।
वे छ ही गौष्ठिक पुरुष
जल्दी जल्दी किंवाड के पीछे से
निकले और निकलकर
अर्जुन मालाकार को पकड़कर
औंधी मुश्की से बांध दिया ।
बांधकर बन्धुमती मालिनी के साथ
अनेक प्रकार के भोगो को
भोगते हुए विचरण करने लगे ।
उस य उस अर्जुन
माली के मन मे यह विचार
उत्पन्न हुआ कि—
मै अपने बचपन से ही
मुद्गरपाणि भगवान की
प्रतिदिन यावत् पूजा करके फिर
आजीविका पूरी करता आ रहा हूं ।
अतः यदि मुद्गरपाणि यक्ष
यहां मौजूद होता
तो क्या वह मुझे इस प्रकार आपत्ति
मे पड़ा देखता ?
इसलिये निश्चय ही यहां मुद्गरपाणि
यक्ष मौजूद नहीं है यह तो स्पष्ट ही
केवल काष्ठ है ।"

[हिन्दी अर्थ]

समय शीघ्रता से उन छ गौष्ठिक पुरुषो ने किवाडो के पीछे से निकल कर अर्जुनमाली को पकड लिया और उसकी औधी मुश्के बाधकर उसे एक ओर पटक दिया । फिर उसकी पत्नी वन्धुमती मालिन के साथ विविध प्रकार से काम क्रीडा करने लगे ।

यह देखकर उस समय अर्जुनमाली के मन मे यह विचार आया—"देखो मैं अपने बचपन से ही इस मुद्गरपाणि को अपना इष्टदेव मानकर इसकी प्रतिदिन भक्तिपूर्वक पूजा करता आ रहा हू । इसकी पूजा करने के बाद ही इन फूलो को वेचकर अपना जीवन-निर्वाह करता रहा हू ।

तो यदि मुद्गरपाणि यक्ष देव यहा वास्तव मे ही होता तो क्या मुझे इस प्रकार विपत्ति मे पडे हुए को देखकर चुप रहता ? इसलिये यह निश्चय होता है कि वास्तव मे यह मुद्गरपाणि यक्ष नही है। यह तो मात्र काष्ठ का पुतला है ।

[मूल सूत्र पाठ]

[संस्कृत छाया]

सूत्र ६

तए णं से मोग्गरपाणिजक्खे
अज्जुणयस्स मालागारस्स
अयमेवारूवं अज्झत्थिय जाव
वियाणित्ता, अज्जुणयस्स माला-
गारस्स सरीरय अणुप्पविसइ,
अणुप्पविसित्ता तडतडस्स
बधाइं छिंदइ,
तं पलसहस्सणिप्फण्णं अओमयं
मोग्गरं गिण्हइ, गिण्हित्ता
ते इत्थिसत्तमे छ पुरिसे घाएइ।
तए णं से अज्जुणए मालागारे
मोग्गरपाणिणा जक्खेणं
अणाइट्ठे समाणे रायगिहस्स
णयरस्स परिपेरंते णं
कल्लाकल्लिं इत्थिसत्तमे छ पुरिसे
घाएमाणे विहरइ।

ततः खलु सः मुद्गरपाणियक्षः
अर्जुनस्य मालाकारस्य
इदम् एतद् रूपम् आध्यात्मिकम्
यावत् विज्ञाय, अर्जुनस्य माला-
कारस्य शरीरम् अनुप्रविशति,
अनुप्रविश्य, तडतड इतिशब्देन
बन्धनानि छिनत्ति,
तं पलसहस्रनिष्पन्नम् ोमयं
मुद्गरं गृह्णाति, गृहीत्वा
तान् स्त्रीसप्तमान् षट् पुरुषान् घातयति
ततः खलु सः अर्जुनः मालाकारः
मुद्गरपाणिना यक्षेण
अन्वा ि : सन् राजगृहस्य
नगरस्य परिपर्यन्ते खलु
कल्याकल्यि स्त्रीसप्तमान् षट् पुरुषान्
घातयन् विहरति।

सूत्र ७

तए णं रायगिहे णयरे सिंघाडग
जाव महापहेसु बहुजणो
अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ
"एवं खलु देवाणुप्पिया! ुणए
मालागारे मोग्गरपाणिणा जक्खेणं
अणाइट्ठे समाणे रायगिहे
बहिया इत्थिसत्तमे छ पुरिसे
घाएमाणे विहरइ।"

: खलु राजगृहे नगरे शृंगाटक
यावत् महापथेषु बहुजनः
अन्योन्यस्य एवमाख्याति
"एवं खलु देवानुप्रिया! अर्जुनः
मालाकारः मुद्गरपाणिना यक्षेन
अन्वाविष्टः सन् राजगृहात्
बहिः स्त्री सप्तमान् षट् पुरुषान्
घातयन् विहरति।"

[हिन्दी शब्दार्थ] [हिन्दी अर्थ]

सूत्र ६

तब उस मुद्गरपाणि यक्ष ने अर्जुन मालाकार के इस प्रकार के मनोगत भावो को यावत् जानकर, अर्जुन मालाकार के शरीर में प्रवेश कर लिया प्रविष्ट होकर तड् तड् करके सब बन्धनो को काट दिया और उस हजार पलभार से निर्मित लोहे के मुद्गर को लेकर उन, स्त्री जिनमें सातवी है ऐसे, छओं गोष्ठी पुरुषों को मार डालता है।

वह अर्जुन मालाकार मुद्गरपाणी यक्ष से आविष्ट होकर राजगृह नगर के आसपास चारों ओर प्रतिदिन छ पुरुषों और सातवीं स्त्री को मारता हुआ विचरने लगा।

तब मुद्गरपाणि यक्ष ने अर्जुनमाली के इस प्रकार के मनोगत भावो को जानकर उस के शरीर मे प्रवेश किया और उसके बन्धनो को तडातड तोड डाला।

अब उस मुद्गरपाणि यक्ष से आविष्ट उस अर्जुन माली ने उस हजार पल भार वाले लोहमय मुद्गर को हाथ मे लेकर अपनी वसुमति भार्यासहित उन छहो गौष्ठिक पुरुषो को उस मुद्गर के प्रहार से मार डाला।

इस प्रकार इन सातो प्राणियो को मारकर मुद्गरपाणि यक्ष से आविष्ट (वशीभूत) वह अर्जुनमाली राजगृह नगर की बाहरी सीमा के आस पास चारो ओर ६ पुरुष और १ स्त्री मिला कर ७ प्राणियो की प्रतिदिन हत्या करते हुए घूमने लगा।

सूत्र ७

उस समय राजगृह नगर के शृंगाटक आदि राजमार्गो पर बहुत से लोग परस्पर इस प्रकार कहने लगे—"हे देवानुप्रियो ! अर्जुन माली मुद्गरपाणि यक्ष से आविष्ट होकर राजगृह नगर के बाहर छ पुरुषो और सातवी स्त्री को मारता हुआ विचरण कर रहा है।"

उस समय राजगृह नगर के शृंगाटकों मे राजमार्गों आदि सभी स्थानो मे बहुत से लोग परस्पर इस प्रकार बोलने लगे—'हे देवानुप्रियो ! अर्जुनमाली मुद्गरपाणि यक्ष के वशीभूत होकर राजगृह नगर के बाहर एक स्त्री और ६ पुरुष, इस प्रकार सात व्यक्तियो को प्रतिदिन मार रहा है।'

[मूल सूत्र पाठ] [सस्कृत छाया]

सूत्र ६

तए णं से मोग्गरपाणिजक्खे
अज्जुणयस्स मालागारस्स
अयमेवारूवं अज्झत्थिय जाव
वियाणित्ता, अज्जुणयस्स माला-
गारस्स सरीरयं अणुप्पविसइ,
अणुप्पविसित्ता तडतडस्स
बंधाइं छिंदइ,
तं पलसहस्सणिप्फण्णं अओमयं
मोग्गर गिण्हइ, गिण्हित्ता
ते इत्थिसत्तमे छ पुरिसे घाएइ।
तए णं से अज्जुणए मालागारे
मोग्गरपाणिणा जक्खेणं
अणाइट्ठे समाणे रायगिहस्स
णयरस्स परिपेरंत्ते णं
कल्लाकल्लिं इत्थिसत्तमे छ पुरिसे
घाएमाणे विहरइ।

ततः खलु सः मुद्गरपाणियक्षः
अर्जुनस्य मालाकारस्य
इदम् एतद् रूपम् आध्यात्मिकम्
यावत् विज्ञाय, अर्जुनस्य माला-
कारस्य शरीरम् अनुप्रविशति,
अनुप्रविश्य, तडतड इतिशब्देन
बन्धनानि छिनत्ति,
तं पलसहस्रनिष्पन्नम् ोमयं
मुद्गरं गृह्णाति, गृहीत्वा
तान् स्त्रीसप्तमान् षट् पुरुषान् घातयति
ततः खलु सः अर्जुनः मालाकारः
मुद्गरपाणिना यक्षेन
अन्वावि : सन् राजगृहस्य
नगरस्य परिपर्यन्ते खलु
कल्याकल्यि स्त्रीसप्तमान् षट् पुरुषान्
घातयन् विहरति।

सूत्र ७

तए णं रायगिहे णयरे सिंघाडग
जाव महापहेसु बहुजणो
अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ
"एवं खलु देवाणुप्पिया! ्णाए
मालागारे मोग्गरपाणिणा जक्खेणं
अणाइट्ठे समाणे रायगिहे
बहिया इत्थिसत्तमे छ पुरिसे
घाएमाणे विहरइ।"

: खलु राजगृहे नगरे शृंगाटक
यावत् महापथेषु बहुजनः
अन्योन्यस्य एवमाख्याति
"एवं खलु देवानुि ! अर्जुनः
मालाकारः मुद्गरपाणिना यक्षेन
अन्वावि : सन् राजगृहात्
बहिः स्त्री सप्तमान् षट् पुरुषान्
घातयन् विहरति।"

[हिन्दी शब्दार्थ]

इसके बाद राजा श्रेणिक को जब
यह बात मालूम हुई तब उन्होने
अपने सेवको को बुलाया
और बुलाकर इस प्रकार कहा
"हे देवानुप्रियो !
अर्जुन माली यावत् (सात जनों को)
मारता हुआ घूम रहा है।
इसलिये तुम मे से कोई भी घास के
लिए, काष्ठ के लिये, जल के
लिये अथवा फल फूलादि के लिये
एकबार भी बाहर मत निकलो जिससे
कि तुम्हारे शरीर का नाश न होवे।
इस प्रकार दूसरी बार भी
तीसरी बार भी घोषणा करो।
घोषणा करके शीघ्र ही मुझे इस की
वापस सूचना दो।"
तदनन्तर उन आज्ञाकारी पुरुषों ने
यावत् वापस सूचित कर दिया।७।

[हिन्दी अर्थ]

इसके बाद जब श्रेणिक राजा ने यह यह बात सुनी तो उन्होने अपने सेवक पुरुषो को बुलाया और उनको इस प्रकार कहा—'हे देवानुप्रियो! राजगृह नगर के बाहर अर्जुनमाली यावत् छः पुरुष और एक स्त्री इस प्रकार सात व्यक्तियो को प्रतिदिन मारता हुआ घूम रहा है।

इसलिये तुम सारे नगर मे मेरी आज्ञा को इस प्रकार प्रसारित करो कि यदि नागरिको की इच्छा जीवित रहने की हो तो कोई तृण के लिये काष्ठ, पानी अथवा फल फूल के लिये राजगृह नगर के बाहर न निकले। यदि वे कही बाहर निकले, तो ऐसा न हो कि उनके शरीर का विनाश हो जाय।

हे देवानुप्रियो! इस प्रकार दो तीन बार घोषणा करके मुझे सूचित करो।'

इस प्रकार राजाज्ञा पाकर राज्याधिकारियो ने राजगृह नगर मे घूम घूम कर उपरोक्त राजाज्ञा की घोषणा की और घोषणा करके राजा को सूचित कर दिया।

सूत्र ८

वहाँ राजगृह नगर मे सुदर्शन नामक
सेठ रहता था, वह धन सम्पन्न एवं
यावत् अपराजित था।
वह सुदर्शन श्रमणोपासक
भी था। यावत्
वह जीवाजीव का जानकार था
उस काल उस समय मे

उस राजगृह नगर मे सुदर्शन नाम के एक धनाढ्य सेठ रहते थे, जो अपराभूत थे। श्रमणोपासक श्रावक थे और जीव अजीव आदि नवतत्वो के ज्ञाता थे। यावत् श्रमणो को प्रतिलाभ देने वाले थे।

उस काल उस समय श्रमण भगवान् महावीर स्वामी धर्मोपदेश देते हुए राजगृह पधारे और बाहर उद्यान मे ठहरे।

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
तए णं से सेणिए राया इमीसे	ततः खलु सः श्रेणिकः राजा अस्याः
कहाए लद्धट्ठे समाणे	कथायाः लब्धार्थः सन्
कोडुंबिय पुरिसे सद्दावेइ,	कौटुम्बिक पुरुषान् शब्दयति,
सद्दावित्ता एव वयासी—	शब्दयित्वा एवम् अवदत्—
"एव खलु देवाणुप्पिया !	"एवं खलु देवानुप्रियाः !
अज्जुणए मालागारे जाव	अर्जुनकः मालाकारः यावत्
घाएमाणे विहरइ ।	घातयन् विहरति ।
तं माणं तुब्भे केइ तणस्स वा,	तस्मात् मा खलु युष्माकं (मध्ये) कोऽपि
कट्ठस्स वा पाणियस्स वा,	तृणस्य वा काष्ठस्य वा पानीयस्य वा
पुप्फफलाणं वा अट्ठाए सइरं	पुष्पफलानां वा अर्थाय सकृदपि
णिगच्छउ मा णं तस्स	निर्गच्छतु मा खलु तस्य
सरीरस्स वावत्ती भविस्सइ ।	शरीरस्य व्यापत्तिः भविष्यति ।
त्ति कट्टु दोच्चं पि तच्चं पि	इति कृत्वा द्वितीयमपि तृतीयमपि
घोसण घोसेह,	घोषणाम् घोषयत,
घोसित्ता खिप्पामेव ममेयं	घोषयित्वा क्षिप्रमेव ममैतामाज्ञाम्
पच्चप्पिणह ।"	प्रत्यर्पयत ।"
तए णं ते कोडुंबिय पुरिसा	ततः खलु ते कौटुम्बिक पुरुषाः
जाव पच्चप्पिणंति ।७।	यावत् प्रत्यर्पयन्ति ।७।

सूत्र ८

तत्थ णं रायगिहे णयरे सुदंसणे	तत्र खलु राजगृहे नगरे सु नः
णामं सेठ्ठी परिवसइ, अड्ढे	नाम श्रेष्ठी परिवसति, आढ्यः
जाव अपरिभूए ।	यावत् अपरिभूतः ।
तए णं से सुदंसणे समणोवासए	ततः खलु सः सुदर्शनः श्रमणोपासकः
यावि होत्था ।	चापि अभवत् ।
अभिगयजीवाजीवे जाव विहरइ ।	अभिगत जीवाजीवः यावत् विहरति ।
तेणं कालेणं तेणं समयेणं	तस्मिन् काले तस्मिन् समये

[हिन्दी शब्दार्थ]

इसके बाद राजा श्रेणिक को जब यह बात मालूम हुई तब उन्होंने अपने सेवकों को बुलाया और बुलाकर इस प्रकार कहा "हे देवानुप्रियो ! अर्जुन माली यावत् (सात जनो को) मारता हुआ घूम रहा है। इसलिये तुम मे से कोई भी घास के लिए, काष्ठ के लिये, जल के लिये अथवा फल फूलादि के लिये एकबार भी बाहर मत निकलो जिससे कि तुम्हारे शरीर का नाश न होवे। इस प्रकार दूसरी बार भी तीसरी बार भी घोषणा करो। घोषणा करके शीघ्र ही मुझे इस की वापस सूचना दो।" तदनन्तर उन आज्ञाकारी पुरुषो ने यावत् वापस सूचित कर दिया ।७।

[हिन्दी अर्थ]

इसके वाद जब श्रेणिक राजा ने यह यह वात सुनी तो उन्होने अपने सेवक पुरुषो को बुलाया और उनको इस प्रकार कहा—'हे देवानुप्रियो ! राजगृह नगर के वाहर अर्जुनमाली यावत् छः पुरुप और एक स्त्री इस प्रकार सात व्यक्तियो को प्रतिदिन मारता हुआ घूम रहा है।

इसलिये तुम सारे नगर मे मेरी आज्ञा को इस प्रकार प्रसारित करो कि यदि नागरिको की इच्छा जीवित रहने की हो तो कोई तृण के लिये काष्ठ, पानी अथवा फल फूल के लिये राजगृह नगर के वाहर न निकले। यदि वे कही वाहर निकले, तो ऐसा न हो कि उनके शरीर का विनाश हो जाय।

हे देवानुप्रियो ! इस प्रकार दो तीन बार घोषणा करके मुझे सूचित करो।'

इस प्रकार राजाज्ञा पाकर राज्याधिकारियो ने राजगृह नगर मे घूम घूम कर उपरोक्त राजाज्ञा की घोषणा की और घोषणा करके राजा को सूचित कर दिया।

सूत्र ८

वहाँ राजगृह नगर में सुदर्शन नामक सेठ रहता था, वह धन सम्पन्न एवं यावत् अपराजित था। वह सुदर्शन श्रमणोपासक भी था। यावत् वह जीवाजीव का जानकार था उस काल उस समय में

उस राजगृह नगर मे सुदर्शन नाम के एक धनाढ्य सेठ रहते थे, जो अपराभूत थे। श्रमणोपासक श्रावक थे और जीव अजीव आदि नवतत्वो के ज्ञाता थे। यावत् श्रमणो को प्रतिलाभ देने वाले थे।

उस काल उस समय श्रमण भगवान् महावीर स्वामी धर्मोपदेश देते हुए राजगृह पधारे और वाहर उद्यान मे ठहरे।

[मूल सूत्र पाठ]

समणे भगवं महावीरे
समोसढे जाव विहरइ ।
तए णं रायगिहे णयरे
सिंघाडग जाव महापहेसु
बहुजणो अण्णमण्णस्स
एवमाइक्खइ—जाव किमंग
पुण विउलस्स अट्ठस्स
गहणयाए ?
तए णं तस्स सुदंसणस्स
बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं
सोच्चा णिसम्म अयं अज्झत्थिए
जाव समुप्पण्णे ।
एवं खलु समणे भगवं महावीरे
जाव विहरइ ।
तं गच्छामि णं समणं भगवं
महावीरं वंदामि णमंसामि
एवं संपेहेइ, सपेहित्ता
जेणेव अम्मापियरो तेणेव
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता
करयल परिग्गहियं जाव एवं
एवं खलु अम्मयाओ ! समणे
भगवं महावीरे जाव विहरइ ।
त गच्छामि णं समणं भगवं
महावीरं वंदामि णमंसामि
जाव पज्जुवासामि ।८।

[सस्कृत छाया]

श्रमणो भगवान् महावीरः
समवसृतः यावत् विहरति ।
ततः खलु राजगृहे नगरे
शृंगाटक यावत् महापथेषु
बहुजनः अन्योन्यस्मै
एवमाख्याति—यावत् किमंग ।
पुनः विपुलस्य अर्थस्य
ग्रहणेन ?
ततः खलु तस्य सुदर्शनस्य
बहुजनस्य अन्तिके एतमर्थम्
श्रुत्वा निशम्य अयमाध्यात्मिकः
यावत् समुत्पन्नः ।
एवं खलु श्रमणो भगवान् महावीरः
यावत् विहरति ।
तत् गच्छामि खलु श्रमणं भगवन्तं
महावीरम् वन्दामि नमस्यामि
एवं संप्रेक्षते, संप्रेक्ष्य
यत्रैव अम्बापितरौ तत्रैव
उपागच्छति, उपागत्य
करतल परिगृहीतं यावदेवमवदत्-
एवं … अम्बा … ौ ! श्रमणः
भगवान् महावीरः यावत् विहरति ।
तत् गच्छामि … श्रमणं भगवन्तं
महावीरं वन्दे नमस्यामि
यावत् पर्युपासे ।८।

[हिन्दी शब्दार्थ]

श्रमण भगवान् महावीर
पधारे यावत् विचरने लगे ।
तब राजगृह नगर मे
शृंगाटक आदि महापथो में
बहुत से लोग परस्पर यह कहने लगे—
जिनका नाम—गोत्र श्रवण ही
महाफलदायी होता है, फिर
उनके प्ररूपित धर्म का विपुल अर्थ
ग्रहण का लाभ तो अवर्णनीय है ।
बहुत से व्यक्तियों के मुख से
भगवान के पधारने का वृत्तान्त
सुनकर सुदर्शन के मन में इस प्रकार
का अध्यवसाय यावत् उत्पन्न हुआ ।
श्रमण भगवान् महावीर यावत् राजगृह
नगर के बाहर विचरण कर रहे है ।
: मै श्रमण भगवान् महावीर को
वन्दन नमस्कार करने हेतु जाऊँ ।
इस प्रकार विचार किया, करके
जहाँ उसके माता पिता थे वहाँ
आया, आकर दोनों हाथ
जोड़कर या ् यों कहने लगा—
हे माता पिता ! श्रमण भगवान्
महावीर यावत् पधारे है । इस कारण
मै उनकी सेवा मे जाऊं और उनको
वन्दन नमस्कार करूं, यावत् सेवा करूँ
ऐसी मेरी इच्छा है ।८।

[हिन्दी अर्थ]

उनके पधारने का समाचार सुनकर राजगृह नगर के शृगाटक राजमार्ग आदि स्थानो मे बहुत से नागरिक लोग परस्पर इस प्रकार वार्तालाप करने लगे–हे देवानुप्रियो ! श्रमण भगवान् महावीर स्वामी यहा पधारे है, जिनके नाम गोत्र के सुनने से भी महाफल होता है तो उनके दर्शन करने, वाणी सुनने तथा उनके द्वारा प्ररूपित धर्म का विपुल अर्थ ग्रहण करने से जो फल होता है उसका तो कहना ही क्या ? वह तो अवर्णनीय है ।

इस प्रकार बहुत से नागरिको के मुख से भगवान् के पधारने का समाचार सुनकर उस सुदर्शन सेठ के मन मे इस प्रकार विचार उत्पन्न हुआ-

"निश्चय ही ! श्रमण भगवान् महावीर नगर मे पधारे है और बाहर गुणशीलक उद्यान मे विराजमान है, इसलिये मैं जाऊ और उन श्रमण भगवान् महावीर को वदन-नमस्कार करू !"

ऐसा सोचकर वे अपने माता-पिता के पास आये और हाथ जोडकर इस प्रकार बोले "निश्चय ही हे माता-पिता ! श्रमण भगवान् महावीर स्वामी नगर के बाहर उद्यान मे विराज रहे हैं। अत मैं चाहता हू कि उनकी सेवा मे जाऊ और उन्हे वदन-नमस्कार करू ।"

[मूल सूत्र पाठ]   [संस्कृत छाया]

सूत्र ६

तए णं तं सुदंसणं सेट्ठिं अम्मापियरो
एवं वयासी—
एव खलु पुत्ता ! अज्जुणए माला
गारे जाव घाएमाणे विहरइ,
तं मा णं तुमं पुत्ता ! समणं भगवं
महावीरं वदए णिगच्छाहि,
माणं तव सरीरयस्स वावत्ती
भविस्सइ । तुम णं इहगए
चेव समणं भगवं महावीरं
वंदाहि णमंसाहि ।
तए णं सुदंसणे सेट्ठी अम्मापियरं
एवं वयासी-
किण्णं अहं अम्मयाओ! समणं
भगवं महावीरं इहमागयं
इह पत्तं इह समोसढं
इह गए चेव वंदिस्सामि णमंसिस्सामि?
तं गच्छामि णं अहं अम्मयाओ !
तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे
समणं भगवं महावीरं वंदामि
जाव पज्जुवासामि ।६।

ततः खलु तं सुदर्शनं श्रेष्ठिनम्
अम्बापितरौ एवमवदताम्—
एवं खलु पुत्र ! अर्जुनकः माला-
कारः यावत् घातयन् विहरति,
तद् मा खलु त्वं हे पुत्र! श्रमणं भग
महावीरं वन्दको निर्गच्छ,
मा खलु तव शरीरस्य व्यापत्तिः
भविष्यति । त्वं खलु इहगत
एव श्रमणं भगवन्तं महावीरम्
वन्दस्व, नमस्य ।
ततः खलु सुदर्शनः श्रेष्ठी अम्बापितरौ
एवमवदत्—
किं खलु अहं अम्बातातौ !
श्रमणं भगवन्तं महावीरम् इह
आगतम्, इह प्राप्तम्, इह समवसृतम्,
इहगतैव वन्दिष्ये नमस्यिष्यामि ?
तद् गच्छामि खलु अहम् अम्बातातौ !
युष्माभिः अभ्यनुज्ञातः सन्
श्रमणं भगवन्तं महावीरं वन्दे
यावत् पर्युपासे ।६।

सूत्र १०

तए णं तं सुदंसणं सेट्ठिं
अम्मापियरो जाहे णो संचायंति,
बहूहिं आघवणाहिं ४ जाव परूवेत्तए ।

ततः खलु तं सुदर्शनं श्रेष्ठिनम्
अम्बापितरौ यदा न शक्नुतः बहुभिः
आख्यायनाभिः यावत् प्ररूपणाभिः ।

[हिन्दी शब्दार्थ] [हिन्दी अर्थ]

सूत्र ९

यह सुनकर माता पिता सुदर्शन सेठ को इस प्रकार बोले—

हे पुत्र ! निश्चय अर्जुन मालाकार यावत् मारता हुआ घूम रहा है । इसलिये हे पुत्र ! तुम श्रमण भगवान् महावीर को वन्दन करने हेतु बाहर मत जाओ, कदाचित् तुम्हारे शरीर की हानि हो जाय, अतः तुम यहाँ रहते हुए ही श्रमण भगवान महावीर को वन्दना नमस्कार कर लो ।

तब सुदर्शन सेठ ने अपने माता पिता को इस प्रकार कहा—

हे माता पिता ! जब श्रमण भगवान् महावीर यहाँ पधारे हैं, यहाँ विराजे है, यहाँ समवसृत हुए है, तो मै यहाँ से ही कैसे वन्दन नमस्कार करूँ ? इसलिये हे मातापिता! आप आज्ञा दीजिये, मैं श्रमण भगवान महावीर के पास जाकर वन्दन नमस्कार करूँ और यावत् सेवा करूँ ।९।

सुदर्शन की यह बात सुनकर माता-पिता इस प्रकार बोले—"हे पुत्र ! इस नगर के बाहर अर्जुनमाली छह पुरुष और एक स्त्री इस तरह सात व्यक्तियो को नित्यप्रति मारता हुआ घूम रहा है इसलिये हे पुत्र ! तुम श्रमण भगवान् महावीर को वदन करने के लिये नगर के बाहर मत निकलो । नगर के बाहर निकलने से सम्भव है तुम्हारे शरीर को कोई हानि हो जाय । इसलिये यही अच्छा है कि तुम यही से श्रमण भगवान् महावीर को वदन-नमस्कार करलो ।"

तब सुदर्शन सेठ माता पिता से इस प्रकार बोले—" हे माता-पिता ! जब श्रमण भगवान् महावीर यहा पधारे है, यहा समवसृत हुए हैं और बाहर उद्यान मे विराजे हैं तो मैं उनको यही से वदना-नमस्कार करू यह कैसे हो सकता है । इसलिए हे माता पिता ! आप मुझे आज्ञा दीजिये कि मैं वही जाकर श्रमण भगवान् महावीर को वदना करू, नमस्कार करू, यावत् उनकी पर्युपासना करू ।"

सूत्र १०

तदनन्तर उस सुदर्शन सेठ को माता-पिता जब नहीं समझा सके, अनेक प्रकार की युक्तियो से

उस सुदर्शन सेठ को माता-पिता जब अनेक प्रकार की युक्तियो से भी नही समझा सके, तब माता-पिता ने अनिच्छा

[मूल सूत्र पाठ]

तए णं से अम्मापियरो ताहे अकामया चेव सुदंसणं सेट्ठिं एवं वयासी—
"अहासुहं देवाणुप्पिया !"
तए ण से सुदसणे सेट्ठि अम्मापिईहिं अब्भणुण्णाए समाणे ण्हाए सुद्धप्पावेसाइं जाव सरीरे, सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता, पायविहार चारेणं रायगिहं णयरं मज्झं मज्झेणं णिगच्छइ, णिगच्छित्ता मोग्गरपाणिस्स जक्खस्स जक्खाययणस्स अदूरसामंतेणं जेणेव गुणसिलए चेइए जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए।
तए णं से मोग्गरपाणि जक्खे सुदंसणं समणोवासयं अदूरसामंतेणं वीईवयमाणं पासइ, पासित्ता आसुरत्ते तं पलसहस्सणिप्फण्णं अयोमयं मोग्गरं उल्लालेमाणे उल्लालेमाणे जेणेव सुदंसणे समणोवासए तेणेव पहारेत्थ गमणाए।१०।

[सस्कृत छाया]

ततः खलु तौ अम्बापितरौ तदा अकामेनैव सुदर्शन श्रेष्ठिनमेवमवदताम्—
"यथासुखं देवानुप्रियः !"
ततः खलु सः सुदर्शनः श्रेष्ठी अम्बापितृभ्याम् अभ्यनुज्ञातः सन् स्नातः शुद्धप्रावेश्यानि यावत् शरीरः, स्वकात् गृहात् प्रतिनिष्क्राम्यति, प्रतिनिष्क्रम्य पादविहारचारेण राजगृहस्य नगरस्य मध्यंमध्येन निर्गच्छति निर्गत्य मुद्गरपाणेः यक्षस्य यक्षायतनस्य अदूरसामन्तेन यत्रैव गुणशिलकं चैत्यम् यत्रैव श्रमणः भगवान् महावीरः तत्रैव प्राधारयत् गमनाय।
ततः खलु स मुद्गरपाणिः यक्षः सुदर्शनम् श्रमणोपासकम् अदूरसामन्तेन व्यतिव्रजन्तम् पश्यति, दृष्ट्वा आशुरक्तः तं पलसहस्र निष्पन्नम् अयो म् मुद्गरम् उल्लालयन् उल्लालयन् यत्रैव सु नः श्रमणोपासकः तत्रैव प्राधारयद् गमनाय।१०।

सूत्र ११

तए णं से सुदंसणे समणो ए मोग्गरपाणि जक्खं एज्जमाणं

ततः खलु सः सुदर्शनः श्रमणोपासकः मुद्गरपाणि यक्षम् आगच्छन्तम्

[हिन्दी शब्दार्थ]

तब माता पिता ने अनिच्छापूर्वक ही सुदर्शन सेठ को इस प्रकार कहा— जैसे सुख हो वैसे ही करो ।

उस सुदर्शन सेठ ने माता पिता की आज्ञा पाकर स्नान किया और धर्म सभा मे जाने योग्य शुद्ध वस्त्र यावत् धारण किये यावत् अपने घर से निकला निकलकर पैदल चलते हुए ही राजगृह नगर के मध्य से होता हुआ निकला निकलकर मुद्गरपाणियक्ष के यक्षा-यतन के पास से होते हुए जहाँ पर गुणशील नामक उद्यान और जहाँ श्रमण भगवान् महावीर है उस ओर जाने लगा ।

तब उस मुद्गरपाणियक्ष ने सुदर्शन श्रमणोपासक को ीप से ही जाते हुए देखा और देखकर शीघ्र क्रुद्ध हुआ और उस हजारपल भारवाले लोहे के मुद्गर को घुमाते घुमाते जहाँ सुदर्शन श्रमणोपासक था वहाँ चलकर आने लगा ।१०।

[हिन्दी अर्थ]

पूर्वक इस प्रकार कहा—"हे पुत्र! फिर जिस प्रकार तुम्हे सुख उपजे वैसा करो ।"

इस प्रकार सुदर्शन सेठ ने माता-पिता से आज्ञा प्राप्त करके स्नान किया और धर्मसभा मे जाने योग्य शुद्ध वस्त्र धारण किये । फिर अपने घर से निकला और पैदल ही राजगृह नगर के मध्य से चलकर मुद्गरपाणि यक्ष के यक्षायतन के न अति दूर से और न अति निकट से ही होते हुए गुणशील उद्यान की ओर, जहा श्रमण भगवान् महावीर विराजित थे, निकलने लगे ।

सुदर्शन सेठ को अपने यक्षायतन के पास से निकलते हुए देखकर वह मुद्गरपाणि यक्ष बडा क्रुद्ध हुआ और क्रुद्ध होकर उस हजार पल के वजन वाले लोह-मुद्गर को घुमाते हुए उसकी ओर दौडा ।

सूत्र ११

तब सुदर्शन श्रमणोपासक ने मुद्गरपाणि यक्ष को आते हुए को

उस समय उस क्रुद्ध मुद्गरपाणि यक्ष को अपनी ओर आता हुआ देखकर वे

[मूल सूत्र पाठ]

पासइ, पासित्ता अभीए,
अतत्थे, अणुव्विग्गे, अक्खुब्भिए,
अचलिए, असभंते, वत्थं तेणं
भूमिं पमज्जइ,
पमज्जित्ता करयल एव वयासी—
णमोत्थु णं अरिहंताणं
भगवंताणं जाव संपत्ताणं ।
णमोत्थुणं समणस्स जाव
संपाविउकामस्स ।

पुव्विं च णं मए भगवओ
महावीरस्स अंतिए थूलए
पाणाइवाए पच्चक्खाए
जावज्जीवाए ३

थूलए मुसावाए, थूलए
अदिण्णादाणे सदारसंतोसे
कए जावज्जीवाए,
इच्छा परिमाणे कए
जावज्जीवाए ।

तं इयाणिं पि णं तस्सेव अंतियं
सव्वं पाणाइवायं, पच्चक्खामि
जावज्जीवाए, सव्वं मुसावायं,
सव्वं अदिण्णादाणं, सव्वं मेहुणं,
सव्वं परिग्गहं पच्चक्खामि
जावज्जीवाए,
सव्वं कोहं जाव मिच्छादंसणसल्लं
पच्चक्खामि
जावज्जीवाए,

[संस्कृत छाया]

पश्यति, दृष्ट्वा अभीतः
अत्रस्तः, अनुद्विग्नः, अक्षुब्धः
अचलितः, असंभ्रान्तः, वस्त्रान्तेन
भूमिं प्रमार्जयति,
प्रमार्ज्य करतल परिगृहीतः एवमवदत्
नमोऽस्तु खलु अर्हद्भ्यो
भगवद्भ्यो यावत् संप्राप्तेभ्यः ।
नमोऽस्तु खलु श्रमणाय यावत्
संप्राप्तुकामाय ।

पूर्वं च खलु मया भगवतः
महावीरस्य अन्तिके स्थूलकः
प्राणातिपातः प्रत्याख्यातः
यावज्जीवम् । (एवं)

स्थूलकः मृषावादः, स्थूलकं
अदत्तादानं (प्रत्याख)
स्वदारसन्तोषः कृतः यावज्जीवम्
इच्छापरिमाणः कृतः
यावज्जीवम् ।

तदिदानीमपि खलु तस्यैव अन्तिके
सर्वं प्राणातिपातं प्रत्याख्यामि
यावज्जीवम्, सर्वं मृषावादं
सर्वमदत्तादानं, सर्वं मैथुनम्
सर्वं परिग्रहं प्रत्याख्यामि
यावज्जीवम्
सर्वं क्रोधम् यावत् मिथ्या नशल्यम्
प्रत्याख्यामि
यावज्जीवम् ।

[हिन्दी शब्दार्थ]

देखा और देखकर वह डरा नही, त्रास, उद्वेग एवं क्षोभ रहित अचल भ्रान्त हुए बिना, वस्त्र के छोर से भूमि का प्रमार्जन किया, करके दोनो हाथ जोडकर इस प्रकार बोला—नमस्कार हो अरिहंत भगवान् यावत् मोक्षप्राप्त सिद्धों को नमस्कार हो। नमस्कार हो प्रभु महावीर को। यावत् मुक्ति पाने वाले श्रमणादिकों को मैंने पहले ही श्रमण भगवान महावीर के पास स्थूल प्राणातिपात का आजीवन प्रत्याख्यान अर्थात् त्याग किया है। इस प्रकार स्थूल मृषावाद, स्थूल अदत्तादान का भी त्याग किया है। स्वदार संतोष और इच्छापरिमाण रूप स्थूल परिग्रह विरमण जीवन भर के लिए ग्रहण किया है। अब भी मै उन्हीं भगवान के पास (साक्षी से) सर्वथा प्राणातिपात का यावज्जीवन त्याग करता हूं तथा सम्पूर्ण मृषावाद, सर्व विध अदत्तादान, सर्वविध मैथुन एवं सम्पूर्ण परिग्रह का आजीवन त्याग करता हूँ। मै था क्रोध यावत् मिथ्या दर्शनशल्य तक के समस्त (१८) पापो का भी आजीवन त्याग करता हूँ।

[हिन्दी अर्थ]

सुदर्शन श्रमणोपासक मृत्यु की सभावना को जानकर भी किंचित् भी भय, त्रास, उद्वेग अथवा क्षोभ को प्राप्त नही हुए। उनका हृदय तनिक भी विचलित अथवा भयाक्रान्त नही हुआ।

उन्होने निर्भय होकर अपने वस्त्र के अचल से भूमि का प्रमार्जन किया और मुख पर उत्तरासग धारण किया। फिर पूर्व दिशा की ओर मुह करके वैठ गये। वैठकर बाए घुटने को ऊचा किया और दोनो हाथ जोडकर मस्तक पर अ जुलि-पुट रक्खा।

इसके वाद इस प्रकार बोले—

"सर्वप्रथम मैं उन सभी अरिहन्त भगवन्तो को, जो भूतकाल मे मोक्ष पधार गये हैं, एव श्रमण भगवान् महावीर स्वामी सहित उन सभी अरिहन्तो को, जो भविष्य मे मोक्ष मे पधारने वाले है, नमस्कार करता हू।"

"मैंने पहले श्रमण भगवान् महावीर के पास स्थूल प्राणातिपात का आजीवन त्याग (प्रत्याख्यान) किया, स्थूल मृषावाद, स्थूल अदत्तादान का त्याग किया स्वदार सतोष और इच्छा परिमाण रूप स्थूल परिग्रह-विरमण व्रत जीवन भर के लिये ग्रहण किया,अब उन्ही भगवान् महावीर स्वामी की साक्षी से प्राणातिपात, मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन और सपूर्ण-परिग्रह का सर्वथा आजीवन त्याग करता हू। क्रोध मान माया लोभ यावत् मिथ्यात्व दर्शन शल्य तक १८ पापो का भी सर्वथा आजीवन त्याग करता हू। सव प्रकार का अशन पान, खादिम और स्वादिम इन चारो प्रकार के आहार का भी त्याग करता हू।

यदि मैं इस आसन्न मृत्यु उपसर्ग मे वच गया तो इस त्याग का पारण करके-

[मूल सूत्र पाठ]

पासइ, पासित्ता अभीए,
अतत्थे, अणुव्विग्गे, अक्खुभिए,
अचलिए, असभंते, वत्थ तेणं
भूमिं पमज्जइ,
पमज्जित्ता करयल एवं वयासी—
णमोत्थु णं अरिहंताणं
भगवंताणं जाव संपत्ताणं।
णमोत्थुणं समणस्स जाव
संपाविउकामस्स।

पुव्विं च णं मए भगवओ
महावीरस्स अंतिए थूलए
पाणाइवाए पच्चक्खाए
जावज्जीवाए ३

थूलए मुसावाए, थूलए
अदिण्णादाणे सदारसंतोसे
कए जावज्जीवाए,
इच्छा परिमाणे कए
जावज्जीवाए।

तं इयाणिं पि णं तस्सेव अंतियं
सव्वं पाणाइवायं, पच्चक्खामि
जावज्जीवाए, सव्वं मुसावायं,
सव्वं अदिण्णादाणं, सव्वं मेहुणं,
सव्वं परिग्गहं पच्चक्खामि
जावज्जीवाए,
सव्वं कोहं जाव मिच्छादंसणसल्लं
पच्चक्खामि
जावज्जीवाए,

[संस्कृत छाया]

पश्यति, दृष्ट्वा अभीतः
अत्रस्तः, अनुद्विग्नः, अक्षुब्धः
अचलितः, असंभ्रान्तः, वस्त्रान्तेन
भूमिं प्रमार्जयति,
प्रमार्ज्य करतल परिगृहीतः एवमवदत्
नमोऽस्तु खलु अर्हद्भ्यो
भगवद्भ्यो यावत् संप्राप्तेभ्यः।
नमोऽस्तु खलु श्रमणाय यावत्
संप्राप्तुकामाय।

पूर्वं च खलु मया भगवतः
महावीरस्य अन्तिके स्थूलकः
प्राणातिपातः प्रत्याख्यातः
यावज्जीवम्। (एवं)

स्थूलकः मृषावादः, स्थूलकं
अदत्तादानं (प्रत्याख्या ˎ)
स्वदारसन्तोषः कृतः यावज्जीवम्
इच्छापरिमाणः कृतः
यावज्जीवम्।

तदिदानीमपि खलु ˋव अन्तिके
सर्वं प्राणातिपातं प्रत्याख्यामि
यावज्जी ˎ, सर्वं मृषावादं
सर्वमदत्तादानं, सर्वं मैथु ˎ
सर्वं परिग्रहं प्रत्याख्यामि
यावज्जीवम्
सर्वं क्रोधम् यावत् मिथ्या ˋनशल्यम्
प्रत्याख्यामि
यावज्जीवम्।

[हिन्दी शब्दार्थ]

देखा और देखकर वह डरा नही, त्रास, उद्वेग एवं क्षोभ रहित अचल भ्रान्त हुए बिना, वस्त्र के छोर से भूमि का प्रमार्जन किया, करके दोनों हाथ जोड़कर इस प्रकार बोला— नमस्कार हो अरिहंत भगवान् यावत् मोक्षप्राप्त सिद्धों को नमस्कार हो। नमस्कार हो प्रभु महावीर को। यावत् मुक्ति पाने वाले श्रमणादिकों को मैंने पहले ही श्रमण भगवान महावीर के पास स्थूल प्राणातिपात का आजीवन प्रत्याख्यान अर्थात् त्याग किया है। इस प्रकार स्थूल मृषावाद, स्थूल अदत्तादान का भी त्याग किया है। स्वदार संतोष और इच्छापरिमाण रूप स्थूल परिग्रह विरमण जीवन भर के लिए ग्रहण किया है।

भी मै उन्ही भगवान के पास (साक्षी से) सर्वथा प्राणातिपात का यावज्जीवन त्याग करता हूं तथा सम्पूर्ण मृषावाद, सर्व विध अदत्तादान, ॱविध मैथुन एवं सम्पूर्ण परिग्रह का आजीवन त्याग करता हूँ। मै ॱथा क्रोध यावत् मिथ्या दर्शनशल्य तक के समस्त (१८) पापो का भी आजीवन त्याग करता हूँ।

[हिन्दी अर्थ]

सुदर्शन श्रमणोपासक मृत्यु की सभावना को जानकर भी किंचित् भी भय, त्रास, उद्वेग अथवा क्षोभ को प्राप्त नही हुए। उनका हृदय तनिक भी विचलित अथवा भयाक्रान्त नही हुआ।

उन्होने निर्भय होकर अपने वस्त्र के अचल से भूमि का प्रमार्जन किया और मुख पर उत्तरासग धारण किया। फिर पूर्व दिशा की ओर मुह करके बैठ गये। बैठकर बाए घुटने को ऊचा किया और दोनो हाथ जोडकर मस्तक पर अ जुलि-पुट रक्खा।

इसके बाद इस प्रकार बोले—

"सर्वप्रथम मैं उन सभी अरिहन्त भगवन्तो को, जो भूतकाल मे मोक्ष पधार गये हैं, एव श्रमण भगवान् महावीर स्वामी सहित उन सभी अरिहन्तो को, जो भविष्य मे मोक्ष मे पधारने वाले है, नमस्कार करता हू।"

"मैंने पहले श्रमण भगवान् महावीर के पास स्थूल प्राणातिपात का आजीवन त्याग (प्रत्याख्यान) किया, स्थूल मृषावाद, स्थूल अदत्तादान का त्याग किया स्वदार सतोष और इच्छा परिमाण रूप स्थूल परिग्रह-विरमण व्रत जीवन भर के लिये ग्रहण किया, अब उन्ही भगवान् महावीर स्वामी की साक्षी से प्राणातिपात, मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन और सपूर्ण-परिग्रह का सर्वथा आजीवन त्याग करता हूं। क्रोध मान माया लोभ यावत् मिथ्यात्व दर्शन शल्य तक १८ पापो का भी सर्वथा आजीवन त्याग करता हू। सब प्रकार का अशन पान, खादिम और स्वादिम इन चारो प्रकार के आहार का भी त्याग करता हू।

यदि मैं इस आसन्न मृत्यु उपसर्ग से बच गया तो इस त्याग का पारण करके-

[मूल सूत्र पाठ]

पासइ, पासित्ता अभीए,
अतत्थे, अणुव्विग्गे, अक्खुभिए,
अचलिए, असंभते, वत्थं तेणं
भूमिं पमज्जइ,
पमज्जित्ता करयल एवं वयासी—
णमोत्थु णं अरिहंताणं
भगवंताणं जाव सपत्ताणं।
णमोत्थुणं समणस्स जाव
संपाविउकामस्स।
पुव्विं च णं मए भगवओ
महावीरस्स अंतिए थूलए
पाणाइवाए पच्चक्खाए
जावज्जीवाए ३
थूलए मुसावाए, थूलए
अदिण्णादाणे सदारसंतोसे
कए जावज्जीवाए,
इच्छा परिमाणे कए
जावज्जीवाए।
तं इयाणिं पि णं तस्सेव अंतियं
सव्वं पाणाइवायं, पच्चक्खामि
जावज्जीवाए, सव्वं मुसावायं,
सव्वं अदिण्णादाणं, सव्वं मेहुणं,
सव्वं परिग्गहं प खामि
जावज्जीवाए,
सव्वं कोहं जाव मिच्छादंसणसल्लं
पच्चक्खामि
जावज्जीवाए,

[संस्कृत छाया]

पश्यति, दृष्ट्वा अभीतः
अत्रस्तः, अनुद्विग्नः, अक्षुब्धः
अचलितः, असंभ्रान्तः, वस्त्रान्तेन
भूमिं प्रमार्जयति,
प्रमार्ज्य करतल परिगृहीतः एवमवदत्
नमोऽस्तु खलु अर्हद्भ्यो
भगवद्भ्यो यावत् संप्राप्तेभ्यः।
नमोऽस्तु खलु श्रमणाय यावत्
संप्राप्तुकामाय।
पूर्वं च खलु मया भगवतः
महावीरस्य अन्तिके स्थूलकः
प्राणातिपातः प्रत्याख्यातः
यावज्जीवम्। (एवं)
स्थूलकः मृषावादः, स्थूलकं
अदत्तादानं (प्रत्याख्या)
स्वदारसन्तोषः कृतः यावज्जीवम्
इच्छापरिमाणः कृतः
यावज्जीवम्।
तदिदानीमपि खलु व अन्तिके
सर्वं प्राणातिपातं प्रत्याख्यामि
यावज्जी , मृषावादं
सर्वमदत्तादानं, सर्वं मैथु
सर्वं परिग्रहं प्रत्याख्यामि
यावज्जीवम्
सर्वं क्रोधम् यावत् मिथ्या नशल्यम्
प्रत्याख्यामि
यावज्जीवम्।

[हिन्दी शब्दार्थ]

देखा और देखकर वह डरा नही, त्रास, उद्वेग एवं क्षोभ रहित अचल भ्रान्त हुए बिना, वस्त्र के छोर से भूमि का प्रमार्जन किया, करके दोनो हाथ जोड़कर इस प्रकार बोला— नमस्कार हो अरिहंत भगवान् यावत् मोक्षप्राप्त सिद्धो को नमस्कार हो। नमस्कार हो प्रभु महावीर को। यावत् मुक्ति पाने वाले श्रमणादिकों को मैंने पहले ही श्रमण भगवान महावीर के पास स्थूल प्राणातिपात का आजीवन प्रत्याख्यान अर्थात् त्याग किया है। इस प्रकार स्थूल मृषावाद, स्थूल अदत्तादान का भी त्याग किया है। स्वदार संतोष और इच्छापरिमाण रूप स्थूल परिग्रह विरमण जीवन भर के लिए ग्रहण किया है। अब भी मैं उन्ही भगवान के पास (साक्षी से) सर्वथा प्राणातिपात का यावज्जीवन त्याग करता हूं तथा सम्पूर्ण मृषावाद, सर्व विध अदत्तादान, सर्वविध मैथुन एवं सम्पूर्ण परिग्रह का आजीवन त्याग करता हूँ। मै सर्वथा क्रोध यावत् मिथ्या दर्शनशल्य तक के समस्त (१८) पापों का भी आजीवन त्याग करता हूँ।

[हिन्दी अर्थ]

सुदर्शन श्रमणोपासक मृत्यु की सभावना को जानकर भी किंचित् भी भय, त्रास, उद्वेग अथवा क्षोभ को प्राप्त नही हुए। उनका हृदय तनिक भी विचलित अथवा भयाक्रान्त नही हुआ।

उन्होने निर्भय होकर अपने वस्त्र के अचल से भूमि का प्रमार्जन किया और मुख पर उत्तरासग धारण किया। फिर पूर्व दिशा की ओर मु ह करके बैठ गये। बैठकर बाए घुटने को ऊचा किया और दोनो हाथ जोडकर मस्तक पर अ जुलि-पुट रक्खा।

इसके बाद इस प्रकार बोले—

"सर्वप्रथम मैं उन सभी अरिहन्त भगवन्तो को, जो भूतकाल मे मोक्ष पधार गये हैं, एव श्रमण भगवान् महावीर स्वामी सहित उन सभी अरिहन्तो को, जो भविष्य मे मोक्ष मे पधारने वाले है, नमस्कार करता हू।"

"मैंने पहले श्रमण भगवान् महावीर के पास स्थूल प्राणातिपात का आजीवन त्याग (प्रत्याख्यान) किया, स्थूल मृषावाद, स्थूल अदत्तादान का त्याग किया स्वदार सतोष और इच्छा परिमाण रूप स्थूल परिग्रह-विरमण व्रत जीवन भर के लिये ग्रहण किया,अब उन्ही भगवान् महावीर स्वामी की साक्षी से प्राणातिपात, मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन और सपूर्ण-परिग्रह का सर्वथा आजीवन त्याग करता हू। क्रोध मान माया लोभ यावत् मिथ्यात्व दर्शन शल्य तक १८ पापो का भी सर्वथा आजीवन त्याग करता हू। सव प्रकार का अशन पान, खादिम और स्वादिम इन चारो प्रकार के आहार का भी त्याग करता हू।

यदि मैं इस आसन्न मृत्यु उपसर्ग से वच गया तो इस त्याग का पारण करके-

[मूल सूत्र पाठ]

पासइ, पासित्ता अभीए,
अतत्थे, अणुव्विग्गे, अक्खुभिए,
अचलिए, असभंते, वत्थं तेणं
भूमिं पमज्जइ,
पमज्जित्ता करयल एव वयासी—
णमोत्थु णं अरिहताणं
भगवताणं जाव सपत्ताणं ।
णमोत्थुणं समणस्स जाव
संपाविउकामस्स ।
पुव्विं च णं मए भगवओ
महावीरस्स अंतिए थूलए
पाणाइवाए पच्चक्खाए
जावज्जीवाए ३
थूलए मुसावाए, थूलए
अदिण्णादाणे सदारसंतोसे
कए जावज्जीवाए,
इच्छा परिमाणे कए
जावज्जीवाए ।
तं इयाणि पि णं तस्सेव अंतियं
सव्वं पाणाइवायं, पच्चक्खामि
जावज्जीवाए, सव्वं मुसावायं,
सव्वं अदिण्णादाणं, सव्वं मेहुणं,
सव्वं परिग्गहं पच्चक्खामि
जावज्जीवाए,
सव्वं कोहं जाव मिच्छादंसणसल्लं
पच्चक्खामि
जावज्जीवाए,

[संस्कृत छाया]

पश्यति, दृष्ट्वा अभीतः
अत्रस्तः, अनुद्विग्नः, अक्षुब्धः
अचलितः, असंभ्रान्तः, वस्त्रान्तेन
भूमिं प्रमार्जयति,
प्रमार्ज्य करतल परिगृहीतः एवमवदत्
नमोऽस्तु खलु अर्हद्भ्यो
भगवद्भ्यो यावत् संप्राप्तेभ्यः ।
नमोऽस्तु खलु श्रमणाय यावत्
संप्राप्तुकामाय ।
पूर्वं च खलु मया भगवतः
महावीरस्य अन्तिके स्थूलकः
प्राणातिपातः प्रत्याख्यातः
यावज्जीवम् । (एवं)
स्थूलकः मृषावादः, स्थूलकं
अदत्तादानं (प्रत्याख्यातम्)
स्वदारसन्तोषः कृतः यावज्जीवम्
इच्छापरिमाणः कृतः
यावज्जीवम् ।
तदिदानीमपि खलु ैव अन्तिके
सर्वं प्राणातिपातं प्रत्याख्यामि
यावज्जीवम्, सर्वं मृषावादं
सर्वमदत्तादानं, सर्वं मैथु
सर्वं परिग्रहं प्रत्याख्यामि
यावज्जीवम्
सर्वं क्रोधम् यावत् मिथ्या नशल्यम्
प्रत्याख्यामि
यावज्जीवम् ।

[हिन्दी शब्दार्थ]

देखा और देखकर वह डरा नही, त्रास, उद्वेग एवं क्षोभ रहित अचल भ्रान्त हुए बिना, वस्त्र के छोर से भूमि का प्रमार्जन किया, करके दोनों हाथ जोड़कर इस प्रकार बोला— नमस्कार हो अरिहंत भगवान् यावत् मोक्षप्राप्त सिद्धों को नमस्कार हो। नमस्कार हो प्रभु महावीर को। यावत् मुक्ति पाने वाले श्रमणादिकों को मैंने पहले ही श्रमण भगवान महावीर के पास स्थूल प्राणातिपात का आजीवन प्रत्याख्यान अर्थात् त्याग किया है। इस प्रकार स्थूल मृषावाद, स्थूल अदत्तादान का भी त्याग किया है। स्वदार संतोष और इच्छापरिमाण रूप स्थूल परिग्रह विरमण व्रत जीवन भर के लिए ग्रहण किया है। अब भी मैं उन्हीं भगवान के पास (साक्षी से) सर्वथा प्राणातिपात का यावज्जीवन त्याग करता हूं तथा सम्पूर्ण मृषावाद, सर्व विध अदत्तादान, सर्वविध मैथुन एवं सम्पूर्ण परिग्रह का आजीवन त्याग करता हूँ। मै सर्वथा क्रोध यावत् मिथ्या दर्शनशल्य तक के समस्त (१८) पापो का भी आजीवन त्याग करता हूँ।

[हिन्दी अर्थ]

सुदर्शन श्रमणोपासक मृत्यु की सभावना को जानकर भी किंचित् भी भय, त्रास, उद्वेग अथवा क्षोभ को प्राप्त नही हुए। उनका हृदय तनिक भी विचलित अथवा भयाक्रान्त नही हुआ।

उन्होने निर्भय होकर अपने वस्त्र के अचल से भूमि का प्रमार्जन किया और मुख पर उत्तरासग धारण किया। फिर पूर्व दिशा की ओर मु ह करके बैठ गये। बैठकर बाए घुटने को ऊचा किया और दोनो हाथ जोडकर मस्तक पर अ जुलि-पुट रक्खा।

इसके बाद इस प्रकार बोले—

"सर्वप्रथम मैं उन सभी अरिहन्त भगवन्तो को, जो भूतकाल मे मोक्ष पधार गये हैं, एव श्रमण भगवान् महावीर स्वामी सहित उन सभी अरिहन्तो को, जो भविष्य मे मोक्ष मे पधारने वाले है, नमस्कार करता हू।"

"मैंने पहले श्रमण भगवान् महावीर के पास स्थूल प्राणातिपात का आजीवन त्याग (प्रत्याख्यान) किया, स्थूल मृषावाद, स्थूल अदत्तादान का त्याग किया स्वदार सतोष और इच्छा परिमाण रूप स्थूल परिग्रह-विरमण व्रत जीवन भर के लिये ग्रहण किया, अब उन्ही भगवान् महावीर स्वामी की साक्षी से प्राणातिपात, मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन और सपूर्ण-परिग्रह का सर्वथा आजीवन त्याग करता हू। क्रोध मान माया लोभ यावत् मिथ्यात्व दर्शन शल्य तक १८ पापो का भी सर्वथा आजीवन त्याग करता हू। सब प्रकार का अशन पान, खादिम और स्वादिम इन चारो प्रकार के आहार का भी त्याग करता हू।

यदि मैं इस आसन्न मृत्यु उपसर्ग से बच गया तो इस त्याग का पारण करके-

[मूल सूत्र पाठ]	[सस्कृत छाया]
सव्वं असणं, पाणं, खाइमं,	सर्वम् अशनम्, पानम्, खाद्यम्,
साइमं, चउव्विहं पि आहारं	स्वाद्यम्, चतुर्विधमपि आहारं
पच्चक्खामि जावज्जीवाए ।	प्रत्याख्यामि यावज्जीवम् ।
जइणं एत्तो उवसग्गाओ	यदि खलु एतस्मादुपसर्गात्
मुच्चिस्सामि तो मे कप्पइ पारेत्तए,	मोक्ष्यामि तदा मम कल्पते पारयितुम्,
अहणं एत्तो उवसग्गाओ	यदि च एतस्मादुपसर्गात्
न मुच्चिस्सामि तओ मे	न मुक्तो भविष्यामि तदा मे
तहा पच्चक्खाए चेव	तथा प्रत्याख्यातमेव (सर्वं पूर्वोक्तम्)
त्तिकट्टु सागारं पडिमं पडिवज्जइ ।	इति कृत्वा साकारां प्रतिमां प्रतिपद्यते ।
तए णं से मोग्गरपाणि जक्खे तं	ततः खलु सः मुद्गरपाणिः यक्षः तं
पलसहस्सणिप्फण्ण अयोमयं मोग्गरं	प हस्रनिष्पन्नम् ोमयं मुद्गरं
उल्लालेमाणे उल्लालेमाणे	उल्लालयन् उल्लालयन्
जेणेव सुदंसणे समणोवासए	यत्रैव सुदर्शनः श्रमणोपासकः
तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता नो चेव णं	तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य न चैव खलु
संचाएइ सुदंसणं समणोवासयं	शक्नोति सुदर्शनम् श्रमणोपासकं
तेयसा समभिपडित्तए ।	तेजसा समभिपतितुम् ।
तए णं से मोग्गरपाणी—	ततः खलु सः मुद्गरपाणिः
जक्खे सुदंसणं समणोवासयं	यक्षः सु ंनं श्रमणोपासकं
सव्वओ समंताओ परिघोलेमाणे	सर्वतः समन्तात् परिघूर्णन्
परिघोलेमाणे जाहे नो चेव	परिघूर्णन यदा न चैव
णं संचाएइ सुदंसणं समणोवासयं	खलु शक्नोति सु ंनं श्रमणोपासकं
तेयसा समभिपडित्तए ।	तेजसा समभिपतितुम् ।
ताहे सुदंसणस्स समणोवासयस्स	तदा सुदर्शनस्य श्रमणोपासकस्य
पुरओ सपक्खि सपडिदिसिं ठिच्चा	पुरतः सपक्षं तिदिक् स्थित्वा
सुदंसणं समणोवासयं अणिमिसाए	सुदर्शनं श्रमणोपास अनिमिषया
दिट्ठीए सुचिरं णिरिक्खइ,	दृष्ट्या सुचिरं निरीक्षते,

[हिन्दी शब्दार्थ]

मैं सर्व प्रकार के
अशन, पान, खाद्य व स्वाद्य चारो ही
आहार को भी आजीवन छोड़ता हूँ।
यदि इस उपसर्ग से छूटता हूँ तो मुझे
पारना आहारादि करना कल्पता है।
पर यदि इस उपसर्ग से मुक्त न होऊँ तो
मुझे इस प्रकार का सम्पूर्ण त्याग है।
ऐसा विचार करके सागारी पडिमा
(अनशन) धारण कर लिया।
तदनन्तर वह मुद्गरपाणियक्ष उस
हजार पल भारी लोहे के मुद्गर को
घुमाता घुमाता हुआ जहाँ पर सुदर्शन
श्रमणोपासक था वहाँ आया, (परन्तु
वहाँ) आकर (भी) वह सुदर्शन श्रमणो-
पासक को किसी भी प्रकार अपने तेज से
विचलित करने मे समर्थ नहीं हुआ।
फिर वह मुद्गरपाणि
यक्ष सुदर्शन श्रमणोपासक के
चारो ओर घूमते हुए
घूमते हुए जब नहीं
सुदर्शन श्रमणोपासक को
अपने तेज से पराजित कर सका,
तब सुदर्शन श्रमणोपासक के
सामने खड़ा रहकर उस
सुदर्शन श्रमणोपासक को अनिमेष
दृष्टि से चिरकाल तक देखता रहा।

[हिन्दी अर्थ]

आहारादि ग्रहण करूंगा। पर यदि इस उपसर्ग से मुक्त न होऊ न बचू तो मुझे इस प्रकार का सपूर्ण त्याग यावज्जीवन है।

ऐसा निश्चय करके उन सुदर्शन सेठ ने उपरोक्त प्रकार से सागारी पडिमा-अनशन व्रत-धारण कर लिया।

इधर वह मुद्गरपाणि यक्ष उस हजार पल के लोहमय मुद्गर को घुमाता हुआ जहां सुदर्शन श्रमणोपासक था वहा आया। परन्तु सुदर्शन श्रमणोपासक को अपने तेज से अभिभूत नही कर सका अर्थात् उसे किसी प्रकार से कष्ट नही पहुचा सका।

मुद्गरपाणि यक्ष सुदर्शन श्रावक के चारो ओर घूमता रहा और जब उसको अपने तेज से पराजित नही कर सका तब सुदर्शन श्रमणोपासक के सामने आकर खडा हो गया और अनिमेष दृष्टि से बहुत देर तक उन्हे देखता रहा।

इसके बाद उस मुद्गरपाणि यक्ष ने अर्जुनमाली के शरीर को छोड दिया और

[मूल सूत्र पाठ]

णिरिक्खित्ता अज्जुणयस्स मालागारस्स
सरीरं विप्पजहाइ, विप्पज्जहित्ता
तं पलसहस्सणिप्फण्णं
अयोमयं मोग्गर गहाय
जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव
दिसं पडिगए ।१२।

[संस्कृत छाया]

निरीक्ष्य, अर्जुनस्य मालाकारस्य
शरीरं विप्रजहाति, विप्रजहाय
तं पलसहस्रनिष्पन्नम्
अयोमयं मुद्गरं गृहीत्वा
यस्याः दिशः प्रादुर्भूतः तामेव
दिशं प्रतिगतः ।

सूत्र १३

तए णं से अज्जुणए मालागारे
मोग्गरपाणिणा जक्खेणं
विप्पमुक्के समाणे धसत्ति
धरणियलंसि सव्वंगेहिं
णिवडिए । तए णं से सुदंसणे
समणोवासए णिरुवसग्गमि
त्ति कट्टु पडिमं पारेइ ।
तए णं से अज्जुणए मालागारे
तओ मुहुत्तंतरेणं आसत्थे
समाणे उट्ठेइ, उट्ठित्ता सुदंसणं
समणोवासयं एवं वयासी—
"तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! के ?
कहिं वा संपत्थिया ?"
तए णं से सुदंसणे समणोवासए
अज्जुणयं मालागारं एवं वयासी—
"एवं खलु देवाणुप्पिया !
अह सुदंसणे णामं समणोवासए
अभिगय-जीवाजीवे
गुणसिलए चेइए समणं

ततः खलु सः अर्जुनः मालाकारः
मुद्गरपाणिना यक्षेण
विप्रमुक्तः सन् 'धस्' इति
(शब्देन सह) धरणीतले सर्वाङ्गैः
निपति : । ततः खलु सः सुदर्शनः
श्रमणोपासकः 'निरुपस '
इति कृत्वा प्रतिमां पारयति ।
: खलु सः अर्जुनः मालाकारः
: मुहूर्तान्तरेण आश्वस्तः
सन् उत्तिष्ठति, उत्थाय सुदर्शनं
श्रमणोपासकम् एव दत्—
"यूयं खलु देवानुप्रियाः ! के ?
क्व वा संप्रस्थिताः ?"
ततः खलु सः सुदर्शनः श्रमणोपासकः
अर्जुनकं मालाकारमेवमवादीत्—
"एवं खलु देवानुप्रिय!
अहं सुदर्शनो नाम श्रमणोपासकः
अभिगतजीवाजीवः
गुणशिलके चैत्ये श्रमणं

[हिन्दी शब्दार्थ]

देखकर अर्जुन मालाकार के शरीर को छोड़ दिया, छोड़कर (शरीर से निकल कर) उस सहस्रपल भारवाले लोहे के मुद्गर को लेकर जिस दिशा से आया था उसी दिशा की ओर चला गया।

[हिन्दी अर्थ]

उस हजार पल भार वाले लौहमय मुद्गर को लेकर जिस दिशा से आया था, उसी दिशा की ओर चला गया।

सूत्र १३

तदनन्तर वह अर्जुनमाली मुद्गरपाणि यक्ष से मुक्त होने पर 'धस्' ऐसी आवाज के साथ सर्वांग से भूमि पर गिर पड़ा। तब सुदर्शन श्रावक ने अपने को निरुपसर्ग जानकर अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण की (ध्यान खुला किया) इधर वह अर्जुन मालाकार मुहूर्त्त भर के पश्चात् स्वस्थ होकर वहां से उठा, उठकर सुदर्शन श्रावक से यों बोला—
"हे देवानुप्रिय ! आप कौन हो और कहाँ जा रहे हो ?"
सुदर्शन श्रावक ने अर्जुनमाली को इस प्रकार कहा—
"हे देवानुप्रिय !
मै सुदर्शन नामक श्रमणोपासक जीवाजीवादि का जानने वाला गुणशिलक उद्यान मे श्रमण

मुदगरपाणि यक्ष से मुक्त होते ही वह अर्जुन मालाकार 'धस' इस प्रकार के शब्द के साथ भूमि पर गिर पडा।

तब सुदर्शन श्रमणोपासक ने अपने को उपसर्ग रहित हुआ जानकर अपनी सागारी त्याग प्रत्याख्यान रूपी प्रतिज्ञा को पाला और अपना ध्यान खोला।

इधर वह अर्जुनमाली मुहूर्त्त भर (कुछ समय) के पश्चात् आश्वस्त एव स्वस्थ होकर उठा और सुदर्शन श्रमणोपासक को सामने देखकर इस प्रकार बोला- "हे देवानुप्रिय! आप कौन हो, तथा कहाँ जा रहे हो ?"

यह सुनकर सुदर्शन श्रमणोपासक अर्जुनमाली से इस तरह बोला– "हे देवानुप्रिय! मैं जीवादि नौ तत्वो का ज्ञाता सुदर्शन नाम का श्रमणोपासक हू और गुणशील उद्यान मे

[हिन्दी शब्दार्थ]	[हिन्दी अर्थ]
भगवान महावीर को वन्दना नमस्कार करने के लिये जा रहा हूं।	श्रमण भगवान् महावीर को वदन नमस्कार करने जा रहा हू।"

सूत्र १४

वह अर्जुन माली सुदर्शन श्रमणोपासक से इस प्रकार बोला— हे देवानुप्रिय ! मै भी चाहता हूं तुम्हारे साथ श्रमण भगवान महावीर को वन्दन नमस्कार यावत् उनकी सेवा करने के लिए जाना। "हे देवानुप्रिय ! जैसे सुख हो वैसे करो" इसके बाद वह सुदर्शन श्रमणोपासक अर्जुन मालाकार के साथ जहाँ गुणशिलक उद्यान था, जहां श्रमण भगवान विराजते थे वहाँ आया और आकर अर्जुन मालाकार के साथ श्रमण भगवान महावीर को तीन बार वंदन करके सेवा करने लगा। उस समय श्रमण भगवान महावीर ने सुदर्शन श्रमणोपासक अर्जुन माली और उस विशाल सभा के सम्मुख धर्म कथा कही। धर्मकथा सुनकर सुदर्शन वापस लौट गया।१४।	यह सुनकर अर्जुनमाली सुदर्शन श्रमणोपासक से इस प्रकार बोला– "हे देवानुप्रिय! मैं भी तुम्हारे साथ श्रमण भगवान् महावीर की वदना नमस्कार करना यावत् सेवा करना चाहता हू।" श्रीसुदर्शन—"हे देवानुप्रिय ! जैसा तुम्हे सुख हो वैसा करो।" इसके बाद वह सुदर्शन श्रमणोपासक अर्जुनमाली के साथ जहा गुणशील उद्यान मे श्रमण भगवान् महावीर विराजमान थे, वहा आया और अर्जुनमाली के साथ श्रमण भगवान् महावीर को तीन बार प्रदक्षिणा पूर्वक वदन-नमस्कार कर उनकी सेवा करने लगा। उस समय श्रमण भगवान् महावीर ने सुदर्शन श्रमणोपासक, अर्जुनमाली और उस विशाल सभा के सम्मुख धर्म कथा कही। सुदर्शन धर्म कथा सुनकर अपने घर लौट गया।

सूत्र १५

तब वह अर्जुन मालाकार श्रमण भगवान महावीर के पास	इधर अर्जुनमाली श्रमण भगवान् महावीर के पास धर्मोपदेश सुनकर एव धारण

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म	अन्तिके धर्मं श्रुत्वा, निशम्य
हट्ठतुट्ठ एवं वयासी—	हृष्टतुष्टः एवमवदत्—
सद्दहामि णं भन्ते !	श्रद्दधामि खलु भदन्त !
णिग्गंथं पावयणं जाव	नैर्ग्रन्थ्यं प्रवचनं यावत्
अब्भुट्ठेमि ।	अभ्युत्तिष्ठामि ।
'अहासुहं देवाणुप्पिया !'	यथासुखं देवानुप्रिय !
तए णं से अज्जुणए मालागारे	ततः खलु सः अर्जुनः मालाकारः
उत्तरपुरच्छिमे दिसिभाए अवक्कमइ,	उत्तरपौरस्त्याम् दिग्भागम् अपक्राम्यति,
अवक्कमित्ता सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं	अपक्रम्य स्वयमेव पंचमुष्टिकं लोचं
करेइ, करित्ता जाव अणगारे	करोति, कृत्वा यावत् अनगारः
जाए जाव विहरइ ।	जातः यावद् विहरति ।
तएणं से अज्जुणए अणगारे	ततः खलु सः अर्जुनः अनगारः
जच्चेव दिवस मुंडे जाव पव्वइए	यस्मिन्नेव दिवसे मुण्डो यावत् प्रव्रजितः
तं चेव दिवसं समणं भगवं	तस्मिन्नेव दिवसे श्रमणं भगवन्तं
महावीरं वंदइ णमंसइ	महावीरं वन्दते नमस्यति,
वंदित्ता णमसित्ता इमं एयारूवं	वन्दित्वा नमस्यित्वा इममेतद्रूप
अभिग्गहं उग्गिण्हइ—	मभिग्रहम् अभिगृह्णाति-
कप्पइ मे जावज्जीवाए छट्ठं-	कल्पते मम यावज्जीवं षष्ठं
छट्ठेणं अणिक्खित्तेण तवोकम्मेणं	षष्ठेन अनिक्षिप्तेन तपः कर्मणा
अप्पाणं भावेमाणस्स	आत्मानं भ :
विहरित्तए तिकट्टु अयमेवारूवं	विहर्तुम् इति (मनसि) कृत्वा इम
अभिग्गहं उग्गिण्हइ, उग्गिण्हित्ता	मेतद्रूपंम् अभिग्रहमभिगृह्णाति,
जावज्जीवाए जाव विहरइ ।	अभिगृह्य यावज्जीवं यावत् विहरति ।

सूत्र १६

तए णं से अज्जुणए अणगारे	ततः खलु सः अर्जुनः अनगारः
छट्ठक्खमणपारणयंसि पढम-	षष्ठ क्षपणपारणके प्रथम—

[हिन्दी शब्दार्थ]

धर्मोपदेश सुनकर एवं धारणकर बड़ा प्रसन्न हुआ और इस प्रकार बोला— हे भगवन ! मै निर्ग्रन्थ प्रवचन पर श्रद्धा रुचि करता हूँ यावत् आपके चरणो मे व्रत लेना चाहता हूँ ।

"हे देवानुप्रिय! जैसे सुख हो वैसा करो" तदनन्तर वह अर्जुन माली ईशान कोण मे गया जाकर स्वयं ही पॉचमुट्ठियो का लोच किया और यावत् अनगार हो गये और संयम तप से वे विचरने लगे ।

इसके पश्चात् अर्जुन मुनि ने ि दिन मुंडित हो प्रव्रज्या ग्रहण की उसी दिन श्रमण भगवान महावीर को वंदन नमस्कार किया । वंदन नमस्कार करके इस प्रकार का अभि-ग्रह स्वीकार किया— आज से मैं निरन्तर बेले बेले की तपस्या से आजीवन आत्मा को भावित करते हुए विचरूँगा ।

यह मन मे सोचकर तथा इस प्रकार के अभिग्रह को लेकर जीवन भर के लिए यावत् विचरण करने लगे ।

[हिन्दी अर्थ]

कर बडा प्रसन्न हुआ और प्रभु महावीर से इस प्रकार वोला– "हे भगवन ! मैं आप द्वारा कहे हुए निर्ग्रन्थ प्रवचन पर श्रद्धा करता हू, रुचि करता हू, यावत् आपके चरणो मे व्रत लेना चाहता हू ।"

प्रभु महावीर– "हे देवानुप्रिय ! जैसा तुम्हे सुख हो, वैसा करो ।"

तव उस अर्जुनमाली ने ईशान कोण मे जाकर स्वय ही पचमौष्टिक लुचन किया, लुचन करके वे अनगार हो गये और सयम व तप से विचरने लगे । अर्जुन माली अव अर्जुन मुनि हो गये ।

इसके पश्चात् अर्जुन मुनि ने जिस दिन मुडित हो प्रव्रज्या ग्रहण की, उसी दिन श्रमण भगवान् महावीर को वदना नमस्कार करके इस प्रकार का अभिग्रह धारण किया- "आज से मै निरतर वेले वेले की तपस्या से आजीवन आत्मा को भावित करते हुए विचरूगा ।"

ऐसा अभिग्रह जीवन भर के लिए स्वीकार कर अर्जुन मुनि विचरने लगे ।

सूत्र १६

इसके बाद वह अर्जुन मुनि बेले की तपस्या के पारणे के दिन प्रथम

इसके पश्चात् अर्जुन मुनि वेले की तपस्या के पारणे के दिन प्रथम प्रहर मे

[मूल सूत्र पाठ]

पोरिसीए सज्झायं करेइ,
जहा गोयमसामी जाव अडइ ।
तए णं तं अज्जुणय अणगारं
रायगिहे णयरे उच्चणीय जाव
अडमाणं बहवे इत्थिओ य
पुरिसा य डहरा य महल्ला य
जुवाणा य एवं वयासी—
"इमेणं मे पिया मारिए,
इमेणं मे माया मारिया,
भाया मारिए, भगिणी मारिया,
भज्जा मारिया, पुत्ते मारिए,
धूया मारिया, सुण्हा मारिया
इमेणं मे अण्णयरे सयण-
संबंधि-परियणे मारिए ।"
त्तिकट्टु अप्पेगइया अक्कोसंति,
अप्पेगइया हीलंति, णिंदंति,
खिंसंति, गरिहंति, तज्जेंति,
तालेंति ।

[संस्कृत छाया]

पौरुष्यां स्वाध्यायं करोति,
यथा गौतम स्वामी यावदटति ।
ततः खलु तं अर्जुनकं अनगारं
राजगृहे नगरे उच्चनीचं यावत्
अटन्तं बहवः स्त्रियश्च
पुरुषाश्च डहराश्च महान्तश्च
युवानश्च एवमवदन्—
"अनेन खलु मे पिता मारितः,
अनेन खलु मे माता मारिता,
भ्राता मारितः, भगिनी मारिता,
भार्या मारिता, पुत्रः मारितः
दुहिता मारिता, स्नुषा मारिता,
अनेन खलु मे अन्यतरः स्व-
सम्बन्धि-परिजन मारितः ।"
इति कृत्वा अप्येके आक्रोशन्ति
अप्येके हीलन्ति, निन्दन्ति,
खिंसन्ति, गर्हन्ते, तर्जयन्ति,
ताडयन्ति ।

सूत्र १७

तए णं से अज्जुणए अणगारे
तेहिं बहूहिं इत्थीहि य पुरिसेहि य
डहरेहि य महल्लेहिं य
जुवाणएहि य आओसेज्जमाणे
जाव तालेज्जमाणे तेसिं मणसा
वि अप्पउस्समाणे सम्मं सहइ,
सम्मं खमइ, सम्मं तितिक्खइ,
सम्मं अहियासेइ,

ततः खलु सः अर्जुनः गारः
तैः बहुभिः स्त्रीभिश्च पुरुषैश्च
डहरैश्च महद्भिश्च
युवभिश्च आक्रुश्यमानः
यावत् ताड्यमानः तेभ्यः मनसा
अपि अप्रदुष्यन् सम्यक् सहते,
सम्यक् क्षमते, सम्यक् तितिक्षते,
सम्यक् अधिसहते,

[हिन्दी शब्दार्थ]

प्रहर मे स्वाध्याय करते, गौतम स्वामी
के समान यावत् भ्रमण करते
उस समय अर्जुन मुनि को
राजगृह नगर मे उच्चनीच कुलों में यावत्
घूमते हुए को बहुत सी स्त्रियां,
पुरुष, छोटे बच्चे, बडे बूढे
और जवान इस प्रकार कहने लगे—
"इसने मेरे पिता को मारा है,
इसने मेरी माता को मारा है,
भाई को मारा है, बहिन को मारा है,
पत्नी को मारा है, पुत्र को मारा है,
लड़की को मारा है, पुत्रवधु को मारा है,
इसने मेरे अमुक स्वजन
सम्बन्धी परिजन को मारा है
ऐसा कहकर कोई गाली देते,
कोई हीलना या निन्दा करते,
खिजाते, गर्हा करते, तर्जना करते,
कोई ताडना भी कर देते ।

[हिन्दी अर्थ]

ध्यान करते एव तीसरे प्रहर मे राजगृह नगर मे भिक्षार्थ भ्रमण करते ।

उस समय उस अर्जुन मुनि को राजगृह नगर मे उच्च-नीच मध्यम कुलो मे भिक्षार्थ घूमते हुए देखकर नगर के अनेक नागरिक स्त्री पुरुष आबाल वृद्ध इस प्रकार कहते—

"इसने मेरे पिता को मारा है, इसने मेरी माता को मारा है, भाई को मारा है, बहन को मारा है, भार्या को मारा है, पुत्र को मारा है, कन्या को मारा है, पुत्र वधू को मारा है, एव इसने मेरे अमुक स्वजन सबधी को मारा है ।"

ऐसा कहकर कोई गाली देता, कोई हीलना करता, अनादर करता, निन्दा करता, कोई जाति आदि का दोष बताकर गर्हा करता, कोई भय बताकर तर्जना करता, और कोई थप्पड, ईट, पत्थर, लाठी आदि से भी मारता ।

सूत्र १७

तब वह अर्जुन अनगार
उन बहुत सी स्त्रियो से, पुरुषो से,
बच्चो से, वृद्धो से
और तरुणो से तिरस्कृत यावत्
ताडित होने पर भी उन पर मन से
भी द्वेष नही करते हुए सम्यक् प्रकार से
सहते, क्षमा करते, तितिक्षा रखते,
निर्जरा समझकर हर्षानुभव करते ।

इस प्रकार उन बहुत से स्त्री पुरुष, बच्चे बूढे और जवानो से आक्रोश-गाली, एव विविध प्रकार की ताडना तर्जना आदि पाकर के भी वह अर्जुन मुनि उन पर मन से भी द्वेष नही करते हुए उनके द्वारा दिये गये सभी परीषहो को समभावपूर्वक सहन करते, प्रतिकार कर सकने की स्थिति मे होते हुए भी क्षमा-भाव धारण करते हुए उन कष्टो को प्रसन्नतापूर्वक झेल लेते एव निर्जरा का लाभ समझकर हर्षानुभव करते । सम्यग्

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
सम्म सहमाणे, खममाणे	सम्यक् सहमानः, क्षममाणः
तितिक्खमाणे, अहियासमाणे	तितिक्षमाणः, अधिसहमानः,
रायगिहे णयरे उच्चणीयमज्झिम	राजगृहे नगरे उच्चनीचमध्यम
कुलाइ अडमाणे जइ	कुलेषु अटमानः यदि
भत्तं लभइ तो पाणं ण लभइ,	भक्तं लभते तदा पानं न लभते,
जइ पाणं लभइ तो भत्त ण लभइ ।	यदि पानं लभते तर्हि भक्तं न लभते ।
तए णं से अज्जुणए अणगारे	ततः खलु सः अर्जुनकः अनगारः
अदीणे, अविमणे, अकलुसे,	अदीनः, अविमनाः, अकलुषः
अणाइले, अविसाई, अपरित-	अनाविलः अविषादी, अपरि-
तजोगी अडइ, अडित्ता	तान्तयोगी अटति, अटित्वा
रायगिहाओ णयराओ पडिणि-	राजगृहान्नगरात् प्रतिनिष्क्रा
क्खमइ, पडिणिक्खमित्ता	म्यति, प्रतिनिष्क्रम्य
जेणेव गुणसिलए चेइए, जेणेव	यत्रैव गुणशिलकं चैत्यं, यत्रैव
समणे भगवं महावीरे जहा	श्रमणः भगवान् महावीरः यथा
गोयमसामी जाव पडिदंसेइ,	गौतमस्वामी यावत् प्रतिदर्शयति,
पडिदंसित्ता समणेणं भगवया	प्रतिदर्श्य श्रमणेन भगवता
महावीरेणं अब्भणुण्णाए समाणे,	महावीरेण अभ्यनुज्ञातः सन्
अमुच्छिए बिलमिव पण्णगभूएणं	अमूर्च्छितः बिलमिव पन्नगभूतेन
अप्पाणेणं तमाहारं आहारेइ ।	आत्मना तमाहारमाहारयति ।

सूत्र १८

तए णं समणे भगवं महावीरे	ततः खलु श्रमणो भगवान् महावीरः
अण्णया कयाइं रायगिहाओ णयराओ	अन्यदा कदाचित् राजगृहात्
पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता	नगरात् प्रतिनिष्क्राम्यति, प्रतिनिष्क्रम्य
बहिं जणवय विहारं विहरइ ।	बहिः जनपद विहारं विहरति ।
तए णं से अज्जुणए अणगारे	ततः खलु सः अर्जुनः अनगारः
तेणं ओरालेणं विउलेणं पयत्तेणं	तेन उदारेण विपुलेन प्रयत्नेन
पग्गहिएणं महाणुभागेणं तवो-	परिगृहीतेन महानुभागेन तपः-

[हिन्दी शब्दार्थ]

इस प्रकार सहते क्षमा करते, तितिक्षा रखते और अध्यास लाभ मानते हुए राज गृह नगर में छोटे-बड़े मध्यम कुलों मे भ्रमण करते हुए उन्हें यदि भोजन मिलता तो पानी नही मिलता पानी मिलता तो भोजन नहीं मिलता।

तब वे अर्जुन मुनि ऐसी स्थिति में भी अदीन उदासी-मलिन भाव, आकुल व्याकुलपन और खेद रहित योगों से थकान रहित भ्रमण करते करते राजगृह नगर से बाहर निकलकर जहाँ गुणशिलक उद्यान था, जहां श्रमण भगवान महावीर विराजमान थे वहाँ र गौतम स्वामी की तरह आहार दिखाते और दिखाकर श्रमण भगवान महावीर की आज्ञा प्राप्त कर मूर्च्छा रहित हो, ि में जैसे सर्प सीधा प्रवेश करता है उसी तरह रागद्वेष रहित आत्मा से उस आहार का सेवनकर लेते।

[हिन्दी अर्थ]

ज्ञानपूर्वक उन सभी सकटो को सहन करते, क्षमा करते, तितिक्षा रखते और उन कष्टो को भी लाभ का हेतु मानते हुए राजगृह नगर के छोटे-वडे मध्य कुलो मे भिक्षा हेतु भ्रमण करते हुए अर्जुन मुनि को कही कभी भोजन मिलता तो पानी नही मिलता और पानी मिलता तो भोजन नही मिलता।

वैसी स्थिति मे जो भी और जैसा भी अल्प स्वल्प मात्रा मे प्रासुक भोजन उन्हे मिलता उसे वे सर्वथा अदीन, अविमन, अकलुष, अमलिन, आकुल-व्याकुलता रहित अखेद-भाव से ग्रहण करते, थकान अनुभव नही करते।

इस प्रकार वे भिक्षार्थ भ्रमण करते। भ्रमण करके वे राजगृह नगर से निकलते और गुणशील उद्यान मे, जहा श्रमण भगवान् महावीर विराजमान थे, वहां आते और वहा आकर गौतम स्वामी की तरह भिक्षा मे मिले उस आहार-पानी को प्रभु महावीर को दिखाते और दिखाकर उनकी आज्ञा पाकर मूर्च्छा रहित जिस प्रकार बिल मे सर्प सीधा ही प्रवेश करता है उस प्रकार राग-द्वेष भाव से रहित होकर उस आहार-पानी का वे सेवन करते।

सूत्र १८

फिर श्रमण भगवान महावीर ने अन्य किसी दिन राजगृह नगर से बिहार किया, बिहार कर बाहर जनपद देश मे विहार करने लगे।

तब वह अर्जुन मुनि उस उदार, श्रेष्ठ पवित्र भाव से ग्रहण किये महालाभकारी विपुल तप से आत्मा को

भगवती सूत्र मे जैसे प्रभु महावीर से पूछकर श्री गौतम स्वामी द्वारा भिक्षार्थ जाने का विस्तृत वर्णन किया गया है, वैसा ही अर्जुन माली द्वारा भिक्षार्थ जाने का वर्णन यहा समझना चाहिये।

फिर श्रमण भगवान् महावीर किसी दिन राजगृह नगर के उस गुणशील उद्यान से निकल कर वाहर जनपदो मे विहार करने लगे।

[मूल सूत्र पाठ]

कम्मेणं अप्पाणं भावेमाणे
बहुपडिपुण्णे छम्मासे सामण्ण-
परियाग पाउणइ,
अद्धमासियाए सलेहणाए
अप्पाणं झूसेइ, तीसं भत्ताइं
अणसणाए छेदेइ, छेदित्ता
जस्सट्ठाए कीरइ जाव सिद्धे ।१८।

[संस्कृत छाया]

कर्मणा आत्मानं भावयन्
बहुपरिपूर्णान् षण्मासान्
श्रामण्यपर्यायम् पालयति,
अर्द्धमासिक्या संलेखनया
आत्मानं जोषयति, त्रिंशद् भक्तानि
अनशनेन छिनत्ति, छित्वा
यस्यार्थाय क्रियते यावत् सिद्धः ।१८।

तृतीय अध्ययन समाप्त

चतुर्थ अध्ययन

उक्खेवओ चउत्थस्स अज्झयणस्स ।
एवं खलु जम्बू! तेणं कालेणं
तेणं समएणं रायगिहे णयरे
गुणसिलए चेइए ।
तत्थणं सेणिए राया । कासवे
णामं गाहावई परिवसइ,
जहा मंकाई
सोलसवासा परियाओ,
विपुले सिद्धे ।४।

उत्क्षेपकः चतुर्थस्य अध्ययनस्य ।
एवं खलु जम्बू ! तस्मिन् काले
तस्मिन् समये राजगृहं नगरं
गुणशिलकं चैत्यम् ।
तत्र खलु श्रेणिकः राजा । काश्यपः
नाम गाथापतिः परिवसति,
यथा मंकाई
पोडश रिणि पर्यायः,
(यावत्) विपुले सिद्धः ।४।

अध्ययन ५

एवं खेमए वि गाहावई,
णवरं काकंदी णयरी
सोलसवासा परियाओ
विपुले पव्वए सिद्धे ।५।

एवं क्षेमकः अपि गाथापतिः,
(नवीनं) विशेषः काकंदी नगरी
षोडशवर्षाणि पर्यायः
विपुले पर्वते सिद्धः ।५।

[हिन्दी शब्दार्थ]

भावित करते हुए छ महीने
चारित्रव्रत का पालन किया,
धे मास की संलेखना से
आत्मा को जोड़कर तीस भक्त
के अनशन को पूर्णकर जिस कार्य
के लिये व्रत ग्रहण किया था उसको
पूर्णकर यावत् सिद्ध हो गये ।

[हिन्दी अर्थ]

उस महाभाग अर्जुन मुनि ने उस उदार, श्रेष्ठ, पवित्र भाव से ग्रहण किये गये, महालाभकारी, विपुल तप से अपनी आत्मा को भावित करते हुए पूरे छ महीने मुनि चारित्र धर्म का पालन किया ।

इसके बाद आधे मास की सलेखना से अपनी आत्मा को जोडकर तीस भक्त के अनशन को पूर्ण कर जिस कार्य के लिए व्रत ग्रहण किया उसको पूर्ण कर वे अर्जुन मुनि यावत् सिद्ध वुद्ध और मुक्त हो गये ।

तृतीय अध्ययन समाप्त

अथ चतुर्थ अध्ययन

चौथे अध्ययन का उत्क्षेपक ।[२७]
तब सुधर्मा स्वामी ने कहा—हे जम्बू !
उस काल उस समय में राजगृह
नगर था वहाँ गुणशिलक उद्यान था ।
वहां श्रेणिक राजा के राज्य में
काश्यप नाम का गाथापति भी रहता था
उसने मंकाई की तरह सोलह
वर्ष की दीक्षा पर्याय का पालन किया
और विपुल पर्वत पर सिद्ध हो गये ।

जम्बू स्वामी–" हे भगवन् ! छठे वर्ग के तीसरे अध्ययन मे प्रभु ने जो भाव कहे वे सुने । अब चौथे अध्ययन मे क्या भाव कहा है वह कृपया कहिये ।"

श्री सुधर्मा स्वामी–" हे जम्वू ! उस काल उस समय राजगृह नगर मे गुणशील नामक उद्यान था । वहा श्रेणिक राजा राज्य करता था । वहा काश्यप नाम का एक गाथा पति रहता था । उसने मकाई की तरह सोलह वर्ष तक दीक्षा पर्याय का पालन किया और अन्त समय मे विपुल गिरि पर्वत पर जाकर सथारा आदि करके सिद्ध वुद्ध और मुक्त हो गये ।

अध्ययन ५

इसी प्रकार क्षेमक गाथापति भी, विशेष
बात यह है कि ये कांकदी नगरी के थे
सोलह वर्ष दीक्षा पर्याय का पालन कर
वे विपुल पर्वत पर सिद्ध हुए ।

इसी प्रकार क्षेमक गाथापति का वर्णन समझे । विशेष इतना है कि काकदी नगरी के वे निवासी थे और सोलह वर्ष का उनका दीक्षा काल रहा । यावत् वे भी विपुल गिरि पर सिद्ध हुए ।

[मूल सूत्र पाठ] [संस्कृत छाया]

अध्ययन ६

एवं धितिहरे वि गाहावई,
काकंदी णयरी सोलसवासा
परियाओ जाव विपुले सिद्धे ।६।

एवं धृतिधरोऽपि गाथापतिः,
काकंदी नगरी, षोडशवर्षाणि
पर्यायः यावत् विपुले सिद्धः। ६ ।

अध्ययन ७

एवं केलासे वि गाहावई,
णवरं सागेए णयरे, वारस
वासाइं परियाओ, विपुले सिद्धे ।७।

एवं केलासोऽपि गाथापतिः,
नवीनं साकेतं नगरं, द्वा
वर्षाणि पर्यायः, विपुले सिद्धः । ७ ।

अध्ययन ८

एवं हरिचंदणे वि गाहावई,
सागेए णयरे, वारस
व परियाओ, विपुले सिद्धे ।८।

एवं हरिचंदनः अपि गाथापतिः,
साकेतं नगरं, द्वादश
णि पर्यायः, विपुले सिद्धः । ८ ।

अध्ययन ९

एवं वारत्तए वि गाहावई,
णवरं रायगिहे णयरे, बारसवासा
परियाओ, विपुले सिद्धे ।९।

एवं वारत्तकः अपि गाथापतिः,
विशेषः राजगृहं नगरं द्वादश
णि पर्यायः, विपुले सिद्धः । ९ ।

अध्ययन १०

एवं सुदंसणे वि गाहावई,
णवरं वाणियगामे णयरे,
दूइपलासए चेइए, पंचवासा
परियाओ, विपुले सिद्धे ।१०।

एवं सुदर्शनः अपि गा तिः,
विशेषः—वाणिज्यग्रामं नगरं,
द्युतिपलाशकं चैत्यम्, पंचवर्षाणि
पर्यायः, विपुले सि : ।१०।

[हिन्दी शब्दार्थ] [हिन्दी अर्थ]

अध्ययन ६

इसी प्रकार धृतिधर गाथापति कांकदी के निवासी सोलह वर्ष दीक्षा पालकर यावत् विपुल प ॱ पर सिद्ध हो गये ।

ऐसे ही धृतिधर गाथापति का भी वर्णन समझें। वे काकदी के निवासी थे सोलह वर्ष तक मुनि चारित्र पालकर वह भी विपुलगिरि पर सिद्ध हुए ।

अध्ययन ७

इसी प्रकार के गाथापति, साकेत नगरवासी, १२ वर्ष दीक्षा पर्याय का पालन कर विपुलगिरि पर सिद्ध हुए ।

ऐसे ही कैलाश गाथापति भी थे । विशेष यह था कि ये साकेत नगर के रहने वाले थे, इन्होने बारह वर्प की दीक्षा पर्याय पाली और विपुलगिरि पर्वत पर से सिद्ध हुए ।

अध्ययन ८

इसी प्रकार हरिचंदन गाथापति, साकेत नगर वासी बारह वर्ष तक दीक्षा पालन कर विपुल पर्वत पर सिद्ध हुए ।

ऐसे ही आठवे हरिचन्दन गाथापति भी थे। वे भी साकेत नगर के निवासी थे। उन्होने भी बारह वर्ष तक श्रमण चारित्र का पालन किया और अन्त मे विपुलगिरि पर से सिद्ध हुए ।

अध्ययन ९

इसी प्रकार वारत्त गाथापति, राजगृह नगर वासी बारह वर्ष दीक्षा, अन्त में विपुल ॱ पर सिद्ध हो गये ।९।

इसी तरह नवमे वारत्त गाथापति थे। विशेष यह था कि ये राजगृह नगर के रहने वाले थे । बारह वर्ष का चारित्र पालन कर वे विपुलगिरि पर सिद्ध हुए ।

अध्ययन १०

इसी प्रकार सुदर्शन गाथापति, वाणिज्य ग्राम वासी, द्युतिपलाश उद्यान, पाँच ॱ दीक्षा पाल कर विपुलगिरि पर सिद्ध हुए ।१०।

दशवे सुदर्शन गाथापति का वर्णन भी इसी प्रकार समझें। विशेष यह था कि वाणिज्य ग्राम नगर के वाहर द्युतिपलाश नाम का उद्यान था। वहा दीक्षित हुए। पाच वर्ष वे चारित्र पालकर विपुलगिरि से सिद्ध हुए ।

[मूल सूत्र पाठ] [संस्कृत छाया]

अध्ययन ११

एवं पुण्णभद्दे वि गाहावई, वाणियगामे णयरे, पंचवासा परियाओ, विपुले सिद्धे ।११।

एवं पूर्णभद्रोऽपि गाथापतिः वाणिज्यग्रामं नगरं पंच रिण पर्यायः, विपुले सिद्धः ।११।

अध्ययन १२

एवं सुमणभद्दे वि गाहावई, सावत्थी णयरी, बहुवासा परियाओ, विपुले सिद्धे ।१२।

एवं सुमनभद्रोऽपि गाथापतिः, श्रावस्ती नगरी, बहुवर्षाणि पर्यायः, विपुले सिद्धः ।१२।

अध्ययन १३

एवं सुपइट्ठे वि गाहावई, सावत्थी णयरी, सत्तावीसं वासा परियाओ, विपुले सिद्धे ।१३।

एवं सुप्रतिष्ठोऽपि गाथापतिः, श्रावस्ती नगरी, सप्तविंशति वर्षाणि पर्यायः, विपुले सिद्धः ।१३।

अध्ययन १४

एवं मेहे वि गाहावई, रायगिहे णयरे बहूहिं वासाइं परियाओ, विपुले सिद्धे ।१४।

एवं मेघोऽपि गाथापतिः, राजगृहं नगरं, बहूनि वर्षाणि पर्यायः, विपुले सिद्धः ।१४।

चतुर्दश अध्ययनानि समाप्तानि

अथ पंचदशम अध्ययन

सूत्र १

उक्खेवओ पण्णरसमस्स अज्झयणस्स ।

उत्क्षेपकः पंचदश अध्ययनस्य ।

[हिन्दी शब्दार्थ] [हिन्दी अर्थ]

अध्ययन ११

इसी प्रकार पूर्णभद्र गाथापति वाणिज्य-ग्राम नगर वासी, पाँच ॱ चारित्र पालन कर विपुलगिरि पर सिद्ध हुए ।

पूर्णभद्र गाथापति का वर्णन भी ऐसे ही समझें । विशेष यह था कि वे वाणिज्य ग्राम नगर के रहने वाले थे । पाच वर्ष का चारित्र पालन कर वह भी विपुलाचल पर्वत पर सिद्ध हुए ।

अध्ययन १२

इसी प्रकार सुमनभद्र गाथापति, श्रावस्ती नगरी। बहुत र्ों तक दीक्षा पालन कर विपुलाचल पर सिद्ध हुए ।१२।

सुमनभद्र गाथापति का वर्णन भी ऐसे ही समझें । ये श्रावस्ती नगरी के निवासी थे । बहुत वर्ष तक मुनि चारित्र का पालन कर विपुलगिरि पर सिद्ध हुए ।

अध्ययन १३

इसी प्रकार सुप्रतिष्ठ गाथापति। श्रावस्ती नगरी । सत्ताईस ॱ चारित्र पालकर विपुलगिरि पर सिद्ध हुए ।१३।

ऐसे ही सुप्रतिष्ठ गाथापति को भी समझें । ये भी श्रावस्ती नगरी के रहने वाले थे और सत्ताईस वर्ष का श्रमण चारित्र पालन पर विपुलगिरि पर सिद्ध हुए ।

अध्ययन १४

इसी प्रकार मेघ गाथापति । राजगृह वासी । बहुत वर्ष चारित्र पालकर विपुलगिरि पर सिद्ध हुए ।१४।

मेघ गाथापति को भी ऐसे ही समझें । ये राजगृह नगर के निवासी थे । बहुत वर्ष चारित्र धर्म का पालन कर विपुलगिरि पर सिद्ध हुए ।

चौदह अध्ययन समाप्त

पन्द्रहवां अध्ययन

सूत्र १

पन्द्रहवे अध्ययन का उत्क्षेपक ।[२८]

श्री जम्बू स्वामी— "हे भगवन्! चौदह अध्ययनो का भाव मैंने सुना । अब पन्द्रहवें अध्ययन मे प्रभु ने क्या भाव कहा है कृपा कर बतलावे ।" आर्य सुधर्मा कहते हैं—

[मूल सूत्र पाठ]

एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं
तेणं समयेणं पोलासपुरे
णयरे, सिरीवणे उज्जाणे ।
तत्थ णं पोलासपुरे णयरे
विजए णामं राया होत्था ।
तस्स णं विजयस्स रण्णो
सिरी णामं देवी होत्था,
वण्णओ ।
तस्सणं विजयस्स रण्णोपुत्ते
सिरीए देवीए अत्तए अइमुत्ते
णामं कुमारे होत्था ।
सुकुमाले ।
तेणं कालेणं तेणं समएणं
समणे भगवं महावीरे जाव
सिरीवणे विहरइ । तेणं
कालेणं तेण समएणं समणस्स
भगवओ महावीरस्स जेट्ठे
अंतेवासी इंदभूई, जहा
पण्णत्तीए जाव पोलासपुरे
णयरे उच्चणीय जाव इ ।१।

[संस्कृत छाया]

एवं खलु जम्बू ! तस्मिन् काले
तस्मिन् समये पोलासपुरम्
नगरम् श्रीवनम् उद्यानम् ।
तत्र खलु पोलासपुरे नगरे
विजयो नाम राजा अभवत्,
तस्य खलु विजयस्य राज्ञः
श्री नाम देवी आसीत् ।
वर्ण्या ।
तस्य खलु विजयस्य राज्ञः पुत्रः
श्रीदेव्याः आत्मजः अतिमुक्तः
नाम कुमारः आसीत् ।
सुकोमलः ।
तस्मिन् काले तस्मिन् समये
श्रमणो भगवान् महावीरः यावत्
श्रीवने विहरति । तस्मिन्
काले तस्मिन् समये श्रमणस्य
भगवतः महावीरस्य ज्येष्ठः
अन्तेवासी इन्द्रभूति, यथा
प्रज्ञप्त्य ˎ तथा पोलासपुरे
नगरे उच्चनीचं यावत् अटति ।१।

सूत्र २

इमं च णं अइमुत्ते कुमारे
ण्हाए जाव विभूसिए
बहूहिं दारएहिं य दारियाहिं
य, डिंभएहिं य डिंभियाहिं य,

अस्मिन् च खलु (काले) अतिमुक्तः
कुमारः स्नातः यावत् विभूषि :
बहुभिः दारकैश्च दारिकाभिश्च
डिंभकैश्च डिंभिकाभिश्च

[हिन्दी शब्दार्थ]

हे जम्बू ! उस काल उस समय में पोलासपुर नामक नगर व श्रीवन नामक उद्यान था। उस पोलासपुर नामक नगर में विजय नामक राजा राज्य करता था उसकी श्रीदेवी नाम की महारानी थी, जो कि वर्णन करने योग्य थी। महाराज विजय का पुत्र और श्री देवी का आत्मज अतिमुक्त नामक कुमार था, जो कि सुकोमल था। उस काल उस समय में श्रमण भगवान महावीर विचरते हुए श्रीवन में पधारे। उस काल उस समय श्रमण भगवान् महावीर के ज्येष्ठ शिष्य इन्द्रभूति भगवती सूत्र के वर्णन के अनुसार यावत् पोलासपुर नगर में बडे छोटे कुलो मे भ्रमण करने लगे।

[हिन्दी अर्थ]

'निश्चय ही हे जवू! उस काल उस समय मे पोलासपुर नामक नगर था, वहा श्रीवन नामक उद्यान था। उस नगर मे विजय नाम का राजा था जिस की श्रीदेवी नाम की महारानी थी, जो वर्णन योग्य थी।

महाराजा विजय का पुत्र और श्रीदेवी का आत्मज अतिमुक्त नाम का एक कुमार था जो बडा सुकुमाल था।

उस काल उस समय श्रमण भगवान् महावीर विचरते हुए श्रीवन उद्यान मे पधारे।

उस काल उस समय श्रमण भगवान् महावीर के ज्येष्ठ शिष्य इन्द्रभूति भगवती सूत्र मे जैसे भगवान से पूछकर भिक्षार्थ जाने का वर्णन किया गया वैसे ही यावत् उस पोलासपुर नगर मे छोटे वडे कुलो मे सामूहिक भिक्षा हेतु भ्रमण करने लगे।

सूत्र २

इधर अतिमुक्त कुमार स्नान करके यावत् विभूषित होकर बहुत से लड़के लड़कियो, वालक वालिकाओं एवं कुमार

इधर अति मुक्त कुमार स्नान करके यावत्, शरीर की विभूपा करके वहुत से लडके लडकियो, वालक वालिकाओ और कुमार कुमारिकाओ के साथ अपने घर से

[मूल सूत्र पाठ]

कुमारएहि य कुमारियाहि य
सद्धिं संपरिवुडे सयाओ गिहाओ
पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता
जेणेव इंदट्ठाणे तेणेव
उवागए। तेहिं बहूहि
दारएहि य दारियाहिं य
डिंभएहि य डिंभियाहि य
कुमारएहिं य कुमारियाहिं य
सद्धि सपरिवुडे अभिरममाणे
अभिरममाणे विहरइ।
तएणं भगवं गोयमे पोलासपुरे
णयरे उच्चणीय जाव अडमाणे
इदट्ठाणस्स अदूरसामन्तेणं
वीइवयइ।
तए णं से अइमुत्ते कुमारे
भगवं गोयम अदूरसामंतेणं
वीईवयमाणं पासइ, पासित्ता
जेणेव भगवं गोयमे तेणेव
उवागए। भगवं गोयमं
एवं वयासी—के णं भंते!
तुब्भे, किं वा अडह? ।२।

[संस्कृत छाया]

कुमारैश्च कुमारिकाभिश्च
सार्द्धं संपरिवृत्तः स्वकाद् गृहात्
प्रतिनिष्क्राम्यति, प्रतिनिष्क्रम्य
यत्रैव इन्द्रस्थानं तत्रैव
उपागतः। तत्र बहुभिः
दारकैश्च दारिकाभिश्च
डिंभकैश्च डिंभिकाभिश्च
कुमारकैश्च कुमारिकाभिश्च
सार्द्धं संपरिवृतः अभिर णः
अभिर रणः विहरति।
तदा खलु भगवान् गौतमः पोलासपुरे
नगरे उच्चनीच यावत् अटमानः
इन्द्रस्थानस्य अदूरसामन्तेन
व्यतिव्रजति।
: खलु सः अतिमुक्तः कुमारः
भगवन्तं गौतमं अदूरसामन्तेन
व्यतिव्रजन्तं पश्यति, दृष्ट्वा
यत्रैव भगवान् गौतमः तत्रैव
उपागतः। भगवन्तं गौ
एवमवदत्—"के खलु हे भदन्त
यूयम्? किं वा अटथ?"

सूत्र ३

तए णं भगवं गोयमे अइमुत्तं
कुमारं एवं वयासी—
"अम्हे णं देवाणुप्पिया!
समणा णिग्गंथा इरियासमिया

: खलु भगवान् गौतमः अतिमुक्तं
कुमारमेवमवदत्—
"वयं खलु हे देवानुः !
श्रमणाः निर्ग्रन्थाः ईर्यासमिताः

[हिन्दी शब्दार्थ]

कुमारिकाओ के साथ घिरा हुआ
अपने घर से निकला,
निकलकर जहाँ इन्द्र का स्थान
(क्रीड़ा स्थान) है वहाँ पर
आये। वहाँ आकर उन बहुत से
बच्चे बच्चियो
लड़के लड़कियों एवं
कुमार कुमारिकाओ के
साथ उनसे घिरा हुआ प्रेम पूर्वक
खेलते हुए विचरण करने लगा।
तभी भगवान गौतम पोलास
पुर नगर में छोटे बड़े कुलों में
यावत् भ्रमण करते हुए क्रीड़ास्थल
के पास से जारहे थे।
इसी समय अति[illegible]क्त कुमार ने
भगवान् गौतम को पास से ही
जाते हुए देखा, देखकर
जहाँ भगवान गौतम थे वहाँ
आये और भगवान् गौतम से
इस प्रकार बोले—"हे पूज्य! आप
कौन हैं और क्यो घूम रहे है ?"

[हिन्दी अर्थ]

निकले और निकल कर जहा इन्द्र-स्थान यानि क्रीडास्थल है वहा आये वहा उन बालक बालिकाओ के साथ वे प्रेम पूर्वक खेलने लगे।

उस समय भगवान् गौतम पोलासपुर नगर मे छोटे बडे कुलो मे यावत् भ्रमण करते हुए उस क्रीडा स्थल के पास से जा रहे थे, अब अतिमुक्त कुमार ने उन को पास से जाते हुए देखकर उनके पास आये और उनसे इस प्रकार बोले– "हे पूज्य! आप कौन हैं और इस तरह क्यो घूम रहे है ?"

तब भगवान् गौतम ने अतिमुक्तकुमार को उत्तर देते हुए इस तरह कहा– "हे देवानु-

सूत्र ३

तब भगवान् गौतम ने अतिमुक्त
कुमार को इस प्रकार कहा—
"हे देवानुप्रिय! हम श्रमण निर्ग्रन्थ
है, ईर्यासमिति आदि सहित यावत्

प्रिय! हम श्रमण-निर्ग्रन्थ, ईर्यासमिति के धारक गुप्त ब्रह्मचारी है और छोटे बडे कुलो मे भिक्षार्थ भ्रमण करते हैं।"

[मूल सूत्र पाठ]

जाव बंभयारी उच्चणीय जाव
अडामो ।"
तए णं अइमुत्ते कुमारे
भगवं गोयमं एवं वयासी—
"एह णं भन्ते ! तुब्भे, जण्णं अहं
तुब्भं भिक्खं दवावेमि ।"
त्ति कट्टु भगवं गोयमं अंगुलीए
गिण्हइ, गिण्हित्ता, जेणेव सए गिहे
तेणेव उवागए ।
तए णं सा सिरीदेवी भगवं गोयमं
एज्जमाणं पासइ, पासित्ता, हट्ठतुट्ठ
जाव आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भु-
ट्ठित्ता, जेणेव भगवं गोयमे
तेणेव उवागया ।
भगव गोयमं तिक्खुत्तो-आयाहिण
पयाहिणं करेइ, करित्ता, वंदइ,
णमंसइ, वंदित्ता, णमसित्ता
विउलेणं असणपाणखाइमसाइमेणं
पडिलाभेइ जाव पडिविसज्जेइ ।३।

[सस्कृत छाया]

यावत् ब्रह्मचारिणः उच्चनीच
यावदटामः ।"
ततः खलु अतिमुक्तः कुमारः
भगवन्तं गौतममेवमवदत्—
"इह खलु (आगच्छत) भदन्त! यूयं येनाहं
युष्मभ्यं भिक्षा दापयामि ।"
इति कृत्वा भगवन्तं गौतमं अंगुल्याम्
गृह्णाति, गृहीत्वा यत्रैव स्वकं गृहम्
तत्रैव उपागतः ।
ततः खलु सा श्रीदेवी भगवन्तं गौतमं
आगच्छंतं पश्यति, दृष्ट्वा, हृष्टतुष्टा
यावत् आसनादभ्युत्तिष्ठति,
अभ्युत्थाय, यत्रैव भगवान् गौतमः
तत्रैव उपागता ।
भगवन्तं गौ त्रिःकृत्वा आदक्षिण
प्रदक्षिणां करोति, कृत्वा, वंदते,
नमस्यति, वन्दित्वा, नमस्यित्वा
विपुलेन नपानखाद्यस्वाद्येन
प्रतिलभ्यति यावत् प्रतिविसर्जयति ।३।

सूत्र ४

तए णं से अइमुत्ते कुमारे भगवं
गोयमं एवं वयासी—
"कहिणं भन्ते! तुब्भे परिवसह ?"
तए णं भगवं गोयमे अइमुत्तं
कुमारं एवं वयासी—
"एव खलु देवाणुप्पिया ! मम

ततः खलु सः अति ुक्तः कुमारः भगवन्तं
गौतमम् एवमवदत्—
"क्व नु भदन्त ! यूयं परिवसथ ?"
ततः खलु भगवान् गौतमः अतिमुक्तं
कुमारं एवमवदत्—
"एवं खलु देवानुि ! मम

[हिन्दी शब्दार्थ]

ब्रह्मचारी है छोटे बड़े कुलो
मे भिक्षार्थ भ्रमण करते है।"
तब अतिमुक्त कुमार भगवान
गौतम से इस प्रकार कहने लगे—
"हे भगवन्! आप इधर पधारें जिससे
मैं आपको भिक्षा दिलाता हूँ।"
ऐसा कहकर भगवान गौतम की अंगुली
पकड़ी, पकड़कर जहाँ अपना घर था
वहाँ पर ही ले आये।
फिर उस श्री देवी ने भगवान् गौतम को
आते हुए देखा, देख कर हृष्टतुष्ट
बनी यावत् अपने आसन से उठी,
उठकर जहाँ भगवान गौतम
थे वहाँ आई।
भगवान गौतम को तीन बार
दक्षिण तरफ से प्रदक्षिणा करती है
करके वन्दन नमस्कार करती है, करके
बहुत से न पान खाद्य स्वाद्य से
प्रतिलाभ दिया यावत् विसर्जित किया।

[हिन्दी अर्थ]

यह सुनकर अतिमुक्तकुमार भगवान् गौतम से इस प्रकार बोले—"हे भगवन्! आप आओ! मै आपको भिक्षा दिलाता हू।"

ऐसा कहकर अतिमुक्तकुमार ने भगवान् गौतम की अगुली पकडी और उनको जहा अपना घर था वहा ले आये।

श्रीदेवी महारानी भगवान् गौतम को आते देखकर बहुत ही प्रसन्न हुई यावत् आसन से उठकर जहा भगवान् गौतम थे उनके सम्मुख आई, और भगवान् गौतम को तीन बार दक्षिण तरफ से प्रदक्षिणा करके वदना की, नमस्कार किया। फिर विपुल अशन-पान खादिम और स्वादिम से प्रतिलाभ दिया यावत् विधि पूर्वक विसर्जित किया।

सूत्र ४

इसके बाद अतिमुक्त कुमार भगवान
गौतम से इस प्रकार बोले—
"हे देवानुप्रिय! आप कहाँ रहते है?"
गौतम स्वामी ने इस पर अतिमुक्त
कुमार से कहा—
"हे देवानुप्रिय! मेरे धर्माचार्य

इसके बाद भ० गौतम से अतिमुक्तकुमार यो बोले—"हे देवानुप्रिय! आप कहा रहते है?"

इस पर भगवान् गौतम ने अतिमुक्तकुमार को उत्तर दिया— "हे देवानुप्रिय! मेरे धर्माचार्य और धर्मोपदेशक भगवान् महावीर धर्म की आदि करने वाले

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
धम्मायरिए धम्मोवएसए भगवं महावीरे आइगरे जाव संपाविउकामे, इहेव पोलासपुरस्स णयरस्स बहिया सिरिवणे उज्जाणे अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ, तत्थ णं अम्हे परिवसामो ।" तए णं से अइमुत्ते कुमारे भगवं गोयमं एवं वयासी— "गच्छामि णं भन्ते ! अहं तुब्भेहिं सद्धिं समणं भगवं महावीरं पायवंदए ?" "अहासुहं देवाणुप्पिया !"	धर्माचार्यो धर्मोपदेशको भगवान् महावीरः आदिकरः यावत् संप्राप्तुकामः इहैव पोलासपुरात् नगरात् बहिः श्रीवने उद्याने यथाप्रतिरूपं अवग्रहमवगृह्य संयमेन तपसा आत्मानं भावमानः विहरति, तत्र खलु वयं परिवसामः ।" ततः खलु सः अतिमुक्तः कुमारः भगवन्तं गौतमम् एवमवदत्— "गच्छामि खलु भदन्त ! अहं युष्माभिः सार्द्धं श्रमणं भगवन्तं महावीरं पादवन्दितुम् ?" "यथासुखं देवानुप्रिय !"

सूत्र ५

तएणं से अइमुत्ते कुमारे गोयमेणं सद्धिं जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं त्तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करित्ता वंदइ जाव पज्जुवासइ । तएणं भगवं गोयमे जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागए । जाव पडिदंसेइ, पडिदंसित्ता, संजमेणं तवसा अप्पाणं-भावेमाणे विहरइ ।	ततः सोऽतिमुक्तः कुमारः गौतमेन सार्द्धं यत्रैव श्रमणः भगवान् महावीरः तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य श्रमणं भगवन्तं महावीरं त्रिःकृत्वा आदक्षिण-प्रदक्षिणां करोति, कृत्वा वन्दते यावत् पर्युपासते । ततः खलु भगवान् गौ : यत्रैव श्रमणः भगवान् महावीरः तत्रैव उपागतः । यावत् प्रतिदर्शयति, प्रतिदर्श्य, संयमेन तपसा आत्मानं भावमानः विहरति ।

[हिन्दी शब्दार्थ]

धर्मोपदेशक धर्म के आदिकर
यावत् मोक्षकेकामो भगवान् महावीर
इसी पोलासपुर नगर के बाहर
श्रीवन नामक उद्यान मे यथाकल्प
अवग्रह लेकर संयम एव तप से
आत्मा को भावित करते हुए विचरण
कर रहे है। हम वहाँ पर ही रहते है।"
तब अतिमुक्त कुमार भगवान गौतम
से इस प्रकार बोले—
"हे पूज्य ! मै भी चलूँ आपके साथ
श्रमण भ० महावीर को
वन्दन करने?"
"हे देवानुप्रिय! जैसे सुख हो वैसे करो।"

[हिन्दी अर्थ]

यावत् मोक्ष के कामी! इसी पोलासपुर नगर के बाहर श्रीवन उद्यान मे मर्यादानुसार अवग्रह लेकर सयम एव तप से आत्मा को भावित कर विचरते हैं, हम वही रहते हैं।"

अतिमुक्त कुमार– "हे पूज्य! क्या मै भी आपके सग श्रमण भगवान् महावीर को वदन करने चलू ?

श्री गौतम– "हे देवानुप्रिय! जैसा तुम्हे सुख हो।"

सूत्र ५

इसके बाद वह अतिमुक्त कुमार
गौतम स्वामी के साथ जहां श्रमण
भगवान महावीर थे वहां आये,
आकर श्रमण भगवान महावीर को
तीन बार दक्षिण तरफ से प्रदक्षिणा
करते है, करके यावत् वन्दन नमस्कार
करके उनकी सेवा करने लगे।
तभी भगवान गौतम श्रमण भगवान
महावीर के समीप आये यावत्
आहार दिखाया दिखाकर
संयम तप से आत्मा को भावित
करते हुए विचरने लगे।

तव अतिमुक्तकुमार गौतम स्वामी के साथ श्रमण भगवान् महावीर स्वामी के पास आये और आकर श्रमण भगवान् महावीर को तीन बार दक्षिण तरफ से प्रदक्षिणा की और वदना करके पर्युपासना करने लगे।

इधर भगवान् गौतम भगवान् महावीर के समीप आये और उन्हे लाया हुआ आहार पानी दिखा कर सयम तथा तप से अपनी आत्मा को भावित करते हुए विचरने लगे।

(मूल सूत्र पाठ)

तएणं समणे भगवं महावीरे
अइमुत्तस्स कुमारस्स
धम्मकहा ।
तएणं से अइमुत्ते कुमारे समणस्स
भगवओ महावीरस्स अंतिए
धम्मं सोच्चा णिसम्म
हट्ठतुट्ठ
"ज णवरं देवाणुप्पिया !
अम्मापियरो आपुच्छामि ।
तएण अहं देवाणुप्पियाणं
अंतिए जाव पव्वयामि ।"
"अहासुहं देवाणुप्पिया !
मा पडिबधं करेह !" ।५।

(संस्कृत छाया)

ततः खलु श्रमणो भगवान् महावीरः
अतिमुक्ताय कुमाराय
धर्मकथा (कथितवान्)।
ततः खलु सः अतिमुक्तः कुमारः
श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य अंतिके
धर्म श्रुत्वा, निशम्य
हृष्टः तुष्टः
"यो विशेषः हे देवानुप्रिय !"
अम्बापितरौ आपृच्छामि ।
ततः खलु अहं देवानुप्रियाणा-
मन्तिके यावत् प्रव्रजामि ।"
"यथासुखं देवानुप्रिय !
मा प्रतिबंध कुरु ।"

सूत्र ६

तएणं से अइमुत्ते कुमारे
जेणेव अम्मापियरो तेणेव
उवागए जाव पव्वइत्तए ।
अइमुत्तं कुमारं अम्मापियरो
एवं वयासी—
"बाले सि ताव तुमं पुत्ता !
असंबुद्धे सि तुमं पुत्ता !
किण्णं तुमं जाणासि धम्मं ?"
तए णं से अइमुत्ते कुमारे
अम्मापियरो एवं वयासी—
"एवं खलु अहं अम्मयाओ
जं चेव जाणामि, तं चेव ण

ततः खलु सः अतिमुक्तः कुमारः
यत्रैव अम्बापितरौ तत्रैव
उपागतः यावत् प्रव्रजितुम् ।
अतिमुक्तं कुमारं अम्बापितरौ
एवमवदताम्—
"बालः असि तावत् त्व पुत्र !
असंबुद्धः असि त्वं पुत्र !
किं खलु त्वं जानासि धर्मम् ?"
ततः खलु सः अतिमुक्तः कुमारः
अम्बापितरौ एवमवदत्—
"एवं खलु अहं मातापितरौ !
यत् चैव अहं जानामि तत् चैव न

(हिन्दी शब्दार्थ)

तब श्रमण भगवान महावीर ने
अतिमुक्त कुमार को
(उद्देश्य करके) धर्मकथा सुनाई।
तब वह अतिमुक्त कुमार श्रमण
भगवान महावीर के पास
धर्मकथा सुनकर और उसे
धारण कर बहुत प्रसन्न हुआ।
"यह विशेष (बोले) हे देवानुप्रिय !
मै माता-पिता से पूछता हूं।
तब मै देवानुप्रिय के पास यावत्
दीक्षा ग्रहण करुंगा।"
"हे देवानुप्रिय ! जैसे सुख हो वैसे करो
परन्तु धर्मकार्य मे प्रमाद मत करो।"

(हिन्दी अर्थ)

तब श्रमण भगवान् महावीर ने अतिमुक्त कुमार को धर्म कथा सुनाई। धर्म कथा सुनकर और उसे धारण कर अतिमुक्त कुमार बडे प्रसन्न हुए और बोले- "हे देवानुप्रिय! मै अपने माता पिता को पूछकर फिर आपकी सेवा मे श्रमण दीक्षा ग्रहण करूगा।"

भगवान् बोले- 'हे देवानुप्रिय! जैसे तुम्हे सुख हो वैसे करो। पर धर्म कार्य मे प्रमाद मत करो।"

सूत्र ६

तब वह अतिमुक्त कुमार जहां अपने
माता-पिता थे वहां आये और
यावत् दीक्षा लेने की आज्ञा मांगी।
अतिमुक्त कुमार को माता-पिता
ने इस प्रकार कहा—
"हे पुत्र ! अभी तुम बालक हो।
हे पुत्र ! अभी तुम असंबुद्ध हो।
तुम धर्म को क्या जानो ?"
तब अतिमुक्त कुमार ने
माता पिता से इस प्रकार कहा—
"हे माता पिता ! मै जिसको जानता
हूं उसी को नही जानता हूं

इसके पश्चात् अतिमुक्तकुमार अपने माता-पिता के पास आकर बोले- "अम्ब! आपकी आज्ञा पाकर मै दीक्षा लेना चाहता हू।"

इस पर माता-पिता अतिमुक्तकुमार से इस प्रकार बोले- "हे पुत्र! अभी तुम बालक हो, असबुद्ध हो। अभी धर्म को तुम क्या जानो?"

अतिमुक्तकुमार- 'हे माता पिता! मैं जिसको जानता हू, उस को नही जानता। और जिसको नही जानता हू उसको जानता हू।"

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
जाणामि, जं चेव ण जाणामि	जानामि, ैव न जानामि
तं चेव जाणामि ।"	तच्चैव जानामि ।"
तए णं तं अइमुत्तं कुमारं	ततः खलु तं अतिमुक्तं कुमारं
अम्मापियरो एवं वयासी—	अम्बापितरौ एवमवदताम्—
"कहं णं तुमं पुत्ता ! जं चेव	"कथं खलु त्वं पुत्र ! यच्चैव
जाणासि तं चेव ण जाणासि,	जानासि तच्चैव न जानासि,
जं चेव ण जाणासि तं चेव जाणासि? "	यच्चैव न जानासि ैव जानासि ?"

सूत्र ७

तए ण से अइमुत्ते कुमारे अम्मा-	ततः खलु सः अतिमुक्तः कुमारः
पियरो एवं वयासी—	अम्बापितरौ एवमवदत्—
"जाणामि अहं अम्मयाओ !	"जानामि अहम् अम्बतातौ !
जहा जाएणं अवस्सं मरियव्वं,	यथा जातेन अवश्यं मर्तव्यम्,
ण जाणामि अहं अम्मयाओ !	न जानामि अहम् अम्बतातौ !
काहे वा कहिं वा कहं वा	कदा वा कुत्र वा कथं वा
केवच्चिरेण वा ?	कियच्चिरेण वा ?
ण जाणामि अहं अम्मयाओ !	न जानामि अहम् अम्बतातौ !
केहिं कम्मायणेहिं जीवा	कैः कर्मायतनैः जीवाः
णेरइयतिरिक्खजोणिय-	नैरयिकतिर्यग्योनिक
मणुस्सदेवेसु उववज्जंति,	मनुष्यदेवेषु उपपद्यंते (उत्पद्यन्ते)?
जाणामि णं अम्मयाओ !	जानामि खलु अम्ब तातौ !
जहा सएहिं कम्मायणेहिं	यथा स्वकैः कर्मायतनैः
जीवा णेरइय जाव उववज्जंति ।	जीवाः नैरयिक यावद् उपपद्यंते ।
एवं खलु अहं अम्मयाओ !	एवं खलु अहं अम्बतातौ !
जं चेव जाणामि तं चेव ण	यच्चैव जानामि, ैव न
जाणामि, जं चेव ण जाणामि	जानामि, यच्चैव न जानामि
त चेव जाणामि ।	तच्चैव जानामि ।

[हिन्दी शब्दार्थ]

जिसको नही जानता हूं
उसी को जानता हूं।"
तब उस अतिमुक्त कुमार से
माता पिता इस प्रकार बोले—
"हे पुत्र ! यह कैसे है कि तुम जिसको
जानते हो उसीको नही जानते हो
जिसे नहीं जानते हो उसको जानते हो?"

[हिन्दी अर्थ]

माता पिता– "पुत्र ? तुम जिसको जानते हो उसको नही जानते और जिसको नही जानते उसको जानते हो, यह कैसे ?"

सूत्र ७

तब वह अतिमुक्त कुमार
माता पिता से इस प्रकार बोले—
"हे माता पिता ! मै इतना जानता हूं
कि जो जन्मा है वह अवश्य मरेगा
परन्तु मै यह नही जानता कि
कब, कहॉ, कैसे तथा
कितने समय बाद मरेगा ?
मै नहीं जानता हे माता पिता !
किन कर्मो द्वारा जीव नरक, तिर्यंच
मनुष्य और देव योनियों में
उत्पन्न होते है ? परन्तु यह मै
अवश्य जानता हूं कि जीव अपने
कर्मो से नरक आदि योनियों
को प्राप्त होते है।
हे माता-पिता ! इसीलिए मैने कहा
कि जिसको जानता हू उसको नही
जानता हू तथा जिसको नही जानता हू
उसी को जानता हू ।

अतिमुक्तकुमार– "हे माता पिता ! मैं जानता हू कि जो जन्मा है उसको अवश्य मरना होगा, पर यह नही जानता कि कब, कहा, किस प्रकार और कितने दिन बाद मरना होगा। फिर मै यह भी नही जानता कि जीव किन कर्मो के कारण नरक, तिर्यंच, मनुष्य और देवयोनि मे उत्पन्न होते है, पर इतना जानता हू कि जीव अपने ही कर्मों के कारण नरक यावत् देवयोनि मे उत्पन्न होते हैं।"

इस प्रकार निश्चय ही हे माता पिता ! मै जिसको जानता हू उसी को नही जानता और जिसको नही जानता उसी को जानता हू। अत हे माता पिता ! मैं आपकी आज्ञा होने पर यावत् प्रव्रज्या लेना चाहता हू।"

[मूल सूत्र पाठ]

तं इच्छामि णं अम्मयाओ !
तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए जाव
पव्वइत्तए ।"
तए णं तं अइमुत्तं कुमारं
अम्मापियरो जाहे णो संचाएंति
बहूहिं आघवणाहिं
जाव तं इच्छामो ते जाया !
एगदिवसमवि रायसिरिं
पासेत्तए ।
तए ण से अइमुत्ते कुमारे
अम्मापिउवयणमणुवत्तमाणे
तुसिणीए संचिट्ठइ ।
अभिसेओ जहा महाबलस्स[२६]
णिक्खमणं जाव सामाइयमाइ-
याइ एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ,
बहूइं वासाइं सामण्ण
परियाओ, गुणरयणं जाव
विपुले सिद्धे ।७।

[संस्कृत छाया]

तद् इच्छामि खलु अम्बतातौ!
युवाभ्यामभ्यनुज्ञातो यावत्
प्रव्रजितुम् ।"
ततः खलु तं अतिमुक्तं कुमारं
अम्बापितरौ यदा न शक्नुवन्तः
बहुभिः आख्यायनाभिः
यावत् तत् इच्छावः ते पुत्र !
एक दिवसमपि राज्यश्रियं
द्रष्टुम् ।
ततः खलु सः अतिमुक्तः कुमारः
मातापितृवचनमनुवर्तमानः
तूष्णीकः संतिष्ठते ।
अभिषेको यथा महाबलस्य[२६]
निष्क्रमणं यावत् सामायि-
काद्येकादश-अंगानि अधीते,
बहूनि वर्षाणि श्रामण्य
पर्यायः, गुणरत्ननामकं तपः
यावत् विपुले सिद्धः ।

इति पंचदशाध्ययनम्

षोडशमाध्ययनम्

सूत्र १

उक्खेवओ सोलसमस्स अज्झयणस्स
एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं
समएणं वाणारसीए णयरीए,

उत्क्षेपकः षोडशमस्य अध्ययनस्य
एवं खलु जम्बू ! तस्मिन् काले
तस्मिन् समये वाणारस्यां नगर्यां

[हिन्दी शब्दार्थ]

इसलिए मेरी इच्छा है कि मै आपकी आज्ञा लेकर भगवान् महावीर प्रभु के पास प्रव्रजित हो जाऊँ ।" तब अतिमुक्त कुमार को माता-पिता जब बहुत सी युक्ति प्रयुक्तियों से समझाने में समर्थ नही हुए तब बोले–"हे पुत्र ! हम एकदिन के लिए तुम्हारी राज्यलक्ष्मी देखना चाहते है ।" तब अतिमुक्तकुमार माता-पिता के वचन का अनुवर्तन करते हुए मौन रहे । तब महाबल[30] के समान उनका राज्याभिषेक हुआ और निष्क्रमरण हुआ यावत् सामायिक आदि ग्यारह अंग पढ़े । बहुत वर्षों तक चारित्र पाला, गुण रत्न तप का आराधन किया, यावत् विपुलाचल पर सिद्ध हुए ।

[हिन्दी अर्थ]

अतिमुक्तकुमार को माता पिता जब बहुत सी युक्ति-प्रयुक्तियो से समझाने मे समर्थ नही हुए, तो बोले–"हे पुत्र! हम एक दिन के लिए तुम्हारी राज्यलक्ष्मी की शोभा देखना चाहते है ।"

तब अतिमुक्तकुमार माता पिता के वचन का अनुवर्तन करके मौन रहे ।

तब महाबल[30] के समान उनका राज्याभिषेक हुआ । फिर भगवान् के पास दीक्षा लेकर सामायिक आदि ग्यारह अगो का अध्ययन किया । बहुत वर्षो तक श्रमण चारित्र का पालन किया । गुण रत्न तप का आराधन किया । यावत् विपुलाचल पर्वत पर सिद्ध हुए ।

श्री जम्बू–"हे भगवन्! पन्द्रहवे अध्ययन का भाव सुना । अब सोलहवे अध्ययन मे प्रभु ने क्या अर्थ कहा है ? कृपा कर बताइये ।"

इति पंचदशाध्ययन

सोलहवां अध्ययन

सूत्र १

सोलहवें अध्ययन का उत्क्षेपक हे जम्बू ! उस काल उस समय मे वाणारसी नगरी मे

श्री सुधर्मा स्वामी– "हे जबू! उस काल उस समय वाणारसी नगरी मे काम महावन

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
काममहावणे चेइए तत्थ णं वाणारसीए अलक्खे णामं राया होत्था।	काममहावनं चैत्यं तत्र खलु वाणारस्यां अलक्षः नाम राजा अभवत्।
तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे जाव विहरइ।	तस्मिन् काले तस्मिन् समये श्रमणः भगवान् महावीरः यावत् विहरति।
परिसा णिग्गया।	परिषद् निर्गता।
तए णं अलक्खे राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठतुट्ठ जहा कूणिए[31] जाव पज्जुवासइ,	ततः खलु अलक्षो राजा अस्याः कथायाः लब्धार्थः सन् हृष्टः तुष्टः यथा कूणिको[31] यावत् पर्युपासते। (भगवता अलक्षमुद्दिश्य)
धम्मकहा। तए णं से अलक्खे राया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए जहा उदायणे[32] तहा णिक्खंते, णवरं जेट्ठं पुत्तं रज्जे अहिसिंचइ,	धर्मकथाकथिता। ततःखलु सःअलक्षः राजा श्रमणस्य भगवतः महावीरस्य अंतिके यथा उदायनः[32] तथा निष्क्रान्तः, विशेषः ज्येष्ठं पुत्रं राज्ये अभिषिचति,
एक्कारस अंगाइं, बहुवासा परियाओ, जाव विपुले सिद्धे।	एकादशांगानि अधीते बहुवर्षाणि पर्यायः, यावत् विपुले सिद्धः।
एव खलु जंबू! समणेणं जाव छट्ठ वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते।१।	एवं खलु जम्बू! श्रमणेन यावत् षष्ठमस्य वर्गस्य अयमर्थः प्रज्ञप्तः।१।

इति षष्टमः वर्गः

सप्तमः वर्गः

सूत्र १

जइ णं भन्ते! सत्तमस्स वग्गस्स उक्खेवओ,[33]	यदि खलु भदन्त! सप्तमस्य वर्गस्य उत्क्षेपक,[33]

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
जाव तेरस अज्झयणा	यावत् त्रयोदशानि अध्ययनानि
पण्णत्ता । तं जहा—	प्रज्ञप्तानि । तानि यथा—
नंदा तह नंदवई,	नन्दा तथा नन्दवती,
नंदोत्तर-नंदसेणिया चेव ।	नन्दोत्तरा नन्दश्रेणिका चैव ।
मरुया सुमरुया महमरुया,	मरुता सुमरुता महामरुता,
मरुद्देवा य अट्ठमा ।१।	मरुद्देवा च अष्टमी ।१।
भद्दा च सुभद्दा य,	भद्रा च सुभद्रा च,
सुजाया सुमणाइया ।	सुजाता सुमनातिका ।
भूयदिण्णा य बोद्धव्वा,	भूतदत्ता च बोद्धव्या,
सेणिय-भज्जाण णामाइं ।२।	श्रेणिक-भार्याणां नामानि ।२।

सूत्र २

जइ णं भंते ! तेरस	यदि खलु भदन्त ! त्रयोदशानि
अज्झयणा पण्णत्ता,	अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि,
पढमस्स णं भंते !	प्रथमस्य खलु भदन्त !
अज्झयणस्स समणेणं	अध्ययनस्य श्रमणेन
जाव संपत्तेणं के अट्ठे	यावत् संप्राप्तेन कः अर्थः
पण्णत्ते ?	प्रज्ञप्तः ?
एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं	एवं खलु जम्बू ! तस्मिन्
तेणं समएणं रायगिहे णयरे	काले तस्मिन् समये
गुणसिलए चेइए,	राजगृहे नगरे, गुणशिलकं
सेणिए राया, वण्णओ ।	चैत्यम्, श्रेणिकः राजा, वर्ण्यः
तस्स ण सेणियस्स रण्णो	तस्य खलु श्रेणिकस्य राज्ञः
णंदा णामं देवी होत्था ।	नन्दा नाम देवी अभवत् ।
वण्णओ ।	वर्ण्या (वर्णकः) । (तत्र नगरे)

[हिन्दी शब्दार्थ]

प्रभु ने क्या भाव कहा है ?
श्री सुधर्मा स्वामी—"यावत् १३ अध्ययन कहे है। वे इस प्रकार है— १. नन्दा २. नन्दवती ३. नन्दोत्तरा ४. नन्दश्रेणिका ५. मरुता ६. सुमरुता ७. महामरुता ८. मरुदेवा, ९. भद्रा और १०. सुभद्रा ११. सुजाता १२. सुमनायिका और १३. भूतदत्ता। ये सब श्रेणिक राजा की भार्याओ के नाम समझें।"

[हिन्दी अर्थ]

ने क्या अर्थ कहा है ? कृपा कर कहिये।"

श्री सुधर्मा स्वामी– "सातवे वर्ग के तेरह अध्ययन कहे गये है, जो इस प्रकार है :—

१ नन्दा, २ नन्दवती, ३, नन्दोत्तरा, ४ नन्दश्रेणिका, ५ मरुता, ६ सुमरुता, ७ महामरुता, ८ मरुद्देवा, ९ भद्रा १० सुभद्रा, ११ सुजाता, १२ सुमनायिका, १३ भूतदत्ता।

ये सब श्रेणिक राजा की रानिया थी।"

सूत्र २

"हे भगवन् ! यदि सा ` वर्ग के तेरह अध्ययन लाये है तो हे पूज्य ! प्रथम अध्ययन का श्रमण भगवान यावत् मुक्ति को प्राप्त प्रभु ने क्या अर्थ फरमाया है ?"
"हे जम्बू ! उस काल उस समय में राजगृह नगर मे गुणशिलक नाम का उद्यान था। श्रेणिक राजा थे जो वर्णन करने योग्य थे। उस श्रेणिक राजा के नन्दा नाम की रानी थी जो कि वर्णन करने योग्य थी।

श्री जम्बू– "हे भगवन् ! प्रभु ने सातवे वर्ग के तेरह अध्ययन कहे है, तो प्रथम अध्ययन का हे पूज्य ! श्रमण यावत् मुक्ति प्राप्त प्रभु ने क्या अर्थ कहा है?"

श्री सुधर्मा स्वामी– "इस प्रकार निश्चय हे जबू ! उस काल उस समय मे राजगृह नामका एक नगर था। उसके वाहर गुणशील नामक एक उद्यान था। वहा श्रणिक राजा राज्य करता था। वह वर्णन योग्य था। उस श्रेणिक राजा की नदा नाम की रानी थी, जो वर्णन योग्य थी।

[मूल सूत्र पाठ]	[सस्कृत छाया]
सामी समोसढे ।	स्वामी समवसृतः ।
परिसा णिग्गया ।	परिषद् निर्गता ।
तएणं सा णंदा देवी इमीसे	ततः खलु सा नंदा देवी अस्याः
कहाए लद्धट्ठा समाणा जाव	कथायाः लब्धार्था ा यावत्
हट्ठतुट्ठा कोडुंबिय पुरिसे	हृष्टतुष्टा कौटुम्बिक पुरुषान्
सद्दावेइ,	शब्दयति ।
सद्दावित्ता,	शब्दयित्वा
जाणं जहा पउमावई ।	यानं यथा पद्मावती ।
जाव एक्कारस अंगाइं अहिज्जित्ता	यावद् एकादशाङ्गानि अधीत्य,
वीसं वासाइं परियाओ,	विंशति णि पर्यायः,
जाव सिद्धा ।	यावत् सिद्धा ।
एवं तेरस वि णंदागमेण	एवं त्रयोदशापि देव्यः नंदा-
णेयव्वाओ ।	गमेन नेतव्याः ।
णिक्खे ो ।२।	निक्षेपकः ।

इति सप्तमः ः

अथ मः वर्गः

सूत्र १

जइ णं भन्ते ! समणेणं	यदि खलु भदन्त ! श्रमणेन
जाव संपत्तेणं अट्ठमस्स	यावत् संप्राप्तेन अष्टमस्य
अंगस्स अंतगडदसाणं	अंगस्य अंतकृद्दशानाम्
सत्तमस्स वग्गस्स अयमट्ठे	सप्तमस्य वर्गस्य अयमर्थः
पण्णत्ते । अट्ठमस्स णं	प्रज्ञप्तः । अ स्य खलु
भंते ! वग्गस्स अंतगडदसाणं	भदन्त ! वर्गस्य अंतकृद्दशानां
समणेणं जाव संपत्तेणं	श्रमणेन यावत् संप्राप्तेन
के अट्ठे पण्णत्ते ?	कः अर्थः प्तः?

[हिन्दी शब्दार्थ]

उस नगर मे स्वामी महावीर पधारे। परिषद् वन्दन करने को गई। तब वह नंदा महारानी भगवान महावीर के पधारने का समाचार सुनकर यावत् हृष्टतुष्ट हुई और आज्ञाकारी सेवकों को बुलाया। बुलाकर पद्मावती की तरह धार्मिक यान लाने की आज्ञा दी। यावत् ग्यारह अंगो का अध्ययन किया, बीस वर्ष चारित्र्य पालनकर यावत् सिद्ध हुई। इसी प्रकार नन्दवती आदि १२ ही अध्ययन नन्दा के ान जानें। निक्षेपक यानि भगवान ने वें वर्ग का यह भाव फरमाया है।

[हिन्दी अर्थ]

प्रभु महावीर राजगृह नगर के उद्यान मे पधारे। जन परिपद वदन करने को गयी।

उस समय नदा देवी भगवान् के आने की खबर सुनकर बहुत प्रसन्न हुई और आज्ञाकारी सेवक को बुलाकर धार्मिक रथ लाने की आज्ञा दी। पद्मावती की तरह इसने भी दीक्षा ली यावत् ग्यारह अगो का अध्ययन किया। बीस वर्ष तक चारित्र पर्याय का पालन किया यावत् अन्त मे सिद्ध हुई।

इसी प्रकार नन्दवती आदि बाकी १२ ही अध्ययन नदा के समान है। यह निक्षेपक है।[३६]

इस प्रकार है जम्बू! भगवान् ने सातवे वर्ग का यह भाव कहा है।

इति मः वर्गः

अथ अष्टमः वर्गः

सूत्र १

श्री जबू—"यदि हे भगवन्! श्रमण यावत् मोक्ष को प्राप्त प्रभु ने आठवें अंग गडदशा के सातवें वर्ग का यह अर्थ फरमाया है। तो हे भगवन्! अंतकृतदशा के आठवें वर्ग का श्रमण यावत् मुक्ति प्राप्त प्रभु ने क्या अर्थ फरमाया है?

श्री जम्बू स्वामी— "हे भगवन्! श्रमण यावत् मुक्ति प्राप्त प्रभु ने आठवे अग अन्त-गडदशा के सातवे वर्ग का यह भाव कहा है तो अब अन्तगडदशा सूत्र के आठवे वर्ग का श्रमण यावत् मुक्ति प्राप्त प्रभु ने क्या अर्थ कहा है? कृपा कर बताइये।"

[मूल सूत्र पाठ]

एवं खलु जंबू ! समणेणं
जाव संपत्तेणं अट्ठमस्स अंगस्स
अंतगडदसाणं अट्ठमस्स
वग्गस्स दस अज्झयणा
पण्णत्ता । तं जहा—
काली, सुकाली, महाकाली,
कण्हा, सुकण्हा, महाकण्हा ।
वीरकण्हा य बोद्धव्वा,
रामकण्हा तहेव य ।
पिउसेण कण्हा णवमी,
दसमी महासेणकण्हा य ।
जइ ण भंते ! अट्ठमस्स
वग्गस्स दस अज्झयणा
पण्णत्ता, पढमस्स णं
भंते ! अज्झयणस्स
समणेणं जाव संपत्तेणं
के अट्ठे पण्णत्ते ?

[संस्कृत छाया]

एवं खलु जम्बू ! श्रमणेन
यावत् संप्राप्तेन
अष्टमस्य अंगस्य अंतकृद्दशानाम्
अष्टमस्य वर्गस्य दशअध्ययनानि
प्रज्ञप्तानि । तानि यथा—
काली, सुकाली, महाकाली,
कृष्णा, सुकृष्णा, महाकृष्णा ।
वीरकृष्णा च बोद्धव्या,
रामकृष्णा तथैव च ॥
पितृसेन कृष्णा नवमी,
दशमी महासेन कृष्णा च ॥
यदि खलु भदन्त ! अष्टमस्य
वर्गस्य दशाध्ययनानि
प्रज्ञप्तानि, प्रथमस्य खलु
भदन्त ! अध्ययनस्य
श्रमणेन यावत् संप्राप्तेन
कः अर्थः प्रज्ञप्तः ?

सूत्र २

एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं
तेणं समएणं चंपा णामं
णयरी होत्था, पुण्णभद्दे
चेइए ।
तत्थणं चम्पाए णयरीए
सेणियस्स रण्णो भज्जा
कोणियस्स रण्णो चुल्लमाउया,

एवं खलु जम्बू ! तस्मिन् काले
तस्मिन् समये चंपा नाम्नी
नगरी आसीत्, पूर्णभद्रं
चैत्यमासीत् ।
तत्र खलु चंपायां नगर्या
श्रेणिकस्य राज्ञः भार्या
कूणिकस्य राज्ञः क्षुल्ल-

[हिन्दी शब्दार्थ]

हे जम्बू ! श्रमण भगवान
यावत् मुक्ति प्राप्त प्रभु ने आठवे
अंग अन्तगडदशा सूत्र के
आठवें वर्ग के दस अध्ययन कहे है ।
जो कि इस प्रकार है—
काली, सुकाली, महाकाली,
कृष्णा, सुकृष्णा और महाकृष्णा,
वीरकृष्णा और रामकृष्णा
नवमी पितृसेन कृष्णा और
दसवी महासेन कृष्णा
जानना चाहिये ।"
यदि हे भगवन् ! आठवें वर्ग
के दस अध्ययन कहे है
तो ! प्रथम अध्ययन
का श्रमण यावत्
मुक्ति को प्राप्त प्रभु ने क्या
अर्थ फरमाया है ?

[हिन्दी अर्थ]

श्री सुधर्मा– "हे जबू ! श्रमण यावत् मुक्ति प्राप्त प्रभु ने आठवे अग अगगड दशा के आठवे वर्ग मे दश अध्ययन कहे है, जो इस प्रकार है—

१ काली, २ सुकाली, ३ महाकाली, ४ कृष्णा, ५ सुकृष्णा, ६ महाकृष्णा, ७ वीर कृष्णा, ८ रामकृष्णा, ९ पितृसेन कृष्णा और १० महासेन कृष्णा ।"

श्री जम्बू स्वामी– "हे भगवन् ! जव आठवे वर्ग के दस अध्ययन कहे है, तो प्रभो! प्रथम अध्ययन का श्रमण यावत् मुक्ति प्राप्त प्रभु ने अपने श्रीमुख से क्या अर्थ कहा है ?"

सूत्र २

हे जम्बू ! उस काल उस
समय मे चंपा नाम की
नगरी थी, वहां पूर्णभद्र नाम
का बगीचा था ।
वहां चम्पा नगरी मे श्रेणिक
राजा की भार्या एवं कूणिक
राजा की छोटी माता

श्री सुधर्मा स्वामी–"हे जम्बू ! उस काल उस समय चपा नाम की एक नगरी थी । वहाँ पूर्णभद्र नाम का एक उद्यान था । कोणिक राजा राज करता था । उस चपा नगरी मे श्रेणिक राजा की रानी और महाराज कोणिक की छोटी माता काली नाम की देवी थी, जो वर्णन करने योग्य थी ।

[मूल सूत्र पाठ]

काली णामं देवी
होत्था, वण्णओ ।
जहा णंदा सामाइयमाइयाइं
एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ,
बहूहिं चउत्थ छट्ठट्ठमेहिं जाव
अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।

[संस्कृत छाया]

माता काली नाम देवी
अभवत्, वर्ण्या ।
यथा नंदा सामायिकादीनि
एकादश-अंगानि अधीते,
बहुभिः चतुर्थषष्टाष्टमैः यावत्
आत्मानं भावयन्ती विहरति ।

सूत्र ३

तएणं सा काली अज्जा
अण्णया कयाइं जेणेव
अज्जचंदणा अज्जा तेणेव
उवागया, उवागच्छित्ता
एवं वयासी—
"इच्छामि णं अज्जाओ !
तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया समाणी
रयणावलिं तवोकम्मं उ ंपज्जित्ताणं
विहरित्तए ।"
"अहासुहं देवाणुप्पिया !
मा पडिबंधं करेह ।"
तए णं सा काली अज्जा
अज्ज चंदणाए अब्भणुण्णाया
समाणी रयणावलिं तवोकम्मं
उवसंपज्जित्ताणं विहरइ ।

ततःखलु सा काली आर्या
अन्यदा कदाचिद् यत्रैव
आर्यचन्दना आर्या तत्रैव
उपागता, उपागत्य
एवमवदत्—
इच्छामि खलु आर्या !
युष्माभिः अभ्यनुज्ञाता ी
रत्नावली तपः कर्म उपसंपद्यन्तं
विहर्तुम् ।
यथा सुखं देवानुि ा !
मा प्रतिबन्धं कुरुष्व ।
ततः खलु सा काली आर्या
आर्यया चन्दनया अभ्यनुज्ञाता
सती रत्ना ीं तपः कर्म
उपसंपद्य विहरति ।

सूत्र ४

तं जहा—चउत्थं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
छट्ठं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता

तद्यथा—चतुर्थं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
षष्टं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा,

[हिन्दी शब्दार्थ]

काली नाम की देवी थी,
जो कि वर्णन करने योग्य थी ।
काली रानी ने नन्दा देवी
के समान ही प्रभु महावीर
के पास प्रव्रज्या लेकर सामायिकादि
ग्यारह अंगों का अध्ययन किया ।
बहुत से उपवास, बेले तेले आदि
तपस्या के द्वारा आत्मा को भावित
करती हुई यावत् विचरण करने लगी ।

[हिन्दी अर्थ]

नदा देवी के समान काली रानी ने भी प्रभु महावीर के समीप श्रमण दीक्षा ग्रहण करके सामायिक आदि ग्यारह अगो का अध्ययन किया एव बहुत से उपवास बेले, तेले आदि तपस्या से अपनी आत्मा को भावित करती हुई विचरने लगी ।२।

एक दिन वह काली आर्या आर्यचन्दना आर्या के समीप आयी और आकर हाथ जोड कर विनयपूर्वक इस प्रकार बोली–"हे आर्ये!

सूत्र ३

तदनन्तर वह काली आर्या अन्य किसी
दिन जहां पर आर्या चन्दनबाला थी
वहां आई, और आकर इस प्रकार बोली
"हे आर्ये ! आपकी आज्ञा हो तो मै
रत्नावली अंगीकार करके विचरण
करना चाहती हूं ।"
"हे देवानुप्रिये ! जैसे सुख हो वैसे करो
परन्तु धर्मकार्य में विलम्ब मत करो ।"
तब वह काली आर्या, आर्या चन्दन
बाला की आज्ञा प्राप्त हो जाने पर
रत्नावली तप को अंगीकार करके
विचरने लगी जो इस प्रकार है—

आपकी आज्ञा प्राप्त हो तो मैं रत्नावली तप को अगीकार करके विचरना चाहती हूं ।"

महासती आर्या चन्दना–"हे देवानुप्रिये! जैसा सुख हो, करो, धर्म साधना के कार्य मे प्रमाद मत करो ।"

तब काली आर्या, महासती चन्दना की आज्ञा पाकर रत्नावली तप को अगीकार करके विचरने लगी, जो इस प्रकार है—

सूत्र ४

उन्होंने उपवास किया और इच्छा-
नुसार विगय से पारणा किया, करके
बेला किया, करके इच्छानुसार
विगय से पारणा किया, पारणा करके

काली आर्या ने पहले उपवास किया और इच्छानुसार विगय से पारणा किया, फिर बेला किया और सर्वकामगुण– विगय सहित पारणा किया ।

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
अट्ठम करेइ, करित्ता	अष्टमं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
अट्ठछट्ठाइं करेइ, करित्ता	अष्टौ षष्ठानि करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चउत्थ करेइ, करित्ता	चतुर्थं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
छट्ठं करेइ करित्ता	षष्ठं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
अट्ठमं करेइ, करित्ता	अष्टमं करोति, कृत्वा
सव्व कामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति पारयित्वा
दसमं करेइ, करित्ता	दशमं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा।
दुवालसमं करेइ, करित्ता	द्वादशम् करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति पारयित्वा
चोद्दसमं करेइ, करित्ता	चतुर्दशं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
सोलसमं करेइ, करित्ता	षोडशं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
अट्ठारसमं करेइ, करित्ता	अष्टादशं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
वीसइमं करेइ, करित्ता	विंशतितमं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
बावीसइमं करेइ, करित्ता	द्वाविंशतितमं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चउवीसइमं करेइ, करित्ता	चतुर्विंशतितमं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा

[हिन्दी शब्दार्थ]

तेला किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
आठ बेले किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
उपवास किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
बेला किया, करके
ˎकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
तेले का तप किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
चौला (चार उपवास) किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
पांच उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
छ उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
सात उपवास किये, करके
ˎकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
आठ उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
नौ उपवास किये, करके
ˎकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
दस उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
ग्यारह उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके

[हिन्दी अर्थ]

तेला किया, सर्वकामगुणयुक्त अर्थात् इच्छानुसार विगय सहित पारणा किया;

फिर आठ बेले किये और सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया,

फिर उपवास किया और सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया,

बेले की तपस्या की और सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया,

तेला किया और सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया,

दशम अर्थात् चोले की तपस्या की और सर्वकामगुण पारणा किया,

द्वादशम– पचोला किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

चतुर्दश– छः का तप किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

षोडशम– सात का तप किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

अष्टादश– आठ का तप किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

नव का तप किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

दस का तप किया, और सर्वकामगुण पारणा किया,

ग्यारह का तप किया और सर्वकामगुण पारणा किया;

[मूल सूत्र पाठ]

छव्वीसइमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
अट्ठावीसइमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
तीसइमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
बत्तीसइमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
चोत्तीसइमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
चोत्तीसं छट्ठाइं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
चोत्तीसइम करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
बत्तीसइमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
तीसइमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
अट्ठावीसइमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
छव्वीसइमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
चउवीसइमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
बावीसइम करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
बीसइमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता

[सस्कृत छाया]

षड्विंशतितमं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
अष्टाविंशतितमं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
त्रिंशतितमं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
द्वात्रिंसत्तम करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चतुस्त्रिंशत्तमं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चतुस्त्रिंशतषष्ठानि करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चतुस्त्रिंशत्तमं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
द्वात्रिंशत्तमं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
त्रिंशत्तमं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
अष्टाविंशतितमं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
षड्विंशतितमं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चतुर्विंशति करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
द्वाविंशतितमं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
विंशतितमं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा

[हिन्दी शब्दार्थ]

बारह का तप किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
तेरह उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
चौदह उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
पन्द्रह उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
सोलह उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
चौंतीस बेले किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
सोलह की तपस्या की, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
पन्द्रह की तपस्या की, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
चौदह की तपस्या की, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
तेरह की तपस्या की, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
बारह उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
ग्यारह उपवास का तप किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
दस का तप किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
नौ उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके

[हिन्दी अर्थ]

बारह का तप किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

तेरह का तप किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

चौदह का तप किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

पन्द्रह का तप किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

सोलह का तप किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

चौतीस बेले किए और सर्वकामगुण पारणा किया,

फिर सोलह का तप किया और सर्वकाम-गुण पारणा किया,

पद्रह का तप किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

चौदह का तप किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

तेरह का तप किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

बारह का तप किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

ग्यारह का तप किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

दस का तप किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

नव का तप किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

[मूल सूत्र पाठ]

अट्ठारसमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
सोलसमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता
चोद्दसमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
बारसमं करेइ, करित्ता,
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
दसमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता
अट्ठमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता
छट्ठं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
चउत्थं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
अट्ठछट्ठाइं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
अट्ठमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
छट्ठं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
चउत्थं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
एवं खलु एसा रयणावलीए
तवोकम्मस्स पढमा परिवाडी,
एगेणं संवच्छरेणं तिहिं मासेहिं

[सस्कृत छाया]

अष्टादशं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
षोडशं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चतुर्दशं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
द्वादशं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
दशमं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
अष्टमं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
षष्ठं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चतुर्थं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
अष्टषष्ठानि करोति, कृत्वा
कामगुणितं पारयति, पारयित्वा
अष्टमं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
षष्ठं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चतुर्थ करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
एवं खलु एषा रत्नावल्याः
तपः कर्मणः प्रथमा परिपाटी,
एकेन संवत्सरेण त्रिभिर्मासैः

[हिन्दी शब्दार्थ]

आठ उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
सात का तप किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
छः उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
पांच उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
चार का तप किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
तीन उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
बेले का तप किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
उपवास किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
आठ बेले किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
तेला किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
बेला किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
उपवास किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया।
इस प्रकार इस रत्नावली
तपः कर्म की प्रथम परिपाटी की
एक वर्ष तीन महीने

[हिन्दी अर्थ]

आठ का तप किया और सर्वकाम गुण पारणा किया,

सात का तप किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

छ का तप किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

पचोले का तप किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

चोले का तप किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

तेले का तप किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

बेले का तप किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

उपवास का तप किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

आठ बेले किये और सर्वकामगुण पारणा किया,

तेला किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

षष्ठ– बेला किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

उपवास किया और सर्वकामगुण पारणा किया।

इस प्रकार इस रत्नावली तपः कर्म की प्रथम परिपाटी की काली आर्या ने आराधना की।

सूत्रानुसार रत्नावली तप की इस आराधना की प्रथम परिपाटी (लडी) एक वर्ष

(मूल सूत्र पाठ)	(संस्कृत छाया)
बावीसाए य अहोरत्तेहिं	द्वाविंशतिभिश्च अहोरात्रैः
अहासुत्तं जाव आराहिया भवइ ।४।	यथासूत्रं यावत् आराधिता भवति ।४।

सूत्र ५

तयाणंतरं च णं दोच्चाए	तदनन्तरं च खलु द्वितीयस्यां
परिवाडीए चउत्थं करेइ,	परिपाट्याम् ुर्थं करोति,
करित्ता विगइवज्जं पारेइ, पारित्ता	कृत्वा विकृति र्जं पारयति, पारयित्वा
छट्ठं करेइ, करित्ता	षष्ठं करोति, कृत्वा
विगइवज्जं पारेइ, पारित्ता	विकृतिवर्जं पारयति, पारयित्वा
एवं जहा पढमाए, णवरं	एवं यथा प्रथमायाम्, विशेषः
सव्व पारणए विगइवज्जं	सर्वपारणायां विकृति
पारेइ जाव आराहिया भवइ ।	पारयति यावत् आराधिता भवति
तयाणंतरं च णं तच्चाए परि ीए	तदनंतरं च खलु तृतीयायां
चउत्थं करेइ, करित्ता अलेवाडं	परिपाट्यां चतुर्थं करोति, कृत्वा
पारेइ,	अलेपकृतं पारयति,
सेसं तहेव ।	शेषं तथैव ।
एवं चउत्था परिवाडी,	एवम् चतुर्थी परिपाटी,
णवरं सव्वपारणए आयंबिलं	विशे : सर्वपारणा दिने आचामाम्लं
पारेइ, सेसं तं चेव ।	पारयति, शेषं तदेव ।
पढमम्मि सव्वकामपारणयं,	प्रथमायां सर्वकामपारण ,
बीइयाए विगइवज्जं ।	द्वि ीयायां विकृति म् ।
तइयम्मि अलेवाडं,	तृतीयायाम् अलेपकृतम्,
आयंबिलओ चउत्थम्मि ।।	आचामाम्लम् च चतुर्थ्याम् ।
तए णं सा काली अज्जा रयणावली	: खलु सा काली आर्या रत्ना-
तवोकम्मं पंचहिं संवच्छरेहिं	वली तपः कर्म पंचभिः संवत्सरैः
दोहि य मासेहिं अट्ठावीसाए	द्वाभ्याम् मासाभ्याम् अष्टा
य दिवसेहिं अहासुत्तं	विंशत्या च दिवसैः यथासूत्रं

[हिन्दी शब्दार्थ]

व बावीस अहोरात्रि से सूत्रानुसार यावत् आराधना की जाती है।

[हिन्दी अर्थ]

तीन महीने और बावीस अहोरात्र मे पूर्ण की जाती है।

सूत्र ५

तदनन्तर द्वितीय परिपाटी मे उपवास किया, करके विगयरहित पारणा किया, करके बेले का तप किया, करके विगय रहित पारणा किया। शेष प्रथम परिपाटी के समान। विशेष यह कि सब पारणे विगय रहित पालते यावत् आराधते है। तदनन्तर वह तृतीय परिपाटी मे उपवास करती, करके लेपरहित पारणा करती है। शेष पहले की तरह। इसी प्रकार चौथी परिपाटी में, विशेष, सब पारणे आयंबि से करती है। शेष ी प्रकार। पहली परिपाटी में सर्वकामगुणयुक्त पारणा, द्वितीय में विगयरहित तीसरी में लेपरहित और चौथी में आयंबि से पारणा कि । इस प्रकार उस काली ि ने रत्नावली तपः की पाँच वर्ष दो मास व अट्ठाईस दिनों में सूत्रानुसार

इस एक परिपाटी मे तीन सौ चौरासी दिन तपस्या के एव अठासी दिन पारणा के होते है। इस प्रकार कुल चारसौ बहत्तर दिन होते हैं।४।

इसके पश्चात् दूसरी परिपाटी मे काली आर्या ने उपवास किया और विगय रहित पारणा किया, बेला किया और विगय रहित पारणा किया।

इस प्रकार यह भी पहली परिपाटी के समान है। इसमे केवल यह विशेष (अन्तर) है कि पारणा विगय रहित होता है। इस प्रकार सूत्रानुसार इस दूसरी परिपाटी का आराधन किया जाता है।

इसके पश्चात् तीसरी परिपाटी मे वह काली आर्या उपवास करती है और लेप रहित पारणा करती है। शेष पहले की तरह है।

ऐसे ही काली आर्या ने चौथी परिपाटी की आराधना की। इसमे विशेषता यह है कि सब पारणे आयबिल से करती हैं। शेष उसी प्रकार है।

प्रथम परिपाटी मे सर्वकामगुण एव दूसरी मे विगय रहित पारणा किया। तीसरी मे लेप रहित और चौथी परिपाटी मे आयबिल से पारणा किया।

[मूल सूत्र पाठ]

जाव आराहित्ता जेणेव
अज्जचंदणा अज्जा तेणेव
उवागया, उवागच्छित्ता
अज्जचदणं, वंदइ णमंसइ,
वंदित्ता णमंसित्ता,
बहूहिं चउत्थछट्ठट्ठम-
दसमदुवालसेहिं तवोकम्मेहिं
अप्पाणं भावेमाणी विहरइ ।५।

[सस्कृत छाया]

यावत् आराध्य यत्रैव
आर्यचंदना आर्या तत्रैव
उपागता, उपागत्य
आर्याचन्दनां वन्दते नमस्यति
वन्दित्वा नमस्यित्वा,
बहुभिः चतुर्थषष्ठाष्टम-
दशमद्वादशभिः तपः कर्मभिः
आत्मानं भा न्ती विहरति ।५।

सूत्र ६

तए णं सा काली अज्जा
तेणं ओरालेणं जाव धम-
णिसंतया जाया यावि होत्था ।
से जहा णामए इंगाल सगडी
वा जाव सुहुयहुयासणे
इव भासरासिपलिच्छण्णा
तवेणं तेएणं तवतेयसिरीए
अईव अईव उवसोभेमाणी
चिट्ठइ ।६।

ततः खलु सा काली आर्या
तेन उदारेण या धमनि-
संतता जाता चाप्यभवत् ।
तद् यथा नाम अंगारशकटी
वा यावत् सुहुतहुता
इव भस्मराशिप्रतिच्छन्ना
तपसा तेजसा तपस्तेजः श्रिया
च अतीव अतीव उपशोभमाना
तिष्ठति ।६।

सूत्र ७

तए णं तीसे कालीए अज्जाए
अण्णया कयाइ पुव्वरत्ता-
वरत्तकाले अयमज्झत्थिए,
जहा खंदयस्स चिंता
जाव अत्थि उट्ठाणे कम्मे,
वले, वीरिए पुरिसक्कार-पर-
क्कमे, सद्धाधिई-संवेगे वा

ततः खलु तस्याः काल्याः
आर्यायाः अन्यदा कदाचित् पूर्व-
रात्रापररात्रिकाले अयमध्यासः संजातः
यथा स्कंदकस्य चिंता
यावदस्ति उत्थानं कर्म,
बलं वीर्यम् पुरुषकारः परा-
क्रमः श्रद्धाधृतिः संवेगः वा

(हिन्दी शब्दार्थ)	(हिन्दी अर्थ)
यावत् आराधना की, करके जहाँ आर्यचंदना आर्या थी वहाँ वह आई, आकर आर्या चंदना को उसने वन्दना नमस्कार किया, वन्दन नमस्कार करके बहुत से उपवास बेले, तेले, चौले पंचोले आदि तप से आत्मा को भावित करती हुई विचरने लगी ।५।	इस भाति काली आर्या ने रत्नावली तप की पाच वर्ष दो महीने और अठावीस दिनो मे सूत्रानुसार यावत् आराधना पूर्ण करके जहां आर्या चदना थी वहां आई और आर्या चदना को वदना नमस्कार किया । फिर वहुत से उपवास, वेले, तेले, चार पाँच आदि तप से अपनी आत्मा को भावित करती हुई विचरने लगी ।५।

सूत्र ६

तपस्या के बाद वह काली आर्या उस प्रधान तपस्या से यावत् सूख गई और उसकी धमनियां दीखने लगी । जैसे कोयले की भरी गाड़ी मे चलते हुए आवाज निकलती है वैसे ही उनकी हड्डियां कड कड बोलने लगी, यावत् भस्म से ढ़की हुई सुहुत अग्नि के समान तपस्या के तेज से अतीव शोभायमान थी ।६।	इतनी तपस्या करने के बाद काली आर्या उस प्रधान तपस्या से यावत् सूख गई और उसकी खुली नसे दिखने लगी । जैसे कोयले से भरी गाडी मे चलते समय आवाज निकलती है वैसे उठते वैठते चलते फिरते काली आर्या की हड्डिया भी कड कड बोलने लगी यावत् फिर भी होम की हुई अग्नि के समान एव भस्म से ढकी हुई आग जैसे भीतर से प्रज्ज्वलित रहती है, वैसे तपस्या के तप तेज की शोभा से आर्या काली का शरीर अत्यन्त शोभायमान हो रहा था ।६।

सूत्र ७

फिर उसी काली आर्या को अन्य किसी दिन रात्रि के पिछले प्रहर मे यह विचार उत्पन्न हुआ स्कंदक के समान चिन्तन हुआ कि जब तक शरीर मे उत्थान कर्म, बल, वोर्य और पुरुषाकार पराक्रम है (मन में) श्रद्धा धैर्य एवं वैराग्य	फिर एक दिन रात्रि के पिछले प्रहर मे काली आर्या के हृदय मे स्कन्दक मुनि के समान इस प्रकार विचार उत्पन्न हुआ–"इस कठोर तप साधना के कारण मेरा शरीर अत्यन्त कृश हो गया है तथापि जव तक मेरे इस शरीर मे उत्थान, कर्म, वल, वीर्य और पुरुषाकार पराक्रम है, मन मे श्रद्धा, धैर्य एव वैराग्य है तव तक मेरे लिए उचित है कि कल सूर्योदय होने के पश्चात आर्य चदना

[मूल सूत्र पाठ]

ताव मे सेयं कल्लं जाव
जलते अज्जचंदणं अज्जं
आपुच्छित्ता अज्जचंदणाए
अज्जाए अब्भणुण्णायाए
समाणीए संलेहणा झूसणा-
झूसियाए भत्तपाणपडियाइ
क्खियाए कालं अणवकंखमाणीए
विहरित्तए त्तिकट्टु
एवं संपेहेइ, सपेहित्ता
कल्लं जेणेव अज्जचंदणा
अज्जा तेणेव उवागच्छइ,
उवागच्छित्ता
अज्जचंदणं अज्जं वंदइ,
णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता
एव वयासी—
"इच्छामि णं अज्जाओ !
तुब्भेहिं अब्भणुण्णायाए
समाणीए संलेहणा जाव
विहरित्तए ।"
"अहासुहं देवाणुप्पिया !
मा पडिबधं करेह ।"
तओ काली अज्जा अज्जचंदणाए
अज्जाए अब्भणुण्णाया
समाणी सलेहणाझूसणा
झूसिया जाव विहरइ ।
सा काली अज्जा अज्जचंदणाए
अज्जाए अंतिए सामाइय-

[सस्कृत छाया]

तावत् मे श्रेयः कल्ये यावत्
ज्वलति आर्यचदनाम् आर्याम्
आपृच्छ्य आर्यचंदनया
आर्यया अभ्यनुज्ञातायाः
सत्याः संलेखना जोषणा-
जुष्टाया भक्तपान प्रत्याख्या-
तायाः कालमनवकांक्षन्त्याः
विहर्तुम् इति कृत्वा
एवं संप्रेक्षते, संप्रेक्ष्य
कल्यं यत्रैव आर्यचंदना
आर्या तत्रैव उपागच्छति,
उपागत्य
आर्यचंदनाम् आर्याम् वन्दते
नमस्यति, वंदित्वा नमस्यित्वा
एवमवादीत्—
"इच्छामि खलु हे आर्या !
युष्माभिः अभ्यनुज्ञाता
सती संलेखना यावत्
विहर्तुम् ।"
"यथासुखं देवानु   !
मा प्रतिबंधं कुरु ।"
ततः काली आर्या आर्यचदनया
आर्यया अभ्यनुज्ञाता
सती संलेखना जोषण-
जुष्टा यावद् विहरति ।
सा काली आर्या आर्यचंदनायाः
आर्यायाः अन्तिके

[हिन्दी शब्दार्थ]

है तब तक
मुझे योग्य है कि कल
सूर्योदय के पश्चात् आर्यचदना
आर्या को पूछकर आर्य चन्दना
की आज्ञा प्राप्त होने पर
संलेखना झूसणा को
सेवन करती हुई भक्त-
पान का त्याग करके मृत्यु को
नही चाहती हुई विचरण करूँ, यह
विचार किया, करके सूर्योदय होते
ही जहाँ पर आर्यचंदना आर्या
थी वहाँ पर आई, और आकर
आर्यचंदना आर्या को वंदना नमस्कार
करती है। करके इस प्रकार बोली—
"हे आर्ये! आपकी आज्ञा प्राप्तकर मैं
संलेखना करती हुई विचरण करना
चाहती हूं।" (तब आर्य चंदना
आर्या ने कहा)-"हे देवानुप्रिये!
जिस प्रकार सुख हो वैसे
करो। सत्कार्य साधन मे
विलम्ब मत करो।"
तब काली आर्या आर्यचंदना
आर्या से आज्ञा प्राप्त होने पर
संलेखना झूसणा को सेवन
करती हुई यावत् विचरण करने लगी।
उस काली आर्या ने आर्यचंदना
आर्या के पास सामायिकादि

[हिन्दी अर्थ]

आर्या को पूछकर उनकी आज्ञा प्राप्त होने पर सलेखना झूषणा का सेवन करती हुई भक्तपान का त्याग करके मृत्यु को नही चाहती हुई विचरण करू।"

ऐसा सोचकर वह अगले दिन सूर्योदय होते ही जहा आर्यचदना थी वहा आई और आर्यचदना को वन्दना नमस्कार कर इस प्रकार बोली—

"हे आर्ये! आपकी आज्ञा हो तो मैं सलेखना झूषणा करते हुए विचरना चाहती हू।"

आर्यचदना–"हे देवानुप्रिये! जैसा तुम्हे सुख हो, वैसा करो। सत्कार्य साधन मे विलम्ब मत करो।"

तब आर्य चदना की आज्ञा पाकर काली आर्या सलेखना झूषणा से यावत् विचरने लगी।

[मूल सूत्र पाठ]

ताव मे सेयं कल्लं जाव
जलंते अज्जचंदणं अज्जं
आपुच्छित्ता अज्जचंदणाए
अज्जाए अब्भणुण्णायाए
समाणीए संलेहणा झूसणा-
झूसियाए भत्तपाणपडियाइ
क्खियाए कालं अणवकंखमाणीए
विहरित्तए त्तिकट्टु,
एवं संपेहेइ, संपेहित्ता
कल्लं जेणेव अज्जचंदणा
अज्जा तेणेव उवागच्छइ,
उवागच्छित्ता
अज्जचंदणं अज्जं वंदइ,
णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता
एवं वयासी—
"इच्छामि णं अज्जाओ !
तुब्भेहिं अब्भणुण्णायाए
समाणीए संलेहणा जाव
विहरित्तए ।"
"अहासुहं देवाणुप्पिया !
मा पडिबंधं करेह ।"
तओ काली अज्जा अज्जचंदणाए
अज्जाए अब्भणुण्णाया
समाणी संलेहणाझूसणा
झूसिया जाव विहरइ ।
सा काली अज्जा अज्जचंदणाए
अज्जाए अंतिए सामाइय-

[संस्कृत छाया]

तावत् मे श्रेयः कल्ये यावत्
ज्वलति आर्यचंदनाम् आर्याम्
आपृच्छ्य आर्यचंदनया
आर्यया अभ्यनुज्ञातायाः
सत्याः संलेखना जोषणा-
जुष्टाया भक्तपान प्रत्याख्या-
तायाः कालमनवकांक्षन्त्याः
विहर्तुम् इति कृत्वा
एवं संप्रेक्षते, संप्रेक्ष्य
कल्यं यत्रैव आर्यचंदना
आर्या तत्रैव उपागच्छति,
उपागत्य
आर्यचंदनाम् आर्याम् वन्दते
नमस्यति, वंदित्वा नमस्यित्वा
एवमवादीत्—
"इच्छामि खलु हे आर्या !
युष्माभिः अभ्यनु ा
सती संलेखना यावत्
विहर्तुम् ।"
"यथासुखं देवानुप्रिया !
मा प्रतिबंधं कुरु ।"
ततः काली आर्या आर्यचदनया
आर्यया अभ्यनुज्ञाता
सती संलेखना जोषण-
जुष्टा यावद् विहरति ।
सा काली आर्या आर्यचंदनायाः
आर्यायाः अन्तिके

[हिन्दी शब्दार्थ]

है तब तक
मुझे योग्य है कि कल
सूर्योदय के पश्चात् आर्यचंदना
आर्या को पूछकर आर्य चन्दना
की आज्ञा प्राप्त होने पर
संलेखना झूसणा को
सेवन करती हुई भक्त-
पान का त्याग करके मृत्यु को
नहीं चाहती हुई विचरण करूँ, यह
विचार किया, करके सूर्योदय होते
ही जहाँ पर आर्यचंदना आर्या
थी वहाँ पर आई, और आकर
आर्यचंदना आर्या को वंदना नमस्कार
करती है। करके इस प्रकार बोली—
"हे आर्ये ! आपकी आज्ञा प्राप्तकर मैं
संलेखना करती हुई विचरण करना
चाहती हूं।" (तब आर्य चंदना
आर्या ने कहा)-"हे देवानुप्रिये !
जिस प्रकार सुख हो वैसे
करो। सत्कार्य साधन में
विलम्ब मत करो।"
तब काली आर्या आर्यचंदना
आर्या से आज्ञा प्राप्त होने पर
संलेखना झूसणा को सेवन
करती हुई यावत् विचरण करने लगी।
उस काली आर्या ने आर्यचंदना
आर्या के पास सामायिकादि

[हिन्दी अर्थ]

आर्या को पूछकर उनकी आज्ञा प्राप्त होने पर सलेखना झूषणा का सेवन करती हुई भक्तपान का त्याग करके मृत्यु को नही चाहती हुई विचरण करु।"

ऐसा सोचकर वह अगले दिन सूर्योदय होते ही जहा आर्यचदना थी वहा आई और आर्यचदना को वन्दना नमस्कार कर इस प्रकार वोली—

"हे आर्ये! आपकी आज्ञा हो तो मै सलेखना झूषणा करते हुए विचरना चाहती हू।"

आर्यचदना- "हे देवानुप्रिये! जैसा तुम्हे सुख हो, वैसा करो। सत्कार्य साधन मे विलम्ब मत करो।"

तव आर्य चदना की आज्ञा पाकर काली आर्या सलेखना झूषणा से यावत् विचरने लगी।

[मूल सूत्र पाठ]

माइयाइ एक्कारस अंगाइं
अहिज्जित्ता बहुपडिपुण्णाइं
अट्ठ संवच्छराइं सामण्ण-
परियागं पाउणित्ता मासियाए
संलेहणाए अप्पाणं झूसित्ता
सट्ठि भत्ताइं अणसणाए
छेदित्ता जस्सट्ठाए कीरइ
णग्गभावे जाव चरिमुस्सास
णीसासेहिं सिद्धा ।७।

[संस्कृत छाया]

सामायिकादीनि एकादशांगानि
अधीत्य बहुप्रतिपूर्णान्
अष्टसंवत्सरान् (यावत्) श्रामण्य
पर्यायं पालयित्वा मासि
संलेखनया आत्मानं जुष्ट्वा
षष्ठि भक्तानि अनशनेन
छित्वा यस्यार्थाय क्रियते
नग्नभावः (स्थविरकल्पित्वं) यावत्
चरमैरुच्छ्वासनिश्वासैः सिद्धा ।७।

इति प्रथम अध्ययन

द्वितीय अध्ययन

उक्खेवओ बीयस्स अज्झयणस्स ।
एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं
तेणं समएणं चंपा णामं
णयरी, पुण्णभद्दे चेइए,
कोणिए राया ।
तत्थ णं सेणियस्स रण्णो
भज्जा कोणियस्स रण्णो
चुल्लमाउया सुकाली
णामं देवी होत्था ।
जहा काली तहा
सुकाली वि णिक्खता,
जाव बहूहिं चउत्थ जाव
अप्पाणं भावेमाणी विहरइ ।
तएण सा सुकाली अज्जा
अण्णया कयाइं जेणेव अज्जचंदणा

उत्क्षेपकः द्वितीयस्य अध्यय ।
एवं खलु जंबू ! तस्मिन् काले
तस्मिन् समये चम्पा नामा
नगरी पूर्णभद्रं चैत्यम्
कूणिको राजा (आसीत्) ।
तत्र खलु श्रेणिकस्य राज्ञः
भार्या कोणिकस्य राज्ञः
क्षुल्लमाता सुकाली
नामा देवी अभवत् ।
यथा काली तथा सुकाली
अपि निष्क्रान्ता
यावत् बहुभिः चतुर्थैः यावत्
आत्मानं भावयन्ती विहरति ।
ततः खलु सा सुकाली आर्या
अन्यदा कदाचित् यत्रैव आर्यचन्दना

[हिन्दी शब्दार्थ]

ग्यारह अगो का अध्ययन करके पूरे आठ वर्ष तक श्रमण पर्याय का पालन करके एक मास की सलेखना से आत्मा को भूषित करके साठ भक्त का अनशन पूर्णकर जिस हेतु से संयम ग्रहण किया अपरिग्रह भाव से यावत् उसको अन्तिम श्वासोच्छ्‌वास से पूर्णकर सिद्ध-बुद्ध मुक्त हो गई ।७।

[हिन्दी अर्थ]

काली आर्या ने आर्य चन्दनबाला आर्या के पास सामायिक आदि ग्यारह अगो का अध्ययन किया और पूरे आठ वर्ष तक चारित्र धर्म का पालन करके एक मास की सलेखना से आत्मा को भूषित कर साठ भक्त का अनशन पूर्ण कर जिस हेतु से सयम ग्रहण किया था अपरिग्रह भाव से यावत् उसको अन्तिम श्वासोच्छ्‌वास तक पूर्ण कर वह काली आर्या सिद्ध-बुद्ध और मुक्त हो गई ।७।

इति प्रथम अध्ययन

द्वितीय अध्ययन

दूसरे अध्ययन का उत्क्षेपक है ।
इस प्रकार हे जम्बू ! उस काल उस समय मे चम्पा नाम की नगरी, पूर्णभद्र नामक उद्यान और कौणिक राजा थे ।
उस नगरी में श्रेणिक राजा की भार्या और कौणिक राजा की छोटी माता सुकाली नाम की रानी थी ।
काली की तरह सुकाली भी प्रव्रजित हुई तथा बहुत सारे उपवास आदि तप से आत्मा को भावित करती हुई विचरने लगी ।
तब वह सुकाली आर्या अन्य किसी दिन जहाँ आर्यचन्दना

दूसरे अध्ययन का उत्क्षेपक ।

श्री जम्बू स्वामी–"हे पूज्य ! आठवे वर्ग के दूसरे अध्ययन मे प्रभु महावीर ने क्या भाव कहे है ? कृपाकर बताइये ।"

श्री सुधर्मा स्वामी-"हे जम्बू ! इस प्रकार उस काल उस समय मे चपा नाम की एक नगरी थी वहा पूर्णभद्र उद्यान था और कौणिक नाम का राजा वहा राज्य करता था । उस नगरी मे श्रेणिक राजा की रानी और कौणिक राजा की छोटी माता सुकाली नाम की देवी थी ।

काली की तरह सुकाली भी प्रव्रजित हुई और बहुत से उपवास आदि तप से आत्मा को भावित करती हुई विचरने लगी ।

फिर वह सुकाली आर्या अन्यदा किसी दिन आर्य चन्दना के पास आकर इस प्रकार

[मूल सूत्र पाठ]

माइयाइं एक्कारस अंगाइं
अहिज्जित्ता बहुपडिपुण्णाइं
अट्ठ संवच्छराइं सामण्ण-
परियागं पाउणित्ता मासियाए
सलेहणाए अप्पाणं भूसित्ता
सट्ठि भत्ताइं अणसणाए
छेदित्ता जस्सट्ठाए कीरइ
णग्गभावे जाव चरिमुस्सास
णीसासेहि सिद्धा ।७।

[संस्कृत छाया]

सामायिकादीनि एकादशांगानि
अधीत्य बहुप्रतिपूर्णान्
अष्टसंवत्सरान् (यावत्) श्रामण्य
पर्यायं पालयित्वा मासिक्या
संलेखनया आत्मानं जुष्ट्वा
षष्ठि भक्तानि अनशनेन
छित्वा यस्यार्थाय क्रियते
नग्नभावः (स्थविरकल्पित्वं) यावत्
चरमैरुच्छ्वासनिश्वासैः सिद्धा ।७।

इति प्रथम अध्ययन

द्वितीय अध्ययन

उक्खेवओ बीयस्स अज्झयणस्स ।
एव खलु जंबू ! तेणं कालेणं
तेणं समएणं चंपा णामं
णयरी, पुण्णभद्दे चेइए,
कोणिए राया ।
तत्थ णं सेणियस्स रण्णो
भज्जा कोणियस्स रण्णो
चुल्लमाउया सुकाली
णामं देवी होत्था ।
जहा काली तहा
सुकाली वि णिक्खंता,
जाव बहूहि चउत्थ जाव
अप्पाणं भावेमाणी विहरइ ।
तएणं सा सुकाली अज्जा
अण्णया कयाइं जेणेव अज्जचंदणा

उत्क्षेपकः द्वितीयस्य अध्ययनस्य ।
एवं खलु जंबू ! तस्मिन् काले
तस्मिन् समये चम्पा नामा
नगरी पूर्णभद्रं चैत्यम्
कूणिको राजा (ीत्) ।
तत्र खलु श्रेणिकस्य राज्ञः
भार्या कोणिकस्य राज्ञः
क्षुल्लमाता सुकाली
नामा देवी अभवत् ।
यथा काली तथा सुकाली
अपि निष्क्रान्ता
यावत् बहुभिः चतुर्थैः यावत्
आत्मानं भावयन्ती विहरति ।
ततः खलु सा सुकाली आर्या
अन्यदा कदाचित् यत्रैव आर्यचन्दना

[हिन्दी शब्दार्थ]

ग्यारह अंगों का अध्ययन करके पूरे आठ वर्ष तक श्रमण पर्याय का पालन करके एक मास की सलेखना से आत्मा को भूषित करके साठ भक्त का अनशन पूर्णकर जिस हेतु से संयम ग्रहण किया अपरिग्रह भाव से यावत् उसको अन्तिम श्वासोच्छ्वास से पूर्णकर सिद्ध-बुद्ध मुक्त हो गई ।७।

[हिन्दी अर्थ]

काली आर्या ने आर्य चन्दनबाला आर्या के पास सामायिक आदि ग्यारह अगो का अध्ययन किया और पूरे आठ वर्ष तक चारित्र धर्म का पालन करके एक मास की सलेखना से आत्मा को भूषित कर साठ भक्त का अनशन पूर्ण कर जिस हेतु से सयम ग्रहण किया था अपरिग्रह भाव से यावत् उसको अन्तिम श्वासोच्छ्वास तक पूर्ण कर वह काली आर्या सिद्ध-वुद्ध और मुक्त हो गई ।७।

इति प्रथम अध्ययन

द्वितीय अध्ययन

दूसरे अध्ययन का उत्क्षेपक है । इस प्रकार हे जम्बू ! उस काल उस समय मे चम्पा नाम की नगरी, पूर्णभद्र नामक उद्यान और कौणिक राजा थे । उस नगरी में श्रेणिक राजा की भार्या और कौणिक राजा की छोटी माता सुकाली नाम की रानी थी । काली की तरह सुकाली भी प्रव्रजित हुई तथा बहुत सारे उपवास आदि तप से आत्मा को भावित करती हुई विचरने लगी । तब वह सुकाली आर्या अन्य किसी दिन जहाँ आर्यचन्दना

दूसरे अध्ययन का उत्क्षेपक ।

श्री जम्बू स्वामी—"हे पूज्य ! आठवे वर्ग के दूसरे अध्ययन मे प्रभु महावीर ने क्या भाव कहे है ? कृपाकर वताइये ।"

श्री सुधर्मा स्वामी-"हे जम्बू! इस प्रकार उस काल उस समय मे चपा नाम की एक नगरी थी वहा पूर्णभद्र उद्यान था और कौणिक नाम का राजा वहा राज्य करता था । उस नगरी मे श्रेणिक राजा की रानी और कौणिक राजा की छोटी माता सुकाली नाम की देवी थी ।

काली की तरह सुकाली भी प्रव्रजित हुई और वहुत से उपवास आदि तप से आत्मा को भावित करती हुई विचरने लगी ।

फिर वह सुकाली आर्या अन्यदा किसी दिन आर्य चन्दना के पास आकर इस प्रकार

[मूल सूत्र पाठ]

अज्जा जाव "इच्छामि णं अज्जाओ !
तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया
समाणी कणगावली
तवोकम्मं उवसंपज्जित्ताणं
विहरित्तए।"
एवं जहा रयणावली तहा
कणगावली वि,
णवरं तिसु
ठाणेसु अट्ठमाइं करेइ,
जहा रयणावलीए छट्ठाइं ।
एक्काए परिवाडीए संवच्छरो,
पंचमासा बारस य अहोरत्ता
चउण्हं पंच वरिसा
णव मासा अट्ठारस दिवसा,
सेसं तहेव, णव वासा परियाओ ।
जाव सिद्धा ।२।

[संस्कृत छाया]

आर्या यावत् "इच्छामि खलु आर्या !
युष्माभिः अभ्यनुज्ञाता
ा कनकावली
तपः कर्म उप
विहर्तुम् ।
एवं यथा रत्नावली (तपः कृतं) तथा
कनकावली तपः अपि (विहि)
विशेषस्तु (कनकावल्यां) त्रिषु
स्थानेषु अष्टमानि करोति,
यथा रत्नावल्यां षष्ठानि
एकस्यां परिपाट्यां संवत्सरः
पंचमासाः द्वादश च अहोरात्राः
चतुर्षु (परिपाटीसु) पंच रिण
नवमासाः अष्टादश दिवसाः
शेषं तथैव, नव वर्षाणि पर्यायः ।
यावत् सिद्धा ।

इति द्वितीयाध्ययनः

अथ तृतीयाध्ययनः

एवं महाकाली वि ।
णवरं खुड्डाग सीहणिक्कीलियं
तवोकम्मं उवसंपज्जित्ताणं
विहरइ । तं जहा—
चउत्थं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
छट्ठं करेइ, करित्ता

एवं महाकाली अपि ।
विशेषस्तु क्षुल्लक सिंह निष्क्रीडित-
तपः कर्म उपसंपद्य
विहरति । था—
चतुर्थं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
षष्ठं करोति, कृत्वा

[हिन्दी शब्दार्थ]

आर्या थी वहाँ आई
और कहने लगी—"हे आर्ये !
मैं चाहती हूँ कि आपकी आज्ञा
प्राप्तकर कनकावली तप को
अंगीकर करके विचरण करूं ।"
जैसे आर्या ने रत्नावली तप किया
वैसे ही कनकावली तप भी किया ।
विशेषता यह कि तीनो स्थानो पर
तेले का व्रत किया । जैसे रत्नावली
तप मे जहाँ बेले किये जाते है ।
एक परिपाटी मे एक वर्ष पाँच
महीने बारह अहोरात्र लगते है ।
चारों, परिपाटियो मे, पाँच वर्ष
नव मास अठारह दिन लगते है ।
शेष वैसे ही । नौ वर्ष पर्याय, यावत्
सिद्ध हो गई ।

[हिन्दी अर्थ]

बोली– 'हे आर्ये ! आपकी आज्ञा होने पर मैं कनकावली तप को अगीकार करके विचरना चाहती हूँ ।'

सती चदना की आज्ञा पाकर रत्नावली के समान सुकाली ने कनकावली तप का आराधन किया । विशेपता इसमे यह थी कि तीनो स्थानो पर अष्टम=तेले किये जबकि रत्नावली मे षष्ठ=बेले किये जाते है । एक परिपाटी मे एक वर्ष पाच महीने और बारह अहोरात्रिया लगती हैं । इस एक परिपाटी मे ८८ दिन का पारणा और १ वर्ष २ मास १४ दिन का तप होता है । चारो परिपाटी का काल-पाच वर्ष, नव महीने और अठारह दिन होते है । शेष वर्णन काली आर्या के समान है । नव वर्ष तक चारित्र का पालन कर यावत् वह भी सिद्ध, बुद्ध और मुक्त हो गई ।

इति द्वितीय अध्ययन

तृतीय अध्ययन

इसी तरह महाकाली भी
विशेष यह-लघुसिंहनिष्क्रीड़ित
तप को अंगीकार करके
विचरने लगी । जैसे कि
उपवास किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
बेला किया, करके

श्री जम्बू स्वामी– "भगवन्! आठवे वर्ग के तीसरे अध्ययन का प्रभु महावीर ने क्या भाव बताया है ?"

आर्य सुधर्मा– "तीसरे अध्ययन मे महाकाली का वर्णन है । उसने भी काली के समान दीक्षा ली, इसमे विशेषता इतनी है कि महाकाली ने लघुसिंह निष्क्रीडित तप की आराधना की, जो इस प्रकार है—

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
अज्जा जाव "इच्छामि णं अज्जाओ !	आर्या यावत् "इच्छामि खलु आर्या !
तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया	युष्माभिः अभ्यनुज्ञाता
समाणी कणगावली	सती कनकावली
तवोकम्मं उवसंपज्जित्ताणं	तपः कर्म उप
विहरित्तए।"	विहर्तुम् ।
एवं जहा रयणावली तहा	एवं यथा रत्नावली (तपः कृतं)तथा
कणगावली वि,	कनकावली तपः अपि (विहि)
णवरं तिसु	विशेषस्तु (कनकावल्यां) त्रिषु
ठाणेसु अट्ठमाइं करेइ,	स्थानेषु अष्टमानि करोति,
जहा रयणावलीए छट्ठाइं ।	यथा रत्नावल्यां षष्ठानि
एक्काए परिवाडीए संवच्छरो,	एकस्यां परिपाट्यां संवत्सरः
पंचमासा बारस य अहोरत्ता	पंचमासाः द्वा च अहोरात्राः
चउण्हं पंच वरिसा	चतुर्षु (परिपाटीसु) पंच वर्षाणि
णव मासा अट्ठारस दिवसा,	नवमासाः अष्टादश दि ाः
सेसं तहेव, णव वासा परियाओ ।	शेषं तथैव, नव वर्षाणि पर्यायः ।
जाव सिद्धा ।२।	यावत् सिद्धा ।

इति द्वितीयाध्ययनः

अथ तृतीयाध्ययनः

एवं महाकाली वि ।	एवं महाकाली अपि ।
णवरं खुड्डागं सीहणिक्कीलियं	विशेषस्तु क्षुल्लक सिंह निष्क्रीडित-
तवोकम्म उवसंपज्जित्ताणं	तपः कर्म उपसंपद्य
विहरइ । तं जहा—	विहरति । तद्यथा—
चउत्थं करेइ, करित्ता	चतुर्थं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
छट्ठं करेइ, करित्ता	षष्ठं करोति, कृत्वा

[हिन्दी शब्दार्थ]

आर्या थी वहाँ आई
और कहने लगी—"हे आर्ये !
मै चाहती हू कि आपकी आज्ञा
प्राप्तकर कनकावली तप को
अंगीकर करके विचरण करूं ।"
जैसे आर्या ने रत्नावली तप किया
वैसे ही कनकावली तप भी किया ।
विशेषता यह कि तीनो स्थानो पर
तेले का व्रत किया । जैसे रत्नावली
तप मे जहाॅ बेले किये जाते है ।
एक परिपाटी में एक वर्ष पाँच
महीने बारह अहोरात्र लगते है ।
चारों, परिपाटियो मे, पाँच वर्ष
नव मास रह दिन लगते हैं ।
शेष वैसे ही । नौ वर्ष पर्याय, यावत्
सिद्ध हो गई ।

[हिन्दी अर्थ]

बोली- 'हे आर्ये ! आपकी आज्ञा होने पर मै कनकावली तप को अगीकार करके विचरना चाहती हूँ ।'

सती चदना की आज्ञा पाकर रत्नावली के समान सुकाली ने कनकावली तप का आराधन किया । विशेषता इसमे यह थी कि तीनो स्थानो पर अष्टम=तेले किये जबकि रत्नावली मे षष्ठ=बेले किये जाते है । एक परिपाटी मे एक वर्ष पाच महीने और बारह अहोरात्रिया लगती हैं । इस एक परिपाटी मे ८८ दिन का पारणा और १ वर्ष २ मास १४ दिन का तप होता है । चारो परिपाटी का काल-पाच वर्ष, नव महीने और अठारह दिन होते है । शेष वर्णन काली आर्या के समान है । नव वर्ष तक चारित्र का पालन कर यावत् वह भी सिद्ध, बुद्ध और मुक्त हो गई ।

इति द्वितीय अध्ययन

तृतीय अध्ययन

इसी तरह महाकाली भी
विशेष यह-लघुसिंहनिष्क्रीड़ित
तप को अंगीकार करके
विचरने लगी । जैसे कि
उपवास किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
बेला किया, करके

श्री जम्बू स्वामी- "भगवन् ! आठवे वर्ग के तीसरे अध्ययन का प्रभु महावीर ने क्या भाव बताया है ?"

आर्य सुधर्मा- "तीसरे अध्ययन मे महाकाली का वर्णन है । उसने भी काली के समान दीक्षा ली, इसमे विशेषता इतनी है कि महाकाली ने लघुसिंह निष्क्रीडित तप की आराधना की, जो इस प्रकार है—

[मूल सूत्र पाठ]

सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
चउत्थं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
अट्ठमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
छट्ठं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
दसमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
अट्ठमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ पारित्ता
दुवालसमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
दसमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
चउद्दसमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
बारसमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
सोलसम करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
चउद्दसमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
अट्ठारसम करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
सोलसमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता

[संस्कृत छाया]

सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चतुर्थं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
अष्टमं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
षष्ठं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
दशमं करोति, कृत्वा
˚कामगुणितं पारयति, पारयित्वा
अष्टमं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
द्वादशं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
दशमं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चतुर्दशं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
द्वादशम् करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
षोडशं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चतुर्दशं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
अष्टादशं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
षोडशं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा

[हिन्दी शब्दार्थ]

सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
उपवास किया, करके
सर्वकामगुणित पारणा किया, करके
तेला किया, करके
सर्वकामगुणित पारणा किया, करके
बेला किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
चौला किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
तेला किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
पंचौला किया, करके
सर्वकामगुणित पारणा किया, करके
चार उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
छः उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
पांच उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
सात उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
छः उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
आठ उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
सात उपवास किये, करके
सर्वकामगुणित पारणा किया, करके

[हिन्दी अर्थ]

उपवास किया और सर्वकामगुण पारणा किया।

बेला किया और सर्वकामगुण पारणा किया।

उपवास किया और सर्वकामगुण पारणा किया।

तेला किया और सर्वकामगुण पारणा किया।

बेला किया और सर्वकामगुण पारणा किया।

चौला किया और सर्वकामगुण पारणा किया।

तेला किया और सर्वकामगुण पारणा किया।

पाँच का तप किया और सर्वकामगुण पारणा किया।

चौला किया और सर्वकामगुण पारणा किया।

छ किये और सर्वकामगुण पारणा किया।

पाँच किये और सर्वकामगुण पारणा किया।

सात किये और सर्वकामगुण पारणा किया।

छह किये और सर्वकामगुण पारणा किया।

आठ का तप किया और सर्वकामगुण पारणा किया।

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चउत्थं करेइ, करित्ता	चतुर्थं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
अट्ठमं करेइ, करित्ता	अष्टमं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
छट्ठं करेइ, करित्ता	षष्ठं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
दसमं करेइ, करित्ता	दशमं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	कामगुणितं पारयति, पारयित्वा
अट्ठमं करेइ, करित्ता	अष्टमं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
दुवालसमं करेइ, करित्ता	द्वादशं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
दसमं करेइ, करित्ता	दशमं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चउद्दसमं करेइ, करित्ता	चतुर्दशं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
बारसमं करेइ, करित्ता	द्वादशम् करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
सोलसम करेइ, करित्ता	षोडशं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चउद्दसम करेइ, करित्ता	चतुर्दशं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
अट्ठारसम करेइ, करित्ता	अष्टादशं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
सोलसमं करेइ, करित्ता	षोडशं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा

[हिन्दी शब्दार्थ]

सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
उपवास किया, करके
सर्वकामगुणित पारणा किया, करके
तेला किया, करके
सर्वकामगुणित पारणा किया, करके
बेला किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
चौला किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
तेला किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
पंचौला किया, करके
सर्वकामगुणित पारणा किया, करके
चार उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
छः उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
पांच उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
सात उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
छः उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
आठ उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
सात उपवास किये, करके
सर्वकामगुणित पारणा किया, करके

[हिन्दी अर्थ]

उपवास किया और सर्वकामगुण पारणा किया।

वेला किया और सर्वकामगुण पारणा किया।

उपवास किया और सर्वकामगुण पारणा किया।

तेला किया और सर्वकामगुण पारणा किया।

वेला किया और सर्वकामगुण पारणा किया।

चौला किया और सर्वकामगुण पारणा किया।

तेला किया और सर्वकामगुण पारणा किया।

पाँच का तप किया और सर्वकामगुण पारणा किया।

चौला किया और सर्वकामगुण पारणा किया।

छ किये और सर्वकामगुण पारणा किया।

पाँच किये और सर्वकामगुण पारणा किया।

सात किये और सर्वकामगुण पारणा किया।

छह किये और सर्वकामगुण पारणा किया।

आठ का तप किया और सर्वकामगुण पारणा किया।

[मूल सूत्र पाठ]

बीसइमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
अट्ठारसमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
बीसइमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
सोलसमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
अट्ठारसमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता
चउद्दसमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
सोलसमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
बारसम करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
चउद्दसमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता
दसमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता
बारसमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता
अट्ठम करेइ करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
दसमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता
छट्ठ करेइ, करित्ता

[सस्कृत छाया]

ि तितमं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
अष्टादशं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
विंशतितमं करोति, कृत्वा
ामगुणितं पारयति, पारयित्वा
षोडशं करोति, कृत्वा
ाकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
अष्टादशं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चतुर्दशं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
षोडशं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
द्वादशम् करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चतुर्दशम् करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
दशमं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
द्वादशं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
अष्टमं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
दशमं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
षष्ठं करोति, कृत्वा

[हिन्दी शब्दार्थ]

नौ का तप किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
आठ उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
नौ उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
सात उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
आठ उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
छः उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
सात उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
पांच उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
छः उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
चार उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
पांच किये, करके
सर्वकामगुण पारणा किया, करके
तेला किया, करके
सर्वकामगुण पारणा किया, करके
चार किये, करके
सर्वकामगुण पारणा किया, करके
बेला किया, करके

[हिन्दी अर्थ]

सात किये और सर्वकामगुण पारणा किया।

नव किया और सर्वकामगुण पारणा किया।

आठ किया और सर्वकामगुण पारणा किया।

नव किया और सर्वकामगुण पारणा किया

सात किया और सर्वकामगुण पारणा किया

आठ किया और सर्वकामगुण पारणा किया

छह किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

सात किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

पाँच किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

छह किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

चौला किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

पाँच किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

तेला किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

चौला किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

[मूल सूत्र पाठ]

बीसइमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
अट्ठारसमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
बीसइमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
सोलसमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
अट्ठारसमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता
चउद्दसमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
सोलसमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
बार ं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
चउद्दसमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
दसमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता
बारसमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
अट्ठम करेइ करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
दसमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
छट्ठ करेइ, करित्ता

[सस्कृत छाया]

ि तितमं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
अष्टादशं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
विंशतितमं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
षोडशं करोति, कृत्वा
ंकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
अष्टादशं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चतुर्दशं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
षोडशं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
द्वादशम् करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चतुर्दशम् करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
दशमं करोति, कृत्वा
ंकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
द्वादशं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
अष्टमं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
दशमं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
षष्ठं करोति, कृत्वा

[हिन्दी शब्दार्थ]

नौ का तप किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
आठ उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
नौ उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
सात उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
आठ उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
छः उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
सात उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
पांच उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
छः उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
चार उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
पांच किये, करके
सर्वकामगुण पारणा किया, करके
तेला किया, करके
सर्वकामगुण पारणा किया, करके
चार किये, करके
सर्वकामगुण पारणा किया, करके
बेला किया, करके

[हिन्दी अर्थ]

सात किये और सर्वकामगुण पारणा किया।

नव किया और सर्वकामगुण पारणा किया।

आठ किया और सर्वकामगुण पारणा किया।

नव किया और सर्वकामगुण पारणा किया

सात किया और सर्वकामगुण पारणा किया

आठ किया और सर्वकामगुण पारणा किया

छह किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

सात किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

पाँच किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

छह किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

चौला किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

पाँच किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

तेला किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

चौला किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

(मूल सूत्र पाठ)

सव्वकामगुणियं पारेइ पारित्ता
अट्ठमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ पारित्ता
चउत्थं, करेइ करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ पारित्ता
छट्ठं करेइ करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ पारित्ता
चउत्थ करेइ करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ पारित्ता[37]
तहेव चत्तारि परिवाडीओ,
एक्काए परिवाडीए
छम्मासा सत्त य दिवसा ।
चउण्हं दो वरिसा, अट्ठावीसा
य दिवसा ।
जाव सिद्धा ।३।

(संस्कृत छाया)

सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
अष्टमं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चतुर्थं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
षष्ठं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चतुर्थं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
तथैव चतस्रः परिपाट्यः,
एकस्यां परिपाट्याम् (कालः)
षण्मासाः सप्त च दिवसाः ।
चतसृणां (परिपाटीनां कालः)
द्वे वर्षे अष्टाविंशतिः च दिवसाः
(भवन्ति) यावत् सिद्धा ।३।

इति तृतीयमध्ययनम्

अथ चतुर्थमध्य

एवं कण्हा वि ।
णवरं महासीहणिक्कीलियं तवोकम्मं
जहेव खुड्डागं ।
णवरं चोत्तीसइमं जाव णेयव्वं,
तहेव ऊसारेयव्वं,
एक्काए परिवाडीए एगं
वरिसं, छम्मासा अट्ठारस य दिवसा ।

एवं कृष्णापि ।
विशेषः (एषा) महासिंहनिष्क्रीडितं तपः
कर्म (करोति) यथा क्षुल्लकः ।
विशेषः चतुस्त्रिंशद् यावन्नेतव्यम्,
तथैव उत्सारयितव्यम् ।
एकस्यां परिपाट्या एकम्
वर्षं षण्मासाः अष्टादश च दिवसाः ।

[हिन्दी शब्दार्थ]

सर्वकामगुण पारणा किया, करके
तेला किया, करके
सर्वकामगुण पारणा किया, करके
उपवास किया, करके
सर्वकामगुण पारणा किया, करके
बेला किया, करके
सर्वकामगुण पारणा किया, करके
उपवास किया, करके
सर्वकामगुण पारणा किया, करके
इसी प्रकार चारो परिपाटियां हैं ।
एक परिपाटी मे छः
महीने और सात दिन का समय लगा ।
चारों परिपाटी का काल दो
वर्ष और अट्ठावीस दिन
होते है । यावत् सिद्ध हुई ।३।

[हिन्दी अर्थ]

बेला किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

तेला किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

उपवास किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

बेला किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

उपवास किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

इसी प्रकार चारो परिपाटिया समझनी चाहिये । एक परिपाटी मे छह महीने और सात दिन लगे । चारो परिपाटियो का काल दो वर्ष और अट्ठावीस दिन होते हैं । इस प्रकार तप करती हुई अन्त मे आर्या महा-काली भी सलेखना करके सिद्ध बुद्ध और मुक्त हो गई ।

तीसरा अध्ययन समाप्त

चौथा अध्ययन

इसी प्रकार कृष्णा रानी भी
विशेष—महासिंह निष्क्रीडित
किया लघुसिंह निष्क्रीडित के समान
विशेष—१६ तक तप किया जाता है
और उसी प्रकार उतारा जाता है ।
एक परिपाटी में एक छः महीने
और अट्ठारह दिन लगे ।

इसी प्रकार कृष्णा रानी का भी चौथा अध्ययन समझना चाहिये ।

महाकाली से इसमे विशेषता यह है कि इन्होने महासिंहनिष्क्रीडित तप किया । लघु-सिंह निष्क्रीडित तप से इसमे इतनी विशेषता

[मूल सूत्र पाठ]

चउण्हं छ वरिसा, दो मासा
बारस य अहोरत्ता,
सेसा जहा कालीए,
जाव सिद्धा ।४।

[सस्कृत छाया]

चतसृणां परिपाटीनां (लः) `
रिणि द्वौ मासौ-द्वा च अहोरात्राः
शेषं यथा काल्याः
यावत् सिद्धा ।४।

इति चतुर्थाध्ययनम्

अथ पंचमाध्ययनम्

एवं सुकण्हा वि,
णवरं सत्तसत्तमियं भिक्खु-
पडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ ।
पढमे सत्तए एक्केक्कं भोयणस्स
दत्ती पडिगाहेइ,
एक्केक्कं पाणगस्स ।
दोच्चे सत्तए दो दो भोयणस्स
दो दो पाणगस्स ।
तच्चे सत्तए तिण्णि भोयणस्स
तिण्णि पाणगस्स ।
चउत्थे चउ, पंचमे पंच,
छट्ठे छ, सत्तमे सत्तए
सत्तदत्तीओ भोयणस्स पडिग्गाहेइ,
सत्तपाणगस्स ।
एवं खलु सत्तसत्तमियं
भिक्खुपडिमं एगूणपण्णाए
राइंदिएहिं, एगेण य
छण्णउएणं भिक्खासएणं
अहासुत्त जाव आराहित्ता जेणेव
अज्जचदणा अज्जा तेणेव उवागया ।
अज्जचंदणं अज्जं वंदइ,

एवं सुकृष्णापि,
विशेषः—सप्तसप्तमिकां भिक्षु
प्रतिमाम् उपसं विहरति ।
प्रथमे सप्तके एकैकां भोजनस्य
दत्तिं प्रतिगृह्णाति,
तथा एकैकां पानीयस्य ।
द्वितीये सप्तके द्वे द्वे भोजनस्य
द्वे द्वे पानीयस्य ।
तृतीये सप्तके तिस्रः भोजनस्य
तिस्रः च पानकस्य ।
चतुर्थे चतस्रः, पंचमे पंच,
षष्ठे षट्, सप्तमे सप्तके
सप्तदत्तीः भोजनस्य प्रतिगृह्णाति,
सप्त पानकस्य ।
एवं खलु सप्तसप्तमिकां
भिक्षुप्रतिमां एकोनपंचाशत्
रात्रिन्दिवैः, एकेन च
षण्णवत्या भिक्षाशतेन
यथासूत्रं यावद् आराध्य यत्रैव
आर्यचंदना आर्या तत्रैव उपागता ।
आर्यचंदनां आर्या वन्दते

[हिन्दी शब्दार्थ]

चारो परिपाटियो मे ६ वर्ष दो महीने और बारह अहोरात्र लगते हैं। शेष काली की तरह। अन्त मे संलेखना करके यह भी सिद्ध हो गई।४।

[हिन्दी अर्थ]

है कि इसमे एक से लेकर १६ तक तप किया जाता है और उसी प्रकार उतारा जाता है। एक परिपाटी मे एक वर्ष छह महीने और अठारह दिन लगते है। चारो परिपाटियो मे छह वर्ष दो महीने और बारह अहोरात्र लगते है।

इति चतुर्थाध्ययनम्

अथ पंचमाध्ययनम्

इस प्रकार सुकृष्णा भी
विशेष—सप्त सप्तमिका
भिक्षु प्रतिमा ग्रहण करके विचरने लगी।
प्रथम सप्तक मे एक एक दत्ती भोजन
की और एक एक दत्ती पानी की
ग्रहण की।
द्वितीय सप्तक मे दो दो भोजन की
और दो दो पानी की।
तीसरे सप्तक मे तीन तीन दत्ती
भोजन की और तीन तीन पानी की।
चौथे सप्तक में चार, पांचवें में पाँच,
छठे में छ और सातवें सप्तक में सात
दाती भोजन की और सात ही पानी की
ग्रहण की। इस प्रकार सप्त सप्तमिका
भिक्षु प्रतिमा उनपचास दिनों में एक सौ
छियानवे भिक्षा दातियों से सूत्रानुसार
आराधना करके जहाँ पर आर्यचन्दना
आर्या थीं वहाँ पर आई।
आर्यचन्दना आर्या को वन्दना

शेष वर्णन काली आर्या की तरह है। अन्त मे सलेखना करके यह कृष्णा आर्या भी सिद्ध बुद्ध और मुक्त हो गई।

इसी प्रकार पाचव अध्ययन मे सुकृष्णा देवी का भी वर्णन समझना चाहिये।

यह भी श्रेणिक राजा की रानी और कौणिक राजा की छोटी माता थी। भगवान् का उपदेश सुनकर श्रमण दीक्षा अगीकार की। इसमे विशेषता यह है कि आर्य चन्दनबाला आर्या की आज्ञा प्राप्त कर आर्या सुकृष्णा 'सप्त सप्तमिका' भिक्षु प्रतिमा रूप तप अगीकार करके विचरने लगी, जिसकी विधि इस प्रकार है—प्रथम सप्ताह मे एक एक दत्ति (दाती) भोजन की और एक ही दत्ति पानी की ग्रहण की जाती है। दूसरे सप्ताह मे दो-दो दत्ति भोजन की और दो पानी की, तीसरे सप्ताह मे तीन दत्ति भोजन की और तीन पानी की, चौथे सप्ताह मे चार चार, पाचवें सप्ताह (सप्तक) मे पाच पाच छठे मे छह छह, और सातवें सप्ताह मे सात दत्ति भोजन की ली जाती है और सात ही पानी की ग्रहण की जाती है।

[मूल सूत्र पाठ]

चउण्हं छ वरिसा, दो मासा
बारस य अहोरत्ता,
सेसा जहा कालीए,
जाव सिद्धा ।४।

[संस्कृत छाया]

चतसृणां परिपाटीनां (कालः)
 णि द्वौ मासौ-द्वादश च अहोरात्राः
शेषं यथा काल्याः
यावत् सिद्धा ।४।

इति चतुर्थाध्ययनम्

अथ पं ध्ययनम्

एवं सुकण्हा वि,
णवरं सत्तसत्तमियं भिक्खु-
पडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ ।
पढमे सत्तए एक्केक्कं भोयणस्स
दत्ती पडिगाहेइ,
एक्केक्कं पाणगस्स ।
दोच्चे सत्तए दो दो भोयणस्स
दो दो पाणगस्स ।
तच्चे सत्तए तिण्णि भोयणस्स
तिण्णि पाणगस्स ।
चउत्थे चउ, पंचमे पंच,
छट्ठे छ, सत्तमे सत्तए
सत्तदत्तीओ भोयणस्स पडिग्गाहेइ,
सत्तपाणगस्स ।
एव खलु सत्तसत्तमियं
भिक्खुपडिमं एगूणपण्णाए
राइंदिएहिं, एगेण य
छण्णउएणं भिक्खासएणं
अहासुत्तं जाव आराहित्ता जेणेव
अज्जचंदणा अज्जा तेणेव उवागया ।
अज्जचंदणं अज्जं वंदइ,

एवं सुकृष्णापि,
विशेषः—सप्तसप्तमिकां भिक्षु
प्रतिमाम् उपसं विहरति ।
प्रथमे सप्तके एकैकां भोजनस्य
दत्तिं प्रतिगृह्णाति,
तथा एकैकां पानीयस्य ।
द्वितीये सप्तके द्वे द्वे भोजनस्य
द्वे द्वे पानीयस्य ।
तृतीये सप्तके तिस्रः भो
तिस्रः च पानकस्य ।
चतुर्थ चतस्रः, पंचमे पंच,
षष्ठे षट्, सप्तमे सप्तके
सप्तदत्तीः भोजनस्य प्रतिगृह्णाति,
सप्त पानकस्य ।
एवं खलु सप्तसप्तमिकां
भिक्षुप्रतिमा एकोनपंचाशत्
रात्रिन्दिवैः, एकेन च
षण्णवत्या भिक्षाशतेन
यथासूत्रं यावद् आराध्य यत्रैव
आर्यचंदना आर्या तत्रैव उपागता ।
आर्यचंदनां आर्या वन्दते

[हिन्दी शब्दार्थ]

चारों परिपाटियो मे ६ वर्ष दो महीने और बारह अहोरात्र लगते है । शेष काली की तरह । अन्त मे संलेखना करके यह भी सिद्ध हो गई ।४।

[हिन्दी अर्थ]

है कि इसमे एक से लेकर १६ तक तप किया जाता है और उसी प्रकार उतारा जाता है। एक परिपाटी मे एक वर्ष छह महीने और अठारह दिन लगते है। चारो परिपाटियो मे छह वर्ष दो महीने और बारह अहोरात्र लगते है ।

इति चतुर्थाध्ययनम्

अथ पंचमाध्ययनम्

इस प्रकार सुकृष्णा भी
विशेष—सप्त सप्तमिका
भिक्षु प्रतिमा ग्रहण करके विचरने लगी।
प्रथम सप्तक मे एक एक दत्ती भोजन की और एक एक दत्ती पानी की ग्रहण की ।
द्वितीय सप्तक मे दो दो भोजन की और दो दो पानी की ।
तीसरे सप्तक में तीन तीन दत्ती भोजन की और तीन तीन पानी की ।
चौथे सप्तक में चार, प॰ ॰ में पॉच, छठे मे छ और सातवें सप्तक मे सात दाती भोजन की और सात ही पानी की ग्रहण की। इस प्रकार सप्त सप्तमिका भिक्षु प्रतिमा उनपचास दिनो मे एक सौ छियानवे भिक्षा दातियों से सूत्रानुसार आराधना करके जहाँ पर आर्यचन्दना आर्या थीं वहाँ पर आई ।
आर्यचन्दना आर्या को वन्दना

शेप वर्णन काली आर्या की तरह है। अन्त मे सलेखना करके यह कृष्णा आर्या भी सिद्ध बुद्ध और मुक्त हो गई ।

इसी प्रकार पाचव अध्ययन मे सुकृष्णा देवी का भी वर्णन समझना चाहिये ।

यह भी श्रेणिक राजा की रानी और कौणिक राजा की छोटी माता थी। भगवान् का उपदेश सुनकर श्रमण दीक्षा अगीकार की। इसमे विशेषता यह है कि आर्य चन्दनबाला आर्या की आज्ञा प्राप्त कर आर्या सुकृष्णा 'सप्त सप्तमिका' भिक्षु प्रतिमा रूप तप अगीकार करके विचरने लगी, जिसकी विधि इस प्रकार है—प्रथम सप्ताह मे एक एक दत्ति (दाती) भोजन की और एक ही दत्ति पानी की ग्रहण की जाती है। दूसरे सप्ताह मे दो-दो दत्ति भोजन की और दो पानी की, तीसरे सप्ताह मे तीन दत्ति भोजन की और तीन पानी की, चौथे सप्ताह मे चार चार, पाचवे सप्ताह (सप्तक) मे पाच पाच छठे मे छह छह, और सातवें सप्ताह मे सात दत्ति भोजन की ली जाती है और सात ही पानी की ग्रहण की जाती है ।

[मूल सूत्र पाठ]

णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता
एवं वयासी—
"इच्छामि णं ाओ !
तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया समाणी
अट्ठट्ठमियं भिक्खुपडिमं
उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए ।"
"अहासुहं देवाणुप्पिए !
मा पडिबंधं करेह ।"
तएणं सा सुकण्हा अज्जा
अज्जचंदणाए अज्जाए अब्भ-
णुण्णाया समाणी अट्ठट्ठमि
भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ताणं
विहरइ ।
पढमे अट्ठए एक्केक्कं भोयणस्स
दत्ति पडिगाहेइ, एक्केक्कं
पाणगस्स दत्ति जाव अट्ठमे
अट्ठए अट्ठट्ठ भोयणस्स दत्ति
पडिगाहेइ, अट्ठ पाणगस्स ।
एव खलु अट्ठट्ठमियं भिक्खु-
पडिमं चउसट्ठीए राइंदिएहिं
दोहिं य अट्ठासीएहिं भिक्खा-
सएहिं अहासुत्तं जाव आराहित्ता,
णवणवमियं भिक्खु-
पडिमं उवसंपज्जित्ताणं
विहरइ ।
पढमे णवए एक्केक्कं भोयणस्स
दत्ति पडिगाहेइ एक्केक्कं

[संस्कृत छाया]

नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा
एवमवादीत्—
"इच्छामि खलु हे आर्याः !
युष्माभिः अभ्यनुज्ञाता सती
अष्ट अष्टमिकां भिक्षुप्रति ं
उपसं विहर्तुम् ।"
"यथासुखं देवानुप्रिये !
मा प्रतिबन्धं कुरु ।"
: खलु सा सुकृष्णा आर्या
आर्यचन्दनया आर्यया अभ्य-
नुज्ञाता सती अष्ट अष्टमि ं
भिक्षु प्रतिमाम् उपसं खलु
विहरति ।
प्रथमे अष्टके एकैकां भोजनस्य
दत्ति प्रतिगृह्णाति, एकैकां
पानकस्य दत्ति यावत् अष्टमे
अष्टके अष्टाष्ट भोजनस्य दत्तीः
प्रतिगृह्णाति, अष्ट पानकस्य ।
एवं खलु अष्ट अष्टमिकां भिक्षु-
प्रतिमां चतुष्षष्ठ्या रात्रिन्दिवैः
द्वाभ्यां च अष्टाशीत्या भिक्षा
शतैः यथासूत्रं यावत् आराध्य
नवनव मिकां भिक्षु
प्रतिमाम् उपसं
विहरति ।
प्रथमे नवके एकैकां भोजनस्य
दत्ति प्रतिगृह्णाति एकैकां

[हिन्दी शब्दार्थ]

नमस्कार की, वन्दन नमस्कार करके इस प्रकार बोली—
"हे आर्ये ! आपकी आज्ञा प्राप्त होने पर मैं 'अष्ट अष्टमिका' भिक्षु प्रतिमा अंगीकार करके विचरना चाहती हू।"
"हे देवानुप्रिये ! जैसे सुख हो वैसे ही करो। धर्म कार्य मे प्रतिबन्ध मत करो।" ।१।
तदनन्तर वह सुकृष्णा आर्या आर्य-चन्दना आर्या की आज्ञा प्राप्तकर अष्ट अष्टमिका भिक्षु प्रतिमा अंगीकार करके विचरने लगी।
प्रथम अष्टक मे एक एक भोजन की दत्ति ग्रहण की और एक एक दत्ति जल की यावत् आठवें अष्टक में आठ दत्ति भोजन की और आठ दत्ति जल की ग्रहण की।
इस प्रकार अष्ट अष्टमिका भिक्षु प्रतिमा चौसठ रात दिनों मे दो सौ अट्ठासी भिक्षा दत्तियो से सूत्रानुसार यावत् आराधना करके आर्या सुकृष्णा नव-नवमिका भिक्षु प्रति ा को अंगीकर करके विचरने लगी।
प्रथम नवक मे एक एक भोजन की दत्ति और एक एक पानी की दत्ति

[हिन्दी अर्थ]

इस प्रकार उनपचास (४९) रात-दिन मे एक सौ छियानवे (१९६) भिक्षा की दत्तिया होती है।

सुकृष्णा आर्या ने सूत्रोक्त विधि के अनुसार इसी 'सप्त सप्तमिका' भिक्षु प्रतिमा तप की सम्यग् आराधना की। इसमे आहार-पानी की सम्मिलित रूप से प्रथम सप्ताह मे सात दत्तिया हुई, दूसरे सप्ताह मे चौदह, तीसरे सप्ताह मे इक्कीस, चौथे मे अट्ठाईस, पाचवे मे पैंतीस, छठे मे बयालीस, और सातवे सप्ताह मे उनपचास दत्तिया हुई। इस प्रकार सभी मिलाकर कुल एक सौ छियानवे (१९६) दत्तिया हुई।

इस तरह सूत्रानुसार इस प्रतिमा का आराधन करके सुकृष्णा सती आर्या चन्दन-बाला के पास आई और उन्हे वन्दना नम-स्कार करके इस प्रकार बोली—

"हे आर्ये ! आपकी आज्ञा हो तो म 'अष्ट-अष्टमिका' भिक्षु प्रतिमा का तप अगीकार करके विचरू।

आर्य चन्दना —"हे देवानुप्रिये ! जैसा तुम्हे सुख हो वैसा करो। धर्म कार्य मे प्रमाद मत करो।"

फिर वह सुकृष्णा आर्या आर्य चदना आर्या की आज्ञा प्राप्त होने पर 'अष्ट-अष्टमिका' भिक्षु प्रतिमा अगीकार करके विचरने लगी।

इस तप मे प्रथम अष्टक मे एक-एक दत्ति भोजन की और एक-एक दत्ति पानी की ग्रहण की जाती है यावत् इसी क्रम से दूसरे अष्टक मे प्रति दिन दो दत्तिया आहार की और दो ही दत्तिया पानी की ली जाती है,

[मूल सूत्र पाठ]

णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता
एवं वयासी—
"इच्छामि णं अज्जाओ !
तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया समाणी
अट्ठट्ठमियं भिक्खुपडिमं
उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए ।"
"अहासुहं देवाणुप्पिए !
मा पडिबंधं करेह ।"
तएणं सा सुकण्हा अज्जा
अज्जचंदणाए अज्जाए अब्भ-
णुण्णाया समाणी अट्ठट्ठमियं
भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ताणं
विहरइ ।
पढमे अट्ठए एक्केक्कं भोयणस्स
दत्तिं पडिगाहेइ, एक्केक्कं
पाणगस्स दत्तिं जाव अट्ठमे
अट्ठए अट्ठट्ठ भोयणस्स दत्तिं
पडिगाहेइ, अट्ठ पाणगस्स ।
एव खलु अट्ठट्ठमियं भिक्खु-
पडिमं चउसट्ठीए राइंदिएहिं
दोहिं य अट्ठासीएहिं भिक्खा-
सएहिं अहासुत्तं जाव आराहित्ता,
णवणवमियं भिक्खु-
पडिम उवसंपज्जित्ताणं
विहरइ ।
पढमे णवए एक्केक्कं भोयणस्स
दत्तिं पडिगाहेइ एक्केक्कं

[संस्कृत छाया]

नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा
एवमवादीत्—
"इच्छामि खलु हे आर्याः !
युष्माभिः अभ्यनुज्ञाता सती
अष्ट अष्टमिकां भिक्षुप्रतिमां
उपसंपद्य विहर्तुम् ।"
"यथासुखं देवानुप्रिये !
मा प्रतिबन्धं कुरु ।"
: खलु सा सुकृष्णा आर्या
आर्यचन्दनया आर्यया अभ्य-
नुज्ञाता सती अष्ट अष्टमिकां
भिक्षु प्रतिमाम् उपसं खलु
विहरति ।
प्रथमे अष्टके एकैकां भोजनस्य
दत्तिं प्रतिगृह्णाति, एकैकां
पानकस्य दत्तिं यावत् अष्टमे
अष्टके अष्टाष्ट भोजनस्य दत्तीः
प्रतिगृह्णाति, अष्ट पानकस्य ।
एवं खलु अष्ट अष्टमिकां भिक्षु-
प्रतिमां चतुष्षष्ठ्या रात्रिन्दिवैः
द्वाभ्यां च अष्टाशीत्या भिक्षा
शतैः यथासूत्रं यावत् आराध्य
नवनव मिकां भिक्षु
प्रतिमाम् उपसंपद्य
विहरति ।
प्रथमे नवके एकैकां भोजनस्य
दत्तिं प्रतिगृह्णाति एकैकां

[हिन्दी शब्दार्थ]

नमस्कार की, वन्दन नमस्कार करके इस प्रकार बोली—
"हे आर्ये ! आपकी आज्ञा प्राप्त होने पर मैं 'अष्ट अष्टमिका' भिक्षु प्रतिमा अगीकार करके विचरना चाहती हू।"
"हे देवानुप्रिये ! जैसे सुख हो वैसे ही करो। धर्म कार्य मे प्रतिबन्ध मत करो।" ।१।
तदनन्तर वह सुकृष्णा आर्या आर्य-चन्दना आर्या की आज्ञा प्राप्तकर अष्ट अष्टमिका भिक्षु प्रतिमा अगीकार करके विचरने लगी।
प्रथम अष्टक मे एक एक भोजन की दत्ति ग्रहण की और एक एक दत्ति जल की यावत् आठवें अष्टक में आठ दत्ति भोजन की और आठ दत्ति जल की ग्रहण की।
इस प्रकार अष्ट अष्टमिका भिक्षु प्रतिमा चौसठ रात दिनो में दो सौ अट्ठासी भिक्षा दत्तियो से सूत्रानुसार यावत् आराधना करके आर्या सुकृष्णा नव-नवमिका भिक्षु प्रतिमा को अंगीकर करके विचरने लगी।
प्रथम नवक में एक एक भोजन की दत्ति और एक एक पानी की दत्ति

[हिन्दी अर्थ]

इस प्रकार उनपचास (४९) रात-दिन मे एक सौ छियानवे (१९६) भिक्षा की दत्तिया होती है।

सुकृष्णा आर्या ने सूत्रोक्त विधि के अनुसार उसी 'सप्त सप्तमिका' भिक्षु प्रतिमा तप की सम्यग् आराधना की। इसमे आहार-पानी की सम्मिलित रूप से प्रथम सप्ताह मे सात दत्तिया हुई, दूसरे सप्ताह मे चौदह, तीसरे सप्ताह मे इक्कीस, चौथे मे अट्ठाईस, पाचवे मे पैंतीस, छठे मे बयालीस, और सातवे सप्ताह मे उनपचास दत्तिया हुई। इस प्रकार सभी मिलाकर कुल एक सौ छियानवे (१९६) दत्तिया हुई।

इस तरह सूत्रानुसार इस प्रतिमा का आराधन करके सुकृष्णा सती आर्या चन्दन-बाला के पास आई और उन्हे वन्दना नम-स्कार करके इस प्रकार बोली—

"हे आर्ये ! आपकी आज्ञा हो तो मै 'अष्ट-अष्टमिका' भिक्षु प्रतिमा का तप अगीकार करके विचरू।

आर्य चन्दना —"हे देवानुप्रिये ! जैसा तुम्हे सुख हो वैसा करो। धर्म कार्य मे प्रमाद मत करो।"

फिर वह सुकृष्णा आर्या आर्य चदना आर्या की आज्ञा प्राप्त होने पर 'अष्ट-अष्टमिका' भिक्षु प्रतिमा अगीकार करके विचरने लगी।

इस तप मे प्रथम अष्टक मे एक-एक दत्ति भोजन की और एक-एक दत्ति पानी की ग्रहण की जाती है यावत् इसी क्रम से दूसरे अष्टक मे प्रति दिन दो दत्तिया आहार की और दो ही दत्तिया पानी की ली जाती है,

[मूल सूत्र पाठ]

पाणगस्स, जाव णवमे णवए
णवणव दत्ती भोयणस्स
पडिगाहेइ णव पाणगस्स ।
एवं खलु णवणवमियं भिक्खु-
पडिमं एकासीइ राइंदिएहिं
चउहिं पंचोत्तरेहिं, भिक्खासएहिं
अहासुत्तं जाव आराहित्ता ।
दसदसमियं भिक्खुपडिमं उव-
संपज्जित्ताणं विहरइ ।
पढमे दसए एक्केक्कं भोयणस्स
दत्तिं पडिगाहेइ एक्केक्कं पाण-
गस्स जाव दसमे दसए दस-
दस भोयणस्स, दसदस पाणगस्स ।
एवं खलु एयं दसदसमियं
भिक्खुपडिमं एक्केणं राइंदिय-
सएणं अद्धछट्ठेहिं भिक्खा-
सएहिं अहासुत्तं जाव आराहेइ ।
आराहित्ता बहूहिं चउत्थ जाव
मासद्धमासविविह तवोकम्मेहिं
अप्पाणं भावेमाणी विहरइ ।
तए णं सा सुकण्हा अज्जा
तेणं ओरालेणं जाव सिद्धा ।५।

[संस्कृत छाया]

पानकस्य यावत् नवमे नवके
नवनव ाीः भोजनस्य प्रति-
गृह्णाति नव च पानकस्य ।
एवं खलु नवनवमिकां भिक्षु-
प्रतिमां एकाशीत्या रात्रिन्दिवैः
चतुर्भिः पंचोत्तरैः भिक्षा ैः
यथासूत्रं यावदाराध्य
दशदशमिकां भिक्षुप्रतिमाम्
उपसं विहरति ।
प्रथमे दशके एकैकां भोजनस्य
दत्तिं प्रतिगृह्णाति एकैकां पान-
कस्य यावत् दशमे दशके दश
दश भो स्य दश दश च पानकस्य ।
एवं खलु एतां दशदशमिकां
भिक्षुप्रति ां एकेन रात्रिन्दिव-
शतेन अर्द्धषष्ठैः भिक्षाशतैः
यथासूत्रं यावत् आराधयति ।
आराध्य बहुभिः चतुर्थं यावत्
मासार्द्धमासविविधतपः कर्मभिः
आत्मानं भा न्ती विहरति ।
ततः खलु सा सुकृष्णा आर्या
तेन उदारेण(त ा)यावत् सिद्धा ।५।

इति पंचमाध्ययनम्

षष्ठमध्ययनम्

एवं महाकण्हा वि । णवरं
खुड्डागं सव्वओभद्दं पडिमं

एव महाकृष्णापि । विशेषस्तु
क्षुल्लकां सर्वतोभद्र-प्रतिमां

[हिन्दी शब्दार्थ] [हिन्दी अर्थ]

ग्रहण करती यावत् नवमे नवक मे प्रतिदिन नव दत्ती भोजन की और नव दत्ती पानी की ग्रहण करती । इस प्रकार नवनवमिकाभिक्षुप्रतिमा इक्यासी दिनो मे चार सौ पांच भिक्षादत्तियो से सूत्रानुसार यावत् आराधना करके फिर दशदशमिका भिक्षुप्रतिमा अंगीकार करके विचरने लगी। प्रथम दशक मे एक एक भोजन की दत्ति ग्रहण करती और एक एक पानी की। यावत् दसवें दशक मे दस दस दाती भोजन की और दस दस पानी की ग्रहण की ।

इस प्रकार यह दशदशमिका भिक्षु प्रतिमा एक सौ रात-दिनो मे पाँच सौ पचास भिक्षादत्तियो से सूत्रानुसार यावत् आराधना करके बहुत से उपवास यावत् मास अर्द्ध मास आदि विविध तपः कर्म से आत्मा को भावित करती हुई विचरने लगी ।

फिर वह सुकृष्णा आर्या उस उदार श्रेष्ठ तप से यावत् शुद्ध बुद्ध मुक्त हो गई।

उस तप मे प्रथम नवक मे प्रतिदिन वे एक एक दत्ति भोजन की और एक एक पानी की ग्रहण करती यावत् क्रम से बढते बढते नवमे नवक मे प्रतिदिन नौ दत्तिया भोजन की और नव ही पानी की दत्तिया ग्रहण करती । इस प्रकार इक्यासी दिनो मे चारसौ पाच भिक्षा दत्तियो से 'नवनवमिका' भिक्षु प्रतिमा पूरी हुई, जिसकी सूत्रोक्त विधि के अनुसार सम्यग् आराधना करती हुई आर्या सुकृष्णा विचरने लगी ।

उसके पश्चात् पूर्व की तरह यावत् अपनी गुरुणीजी की आज्ञा प्राप्तकर सुकृष्णा आर्या ने 'दश दशमिका' भिक्षु प्रतिमा रूप तप स्वीकार किया । इस तप के आराधना काल मे वे प्रथम दशक मे प्रतिदिन एक एक दत्ति भोजन की और एक एक दत्ति पानी की यावत् इसी क्रम से बढाते बढाते दसवे दशक मे प्रतिदिन दस दत्तिया भोजन की और दस ही दत्तिया पानी की ग्रहण करती ।

इस प्रकार उन आर्या सुकृष्णा ने इस 'दश दशमिका' भिक्षु प्रतिमा रूप तप को एक सौ रात दिनो मे पाच सौ पचास भिक्षा दत्तियो से पूर्ण किया ।

सूत्रानुसार इस 'दश दशमिका' भिक्षु प्रतिमा तप की आराधना करके बहुत से यावत् मास, अर्द्धमास आदि विविध तप-कर्म से आर्या सुकृष्णा अपनी आत्मा को भावित करती हुई विचरने लगी ।

इति पंचम अध्ययन

. । अध्ययन

इसी प्रकार महासेन कृष्णा का भी (अध्ययन समझना चाहिए) । विशेष

इस तरह वह सुकृष्णा आर्या उन उदार श्रेष्ठ तपो की आराधना करते करते शरीर से

[मूल सूत्र पाठ]

उवसंपज्जित्ताणं विहरइ । त जहा-

चउत्थं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
छट्ठं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
अट्ठमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
दसमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
दुवालसमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
अट्ठमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
दसमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
दुवालसमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
चउत्थ करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
छट्ठं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
दुवालसम करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
चउत्थं करेइ, करित्ता

[संस्कृत छाया]

उपसंपद्य विहरति, तद् यथा—

चतुर्थं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
षष्ठं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
अष्टमं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
दशमं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
द्वादशं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
अष्टमं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
दशमं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
द्वादशं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चतुर्थं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
षष्ठं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
द्वादशं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चतुर्थं करोति, कृत्वा

[हिन्दी शब्दार्थ]

(यह कि वह आर्यचन्दना आर्या की आज्ञा प्राप्त कर) लघुसर्वतोभद्र प्रतिमा अंगीकार करके विचरने लगी, जो इस प्रकार है—
उसने उपवास किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
बेला किया, करके
सर्वकामगुणित पारणा किया, करके
तेला किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
चौला किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
पाँच उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
तेला किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
चौला किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
पाँच उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
उपवास किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
बेला किया, करके
सर्वकामगुणित पारणा किया, करके
पाँच उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
उपवास किया, करके

[हिन्दी अर्थ]

अत्यन्त कृश हो गयी एवं अन्त मे संलेखना संथारा करके सम्पूर्ण कर्मों का क्षय कर वे सिद्ध-बुद्ध एवं मुक्त हो गयी।

इसी प्रकार छठा महासेन कृष्णा का अध्ययन भी समझना चाहिये।

ये राजा श्रेणिक की रानी एवं राजा कोणिक की छोटी माता थी। इन्होंने भी यावत् भगवान के पास दीक्षा ली।

विशेष, आर्या चन्दनवाला की आज्ञा प्राप्त कर आर्या महासेन कृष्णा लघु (क्षुद्र-क्षुल्लक) सर्वतोभद्र प्रतिमा का तप अंगीकर करके विचरने लगी। इस तप की विधि इस प्रकार है—

इसमे सर्व प्रथम उपवास किया, करके सर्वकामगुण पारणा किया, करके
बेला किया करके सर्वकामगुण पारणा किया
तेला करके सर्वकामगुण पारणा किया
चोला करके सर्वकामगुण पारणा किया
पचोला करके सर्वकामगुण पारणा किया
तेला करके सर्वकामगुण पारणा किया
चोला करके सर्वकामगुण पारणा किया
पचोला करके सर्वकामगुण पारणा किया
उपवास करके सर्वकामगुण पारणा किया
बेला करके सर्वकामगुण पारणा किया
पचोला करके सर्वकामगुण पारणा किया
उपवास करके सर्वकामगुण पारणा किया

[मूल सूत्र पाठ]

सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
छट्ठं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
अट्ठमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता
दसमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
छट्ठं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
अट्ठमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
दसमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
दुवालसमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता
चउत्थं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
दसमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
दुवालसमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
चउत्थ करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
छट्ठं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
अट्ठमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता

[सस्कृत छाया]

सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
षष्ठं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
अष्टमं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
दशमं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
षष्ठं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
अष्टम करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
दशमं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
द्वादशं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चतुर्थं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
दशमं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
द्वादशं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चतुर्थं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
षष्ठं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
अष्टमं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा

[हिन्दी शब्दार्थ]

सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
बेला किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
तेला किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
चौला किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
बेला किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
तेला किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
चौला किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
पाँच उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
उपवास किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
चौला किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
पाँच उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
उपवास किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
बेला किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
तेला किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके

[हिन्दी अर्थ]

बेला करके सर्वकामगुण पारणा किया,

तेला करके सर्वकामगुण पारणा किया,

चोला करके सर्वकामगुण पारणा किया,

बेला करके सर्वकामगुण पारणा किया,

तेला करके सर्वकामगुण पारणा किया,

चोला करके सर्वकामगुण पारणा किया,

पचोला करके सर्वकामगुण पारणा किया,

उपवास करके सर्वकामगुण पारणा किया,

चोला करके सर्वकामगुण पारणा किया,

पचोला करके सर्वकामगुण पारणा किया,

उपवास करके सर्वकामगुण पारणा किया,

बेला करके सर्वकामगुण पारणा किया,

तेला करके सर्वकामगुण पारणा किया,

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
एवं खलु एयं खुड्डागसव्व-	एवं खलु एतां क्षुल्लकसर्वतो-
ओभद्दस्स तवोकम्मस्स	भद्रस्य तपः कर्मणः
पढमं परिवाडि तिहिं	प्रथमां परिपाटी त्रिभिः
मासेहिं दसहिं दिवसेहिं	मासैः दशभिः दिवसैः
अहासुत्तं जाव आराहित्ता	यथासूत्रं यावदाराध्य
दोच्चाए परिवाडिए	द्वितीयस्यां परिपाट्याम्
चउत्थं करेइ, करित्ता	चतुर्थं करोति, कृत्वा
विगइवज्जं पारेइ, पारित्ता	विकृतिवर्जं पारयति, पारयित्वा
जहा रयणावलीए तहा	यथा रत्नावल्यां तथा
एत्थ वि चत्तारि परिवाडीओ ।	अत्रापि चतस्त्रः परिपाट्यः ।
पारणा तहेव ।	पारणा तथैव ।
चउण्हं कालो संवच्छरो	चतसृणां कालः संवत्सरः ।
मासो दस य दिवसा ।	मासः दश च दिवसाः ।
सेसं तहेव जाव सिद्धा ।६।	शेषं तथैव यावत् सिद्धा ।६।

इति षष्ठमध्ययनम्

अथ सप्तमध्ययनम्

सूत्र १

एवं वीरकण्हा वि ।	एवं वीरकृष्णा अपि ।
णवरं महालयं सव्वओभद्दं	विशेषः—(एषा) महत् ˊतोभद्रं
तवोकम्मं उवसंपज्जित्ताणं	तपः कर्म उपसं
विहरइ । तं जहा—	विहरति । तद् यथाः—
चउत्थ करेइ, करित्ता	चतुर्थं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
छट्ठं करेइ, करित्ता	षष्ठं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
अट्ठम करेइ, करित्ता	अष्टमं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा

[हिन्दी शब्दार्थ]

इस प्रकार इस लघुसर्वतोभद्र तप· कर्म की प्रथम परिपाटी को तीन महीने और दस दिनो मे सूत्रानुसार आराधना करके दूसरी परिपाटी मे उपवास किया, करके विगय रहित पारणा किया ।
जैसे रत्नावली तप मे चार परिपाटी कही गई है वैसे ही यहाँ पर भी चार परिपाटियाँ होती हैं ।
पारणा उसी प्रकार करना चाहिये ।
चारो का काल एक वर्ष एक मास और दस दिन है ।
अन्त मे संलेखना करके महासेन कृष्णा भी सिद्ध बुद्ध मुक्त हो गईं ।

[हिन्दी अर्थ]

इस प्रकार यह लघु (क्षुद्र-क्षुल्लक) सर्वतोभद्र तप-कर्म की प्रथम परिपाटी तीन महीने और दस दिनो मे पूर्ण होती है । इसकी सूत्रानुसार सम्यग् रीति (विधि) मे आराधना करके आर्या महासेन कृष्णा ने इसकी दूसरी परिपाटी मे उपवास किया और विगयरहित पारणा किया ।

जैसे रत्नावली तप मे चार परिपाटियाँ बताई गई वैसे ही इस मे भी चार परिपाटियाँ होती है । पारणा भी उसी प्रकार समझना चाहिये ।

इसकी पहली परिपाटी मे पूरे सौ दिन लगे, जिसमे पच्चीस दिन पारणे के और पिचहत्तर दिन तपस्या के हुए । क्रम से इतने ही दिन दूसरी, तीसरी एव चौथी परिपाटी के हुए । इस तरह इन चारो परिपाटियो का सम्मिलित काल एक वर्ष, एक मास और दस दिन का हुआ ।

छठा अध्ययन समाप्त

सातवां अध्ययन

सूत्र १

इसी प्रकार वीरकृष्णा का अध्ययन भी समझना चाहिये ।
विशेषः—यह महत् सर्वतोभद्र तपः कर्म को अंगीकार करके विचरने लगी । वह जैसेः—उपवास किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
बेला कि[illegible]ा, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
तेला किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके

पहली एव दूसरी परिपाटी मे पारणे में विगय का त्याग कर दिया । तीसरी परिपाटी मे पारणे मे विगय के लेप मात्र का भी त्याग कर दिया । चौथी परिपाटी मे आयम्बिल किया ।

इस प्रकार इस तप की सूत्रोक्त विधि से आर्या महासेन कृष्णा ने आराधना की और अन्त मे सलेखना-सथारा करके सभी कर्मो का क्षय कर वे सिद्ध-बुद्ध और मुक्त हो गई ।

इसी प्रकार सातवा अध्ययन वीर सेन कृष्णा आर्या का भी समझना चाहिये । यह भी श्रेणिक राजा की छोटी रानी एव कौणिक

[मूल सूत्र पाठ]	[सस्कृत छाया]
दसमं करेइ, करित्ता	दशमं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	कामगुणितं पारयति, पारयित्वा
दुवालसमं करेइ, करित्ता	द्वाद करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चउद्दसमं करेइ, करित्ता	चतुर्दशं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
सोलसमं करेइ, करित्ता	षोडशं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
पढमा लया ।१।	(एषा) प्रथमा लता ।१।

सूत्र २

दसमं करेइ, करित्ता	दशमं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
दुवालसमं करेइ, करित्ता	द्वादशं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चउद्दसमं करेइ, करित्ता	चतुर्दशं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
सोलसमं करेइ, करित्ता	षोडशं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चउत्थं करेइ, करित्ता	चतुर्थं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
छट्ठं करेइ, करित्ता	षष्ठं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
अट्ठमं करेइ, करित्ता	अष्टमं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
बीया लया ।२।	(एवं) द्वितीया लता ।२।

सूत्र २

चार उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
पाँच उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
छः उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
सात उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
उपवास किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
बेला किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
तेला किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
इस प्रकार दूसरी लता पूर्ण की ।२।

तेला किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

चोला किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

पचोला किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

छह किये, और सर्वकामगुण पारणा किया,

सात किये, और सर्वकामगुण पारणा किया,

यह प्रथम लता हुई ।

चोला किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

पचोला किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

छह किये, और सर्वकामगुण पारणा किया,

सात किये, और सर्वकामगुण पारणा किया,

उपवास किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

[मूल सूत्र पाठ] [संस्कृत छाया]

सूत्र ३

सोलसमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
चउत्थं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
छट्ठं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
अट्ठम करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
दसमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
दुवालसमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता
चउद्दसमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
तइया लया ।३।

षोडशं करोति, कृत्वा
कामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चतुर्थं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
षष्ठं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
अष्टमं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
द ं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
द्वादशम् करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चतुर्दशं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
तृतीया लता ।३।

सूत्र ४

अट्ठमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
दसमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता
दुवालसमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
चउद्दसम करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता
सोलसम करेइ, करित्ता

अष्टमं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
दशमं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
द्वादशं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चतुर्दशम् करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
षोडशं करोति, कृत्वा

[हिन्दी भावार्थ] [हिन्दी अर्थ]

सूत्र ३

फिर सात उपवास किये, करके
सर्वकामगुणित पारणा किया, करके
उपवास किया, करके
सर्वकामगुणित पारणा किया, करके
बेला किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
तेला किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
चार उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
पाच उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
छः उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
इस प्रकार तृतीय लता पूर्ण हुई ।३।

बेला किया और सर्वकामगुण पारणा किया,
तेला किया और सर्वकामगुण पारणा किया,
यह दूसरी लता हुई ।
सात किये, और सर्वकामगुण पारणा किया,
उपवास किया और सर्वकामगुण पारणा किया,
बेला किया और सर्वकामगुण पारणा किया,
तेला किया और सर्वकामगुण पारणा किया,
चोला किया और सर्वकामगुण पारणा किया,
पचोला किया और सर्वकामगुण पारणा किया,
छह किये और सर्वकामगुण पारणा किया,
यह तीसरी लता हुई ।

सूत्र ४

तेला किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
चौला किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
पाच उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
छः उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
सात उपवास किये, करके

तेला किया और सर्वकामगुण पारणा किया,
चोला किया और सर्वकामगुण पारणा किया,
पचोला किया और सर्वकामगुण पारणा किया,
छह किये, और सर्वकामगुण पारणा किया,
सात किये, और सर्वकामगुण पारणा किया,

(मूल सूत्र पाठ)

सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
चउत्थं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
छट्ठं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
चउत्थी लया ।४।

(संस्कृत छाया)

सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चतुर्थं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
षष्ठं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चतुर्थी लता ।४।

सूत्र ५

चउद्दसम करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
सोलसमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
चउत्थ करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
छट्ठं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
अट्ठमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
दसमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
दुवालसमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता
पचमी लया ।५।

चतुर्दशं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
षोडशं करोति, कृत्वा
कामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चतुर्थं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
षष्ठं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
अष्टमं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
दशमं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
द्वादशं करोति, कृत्वा
कामगुणितं पारयति, पारयित्वा
पंचमी लता ।५।

सूत्र ६

छट्ठं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता

षष्ठ करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा

[हिन्दी शब्दार्थ]

सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
उपवास किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
वेला किया, करके
सर्वकामगुणित पारणा किया, करके
इस प्रकार चौथी लता पूर्ण हुई ।४।

[हिन्दी अर्थ]

उपवास किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

वेला किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

यह चौथी लता हुई ।

सूत्र ५

छः उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
सात उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
उपवास किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
वेला किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
तेला किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
चौला किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
पांच उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
इस प्रकार पाँचवी लता पूर्ण की ।५।

छह किये और सर्वकामगुण पारणा किया,

सात किये और सर्वकामगुण पारणा किया,

उपवास किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

वेला किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

तेला किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

चोला किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

पचोला किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

यह पाचवी लता हुई ।

सूत्र ६

बेला किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके

वेला किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

[मूल सूत्र पाठ]

अट्ठमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
दसमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
दुवालसमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
चउद्दसमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
सोलसमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
चउत्थं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
छट्ठी लया ।६।

[संस्कृत छाया]

अष्टमं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
दशमं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
द्वादशं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चतु करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
षोडशं करोति, कृत्वा
कामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चतुर्थं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
षष्ठी लता ।६।

सूत्र ७

दुवालसमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
चउद्दसमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता
सोलसमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
चउत्थ करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
छट्ठं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता
अट्ठमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता

द्वादशं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चतुर्दशं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
षोडशं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारयति, पारयित्वा
चतुर्थं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
षष्ठं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारयति, पारयित्वा
अष्टमं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारयति, पारयित्वा

[हिन्दी शब्दार्थ]

तेला किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
चौला किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
पाच किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
छः किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
सात किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
उपवास किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
यह छट्ठी लता हुई ।

[हिन्दी अर्थ]

तेला किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

चार किये और सर्वकामगुण पारणा किया,

पांच किये और सर्वकामगुण पारणा किया,

छह किये और सर्वकामगुण पारणा किया,

सात किये और सर्वकामगुण पारणा किया,

उपवास किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

इस तरह छठी लता सम्पूर्ण हुई ।

सूत्र ७

पांच किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
छः किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
सात किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
उपवास किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
बेला किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
तेला किया, करके
गुणयुक्त पारणा किया, करके

पाच किये और सर्वकामगुण पारणा किया,

छह का तप किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

सात किये और सर्वकामगुण पारणा किया,

उपवास किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

बेले का तप किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

तेला किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

(मूल सूत्र पाठ)

दसमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
सत्तमी लया ।७।

(संस्कृत छाया)

दशमं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
सप्तमी लता ।७।

सूत्र ८

एक्काए कालो अट्ठमासा पंच
य दिवसा ।
चउण्हं दो वासा अट्ठमासा
बीसं दिवसा ।
सेसं तहेव जाव सिद्धा ।

एकैकस्याः कालः मासाः
पंच च दि साः
चतसृणां कालः द्वौ वर्षौ अष्ट-
मासाः ति दिवसाः ।
शेषं तथैव यावत् सिद्धा ।

इति सप्तममध्ययनम्

अष्टममध्ययनम्

सूत्र १

एवं रामकण्हा वि ।

एवं रामकृष्णाऽपि ।

णवरं भद्दोत्तर पडिमं उवसंप-
ज्जित्ताणं विहरइ ।

विशेषः—भद्रोत्तरप्रतिमाम्
उपसंपद्य विहरति ।

तं जहा—
दुवालसमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
चउद्दसम करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
सोलसमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
अट्ठारसमं करेइ, करित्ता

तद् यथा—
द्वादशं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चतुर्दशं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
षोडशं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
अष्टादशं करोति, कृत्वा

[हिन्दी अनुवाद]

चौला किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
इस प्रकार पांचवी लता पूर्ण की ।७।

[हिन्दी अर्थ]

चौला किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

यह सातवी लता हुई ।७।

सूत्र ८

इस प्रकार सात लता की परिपाटी का काल आठ महीने और पांच दिन हुआ । चारो परिपाटियो का काल दो वर्ष आठ महीने और बीस दिन हुआ । शेष सूत्रानुसार । पूर्ण आराधना करके अन्त मे सलेखना करके यह भी सिद्ध बुद्ध मुक्त हो गई ।

इस प्रकार इस तप मे सात लताओ की एक परिपाटी हुई । इस तप मे भी कुल परिपाटिया चार होती है ।

इस मे एक परिपाटी का काल आठ महीने और पांच दिन हुए एव इसी हिसाब से चारो का काल दो वर्ष आठ महीने और बीस दिन होते है ।

प्रथम परिपाटी के आठ मास और पांच दिनो मे, उनपचास दिन पारणे के और छ मास सोलह दिन तपस्या के होते है ।

इस प्रथम परिपाटी मे पारणो मे विगय का त्याग नही किया ।

दूसरी परिपाटी मे पारणो मे विगय का त्याग किया ।

तीसरी परिपाटी मे पारणो मे विगय के लेप मात्र का भी त्याग कर दिया ।

चौथी परिपाटी मे पारणो मे आयम्बिल किये ।

इन चारो परिपाटियो को पूर्ण करने मे दो वर्ष आठ मास और वीस दिन का समय लगा ।

शेष आर्या वीर सेन कृष्णा ने सूत्रानुसार इस तप की साधना की और अन्त मे कृश काय होने पर वे भी सलेखना-सथारा कर यावत् सिद्ध-बुद्ध और मुक्त हो गई ।७।

सातवा अध्ययन समाप्त

आठवा अध्ययन

सूत्र १

इसी प्रकार आठवी रामकृष्णा देवी का अध्ययन भी समझना चाहिये । विशेष यह है कि वह रामकृष्णा देवी भद्रोत्तर प्रतिमा अंगीकार करके विचरण करने लगी । वह (भद्रोत्तर प्रतिमा) इस प्रकार है—
पाच उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
छः उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
सात उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
आठ उपवास किये, करके

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	र्का ुणितं पारयति, पारयित्वा
बीसइमं करेइ, करित्ता	विंशतितमं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	र्कामगुणितं पारयति, पारयित्वा
पढमा लया ।१।	(एवं) प्रथमा लता ।१।

सूत्र २

सोलसमं करेइ, करित्ता	षोडशं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
अट्ठारसमं करेइ, करित्ता	अष्टादश करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
वीसइमं करेइ, करित्ता	विंशतितमं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
दुवालसमं करेइ, करित्ता	द्वादश करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चउद्दसमं करेइ, करित्ता	चतुर्दशं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
वीया लया ।२।	(एवं) द्वितीया ।२।

सूत्र ३

वीसइमं करेइ, करित्ता	विंशतितमं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
दुवालसम करेइ, करित्ता	द्वादशम् करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चउद्दसम करेइ, करित्ता	चतुर्दशं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
सोलसमं करेइ, करित्ता	षोडशं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा

[हिन्दी शब्दार्थ]

सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
नौ उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
यह प्रथम लता हुई ।१।

[हिन्दी अर्थ]

इसी प्रकार आठवां रामकृष्णा देवी का अध्ययन भी समझना चाहिये। विशेष में, यह भी श्रेणिक राजा की रानी और राजा कोणिक की छोटी माता थी। इसने भी दीक्षा ली और आर्या चन्दनबाला की आज्ञा प्राप्त

सूत्र २

सात उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
आठ उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
नौ उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
पचौला किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
छः उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
इस प्रकार दूसरी लता पूर्ण की ।२।

कर रामकृष्णा 'भद्रोत्तर प्रतिमा' तप अंगीकार करके विचरने लगी।

उसकी विधि इस प्रकार है—

पांच किया और सर्वकामगुण पारणा किया,
छह किये और सर्वकामगुण पारणा किया,
सात किये और सर्वकामगुण पारणा किया,
आठ किये और सर्वकामगुण पारणा किया,
नव किये और सर्वकामगुण पारणा किया।

यह प्रथम लता हुई ।१।

सात किये और सर्वकामगुण पारणा किया।
आठ किये और सर्वकामगुण पारणा किया।
नव किये और सर्वकामगुण पारणा किया।

सूत्र ३

नौ उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
पचौला किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
छः उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
सात उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके

पचौला किया और सर्वकामगुण पारणा किया
छह किये और सर्वकामगुण पारणा किया,

यह दूसरी लता हुई ।२।

नव किया और सर्वकामगुण पारणा किया,
पाँच किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

छ किये और सर्वकामगुण पारणा किया।

सात किये और सर्वकामगुण पारणा किया।

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
अट्ठारसमं करेइ, करित्ता	अष्टादश करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
तइया लया ।३।	(एवं) तृतीया लता ।३।

सूत्र ४

चउद्दसमं करेइ, करित्ता	चतुर्दशं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
सोलसमं करेइ, करित्ता	षोडशं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणित पारयति, पारयित्वा
अट्ठारसमं करेइ, करित्ता	अष्टादशं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
वीइसमं करेइ, करित्ता	विंशतितमं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयलि, पारयित्वा
दुवालसमं करेइ, करित्ता	द्वादशं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चउत्थी लया ।४।	चतुर्थी लता ।४।

सूत्र ५

अट्ठारसमं करेइ, करित्ता	अष्टादशं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
वीसइमं करेइ, करित्ता	विंशतितमं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
दुवालसमं करेइ, करित्ता	द्वादशं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चउद्दसमं करेइ, करित्ता	चतुर्दशं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
सोलसम करेइ, करित्ता	षोडशं करोति, कृत्वा

[हिन्दी भावार्थ]

आठ उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
इस प्रकार तीसरी लता पूर्ण की ।३।

[हिन्दी अर्थ]

आठ का तप किया और सर्वकामगुण पारणा किया।

यह तीसरी लता हुई ।३।

सूत्र ४

छः उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
सात किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
आठ उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
नौ उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
पाच उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
इस प्रकार चौथी लता पूर्ण हुई ।४।

छह किये और सर्वकामगुण पारणा किया।

सात किया और सर्वकामगुण पारणा किया।

आठ किया और सर्वकामगुण पारणा किया।

नव किया और सर्वकामगुण पारणा किया।

पाँच किये और सर्वकामगुण पारणा किया।

यह चौथी लता हुई ।४।

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
अट्ठारसमं करेइ, करित्ता	अष्टादश करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
तइया लया ।३।	(एव) तृतीया लता ।३।

सूत्र ४

चउद्दसमं करेइ, करित्ता	चतुर्दशं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
सोलसम करेइ, करित्ता	षोडशं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
अट्ठारसमं करेइ, करित्ता	अष्टादशं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
वीइसमं करेइ, करित्ता	विंशतितमं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
दुवालसम करेइ, करित्ता	द्वादशं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चउत्थी लया ।४।	चतुर्थी लता ।४।

सूत्र ५

अट्ठारसमं करेइ, करित्ता	अष्टादशं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
वीसइमं करेइ, करित्ता	विंशतितमं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
दुवालसमं करेइ, करित्ता	द्वादशं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चउद्दसमं करेइ, करित्ता	चतुर्दशं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
सोलसमं करेइ, करित्ता	षोडशं करोति, कृत्वा

[हिन्दी शब्दार्थ]	[हिन्दी अर्थ]
आठ उपवास किये, करके सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके इस प्रकार तीसरी लता पूर्ण की ।३।	आठ का तप किया और सर्वकामगुण पारणा किया । यह तीसरी लता हुई ।३।

सूत्र ४

छः उपवास किये, करके सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके सात किये, करके सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके आठ उपवास किये, करके सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके नौ उपवास किये, करके सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके पांच उपवास किये, करके सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके इस प्रकार चौथी लता पूर्ण हुई ।४।	छह किये और सर्वकामगुण पारणा किया । सात किया और सर्वकामगुण पारणा किया । आठ किया और सर्वकामगुण पारणा किया । नव किया और सर्वकामगुण पारणा किया । पाँच किये और सर्वकामगुण पारणा किया । यह चौथी लता हुई ।४।

सूत्र ५

आठ उपवास किये, करके सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके नौ उपवास किये, करके सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके पाँच उपवास किये, करके सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके छः उपवास किये, करके सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके सात उपवास किये, करके	आठ किया और सर्वकामगुण पारणा किया, नव किया और सर्वकामगुण पारणा किया, पाच किया और सर्वकामगुण पारणा किया, छह किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

[मूल सूत्र पाठ]

सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
पंचमी लया ।५।

[संस्कृत छाया]

सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
पंचमी लता ।५।

सूत्र ६

एक्काए कालो छम्मासा वीस
य दिवसा ।
चउण्हं कालो दो वरिसा दो
मासा बीस य दिवसा ।
सेसं तहेव जहा काली जाव सिद्धा ।

एतस्याः (पंचलतात्मिकायाः) कालः
षण्मासाः विंशतिश्च दि सा: ।
चतसृणां कालः द्वौ ौं द्वौ
मासौ विंशतिश्च दि सा: ।
शेषं तथैव यथा काली यावत् सिद्धा ।

इति अष्टममध्ययनम्

नवममध्ययनम्

एवं पिउसेण कण्हा वि

णवरं—मुत्तावली तवोकम्मं
उवसंपज्जित्ताणं विहरइ ।
तं जहा—

चउत्थं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
छट्ठं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
चउत्थ करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
अट्ठमं करेइ, करित्ता

एवं पितृसेनकृष्णाऽपि ।

विशेषः—मुक्तावली तपः कर्म
उपसंपद्य विहरति ।
था—

चतुर्थं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
षष्ठं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चतुर्थ करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
अष्टमं करोति, कृत्वा

[हिन्दी शब्दार्थ]

सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
इस प्रकार पाँचवी लता पूर्ण की ।५।

[हिन्दी अर्थ]

सात किया और सर्वकामगुण पारणा किया,
यह पाचवी लता हुई ।५।

सूत्र ६

इस प्रकार एक परिपाटी का काल
छः मास और बीस दिन हुआ ।
चारो का काल दो वर्ष दो मास और
बीस दिन हुए ।
शेष उसी प्रकार काली रानी के समान
रामकृष्णा भी संलेखना करके यावत्
सिद्ध बुद्ध मुक्त हो गई ।

इस तरह पाच लताओ की एक परिपाटी हुई । ऐसी चार परिपाटिया इस तप मे होती हैं । एक परिपाटो का काल छ महीने और बीस दिन, एव चारो परिपाटियो का काल दो वर्ष, दो महीने और बीस दिन होते है । शेष उसी प्रकार पूर्व वर्णन के अनुसार समझना चाहिये ।

काली के समान आर्या रामकृष्णा भी सलेखना करके यावत् सिद्ध-बुद्ध मुक्त हो गई।

आठवां अध्ययन समाप्त

नवमां अध्ययन

इसी प्रकार पितृसेन कृष्णा का
अध्ययन भी समझना चाहिए ।
विशेषः—उन्होने मुक्तावली तप को
अंगीकार किया और विचरने लगी ।
मुक्तावली तप का वर्णन इस प्रकार
है—
उन्होंने उपवास किया और
सर्वकामगुण पारणा किया, करके
बेला किया, करके
"कामगुणयुक्त पारणा किया, करके
उपवास किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
तेला किया, करके

ऐसे ही पितृसेन कृष्णा का नवमा अध्ययन भी समझना चाहिये । इसमे विशेष इतना है कि गुरुणी आर्या चन्दन बाला की आज्ञा पाकर पितृसेन कृष्णा आर्या 'मुक्तावली' तप को अगीकार करके विचरने लगी, जो इस प्रकार है—

उपवास किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

बेला किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

उपवास किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चउत्थं करेइ, करित्ता	चतुर्थं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
दसमं करेइ, करित्ता	दशमं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चउत्थं करेइ, करित्ता	चतुर्थं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
दुवालसमं करेइ, करित्ता	द्वादशं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चउत्थं करेइ, करित्ता	चतुर्थ करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चउद्दसमं करेइ, करित्ता	चतुर्दशं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चउत्थं करेइ, करित्ता	चतुर्थं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सव्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
सोलसमं करेइ, करित्ता	षोडशं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सव्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चउत्थ करेइ, करित्ता	चतुर्थं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
अट्ठारसमं करेइ, करित्ता	अष्टादशं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चउत्थं करेइ, करित्ता	चतुर्थ करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
वीसइम करेइ, करित्ता	विंशतितमं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणित पारयति, पारयित्वा
चउत्थं करेइ, करित्ता	चतुर्थंकरोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणित पारयति, पारयित्वा

[हिन्दी शब्दार्थ]

सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
उपवास किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
चौला किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
उपवास किया, करके
सर्वकामगुणित पारणा किया, करके
पाँच उपवास किये, करके
सर्वकामगुणित पारणा किया, करके
उपवास किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
छः उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
उपवास किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
सात उपवास किये, करके
सर्वकामगुणित पारणा किया, करके
उपवास किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
आठ उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
उपवास किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
नौ उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
उपवास किया, करके
सर्वकामगुणित पारणा किया, करके

[हिन्दी अर्थ]

तेला किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

उपवास किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

चौला किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

उपवास किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

पाँच किये और सर्वकामगुण पारणा किया,

उपवास किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

छह किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

उपवास किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

सात किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

उपवास किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

आठ किये और सर्वकामगुण पारणा किया,

उपवास किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

नव किये और सर्वकामगुण पारणा किया,

उपवास किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

[मूल सूत्र पाठ]

बावीसइमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
चउत्थं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
चउवीसइमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
चउत्थं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
छव्वीसइमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
चउत्थ करेइ करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ पारित्ता
अट्ठावीसइमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता
चउत्थं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
तीसइमं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
चउत्थं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
वत्तीसइम करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
चउत्थं करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता
चोत्तीसइम करेइ, करित्ता
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता
चउत्थं करेइ, करित्ता

[सस्कृत छाया]

द्वाविंशति ˙ करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चतुर्थ करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चतुर्विशति करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चतुर्थं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
षड्विंशतितमं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चतुर्थं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
अष्टाविंशतितमं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चतुर्थ करोति कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति पारयित्वा
त्रिंशत्तमं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चतुर्थ करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
द्वात्रिंशत्तमं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चतुर्थं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चतुस्त्रिंशत्तमं करोति, कृत्वा
सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चतुर्थं करोति, कृत्वा

(हिन्दी शब्दार्थ)

दस उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
उपवास किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
ग्यारह उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
उपवास किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
बारह उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
उपवास किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
तेरह उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
उपवास किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
चौदह उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
उपवास किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
पन्द्रह उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
उपवास किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
सोलह उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
उपवास किया, करके

(हिन्दी अर्थ)

दश किये और सर्वकामगुण पारणा किया,

उपवास किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

ग्यारह किये और सर्वकामगुण पारणा किया,

उपवास किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

बारह किये और सर्वकामगुण पारणा किया,

उपवास किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

तेरह किये और सर्वकामगुण पारणा किया,

उपवास किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

चौदह किये और सर्वकामगुण पारणा किया,

उपवास किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

पद्रह किये और सर्वकामगुण पारणा किया,

उपवास किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

सोलह किये और सर्वकामगुण पारणा किया,

उपवास किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

[मूल सूत्र पाठ]	[संस्कृत छाया]
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
चउत्थं करेइ, करित्ता	चतुर्थं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणियं पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
बत्तीसइमं करेइ, करित्ता	द्वात्रिंशत्तमं करोति, कृत्वा
सव्वकामगुणिय पारेइ, पारित्ता	सर्वकामगुणितं पारयति, पारयित्वा
एवं ओसारेइ जाव चउत्थं करेइ,	एवम् अवसारयति यावत् चतुर्थं करोति,
करित्ता सव्वकामगुणियं पारेइ ।	कृत्वा सर्वकामगुणित पारयति ।
एक्काए कालो एक्कारस मासा	एकस्याः (परिपाट्या) कालः एकादश
पण्णरस य दिवसा ।	मासाः पंचदश च दिवसाः ।
चउण्हं तिण्णि वरिसा	चतसृणां कालस्त्रीणि वर्षाणि
दस य मासा ।	दश च मासाः ।
सेसं तहेव जाव सिद्धा ।९।	शेषं तथैव यावत् सिद्धा ।९।

इति नवममध्ययनम्

दसममध्ययनम्

सूत्र १

एवं महासेणकण्हा वि ।	एवं महासेनकृष्णाऽपि ।
णवरं आयंबिलवड्ढमाणं	विशेषः—आचामाम्लवर्धमानं
तवोकम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ ।	तपः कर्म उपसंपद्य विहरति ।
तं जहा—	तद्यथा—
आयबिलं करेइ, करित्ता	आचामाम्लं करोति, कृत्वा
चउत्थं करेइ, करित्ता	चतुर्थं करोति, कृत्वा
वे आयंविलाइं करेइ, करित्ता	द्वे आचामाम्ले करोति, कृत्वा
चउत्थं करेइ, करित्ता	चतुर्थं करोति, कृत्वा
तिण्णि आयविलाइ करेइ, करित्ता	त्रीणि आचामाम्लानि करोति, कृत्वा
चउत्थं करेइ, करित्ता	चतुर्थं करोति, कृत्वा
चत्तारि आयंविलाइं करेइ, करित्ता	चत्वारि आचामाम्लानि करोति, कृत्वा
चउत्थ करेइ, करित्ता	चतुर्थं करोति, कृत्वा

[हिन्दी शब्दार्थ]

सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
उपवास किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
पन्द्रह उपवास किये, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया, करके
इस प्रकार वैसे ही एक एक उतारते
हुए यावत् उपवास किया, करके
सर्वकामगुणयुक्त पारणा किया।
एक परिपाटी का काल ग्यारह महीने
पन्द्रह दिन चारो मे तीन वर्ष दस महीने
लगे। शेष उसी प्रकार यावत् संलेखना
करके पितृसेनकृष्णा भी सिद्ध हो गई।

[हिन्दी अर्थ]

उपवास किया और सर्वकामगुण पारणा किया,

पद्रह किये और सर्वकामगुण पारणा किया,

इस प्रकार वैसे ही एक एक उल्टा उतारते जाते हैं, यावत् अन्त मे उपवास करके सर्वकामगुण पारणा किया। इस तरह यह एक परिपाटी हुई। एक परिपाटी का काल ग्यारह महीने और पद्रह दिन होते है। ऐसी चार परिपाटिया इस तप मे होती है। इन चारो परिपाटियो मे तीन वर्ष दश महीने का समय लगता है।

शेष वर्णन पूर्व की तरह समझना चाहिये।

इति नवम अध्ययन

दसम अध्ययन

सूत्र १

इसी प्रकार महासेनकृष्णा का अध्ययन
है। विशेष यह है कि वह आयंबिल
वर्धमान तप को अंगीकार करके
विचरने लगी। जो इस प्रकार है—
एक आयंबिल करके
उपवास किया, करके
फिर दो आयंविल करके
उपवास किया, करके
फिर तीन आयंबिल किये, करके
उपवास किया, करके
चार आयबिल तप किये, करके
उपवास किया, करके

अन्त मे अत्यन्त कृशराय होने पर आर्या पितृसेन कृष्णा भी सलेखना सथारा करके सिद्ध-वुद्ध और सर्व दुखो से मुक्त हो गई।

इसी प्रकार महासेन कृष्णा का दसवा अध्ययन भी समझना चाहिये। इसमे विशेष इतना ही है कि महासेन कृष्णा 'वर्द्धमान आयविल' तप को अ गीकार करके विचरने लगी। जो इस प्रकार है—

प्रारम्भ मे एक आयविल करके उपवास किया,

दो आयविल किये और उपवास किया,

तीन आयविल किये और उपवाम किया,

[मूल सूत्र पाठ]

पंच आयंबिलाइं करेइ, करित्ता
चउत्थं करेइ, करित्ता
छ आयंबिलाइं करेइ, करित्ता
चउत्थं करेइ, करित्ता
एकोत्तरियाए वुड्ढीए आयंबिलाइं
वड्ढंति चउत्थंतरियाइं जाव
आयंबिलसयं करेइ, करित्ता
चउत्थं करेइ ।१।

[संस्कृत छाया]

पञ्च आचामाम्लानि करोति, कृत्वा
चतुर्थ करोति, कृत्वा
षडाचामाम्लानि करोति, कृत्वा
चतुर्थं करोति, कृत्वा
एकोत्तरिकया वृद्ध्या आचामाम्लानि
वर्धन्ते चतुर्थान्तरितानि यावत्
आचामाम्लशतं करोति, कृत्वा
चतुर्थ करोति ।१।

सूत्र २

तएणं सा महासेण कण्हा अज्जा
आयबिल वड्ढमाणं तवोकम्मं
चोद्दसेहिं वासेहिं तिहि य
मासेहि वीसेहि य अहोरत्तेहिं
अहासुत्तं जाव सम्मं काएणं फासेइ
जाव आराहित्ता, जेणेव अज्ज-
चंदणा अज्जा तेणेव उवागच्छइ ।
उवागच्छित्ता अज्जचंदणं अज्जं
वंदइ णमसइ, वदित्ता णमंसित्ता
बहूहिं चउत्थेहिं जाव भावेमाणी
विहरइ ।
तएणं सा महासेणकण्हा अज्जा
तेणं ओरालेणं जाव उवसोभेमाणी
उवसोभेमाणी चिट्ठइ ।२।
तएणं तीसे महासेणकण्हाए
अज्जाए अण्णया कयाइं पुव्वरत्तावरत्त
काले चिंता, जहा

ततः खलु सा महासेन कृष्णा आर्या
आचामाम्लवर्द्धमानं तपः कर्म
चतुर्दशभिः वर्षैः त्रिभिश्च
मासैः विंशत्या च अहोरात्रैः
यथासूत्रं यावत् सम्यक् कायेन स्पृशति,
यावत् आराध्य, यत्रैव आर्यचन्दना
आर्या तत्रैव उपागच्छति ।
उपागत्य आर्यचन्दनाम् आर्याम्
वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा
बहुभिः चतुर्थैः यावत् भावयन्ती
विहरति ।
ततः खलु सा महासेनकृष्णा आर्या
तेन उदारेण तपसा यावत् उपशोभमाना
उपशोभमाना तिष्ठति ।२।
ततः खलु तस्याः महासेन कृष्णायाः
आर्यायाःअन्यदा कदाचिद् पूर्वरात्रापररात्र
काले चिंता, यथा

[हिन्दी शब्दार्थ]

पांच आयंबिल किये, करके
उपवास किया, करके
छः आयबिल किये, करके
उपवास किया, करके
इस प्रकार एक एक की वृद्धि से आयं-
बिल बढ़ाये बीच बीच मे उपवास
किया यावत् सौ आयंबिल किये, करके
उपवास किया ।

[हिन्दी अर्थ]

चार आयबिल किये और उपवास किया,

पाच आयविल किये और उपवास किया,

छह आयबिल किये और उपवास किया,

ऐसे एक एक की वृद्धि से आयविल वढाये। बीच वीच मे उपवास किया, इस प्रकार सौ आयबिल करके उपवास किया ।

सूत्र २

तब उन महासेनकृष्णा आर्या ने
आयंबिलवर्धमान तप कर्म को
चौदह वर्ष तीन महीने और बीस
अहोरात्र में सूत्रानुसार यावत्
विधिपूर्वक काया से स्पर्शन किया,
यावत् आराधना करके जहां आर्य
चन्दना आर्या थी वहां आई ।
आकर आर्यचन्दना आर्या को वन्दन
नमस्कार करती है, वन्दन नमस्कार
करके बहुत से उपवासों से आत्मा
को भावित करती हुई विचरने लगी ।
तब वह महासेनकृष्णा आर्या उस
प्रधान तप से यावत् शोभायमान होकर
रहने लगी ।
फिर महासेनकृष्णा ी को अन्य
किसी दिन पिछली रात्रि के समय
स्कंदक के समान धर्म चिन्ता उत्पन्न हुई ।

यह वर्द्धमान आयम्विल तप हुआ ।

इस प्रकार महासेन कृष्णा आर्या ने इस 'वर्द्धमान आयम्बिल' तप की आराधना चौदह वर्ष तीन महीने और बीस अहोरात्र की अवधि मे सूत्रानुसार विधि पूर्वक पूर्ण की ।

आराधना पूर्ण करके आर्या महासेन कृष्णा जहा अपनी गुरुणी आर्या चदनबाला थी, वहा आई और चदनबाला को वदना नमस्कार करके उनकी आज्ञा प्राप्त करके बहुत से उपवास आदि तप से आत्मा को भावित करती हुई विचरने लगी। इस महान् तप के तेज से महासेन कृष्णा आर्या शरीर से दुर्बल हो जाने पर भी अत्यन्त देदीप्यमान लगने लगी ।

एक दिन पिछली रात्रि के समय महासेन कृष्णा आर्या को धर्म-चिन्ता उत्पन्न हुई— "मेरा शरीर तपस्या से दुर्बल हो गया है तथापि अभी तक मुझ मे उत्थान, वल, वीर्य आदि है। इसलिये कल सूर्योदय होते ही आर्या चन्दनवाला के पास जाकर उनसे आज्ञा लेकर सलेखणा सथारा करू ।"

[मूल सूत्र पाठ]

खंदयस्स जाव अज्जचंदणं अज्जं
आपुच्छइ जाव संलेहणा,
कालं अणवकखमाणी विहरइ ।
तएणं सा महासेण कण्हा अज्जा
अज्जचंदणाए अज्जाए अंतिए
सामाइयमाइयाइं एक्कारस
अंगाइं अहिज्जित्ता बहुपडिपुण्णाइं
सत्तरस वासाइं परियायं
पालइत्ता (पाउणित्ता) मासियाए
संलेहणाए अप्पाणं झूसित्ता सट्ठिभत्ताइं
अणसणाए छेदित्ता जस्सट्ठाए
कीरइ जाव तमट्ठं आराहेइ
चरिम उस्सासणीसासेहिं
सिद्धा बुद्धा ।
अट्ठ य वासा आदी,
एकोत्तरियाए जाव सत्तरस ।
एसो खलु परियाओ,
सेणियभज्जाण णायव्वो ।।

[संस्कृत छाया]

स्कदकस्य यावत् आर्यचन्दनाम्
आर्याम् आपृच्छति यावत् संलेखना,
कालमनवकांक्षन्ती विहरति ।
ततः खलु सा महासेनकृष्णा आर्या
आर्यचंदनामार्याम् अन्तिके
सामायिकादीनि एकादशांगानि
अधीत्य बहुप्रतिपूर्णानि
सप्तदश वर्षाणि पर्याय
पालयित्वा मासिक्या संलेखनया
आत्मानं जोषयित्वा षष्टि भक्तानि
अनशनेन छित्वा यस्यार्थाय
क्रियते यावत् तमर्थम् आराधयति ।
चरमोच्छ्वासनिःश्वासैः
सिद्धा बुद्धा ।
अष्ट च वर्षाणि आदिः,
एकोत्तरिकया यावत् सप्तदशी ।
एष खलु पर्यायः,
श्रेणिक भार्याणां ज्ञातव्यः ।।

इति दशममध्ययनम्
इति अष्टमः वर्गः

एव खलु जंबू ! समणेणं
भगवया महावीरेणं आइगरेणं
जाव सपत्तेणं अट्ठमस्स
अंगस्स अंतगडदसाणं
अयमट्ठे पण्णत्ते त्ति वेमि ।
अंतगड दसाणं अंगस्स
एगो सुयक्खंधो अट्ठवग्गा

एवं खलु जम्बू ! श्रमणेन
भगवता महावीरेण आदिकरेण
यावत् (मुक्ति) संप्राप्तेन मस्य
अंगस्य अंतकृद्दशानाम्
अयमर्थः प्रज्ञप्तः इति ब्रवीमि ।
अन्तकृद्दशानाम् अंगस्य
एकः श्रुतस्कन्धो अष्ट- वर्गाः ।

[हिन्दी शब्दार्थ]

आर्यचन्दना आर्या को पूछकर यावत् सलेखना की और काल (मृत्यु) को नही चाहती हुई विचरने लगी। फिर उस महासेनकृष्णा आर्या ने आर्यचन्दना आर्या के पास साम-यिकादि ग्यारह अगो का अध्ययन किया, पूरे सत्रह वर्ष तक चारित्र्य धर्म को पालन करके एक मास की संलेखना से आत्मा को भावित करके साठ भक्त अनशन को पूर्ण कर यावत् जिस कार्य के लिये संयम लिया था उसकी पूर्ण आराधना करके अन्तिम श्वास उच्छ्‌वास से सिद्ध बुद्ध मुक्त हुई। एवं श्रेणिक राजा की भार्याओ मे से पहली काली देवी की आठ वर्ष की दीक्षा, दूसरी की नव वर्ष इस प्रकार एक एक बढ़ाते हुए यावत् दसवी रानी का १७ वर्ष दीक्षा काल जानें।

[हिन्दी अर्थ]

तदनुसार दूसरे दिन सूर्योदय होने पर आर्या महासेन कृष्णा ने आर्या चन्दन बाला के पास जाकर वन्दन नमस्कार करके सथारे की आज्ञा मागी। आज्ञा लेकर यावत् सलेखणा सथारा किया और काल की इच्छा नही रखती हुई धर्मध्यान-शुक्लध्यान मे तल्लीन रहते हुए विचरने लगी।

उन महासेनकृष्णा आर्या ने आर्य चदना आर्या के पास सामायिक आदि ग्यारह अगो का अध्ययन किया। पूरे सत्रह वर्ष तक श्रमणी चारित्र–धर्म का पालन किया अन्त मे एक मास की सलेखना से आत्मा को भावित करते हुए साठ भक्त अनशन तप किया। इस तरह जिस लक्ष्य-प्राप्ति हेतु सयम ग्रहण किया था उस की पूर्ण आराधना करके महासेन कृष्णा आर्या अतिम श्वास-उच्छ्‌वास मे अपने सम्पूर्ण कर्मो को नष्टकर सिद्ध-बुद्ध और मुक्त हो गई।

इन दसो रानियो के दीक्षापर्याय काल का वर्णन एक ही गाथा मे किया गया है। इन मे से प्रथम काली आर्या ने आठ वर्ष तक चारित्र पर्याय का पालन किया।

दसवां अध्ययन समाप्त

आठवां वर्ग समाप्त

इस प्रकार हे जम्बू! श्रमण भ० महावीर जो कि धर्म की आदि करने वाले यावत् मुक्ति पधारे है, ने आठवें अंग अंतगडदशासूत्र का यह अर्थ कहा है, ऐसा मै कहता हूँ।
अंतगडदशा अंग में एक श्रुतस्कन्ध और आठ वर्ग है।

दूसरी सुकाली आर्या ने नौ वर्ष तक इस प्रकार क्रमश एक एक रानी के चारित्र पर्याय मे एक एक वर्ष की वृद्धि होती गई। अन्तिम दसवी रानी महासेन कृष्णा आर्या ने १७ वर्ष तक दीक्षा पर्याय का पालन किया। ये सभी राजा श्रेणिक की राणिया थी और कौणिक राजा की छोटी माताए थी।

[मूल सूत्र पाठ]

अट्ठसु चेव दिवसेसु उद्दिसिज्जंति ।
तत्थ पढमबितियवग्गे दस
दस उद्देसगा, तइयवग्गे
तेरस उद्देसगा, चउत्थपंचम-
वग्गे दस दस उद्देसगा,
छट्ठवग्गे सोलस उद्देसगा,
सत्तमवग्गे तेरस उद्देसगा,
अट्ठम वग्गे दस उद्देसगा ।
सेसं जहा णायाधम्मकहाणं ।

[सस्कृत छाया]

अष्टसु चैव दिवसेषु उद्दिश्यन्ते ।
तत्र प्रथम द्वितीय वर्गयोः दश
दश उद्देशकाः, तृतीय वर्गे
त्रयोदश उद्देशकाः, चतुर्थ-
पंचम वर्गयोः दश दश उद्देशकाः,
षष्ठ वर्गे षोडश उद्देशकाः,
सप्तम वर्गे त्रयोदश उद्दे ाः,
अष्टम वर्गे दश उद्देशकाः ।
शेषं यथा ज्ञाताधर्मकथानाम् ।

सिरि अंतगडदसांगसुत्तं समत्तं

——०——

[हिन्दी शब्दार्थ]

आठ ही दिनो मे इनका वाचन होता है। इसमे प्रथम व द्वितीय वर्ग मे दस दस उद्देशक है, तीसरे वर्ग मे तेरह उद्देशक हैं, चौथे और पांचवे वर्ग मे दस दस उद्देशक है, छठे वर्ग मे सोलह उद्देशक है, सातवें वर्ग मे तेरह उद्देशक है, आठवें वर्ग मे दस उद्देशक है। शेष वर्णन ज्ञाताधर्म कथा में है।

[हिन्दी अर्थ]

श्री सुधर्मा–"हे जम्बू ! अपने शासन की अपेक्षा से धर्म की आदि करने वाले श्रमण भगवान् महावीर, जो मोक्ष पधार गये हैं, ने आठवे अग अन्तगडदशा का यह भाव, यह अर्थ प्ररूपित किया है।

भगवान् से जैसा भाव, जैसा अर्थ मैंने सुना उसी प्रकार मैंने तुम्हे कहा है।"

इस अन्तगडदशा सूत्र मे एक श्रुतस्कन्ध है और आठ वर्ग है। आठ दिनो मे इसका वाचन होता है।

इसमे प्रथम और दूसरे वर्ग के दस दस अध्ययन हैं। तीसरे वर्ग मे तेरह उद्देशक (अध्ययन) है। चौथे और पाचवे वर्ग मे दस-दस उद्देशक (अध्ययन) है।

छठे वर्ग मे सोलह अध्ययन हैं।

सातवे वर्ग मे तेरह और आठवे वर्ग मे दस अध्ययन है।

शेष वर्णन ज्ञाता धर्मकथाग सूत्र मे है।

इस सूत्र मे नगर आदि का वर्णन सक्षेप मे किया गया है। नगर आदि से लेकर बोधि-लाभ और अन्त क्रिया आदि का विस्तारपूर्वक वर्णन ज्ञाता धर्म कथाग सूत्र के समान जानना चाहिये।

अंतकृद्दशांगसूत्रं समाप्तम्

—o—

शुद्धि-पत्र

पृष्ठ	कालम	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
८	२	१५	कोडर्थः	कोऽर्थः
९	२	१८	पद्म	पद्‌म
१०	१	१७	असोभवर	।ोगवर
१२	१	नीचे से दूसरी	अंधगवण्हिहस्स	अंधगवण्हिस्स
१४	१	३	सयाणिज्जंसि	सयणिज्जंसि
१५	२	नीचे से दूसरी	गौतममार	गौतमकुमार
१६	१	७	समाइयमाइयाइं	सामाइयमाइयाइं
१६	२	७	सामयिकादीनि	सामायिकादीनि
३०	१	१२	अजयसेणे	अजियसेणे
३१	२	१८	अनिहतऋप	अनिहतऋपु
४४	१	२१	एसिसए	सरिसए
७०	१	८	गयसुकुमालस्स	गयसुकुमालस्स कुमारस्स
७०	२	८	गजसुकुमालस्य	गजसुकुमालस्य कुमारस्य
७१	१	८	गजसुकुमाल	गजसुकुमाल कुमार
८०	१	७	च	य
१०९	२	२२ व ३०	श्रवण	श्रमण

पृष्ठ	कालम	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
११०	१	२	संपत्तेण	संपत्तेणं
१२०	२	१६	एतदथं	एतदर्थ
१३६	१	अन्तिम	अरिट्ट	अरिट्ठ
१४६	२	१४	तत्रैव	यत्रैव
१६०	२	२०	पर्सुपासते	पर्युपासते
२००	१	७	च	य
२४०	२	१०	चतस्त्रः	स्त्रः
२५४	१	१०	बीइसमं	बीसइमं
२६४	२	१	पच्च	पञ्च

टिप्पणियां

१	अभवत्	पेज २	'आसीत्' इत्यर्थ ।
२	वर्ण्य	पेज २	वर्णक, वर्णयितु योग्य इत्यर्थ ।
३	उस समय	पेज २	अवसर्पिणी काल के चतुर्थ आरक मे, जब कि भगवान् महावीर अपने चरण विहार मे इस भारत भूमि को पावन कर रहे थे ।
४.	वर्णनीय	पेज ३	वर्णन करने योग्य ।
५	उत्तर पूर्व दिशा भाग मे	पेज ३	ईशान कोण मे ।
६.	महा हिमवान् पर्वत के समान	पेज ३	महान् हिमालय पर्वत जैसे गुणो से सुशोभित । जिस प्रकार महा हिमवान् पर्वत लोक की मर्यादा करता है, उसी प्रकार राजा प्रजा के लिये मर्यादा, जिसे आज की परिभाषा मे आचार सहिता कहा जा सकता है, निर्द्धारित करता है, एव जिस पर दृढता से आचरण करता है । इस दृष्टि से वह राजा कौणिक मलय पर्वत के समान कीर्ति रूपी सुवास से सुगन्धित एव कर्त्तव्य पालन करने कराने मे अत्यन्त जागरूक एव दृढ होने से मेरु तुल्य अचल था । आज के शासक एव शासित इससे बहुत कुछ सीख ले सकते है ।
७-८-९.	नगरी, पर्वत, राजा	पेज ३	इनके विस्तृत कलात्मक एव गुणात्मक वर्णन की जानकारी के लिये "औपपातिक सूत्र" का अवलोकन करें ।
१०-११.	परिसा णिग्गया जाव परिसा पडिगया	पेज ४	परिसा णिग्गया जाव परिसा पडिगया (परिषद् आई यावत् परिषद् लौट गई) उस वक्त की प्रचलित भाषा मे परिसा-परिषद् शब्द नागरिक अथवा ग्रामीण जनो के अर्थ मे प्रयुक्त होता था, जो भगवान् का अथवा धर्माचार्यो एव धर्मोपदेशको का धर्मोपदेश सुनने के लिये अपने अपने घरो से निकल कर आते थे एव धर्म श्रवण के पश्चात् पुन लौट जाते थे ।
१२		पेज ५	यह शब्द इस सूत्र-ग्रन्थ मे स्थान-स्थान पर बहुलता से प्रयुक्त हुआ है । इस शब्द का सामान्य शाब्दिक अर्थ होता है" .. से लेकर ... पर्यन्त"। पर विशेष अर्थ मे यह उस काल की श्रुत एव लेखन पद्धति

की एक शैली के रूप मे विकसित हो गया था और बहुलता से प्रयोग मे लिया जाता था, जिसके अनुसार 'जाव' (यावत्) शब्द का प्रयोग कथन के सक्षिप्तिकरण का द्योतक समझा जाता था ।

जहा-जहा जिस-जिस विषय के निश्चित पाठ होते थे, उनमे से जिस सन्दर्भित विषय के पाठ को कहना होता था तो उसके लिये 'जाव' कहकर या लिखकर यह दर्शा दिया जाता था कि अमुक अमुक पाठ अमुक-अमुक जगह या शब्द से लेकर अमुक-अमुक जगह या शब्द तक समझ लिया जाय । जैसे "आइगरेण जाव सपत्तेण" वाक्य प्रयोग से यह अर्थ लिया जाना अपेक्षित है कि तीर्थंकर अरिहन्त प्रभु की स्तुति के लिये जो पाठ निश्चित है उसमे से "आइगरेण" शब्द या जगह से लेकर "सपत्तेण" शब्द या जगह तक समझ लिया जाय । इसमे "आइगरेण" से लेकर "सपत्तेण" का पाठ इस तरह से आएगा—"आइगरेण तित्थयराण सय सबुद्धाण, पुरिसुत्तमाण, पुरिससिहाण, पुरिसवर पु डरियाण,पुरिसवर गन्धहत्थिण, लोगुत्तमाण, लोगनाहाण, लोगहियाण लोगपइवाण, लोगपज्जोयगराण,अभयदयाण, चक्खुदयाण, मग्गदयाण,सरणदयाण, जीवदयाण, बोहिदयाण, धम्मदयाण, धम्मदेसियाण, धम्मनायगाण, धम्मसारहिण, धम्मवर चाउरतचक्कवट्ठीण, दीवोत्ताण, सरणगइ पइट्ठाण, अप्पडिहय वरनाणदसणधराण, विअट्ठछउमाण, जिणाण जावयाण, तिन्नाण तारयाण, बुद्धाण बोहियाण, मुत्ताण, मोयगाण, सव्वन्नुण हव्वदरिसिण, सिव मयल मरुअमणतमक्खय मव्वावाह-मप्पुणरावित्ति सिद्धिगइ नामधेय ठाण सम्पत्तेण"

इस प्रकार जहा जहा जिस जिस सन्दर्भ मे "जाव" शब्द का प्रयोग आए वहा वहा वही सन्दर्भित पाठ समझना चाहिये ।

१३	पाच सौ साधुओं के परिवार सहित	पेज ५	कुछ टीकाकारो ने इसका भिन्न अर्थ भी किया है । जैसे पाच सौ साधु उनके अनुशासन मे थे, साथ थे—ऐसा नही । पर यह अर्थ ठीक नही बैठता । पाच सौ साधु साथ लेकर चलना उस वक्त की सामाजिक, भौगोलिक एव राजनैतिक आदि परिस्थितियो मे असम्भव हो, ऐसा नही लगता, फिर शब्द स्पष्ट है एव यथार्थसूचक हैं ।—(सम्पादक)
१४	पाच वर्ण	पेज ५	इन्द्र, नील, वैडूर्य, पद्म, रागादि ।
१५	मर्यादापालक	पेज ११	टिप्पण सख्या ६ देखें ।
१६.	सार्थवाह	पेज १३	वणिक्, जो उस समय की पद्धति के अनुसार पूरे समूह के साथ व्यापार हेतु देशाटन पर निकलते थे क्योकि उस युग मे आवागमन के साधन आज की तरफ उन्नतावस्था मे नही थे, अत चोर डाकू

आदि के आक्रमण की सभावनाए निरन्तर रहती थी। उनसे रक्षा करने आदि की व्यवस्था का पूरा भार भी स्वय पर लेकर चलता था।

१७ महाहिमवान पेज १३ इसका अर्थ भी टिप्पण सख्या ६ के समान जानना चाहिये।

१८ देवानन्दा की तरह उपासना करती है पेज ४७ भगवान् महावीर स्वामी की माता देवानन्दा रथ पर चढकर जिस प्रकार भगवान् के दर्शन हेतु गई एव वन्दन नमस्कार करके उपासना करने लगी एव जिसका विस्तार से वर्णन भगवतीसूत्र आदि शास्त्रो मे मिलता है, वैसा ही वर्णन यहा भी समझना चाहिये।

१९ यथा अभय पेज ६० (जिस प्रकार अभयकुमार ने) ज्ञाताधर्म कथाग, (घासीलाल जी म०) अध्ययन १ सूत्र १४ पृष्ठ १९८-२००

२० जहा मेहकुमारे पेज ६४ ज्ञाता धर्म कथाग अध्ययन १ सूत्र १७ पृष्ठ २३७-२३९ (घासी लाल जी म सा)

२१ जहा मेहे पेज ७२ ज्ञाता धर्म कथाग अध्ययन १ सूत्र ३२–३८, पृष्ठ ३७८-४३२ (घासी लाल जी म सा)

२२ जहा महाबलस्स पेज ७६ भगवती सूत्र भाग ८ शतक ९, उद्देशक ३३, पृष्ठ ४९९–५५५ (जमालिअभिनिष्क्रमण)

२३ निक्षेपक पेज १०९ उपसहारक वाक्य। यह शब्द इस भाव का द्योतक है कि प्रभु महावीर ने इस अध्ययन अथवा वर्ग का यह अर्थ कहा है।

२४ गगदत्ते तहेव पेज १४१ इन गगदत्त मुनि का वर्णन भगवती सूत्र मे विस्तार से है कि किस तरह वे भगवान के दर्शनार्थ एव धर्मोपदेश श्रवणार्थ गये थे। उसी तरह मकई गाथापति भी गये।

२५ यथा स्कन्दकस्य पेज १४३ भगवती सूत्र मे इसका विस्तृत वर्णन है।

२६ जैसे पूर्णभद्र पेज १४५ उववाई सूत्र, [घासी लाल जी म सा] सूत्र स २, पृष्ठ स २०-२६

२७ उत्क्षेपक पेज १७९ प्रारम्भिक वाक्य। उपोद्घात। भूमिका। यह शब्द इस भाव का द्योतक है कि प्रभु महावीर ने पिछले अध्ययन अथवा वर्ग का जो भाव कहा है वह सुना। अब अगले अध्ययन अथवा वर्ग का क्या अर्थ कथन किया है। यह कृपा कर बताइये।

२८ उत्क्षेपक पेज १८३ टिप्पण सख्या २७ देखें।

२९ ३० जहा महाबलस्स पेज १९६-१९७ कृपया टिप्पण स २२ देखें।

३१ जहा कूणिए पेज १९८ उववाई सूत्र (श्री घासी लाल जी म सा सूत्र ११ पृष्ठ ४९-५७

३२ जहा उदायणे पेज १९८ भगवती सूत्र (श्री घासी लाल जी म) भाग ११, शतक १३, उद्देशक ६, सूत्र ३, पृष्ठ २१-२२

३३.	उक्खेवश्रो	पेज १६८ टिप्पण सख्या २७ देखें।
३४.	कूणिक के समान	पेज १६६ टिप्पण सख्या ३१ देखें।
३५	उदायन की तरह	पेज १६६ टिप्पण सख्या ३२ देखें।
३६	निक्षेपक	पेज २०३ टिप्पण सख्या ३३ देखें
३७	पारित्ता	पेज २२८ सैलाना से प्रकाशित सूत्र मे यह शब्द नही है। सम्भव है कुछ अन्यो मे भी न हो, जो हमारी जानकारी मे न आये हो (सम्पादक)।

अस्वाध्याय

निम्नलिखित ३४ कारण टालकर स्वाध्याय करना चाहिये—

अस्वाध्याय के ३४ कारण

	(क) आकाश सम्बन्धी	अस्वाध्याय की काल मर्यादा
१	बडा तारा टूटे तो	एक पहर तक
२	उदय अस्त के समय लाल दिशा	जब तक रहे
३	अकाल मे मेघ गर्जना हो तो	दो प्रहर तक
४	अकाल मे बिजली चमके तो	एक प्रहर तक
५	अकाल मे बिजली कडके तो	दो प्रहर तक
६	शुक्ल पक्ष की एकम् दूज व तीज की रातें	.....एक प्रहर रात्रि तक
७	आकाश मे यक्ष का चिन्ह हो तो	..जब तक दिखाई दे
८	काली धूअर हो तो	.. जब तक रहे
९	सफेद धूअर हो तो	जब तक रहे
१०	आकाश मण्डल धूलि से आच्छादित हो तो	.. जब तक रहे
	(ख) औदारिक एव ग्रहण सम्बन्धी	
११	तिर्यञ्च जीवो के हड्डी, रक्त एव मास ६० हाथ के भीतर हो तो	जब तक रहे
१२	मनुष्य के हड्डी, रक्त एव मास १०० हाथ के भीतर हो तो	.....जब तक रहे
१३	मनुष्य की हड्डी, यदि जली या धुली न हो तो	१२ वर्ष तक
१४	अशुचि की दुर्गन्ध	..जब तक आए या दिखाई दे तब तक।
१५	श्मशान भूमि	सौ हाथ से कम दूर हो तो
१६	चन्द्र ग्रहण खण्ड अवस्था मे	.. ८ प्रहर तक
	पूर्ण अवस्था मे	१२ प्रहर तक
१७	सूर्य ग्रहण खण्ड अवस्था मे	.. १२प्रहर तक
	पूर्ण अवस्था मे	.....१६प्रहर तक

१८	राजा अथवा गणाधिपति का अवसान होने पर	जब तक उत्तराधिकारी घोषित न हो तब तक
१९	युद्ध स्थान के निकट	जब तक युद्ध चले तब तक
२०	उपाश्रय अथवा स्वाध्याय स्थान मे पचेन्द्रिय का शव पडा होने पर	जब तक पडा रहे तब तक

(ग) अन्य

२१	आषाढ मास की पूर्णिमा	१ दिन रात
२२	भाद्रपद मास की पूर्णिमा	१ दिन रात
२३	आश्विन मास की पूर्णिमा	१ दिन रात
२४	कार्तिक मास की पूर्णिमा	१ दिन रात
२५	चैत्र मास की पूर्णिमा	१ दिन रात
२६	आषाढ पूर्णिमा के बाद की प्रतिपदा	१ दिन रात
२७	भाद्रपद पूर्णिमा के बाद की प्रतिपदा	१ दिन रात
२८	आश्विन पूर्णिमा के बाद की प्रतिपदा	१ दिन रात
२९	कार्तिक पूर्णिमा के बाद की प्रतिपदा	१ दिन रात
३०	चैत्र पूर्णिमा के बाद की प्रतिपदा	१ दिन रात
३१	प्रात	१ मुहूर्त्त भर
३२	मध्याह्न	१ मुहूर्त्त भर
३३	सध्या	१ मुहूर्त्त भर
३४	अर्द्ध रात्रि	१ मुहूर्त्त भर

नोट —(१) उपरोक्त अस्वाध्याय के ३४ कारणो के समय को छोड कर बाकी समय मे स्वाध्याय करना चाहिये। खुले मुह नही बोलना चाहिये एव दीपक के उजाले मे नही बाचना चाहिये।

(२) मेघ गर्जनादि मे अकाल आर्द्रा नक्षत्र से पूर्व और स्वाति नक्षत्र से बाद का माना गया है।